No. ५४८६ – घ

Title नीतिविनोदः

Author

Extent १६० Age

Subject नीतिशास्त्रम् – संपूर्णम्

नं० ५४८६-घ
नीतिविनोदः (नीतिशास्त्रम्)
पत्राणि १-६७ (सम्पूर्णम्)

5486

५४८६

नै० ६६१-क
नीतिविनोद ७
(नीतिशास्त्रम्)
१-१८ पत्र
कर्त्ता- त्रिलोकनाथशास्त्री

5486
197

506

46 Kaul...
73-81-11

नी॰
वि॰
१

ॐश्रीगणेशायनमः एक रदन ग
ज वदन मति सदन मदन रिपुबाल
ताको मैं बंदन करों जोगिरिजा को
लाल १ दुरित हरन मंगल करन
शरन गुरन की धार करिप्रणामगज
वदन को रचों ग्रंथ सुखदा र २
रवि नारायण नाम जो हमरे श्री
गुरु देव तासप्रसाद कछु पाइके जा
नो कविता भेव ३ कविताई में
करत हों राज धर्म अनुसार शाह्न ग्र
र्थ की भूल कछु कविजन लेहु
सह्मार ४ कवित्त पिंगल नजानो
नहिं जानों रस राजहू को रसिक
पियारी नें बिहारी सों छरन हों
भाषा कोनलेश ना प्रवेश कवि रा
यनमें चार अपमान हूके फलहू
सों डरत हों एकजरा देवा गुरु सू

रज नारा यण के चरण कंज धूर नित्त
सीस पर धरत हों॥पाइकै निदेश श्री
नरेश रण वीर जूकी राजन कै हेत रा
ज नीत ग्रंथकरत हों॥ दोहा सुनै प
ढै विन नीति के राज करत जो भूप
राज अकारथ होत सभ फिरत अंधेरे
कूप ६ राज धर्म अनुसार जो राजा
करत भुवपाल॥रैयत होत सुखैन
सभ राज रहत चिर काल ७ सो अ
ब वरनन करत हों राजधर्म मत पा
इ नीति बिनोद ग्रंथको नाम धरो
सुख दाइ॥८ सोरठा भूपति वर रण
वीर सिंह रहो चिर जीनही जो संतन
की पीर हरत दुष्ट निग्रह करत ९
कबित्त परम पुनीत प्रीत राखै भग
वानहू सों न्याउहू में करत बिभाग
जल खीर को॥देश देश देश हूके ज

नी०
२

न आवत है जाके धाम जैसे जग मैं
देव सरिताके नीर को ॥ रैयत सुखैन
चैन धरत सुचेत याको देषिपरे तेज
जैसो प्रकाश सुनासीर को ॥ तीन तैन
रखु वर कृपाते दश दिशाहू में देश देश
दीसे है प्रताप रणवीर को १०॥ न
वैषा सुरवडे रणमांहि लसै अरि पुं
जनको छिन देत भगाई ॥ रैयत साथ
सुभाइन सो नित बोलत है अतिही नि
पुनाई ॥ सज्जनसों बहुमीत रखे अरु
दुष्टनको नित है दुख दाई ॥ जंबुपुरे
श नरेश जियो जगमांहि रहो जिस
की यश छाई ॥११॥ सुरवडे रन बांक
ने है नित संगरोवे सरदार चडेरे ॥
लाज भरे कुलवान सभे बलवान ब
डे अभिमान भरेरे ॥ ओसिरोवे संग को
ज जिन्हे कब युद्ध में जाइ नमानत

फेरे॥१२॥ज्ञानदया रतनाकर दीन दुखी
नको संकट काटन हारे॥यासम औ
रन सूझतहै निज सज्जन नेह निवारू
न हारे॥श्रीरणवीर मृगाधिप नामहै
भूप गुलाब मृगेश दुलारे॥मान बा
ढाइ कह्यो कविको तिन राज धरम्म
को भाषा सवारे॥१३॥सोरठा॥जंबूको
महाँराज श्रीरणवीर मृगेशहै॥राखन
लाज जहाज रहो रामपर साद तैं॥१४
दोहा॥तीन नैनसों तिन कियो बडो ध
र्मकोनेह॥समसुखदे के यह कह्यो राज
नीति करिदेहु॥१५॥भारतमें भीषम क
ही धर्म राइसों जोइ॥तीन पुरातन नृ
पनकी बरनन करिए सोइ॥१६॥ताकी
सासन पाइकै कीनो नीति बखान॥
सोहित श्री भडवाड वालकै तीननैन
अभिधान॥१७॥संवत विक्रम पांच रुकु

नव शशि सावन मास॥रविवासर ति

नी॰ थि सातमी ग्रंथ रच्यो कविदास॥१८

३ वैशंपायन उवाच सोरठा॥पांडुसुत न

३ रवीर बंधुको जल दान करि॥सुर सरि

ताके तीर बैठे अकुता सकल तिय १९

सौच निवाहन हेत जुरिसभ बाहर न

गरते॥कौरव राइ समेत मास एक मर

जाद करि॥२०॥दोहा॥बैठो जब जल

दान करि तहां युधिष्ठिर राइ॥सिद्ध ब्र

ह्मऋषि मुनि सकल आए तबउहिं

धाइ॥२०॥व्यासदेव नारद सहित देवल

देवस्थान॥कण्व और उहिंठौर तब आ

ए द्विज परधान॥२१॥आएऔर घने त

हां भूपति द्विज सिरमौर॥देखसीस कु

रुराइको बैठे निज निज ठौर॥२२॥सोर

ठा॥भागीरथिके तीर शोक सहित बै

ठो जबै॥धर्मराइ नरवीर समुझावें।

समता हिको॥२३॥दोहा॥करि विचार मुनिजनहूं सों तब नारद हरषाय॥धर्म राइसों कहत है सबनि सुनत इम भाइ॥२४॥नारद उवाच॥सांच कहौं तुमरो या ह भूपति है भुज दंडन को बल भारो॥ याहितें माधव कै परसाद सों जीति लियो धरणी तल सारो॥जानि हमै तुम्र भागसों भूप भयो संग्राम हूंते अब हारो॥मारि अमीतन को सुभ संपद पाइ कै शोक नहीं मन धारो॥२५॥शोक सहित व्याकुल हृदय बंधुन कों पछुतान॥भूप युधिष्ठिर कहत है नारद सों यह बात॥२६॥युधिष्ठिर उवाच॥दोहा॥ जीति लई धरणी सकल कृष्ण बाहुबल पाइ॥द्विजगन के परद तें लै बहु सुरस हाइ॥२७॥तदपि दुःख यह होत है

नी॰ ६

नारद मोमन मांहिं॥राजलोभ नें बीर
हनि धर्म विचारयो नांहि॥हने पूत द्रौ
पदिहूंके अरु अभिमन बलवान॥या
द्यपि जय हमरी भई जानो अजैं समा
न॥२९॥हने पंचाल निहारिके अरु नि
जसुत बल वान॥द्रौपदि के विरलाप।
सुनि मोमन होत हिरान॥३०॥सुनिह
निवो अभिमन्नको मानहिंगे बहु शो
क॥कहा कहेंगे कृस्नको द्वारिका वा
सीलोक॥३१॥चौपई॥और खेद बहु ए
क भयोहै॥जोकुंता मुहि साथ कह्योहै॥
है॥जोयह कर्ण हुतो बलवान॥सोतू
हमरो भ्राताजान॥३२॥छप्पै॥सिंह दर्प
गति धीर सूर सज्जन सावदा यक॥
दुर्योधन के हेत सदा अरिजन कों घा
यक॥बडो भ्रात हमरो तुमजानेंहु सू

रज सुत जोगन्यो॥ह्वै अजान रनमें ह
मैं राज लोभतें सो हन्यो॥शस्त्र अस्त्र प
रवीन अरु दश हजार गजराज बल॥
दग्ध करत सो गातज्यों तूलराशि कों वा
ढो अनल॥३३॥दोहा॥कुंतीको सुत गू
ढ यह नहिं जान्यो मुनिराइ॥मोंहि लि
ए जल दानकें प्रेरत हमरी माइ॥३४॥सो
रठा॥बांधि पिटारी मांहिं गंगाके मधि वा
हमें॥डारि दियो वहि ठांहि पुत्र सकल
गुण योगवह॥३५॥दोहा॥ताको हम जा
नत रहे राधा सुत मुनिराइ॥बड़ो भ्राता
होतो हमें बोलत हमरी माइ॥३६॥सवै
या॥जान्यो नहीं कपि केनहूं ने अरु भी
महूंने कबहूं नहि जान्यो॥जान्यो नहीं
मुनिराइ हमें सह देव हूंने कहूं भ्रातन
मान्यो॥जान्योनहीं वेनकुल हूंने सबहीं
निज सूरज पुत्र कै ठान्यो॥भ्रात बड़ो त

मेरो ह्वतो पूत पृथा हमसों अब सांच बा-
नी॰ षान्यो ३७॥दोहा॥बैहमको जानत ह्वतो
५ पांडव हैं मम भ्रात॥हमे नजान्यो सांच सु
5 न मुनि वर हमरी बात॥३८॥चौपई॥सुनी
हमै इक बात पुरानी॥कर्ण साथ जो पृथा
बषानी॥हमरो मेल करावन हेत॥नाछि
ग जाइ कह्यो करि हेत॥दोहा॥पांडु ज्यों
मम सुत हैं त्यों सुत जानों मोहि॥रनमें उ
नको राषियें यह दीजें बर मोहि॥सोरठा॥
यों सुनि करन रिसाय नहिं मान्यो ताको
कह्यो॥नजों सुयोधन राइ अपयश ह
मरो होयगो॥४१॥कर्ण उवाच॥दोहा॥
करौं युधिष्ठिर राइसों रणमें आज समोध
अर्जुन सों यह डरत है मोहि कहें सम-
बोध॥४२॥जीति अरजुन कृस्नकों अपनो
यश भुअ रान॥पाछे धर्म नरेश सों
करौं मेल हित मान॥४३॥सून पूत कै व

चन सुनि कीनो एथा विचार॥ कह्यो
अरजुन जीतिकै राषहु मोसुत चार॥
४४॥ कुंता को भय भीत लषि बोल्यो
कर्ण उदार॥ एक अरजुन जीतिकै रा
षों तुम्र सुत चार॥ ४५॥ सुनिए जननी
सोच तुम्र पांच एत बल वान॥ कै अर्जु
न बिन होंहिंगे कै अकर्न जिय जान॥
४६ एथा सुतन के नेह सों बोल्यो बच
न उदार॥ कर्ण तोहि बिन कोर नहिं
उन कों रारवन हार॥ ४७॥ यों समुझाइ
करन्न कों गई एथा निज गेह॥ सोका
पिकेत हूंने हन्यो भ्राता अपनो एह॥
४८॥ एथा कह्यो कछु ना भयो अरु मो
त्र करन्न कोनांहि॥ सूरबीर अति धनु
षधर हन्यो हमै रन मांहि॥ ४९॥ प्रथ
म हमै जान्यो नहीं कर्ण आपनो भ्रा
त॥ पाछें अब जान्यो हमे सुनि कुंता

नी॰ ६ 6

कीवात॥५०॥सोर्ठा॥तातें यह मुनि राय।
विरद बडो हमको भयो॥अरजुन करी
सहाइ लै बास वरण जीतिहूं॥५१॥दो
हा॥द्यूत सभामें कोरव विनि कहे वचन
जो क्रूर॥सोमन बाढ्यो क्रोधजो भयो
करण लखि दूर॥५२॥द्यूत सभामें बै
ठिकै दुरयोधन हितमान॥कटुक वच
न जो तिन कहे हमको अति दुखदा
न॥५३॥क्रोधहोत सभहर ही ताके
पाद निहारि॥कुंताके समजानि कै लख्यु
न भलो विचारि॥५४॥कारन यह जान्यो
नहीं करि करि बडे विचार॥क्योंकरि पृ
थिवीने ग्रस्यो ताको रथ निरधार॥५५॥
सांचकहो मुनि राइ तुम किन दीनो य
शाप॥चाह हों में सभ सुन्यो जानत
हो तुम आप॥५६॥योंविध धर्मनरेश
हूं पूछ्यो जब मुनि राय॥नीतिविनोद

ग्रंथको भयो सँपूरन ध्याइ॥५०॥इतिश्री
महा भारते शांति पर्व णि राज धर्म भा
षायां कवि देव दत्तानु जनेंदरामात्मज।
शिवराम तनूज त्रिलोचन विरचिते नीति
विनोदे प्रथमो ध्यायः १॥ सोरठा एको
जब बहुभांत नारद मुनि यों कहत है॥
सांच सुनो तुम तात कर्णशाप जैसेंभ
यो॥दोहा॥यथायोग तुम कहत हो स
त्य भूप जिय जान॥कोऊ नंही रन में
बडो अरजुन कृष्ण समान॥२॥देवनसें
अति गुमजो सुनिए पांडव राइ॥यथा
योग वरनन करों सोइति हास बनाइ॥३
चौपई॥ज्यों तजी सुरलोक सिधावें॥ण॥
सुपुन ह्वै शुभ गति पावें॥यों देवन को
लोभ दवानल॥कन्यागर्भ भयो अतिचा
पल॥४॥दोहा॥सोबालक अति तेज यु
त भयोसूतसुत आइ॥तिन पुनि द्रोन
हूसें पढ्यो धनुष वेद सुख दाइ॥६

नी॰ ७

कवित्त॥देषि कै दनाई वह नकुल सहदे
वनूकी भीम कपिकेत को पराक्रम वि
चास्योहै॥देषि सब दाई अरु रैयत स
बिन देषि क्रोध उपजायो है॥माधव अ
र्जुन को देषि मीत भाव बडो राजा दु
र्योधन सों नेह जिन धार्योहै॥तुमहूं
सों कीनो है विरोध मति वासर ही दैव
ओ स्वभावहूं तें असो मन पार्यो है॥
सवैया॥७॥देषि अरज्जुन को धनुष वे
द पढ्यो सब योधन सों अधिका यो
॥द्रोन अचारज के ढिग जाइ करन्न
तबै यह बैन सुनायो॥चाहत हों द्वि
ज ब्राह्मन अस्त्रको भेद रहस्य समेत
सुहायो॥मैं करिहों कपि केतहूं सों सं
ग्राम भलें हमरो मन भायो॥७॥दो
हा॥नेह बडो तुम करन हो शिष्य पुत
सम जान॥तुमरे ही परस्पर तें होइन
हमरी हान॥८॥यों सुनि बैन करन्न के

अरजन को हित मान॥कुटिल भाव
तिहिं जानिकै द्रौन कही यह बानि॥
९॥चौपई॥ब्रह्म अस्त्रको ब्राह्मन जा
ने॥जोकोउ अपनो धर्म पछाने॥छ
त्री होइ तपस्वी जोइ॥और नहीं जाने
तिहिं कोइ॥१०॥दोहा॥योंसुन बैन द्रौ
नके करि प्रणाम रवि जात॥परसु रा
म ढिग जाइकै कहन लग्यो यह बा
त॥११॥ब्राह्मन हों मह्वँ राजमैं राषहु
हमरो मान॥गोत नाम सभ पूछिकै
राम कियो सनमान॥१२॥सवैया॥राम
सों पाइकै मान बडो रवि पूत प्रसन्न
भयोमनमें॥गंध्रव यक्ष निशा चर दे
वन सों तिहिं नेह भयो वनमें॥जो ध
नु वेदको भेद बडो सभधारि लियो ।
अपने तनमें॥नह मीत भई रवि पूत
हुंकी अति देव निशा चर कैगनमें॥१३

नी॰ ८

दोहा॥खड्ग चर्म गहि हाथमें विचरत
वारथिंतीर॥एकाकी अभिमानसों सूत
पूत नर वीर॥१४॥अग्नि होत्र में रत हु
तो इक द्विज वर उहिं ठांहि॥ताहि धेनु
अज्ञान तें हनी करी बनमांहि॥१५॥
ताब्राह्मन सों कहत है सूत पूत यहबा
त॥कै अजान हमसों भयो द्विज वर ए
बड़ पात॥१६॥मूरख भावहुं ते हनी।
मुनि वर तुमरी धेन॥करि करुणा क
रिए छमा सुनि सुनि हमरे बैन॥१७
यों सुनि रविसुत के वचन कोप्यो द्वि
ज मन मांहि॥यो अपराध कियो तुम्हें
पावहि सो फल ताहि॥१८॥वैर याहि
सेंग करत हो करि करि मन अभिमा
न॥युद्ध करन फुनि ताहि संग भूमि
गमहु तुम्ह यान॥१९॥अस्यो भूमि र
थ जानि कै पाव तिहारो याहि॥जा।

इनीच यहि ठौर नें काटहिं गो शिरतो
हि॥२०॥हनी हमारी धेनु ज्यों ह्वैकै तो
हिं अचेत॥त्योंही तुमरो शत्रु शिरडार
हिंगो कट खेत॥२१॥जानि शाप द्विज व
रहू को ह्वै रवि सुत अति दीन॥गाय
वसन धन रतन दै भयो तांहि पदली
न॥२२॥ताहि देखि मुनि वर कह्यो कर्ण
सूर शिर मौर॥कह्यो हमारो झूठ नहि
करहु काम कछु और॥२३॥दीन भयो
भयभीत ह्वै परशु राम ढिग जाइ॥सि
मरत मुनि वर शाप को भयो हमरो
ध्याय॥२४॥इति श्री महा भारते शांति
पर्वणि राज धर्म भाषायां कवि देव द
त्ता नुज नंद रामात्मज शिव राम तनू
जु त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे द्वि
तीयो ध्यायः २॥नारदउवाच॥दोहा॥
द्विय थिरता भीन अरु कर्ण बाहु बा

नी- ४
९

ल देष॥ भृगु सुत कै मनमैं नहां आनं
द बड्यो बिसेष॥१॥ सवैया॥ जोयनु वे
द बडो भृगुपूत इनें सभ जाहि सिषा
ये॥ पाइ प्रसाद बडो गुरु देवसों सूरज
के सुत आनंद पायो॥ एक समै संगलै
ताहि को निज आसन नें मुनि हूर सि
धायो॥ सोयो करन्न नितंब इंथै तब रा
मइंके मन आनंद छायो॥२॥ दोहा॥
विद युक्त उप वास सें सोयो मुनि उहिं
ठोर॥ सूरज सुत कै निकट तब आयो
कीटक दोर॥३॥ उनि मूषक कीनो न
हो कर्णाइं को उर भेद॥ नींद भंग ला
षि गुरुन को नेकुन मान्यो षिद॥४॥
ताके उरभेदन इंनें चल्यो रुधिर को
पूर॥ तास परस कछु जानि कै नींद भ
ई तब दूर॥५॥ रवि सुत कें भय भीत
है कहन लग्यो यह बात॥ चल्यो रुधि

र किहिं हेत यह मलिन भयो ममगा
त॥८॥यथा योग भय दूर करि साच
कहो तुमसूर॥उरू भेदन कैसें भयो
चल्यो रुधिर को पूर॥७॥यों सुनि क
र्ण झूंने कह्यो इन मूषक मुनि राइ
॥उरुभेदन हमरो कियो में राख्योत
अभाइ॥८॥परमु राम झूंने लख्योकी
ट बराह समान॥अष्ट पाद तीछन र
दन सूचिरोम तिहि जान॥९॥घने रोम
तिहिं गातमें नाम अलर्क बषान॥
राम झूंने देख्यो जबै कीटक तजे परा
न॥१०॥भीजिरह्यो उहिं रुधिर में अचि
रज बडो निहार॥काम रूप विकराल
अति ठाढो गगन मंझार॥११॥रक्ता
केर राक्षस भयो घन वाहन तनश्या
म॥कहन लग्यो मुनि राइको जाऊं
अपने धाम॥१२॥तुम्हें छुरायो नरक
कनें हो मुनिवर निरधार॥मंगल तुम

नी॰ १०

रो होइगो किये बडो उपकार॥ यों सु
नि ताको कहत है परसु राम यह बा
त॥ कैसें नरक कुंमें परयो सांच कहो
यह बात॥१४॥ यों मुनि के तब कहत
है दंश नाम अति चोर॥ पाछे कृत यु
गमें हुतो मैं राक्षस घोर मोर॥१५॥
भृगु समान वेदूपढै हरी तिया फुनि
ताहि॥ चोर शाप तिनहू दियो परयो
तुरत भुअ मांहिं॥१६॥ कहन लग्यो।
अति कोपतें भृगु मुनि वर उहि ठो
र॥ मूत मेद भोजन करत जाहु नर
ककी ओर॥१७॥ फुनि करुणा कर उ
नि कह्यो परसु राम तिग जाइ॥
शाप अंत तुअ होइ गो जाहु तुरत
सुख पाइ॥१८॥ सोच भयो ताको क
ह्यो मैंजान्यो सभ भेद॥ मुनिवर तु
अ परसाद तें हर किए सभ खेद॥
नारद उवाच॥ सोरठा॥ यों कहि करि।

10

परनाम परसु रामको असुर वह॥१ग
यो आपने धाम खेद सकल छिन दू
र करि॥२०॥दोहा॥तांहि गए मुनि वर
हूने कोप अरुन करिनैन॥कह्यो कर्ण
को सांच कहु ब्राह्मन मानों मैंन॥२१॥
धीरज अरु हठ योगतें जानों क्षत्रिय
तोहि॥साच कहो तुमकौन हो खेद भ
यो अति मोहि॥२२॥सोरठा॥रामपहूं ते।
भय भीतह्वै तब कर्ण हूंने कह्यो॥करि
ए हमसों प्रीत मैं राधा सुत कर्णहों
॥२३॥वेद पठा वन हार गुरु पिता य
ह होतहै॥यों मैंकियो विचार मृगु गो
न अपनो कह्यो॥२४॥हसत हसत य
ह बात परसु राम अति कोपतें॥कांप
न लषि तिहिं गात रवि सुतको यों क
हतहै॥२५॥अस्त्र लोभतें मूठ यातें कू
वकहो तुहों॥ब्रह्म अस्त्र यह क्रूर ना

नी॰
११

नें नमको नाफुरें॥२८॥ब्रह्म अस्त्र यह
क्रूर छल करिकें पायो तुमें॥लरन श
त्रुसों और मरन समें कोंा हूं नफुरे॥२९
बिन ब्राह्मन कोऊ और ब्रह्म अस्त्र
छोरिन सकें॥जाहू आपनी ओर ह्योंतु
मरो कछु काम नहिं॥३०॥तुम्ह समान
कोउ और संगार में नहिं होइगो॥यों।
सुनिकें उहिं ओर करि प्रनाम ताको च
ल्यो॥३१॥नारदो वाच॥दोहा॥ तब र
बि सुनहूं योंकह्यो दुर्योधन छिमा।
जाइ॥ब्रह्म अस्त्र पायो हमें भयो नी
सरो ध्याय॥३२॥इति श्री महाभारते
शांति पर्वाणि राज धर्म भाषायां क
वि देव दत्तानुज नंदरामात्मज शिवरा
म तत्सुत त्रिलोचन विरचिते नीतिवि
नोदे तृतीयो ध्यायः॥३॥वैशं पायना।
उवाच॥सवैया॥पाइवडो यजुवेद को

भेद करन सुयोधन केढिग आयो ॥ताहि को देषि कै कौरव राइ ह्वैकै मनमैं अति आनंद पायो॥देश कलिं गहूंमें इक भूपति चित्र अंगद ना मसुहायो॥याग स्वयंबर आन रच्यो तिन कन्यको अतिही सुख दायो॥२
दोहा॥ताहि स्वयंबर को चले देश दे शके भूप॥कन्याकी अभिलाष करि नृप पुर नगर अनूप॥३॥एकत भए नरेश सम सुनि दुर्योधन राय॥गयो आपने यान चढि लैके करण सहाइ ॥३॥चौपई॥जरासंध शिशुपाल नरेश भीषम चक्कर नील सुवेश॥धन्वा हठ विक्रम भूप॥रुक्मी वीर मृगाल अनूप॥४॥दोहा॥पुरब अरु दछनहू के पश्चिम नृप शिर मौर आए ठौर चले तहा बैठे निज निज

ठौर॥५॥सवैया॥सीस जराउ जरे सिर
पेच बिराजत गात कवच्च लगाए॥
बांधि कै खग्ग निखंग सु वामहिं भू
षनकी छबि सों तनछाए॥केसरि
ज्यों मद मत्त सभै नृप भानु समान
हैं तेज सुहाए॥यों विध देस विदेस
स्वयं बरमें उहिं ठौर सिधाए॥६॥दोहा
आई तब नृप कन्यका भूप स्वयंबर।
माहिं॥नाम गोत सब नृपन के लगी।
सुनावन तांहि॥७॥देषति भूपन को
चली दुर्योधन को छोरि॥सहित स
को अपमान तब अपनो कुरु सिर
मोर॥८॥सुर सरि सुत अरु द्रोनको
देषि सुयोधन रार॥भूपन को अप।
मान करि रथमे लई बढाइ॥९॥ता।
पाछें रथ चढि चल्यो करण सूर सि
मोर॥खड्ग हथेल सुधारि कै गाजत

ज्यों बन घोर॥१८ नारद उवाच॥ सवैया
यों लखि भूप सुयोधनको नव रा
ज कुमार सभै उठि धाय॥ बाँधि क
वच्च सस्त्रन हैं रथ गाजत केहर
ज्यों हरखाय॥ जाइ करन्न सुयोधन
के छिग कोपकै मों अति ही मुरझा
य॥ छोरत बानन की बरषा घनु पा
वस मेंजनु मेघ सुहाय॥ आवत तिनको
देखि कै एक एक सर छोरि॥ धनुषा
बान छिनमे कटे कर्ण सूर सिर मौर
॥२२॥ सवैया॥ सर छिन्न भए धनु दे
खि परें इक चाप उठा बन है रनमें॥
इक बान चला बन दौरत हैं करिसो
र मृगा थिप ज्यों बनमें॥ सर लाग
वसें रवि एन तजे सभ जाइ लगे
उन के तनमें॥ हन सूत पताक किा
प छिनमें सभभूप निरास भए म

नमें १३॥एक कहैं द्वैकह्यो है करन्न
खिरो रह्यु एक कहैं मन वारे॥एक क
नी· १३ 13 हैं पकरो इक्कु मारो एक कहैं लर सा
थ हमारे॥औेर कहैं सिगरेई विरोध
को मूल यही इनहीं समझारे॥ताछि
नभूप करन्नको राजकुमारन हूं या
हबैन उचारे॥१४॥भीत नवे उहिं ठौर॥
नरेशहिं भूपकरन्नकी ओर निहारें॥
नाहि सराहत हैं सबही लषि बान
चलै रनमें अति घोरे॥मोहू भरे अब
भागहु जू अब भागहु जू यह बैन
उचारें॥भारनें भागि सकें नहिं ताछि
न साक सभै धरणी तल डोरें॥१४॥
नारद उवाच॥सोरठा॥तुरग रथम गहि
हाथ जाहु जाहु बोलन सभै॥पाइ
काण परताप भागि गए रनछोरि
कै॥१५॥तुरत सुयोधन राय लैकैक

णी महाइ तब॥ गहि कन्या हरषाइ
नागर नगर आयो निशा॥ २६॥ इतिश्री
महा भारते शांति पर्वणि राज धर्म
भाषायां कवि देव दत्तानुज नेद रामा
त्मज शिवराम तनसूनु त्रिलोचन विर
चिते नीति विनोदे चतुर्थो ध्यायः ४
वैशं पायन उवाच॥ सुनि बाछ्यो अ
ति कर्ण बल जरा संध महा राज॥
ताहि बुलावत चितमें हैरथ संगर
काज॥ ५॥ सवैया॥ आपस में रन आ
नि अरे तब मागधसूरज एत विसाय
छोरत हैं हथियार घने दोऊ लागत
नहें उहिं तौर सुहाय॥ चाप कटे हें
उहूं उहूंनिके छिन्न किए शर भू
मि गिराय॥ यों विधमाग ध सूरज ए
न जुरे रन मांहि हटें न हटाय॥ १॥ ना
रद उवाच॥ कवित्त॥ यों विधसों भूप

नौ॰
२५

जरासंध महाराज नव सूत सुत ऊपर
सिधायो कोप करिकै॥ बान अनियारे
अति छोरत अनेक भांत सिंह जनु गा
जे बर वारण को हरिकैं॥ लाग्यो रन
घोर चहुं ओर अति सोर भयो मागध
करन्न डाठे डाठे चाप धरिकै॥ देखन
लगेहैं सूर बीर धरि धीर खरे भीरु ज
न भागि गए संगर तें डरिकै॥३॥ दोहा
छिन्न खरु दोनो नवै बाहु युद्ध अति
घोर॥ लगे करन अभिमान सों करिक
रि केहर घोर॥४॥ भुज कंटक संग्राम।
सों रनमें कर्ण उदार॥ जरासंधतन सों।
धिनव करी छिन कु महिं छार॥५॥ स
वैया॥ पीडित यों अपने तन देषि कर
नहुं सों यह बैन कह्योहै॥ देषि बडो
तुमरो भुज बीरज मोमन मांहिं अनंद
भयोहै॥ हैपर सत्र भलें रवि पूतको

मालनी नगर राज दियोहै॥भूप भा
यो उहि देशन को रवि सुत के चित्त
अनंद हुयोहै॥६॥दोहा॥पालन चंपा
नगर को कर्ण सूर शिर नाज॥दियो
सुयोधन ताहि को जानत हो महा रा
ज॥७॥नारद उवाच॥चाहत तुमरे हे
तको सुनिए धर्म नरेश॥मांग लिए
रवि सुतसों कुंडल कवच सुरेश॥८॥
है माया मोहित तबे कर्ण सूर शि
र मौर॥दिव्य कवच कुंडल सहित।
दिए तुरतउनि छोर॥९॥सवैया॥एक
तो रामको शाप भयो नृप शाल्य हूं
ने बधतेज कियो है॥जोंपुक हून कि
यो अतिहीं छल मात हुको बरदा।
नदियो है॥बीर रथाति रथी गन ना
महिं भीषमको अपमान कियोहै॥
यों विध सूरज के सुतको कपिकेत

नी॰
१५
15

ह्मने पर लोक दियोहै॥९॥पारथ नाक
पुरेशाय मेंघा जलेश ह्मसें बरदान लि
ए हैं॥जो यनु वेद को भेद भली बि
ध गोतम द्रोंन महेश दिए हैं॥तातें क
रन ह्मया रनमें बहु बीरन को जिन ते
ज छिए हैं॥ताहिको शोक नहीं करि
ए रनमें जिन प्रान पयान दिए हैं॥१०
इति श्री महा भारते शांति पर्वणि रा
ज धर्म भाषायां कवि देव दत्तानुज
नेद रामात्मज शिव राम तत्सूनु त्रि
लो चन विर चिते नीति विनो दे पं
चमो ध्यायः॥५॥वैशं पायनउवाच॥
सवैया॥यौंकहि भूपति सों मुनि ना
रद ताहि समै चुप ह्वैके रह्यो है॥
तातें अनेक विचार किए नृपके मन
में अति शोक भयोहै॥वेद सोंव्याकु
ल भूपति को लखि यौंविध ताहिकि

मोह कह्योहै॥शोक नंही कीए रवि
सुतको मैंसुन याहिको भेद लह्योहै
२ कृष्णउवाच॥कह्यो दिवाकर याहि
को सुनो सकल यह सुत॥नेकुनमा
न्यो कर्ण तब फसे कालके सूत २
सवैया॥वाहन मेल बडो तुमरो र
वि आप करन्न हूं कै ढिग आयो॥
कीने उपदेश अनेक तबै उनि जानि
हिये हितमें समुझायो॥सूरज सों प
नि कूल रह्यो फुनि मेरो कह्यो मा
नमें न बसायो॥मोहु को छाडि क
र्न्नहूंने दुर्योधन सों रन मंत्र पकायो॥३॥दोहा॥एष्या बचन सुनि भूप
कों ढस्यो हगन नें नीर॥कहन ल
ग्यो फुनि ताहि को शोक सहित न
रवीर॥तुमरो गूढ स्वभाव लषि ता
नें मोमन मांहिं॥विद भयो यों कहि

नी॰ २५

तेंबे दियो शाप नृप ताहि॥५॥ सकल
जगत जोतिष बसें तिनके यही सुभा
इ॥गूढ बात कछु ना थेरं कह्यो सक
ट इम भाय॥६॥वैशंपायन उवाच॥यों
कहि नानी मीन बध करि समरन म
हां राज॥शोक बडो मनमें कियो ग
न्यो अकारथ राज॥७॥धूम सहित
पावक मनो देषि परत नर बीर॥ह्वै
उदास निज राज तें धरनन चित महिं
धीर॥८॥शोक सहित व्याकुल हृदय
कर्णींद्र को पञ्छु तात॥ग्ररन डोर निद्रा
विकै कहन लग्यो यह बात॥९॥युधि
ष्टिर उवाच॥भिक्षाटन कीनो हमें देस वि
देसन मांहि॥तातें मीन समाज हनि दु
र्गति पावें नांहि॥१०॥सवैया॥ मीनकि
ए धनहीन हमें अरि जान सभै धन
हरन कीने॥आपने आपसों आपकों।

मारिकै कौन धरम्म हूंके फललीने॥
तेते धरम्म हूंको धिगहै धिगहै बल पौ
रुष दोषन चीन्है।क्रोधहूं कोधिग है हम
याहितें आपद मांहि परे भय भीने॥११॥
दोहा॥ शम दम शौच क्षमा दया त्याग।
धर्म यह पांच॥सदा रहत वन वासमें स
निए अर्जुन सांच॥१२॥मान दंभ अरु
लोभ करि फसे मोहकै जाल॥राजलो
भकीनो हमें तातें भये बिहाल॥जीति
लई धरणी सकल मारिबने नरनाह॥
तीन लोकमें राज करि तदपि न होत उ
छाह॥१४॥तजिभूपन को नेह सम मारि
लिए निज मीत॥राज लोभ कीनो हमें
भई आज बिपरीत॥१५॥तजिए धरनी
तल सकल धन संपद करि प्रीत॥पसु
वाहन तजि ए सबै तेकुन तजिए मी
त॥१६॥काम हर्ष अरु क्रोध पुन होइ
हमे निज मीत॥धर्म राज के नगर में

नी॰
१९

भेजि दिए तजि प्रीत॥१७॥ मात पिता बा
हत रहैं लच्छन युत संतान॥ ब्रह्मचर्य्य
तप योग करि तातें होत सुजान॥१८॥
देवन की पूजा किए करि ब्रत मंगल
चार॥ जननी धारत गर्भ तब रहत सदा
निर धार॥१९॥ यों आशा धारति रहैं ज
गमें जननी नाहि॥ जन्म लिए फल हो
इगो सोफल पायोनांहि॥२०॥ भए मनो
रथ विफल सभ तिनके सुन कपिकेत
॥ हने पूत उनके हमें परे प्रान तजि बि
ना॥२१॥ सवैया॥ कपिकेत सुनो उन भूप
नके अब मात पिता पछुतावत हैं॥ का
ए आपनो लीने बिना उनके पितृ देव
सभै बिलला वतहैं॥ तजि राजन के स
भ भोग मुए नित सोमन खेद बढा व
तहैं॥ सुनि कौरव और पंचाल हने आ
पवाद बडो जन गावत हैं॥२२॥ यों वि
ध सेन विनाश हुमे रनमें हम कारन।

17

आन बने हैं॥भूपसुयोधन के कुल
सों सब देश विदेश नरेश हने हैं॥यू
नमें कूट कह्यो हम सों अरु बोल स
भामें कठोर भनेहैं॥नाकोउ काज स
र्यो हमरो अरु नाकछु काम बने उ
नकेहैं॥नहि पंडित लोगन के उपदेश
हिं मीतन के उप देशन कीने॥नजि मं
त्रिन के उपदेश सबै अरु बिप्रन कोक
छु दानन दीने॥हमरेई विरोध हूं सों
दुष पावत एतन के कछु भावन लीने
लषि संपद पहमरी कुरु राइके ह्वबै
अंग भय भय भीने॥२८॥भूप सुयो ध
नके अति नेह सों कौरव राइको खेद
भयोहै॥जोकछु आइ कह्यो शकुनी
नृप साच प जानि के भेव लह्यो है॥
भीषम को नसुन्यो कोऊ औरको जो
विदुरा दिक बैन कह्योहै॥याहितें शो
क भयो हमरे मन एकपि केतन जात
सह्योहै॥२९॥लोभकियो अति भूप सु

नी॰ १८ 18

योधन तातें हने अपने सम भाई॥ह
र कियो जगमें अपनो यश ज्योंपर
लोकहू कीगति पाई॥ यों विध कौन ।
कहै निजमीत कों बोल कठोर सुने य
डराई॥मानि विरोध बडो हमसों तिन
आन रची अति घोर लराई॥२५॥दोहा
भूप सुयोधन के लिये मार्यो अपनो
आप॥भीषम द्रोन हने जहां कियो घोर
अतिपाप॥२६॥अपनेई अपराध सों कि
यो आपनो नाश॥ज्योंदिनेश निज कि
रनसें शोषत है जल राश॥२७॥युधि
ष्ठिरउवाच॥सवैया॥कारण सकल नाश
हुको तिन आप सुयोधन भूप बना
यो॥शोचत है कुरु राइ बडो अब ला
गत नेक कछून सुहायो॥मारि घनेस
र दार कुटुंब के मामन बाछन खेद सु
पायो॥तातें अरजुन में करिहों उपचार
जो वेदनि मांहि दिखायो॥दान करों त
प ध्यान करों अरु तीरथ थान करों

धरणीमें॥संपद कोकरि त्याग सभै प
रहों अब सिद्धन की शरनी में॥मौनव्र
तको धारनहों छिन हरकरों सब
पाप अनीमें॥लेअनु शासन प तुमरी
कपि केत करों तप जाइ बनीमें॥२९॥
दोहा॥राजसकल करि बोचहै तुमहूं को
कपि केत॥हमरी कछु अभि लाष न
हिं सत्यजान करि हेत॥३०॥वैशंपायन
उवाच॥सोरठा॥याकहि धर्म नरेश अ
र्जुन सों चुप ह्वैरह्यो॥हाथ जोरि
गुड केश धर्मराइसों कहत है॥३१॥
इतिश्री महा भारते शांति पर्वणि रा
ज धर्म भाषायां कवि देव दत्तानुज नं
द रामात्मज शिव राम तत्सूनु त्रिलो
चन विरचिते नीति विनोदे षष्ठो ध्या
यः॥६॥सोरठा॥हसत हसत कपि के
तु चाहैं उत्तर कोनबै॥क्रोध बढा
वत चेतयों भूपतिसों कहत है॥१॥सोर

नी॰ १९

19

वा॥जानि हमैं तुमैं जिय कीनृप चाहत
हो बनवासहि नीको॥जो अप गय किय
उनहूं सभकैं कहि भूल गए तुमही
कौं॥मोरे हमैं सरदार कुरुनकै भावकि
यो सिगरो तुम्र जीको॥सो तुम जात क
हा बनको अब होत बडो हमरो मन
फीको॥३॥अर्जुनोवाच॥ सवैय्या॥ हूजें
उदास न राजहूं तें अपनें मन धीरज ही
धरियें जू॥जीति ह्वैनें अरि जातसभै अ
बराज बडो अपनो करियें जू॥कौंयहा
भूप हूने रनमें करि कोप यही मनमें
धरियें जू॥कायर लोगनि को मगक्को
रिकें शोक पयो निधि को तरियें जू॥
४॥दोहा॥किय काज सिगरै तुम्हैं हूने
ह्वैने अरि जात॥है प्रसिद्ध जगमें भूप
ति कैं पञ्च तात॥५॥जो अभाग जन।
जगत में धनसंपद सों हीन॥सो भिक्षा
टन करत है होत सबन में दीन॥६॥तु

म कों चाहत हो अबै भिताटन महराज ऊंचे कुलमें जन्मले नेकुन करो अका ज॥६॥जीति लई धरनी सकल किय का ज बहु भांत॥धर्म अर्थ तजि भूपतम कों अब बनकोजात॥७॥सवैया॥संप दसों सुख होत सदा बिनसंपद ना क छु काज सरें हैं॥संपद सों सभ नेह ब ढावत संपद सों सभ काज करेहें॥संप ददेषि अमीत सभे भयभीत ह्वै आन शरन्न परेहैं॥सोतुम संपद को तजि भू पति कों मनमें बन वास धरेहैं॥दोहा नहुष भूप ह्वैने कह्या पाछे बचन उ दार॥धिगजी बन संपद बिना धिग धि ग सब संसार॥९॥जागर संपद होत है ताको कहें कुलीन॥पंडित सभताको कहें ताको कहे प्रवीन॥१०॥धर्मलोक जोकहत हैं बिन धन धर्मन होइ॥वा हीधर्मको हरत है जिनधन लीनो चोर

नी॰
२०

॥११॥ हरी हमारी संपदा भूप सुयोधन दार ॥ कैंा भूपति करिए छमा हमरो यही सु भार ॥१२॥ छप्पै ॥ संपद सों कुल होत अर्थ अरु धर्म बढावत ॥ संपद सों अभिमान हर्ष तन तेज सुहावत ॥ बिन संपद यह ॥ लोक नाहि पर लोक सुहावै ॥ बिनसंप द संसार सकल जन बिदहि पावै ॥ राज सकल अब कीजिए त्याग नहिं ताको करो ॥ तव धर्महू में कस्यो नाहि भूप म नमें धरो ॥१३॥ दोहा ॥ याके घर हय रथ नही अरु धन संपद हीन ॥ ताहीको कृ पण कहत हैं ताकुश है तन छीन ॥१४॥ चैापई ॥ सुनिए भूपति वचन हमारे ॥ दे वनहू कैंा असुर संहारे ॥ भ्रात हैं आप स माही ॥ क्योंकरि असुर हने रन मांही ॥१५॥ जोधन औरन को नहिं हरिए ॥ कैंा हू धर्म पुरातन करिए ॥ वेद पुरान सकल यों कहै ॥ धर्म वंत मानुष सुख

लैहै॥करि यतन पर धनको हरियै॥
यज्ञ दान तासों करियै॥देवनि द्रोह कि
य अतिभारे॥तातें बहु विध असुर सें
हारे॥१७॥तातें राज कियो सुरलोक
हरि असुरन के सिगरे शोक॥क्षत्रिन
की यह रीत पुरातन॥हरि परधन करि
य निज शासन॥१८॥विन अधरम पर
धनहिं पावैं॥येंविध पंडित लोक सु
नावैं॥याविधि भूप पृथ्वीकों लहैं॥जी
ति ताहि कों मेरीक है॥१९॥ऐसे भूपा
भए अति भारे॥करि करि याग सुर लो
क सिधारे॥तातें भूपति विदन करियै
धर्म पुरातन ही नित चरियै॥२०॥अर
जुनउवाच॥ज्यों सागर ते निरि जल वि
चरत है भुम मांहि॥त्यों भूपन को स
कल धन विचरत है जग मांहि॥२१॥
कवित्त प्रथम मही प भूप भई है द
लीपजू की तातें नृग नहुष दोनो भूप

नी॰
२२

भय भारेजू॥अंबरीष मान धाता भूप बड
भागी हुते कीने बहु याग स्वरलोक में।
सिधारे जू॥आजतो तिहारी महूं राज भ
ई जगत सारी कीजे बहु याग जो जो वे
दनि उचारेजू॥हूजें ना उदास प्राण की
जें हत शोषन की राजन के प्रकाज बा
र बार निहारेजू॥२४॥इति श्रीमहा भा
रते शांति पर्वणि राजधर्मभाषायां क
वि देव दत्तानुज नंदरामा त्मज शिवरा
मतनूज त्रिलोचन विरचिते नीतिवि
नोदे सप्तमो ध्यायः॥७॥वैशंपायनउ
वाच॥दोहा॥सुनि सुनि अरजुन के व
चन भूप युधिष्ठिर राइ॥कहन लग्यो
फनि ताहि को सबनि सुनत इमभाइ॥
१॥एक चित्त ह्वै धैयरी सुनिए हमरो
बैन॥तातें जो तुम कहत हो सो करि।
हों धरि चैन॥२॥जो कछु तुव धरम
में कहें पुराने लोक॥सो कर हों तुम्र।

हेतसौं तजि बनके सम भोग॥३॥यु
धिष्ठिरउवाच॥सोरठा॥त्यागीको सम
कोइ भलो पंथजो कहत हैं॥सोतुम
पूछो मोहि अथवा विन पूछे कहौं
॥४॥सवैया॥कपिकेत सुनो तजि भो
गसबै बनवास बडो अबमें करहूं
करिभोजन पे फल मूलन कै मृग
राजन कै संग चरहौं॥तन चीर धरौं
भुज पातन के ब्रत औार अनेक भ
लें धरहूं॥बनमें करिकै तप यों वि
धिसों अब पाप पयोनिधि को तर
हों॥५॥दोहा॥ह्वै प्रसन्न जो करत हैं
खमृग बन आराव॥तिनको सुनि सु
निसुनि कै भलें करहों अपनो भाव
॥६॥सवैया॥ह्वै कै इकंत फिरौं बनमें
पितृ देवन को सन मानहिं ठानों॥
जोकछु रीत कही वन वासकी ताहि
करों मन धीरज आनों॥वृछन केढि
ग वास करों अरु मोन धरम्म हं को।

नी-
२२

नित जानो॥ धूलिनतें अवधूत रहो
मनमें कछु शोक अशोक नमानो
॥७॥ हरकरों सभनेह की बातकों
नाकछुलोभ करों मनमें॥ ईश्वर को
इक ध्यान करों जडह्वै परसन्न फिरो
बनमें॥ इंद्रिनकी थिरता धरहो मा
मताकरहों सिगरे जनमें॥ नाकोउके
संग हास करों अरु नाकछु विद थ
रों तन में॥८॥ सोरठा॥ देह भेद अभि
मान क्रोधलोभ सभ हर करि॥ सा
च अरजुन जान ह्वै प्रसन्न बनमें।
फिरो॥९॥ दोहा॥ अस्तुति को कछुह
र्ष नहि नहिं कछु निंदा शोक॥ ह्वै
निरास तजि देह को पावो सुर पा
ति लोक॥१०॥ सवैया॥ सांच कहों।
तुम सों यह पारथ में करहो बन।
वास पयानो॥ नाअभि लाष करों
कछु राजको सिद्धन कोमत ही नि
त ठानो॥ नाहि विरोध करों काउके

मंग नाकछु नेहकी बखानें॥ यों बि
धसों बनमें करिहों नप पारथ पत्र
म रूठन जानें॥ १२॥ दोहा॥ निर मरजा
द नहीं करों मिलाको अब हार॥ पा
क दोइ अर तीन घर मांगों मैं निरधा
र॥ करी दूर अभि लाष सभ विचरत
हैं बन मांहि॥ लाभ अलाभ विचार
कछु मन महिं आनें नांहि॥ १३॥
जीवन को अर मरन को हर्ष शोक
करि दूर॥ विचरत हैं बन ग्राम में मु
नि अरजुन भूर॥ हठ नाई मन में
धरें तजें देह अभिमान॥ नेह बंधन
सभे दूर करि धारत हैं मन ज्ञान॥ १४
चौपई॥ रागद्वेष सभ दूरहिं करहें॥
मोक्ष उपाय भलो चित धरहें॥ यों
विध विचरत हैं मन मांही॥ भलो बु
रो कछु जानें नांही॥ १५॥ दोहा॥ बा
ख्याहै चिरकालतें मोमनमें इछा

नी॰वि॰
२३

तान॥ताहिपञ्चाननत फिरत हों पाव
नहीं शुभथान॥१७॥जरा जन्म अरु
मरन जो व्याधि भेद यह चार॥इनसों
देह सुधारि कै पावों मग निरधार॥
१८ अयसी धारन धरतहों विचरतहीं
बनमांहि॥राजलोभ करि दूर सब
दुर्गति पावों नांहि॥१९॥इति श्री महा
भारते शांतिपर्वणि राजधर्मभाषा
यां कविदेव दत्तानुज नंदरामात्मज
शिवराम तनूज त्रिलोचन विरचिते
नीति बिनोदे अष्टमो छ्यायः॥८॥वै
शंपायनउवाच॥दोहा॥सुनि सुनिभू
पति केवचन धरतन चितमहिं चैन॥
भीमसेन यों कहत है कोप अरुन क
रिनैन॥१॥भीमउवाच॥चौपई॥सुनि
जनको जोरीत बखानी॥वहीभूप
तुम हू निज जानी॥राजधर्म कोउ
जान्योनांही॥ताते फिरत रहे बनमां

ही॥२॥सवैया॥जोहम जानत योंबि
धभूपति वैरकहा उनसों करयो॥भूप
सुयोधन सोंकरि कै हित काज बडोह
मरो सरयो॥देश विदेश नरेशन को ग
गन कों बिनकाज इतै मरयो॥३॥दो
हा॥कबिजन यों बिध कहत हैं बीरधर
णि में जोइ॥जगत चरा चर सकल या
ह ताहीके बस होइ॥४॥राज करत भु
अपाल कों विघ्न करत रिपु जोइ॥सोति
न मारन योगहै कहत पुराने लोइ॥५॥
हनें हमें अपराध युत शत्रु सभै रनमा
हि॥राज आपनो कीजिये दोस भूप
कछु नांहि॥६॥जो कोउ जल पान को
जाइ कूप छिग दोर॥बिनजल पान कि
ए तुरत चलि आवै निज ठौर॥७॥की
च भरयो चलि आवई होइ सबनि में दी
न॥त्योंनृप हमरो कर्मयह कियो ता
सें फल हीन॥८॥फल युत हत्त निहा
रिकै चढै ताहि पर जोइ॥बिन फलपा

।नी॰वि
२५

पै गिर पैरै त्यों नृप जानो तोहि॥१०॥
ज्यों नर धन अभिलाष सों दौरि जाइ
पर देश॥ह्वै निराश निज गेह को आवै
पावत क्लेश॥११॥वैरन को रन मारि कै
अपनो हनै शरीर॥त्योंही हमरो कर्म
यह किया तुमें नर बीर॥१२॥लहि भो
जन खावै नहीं भूष युक्त नर जोइ॥
कामी कामिनि के मिलें भोग हीन जो
होइ॥१३॥त्यों नृप हमरे काम सम कि
प तुमें फल हीन॥रनमें बंधु समा
ज हनि कहो कवन फल लीन॥१४॥
हम ही अनि निंदित भए राषत तुमरे
मान॥जो तुमको मानत रहे बडो भ्रा
त करि जान॥१५॥भुज बीरज संपद
सहित शस्त्र अस्त्र परवीन॥ऐसे हमरा
नमें हनै किए तुमें बलहीन॥१६॥
जो कोउ होत समर्थ जन करत अनेक उ
पाइ॥ताको दोसन होत है रहत सदा
सुख पाइ॥१७॥शत्रुन सों अप मानल

हि अथवा आपद मांहिं॥ धारत हैं सं
न्यासको और समै कहुं नांहि॥ १९॥
तातें क्षत्र धरम्म में नहिं ऐसो व्यव
हार॥ बारंबार यह कहत हैं नीति वि
चारन हार॥ २०॥ क्षत्रधरम्म हुं में का
ह्यो मारन मरन प्रधान॥ नहिं ताको
निंदित करें ब्रह्मा वेद बषान॥ २१॥
ताते सत अरु देव ऋषि बिप्रनको
मन मान॥ राजन के यह धर्म हैं पंडि
त करत बषान॥ २२॥ विना धर्म वना
वास नहिं ताकछु है तप योग॥
ज्यों वराह मृग बसत है करत सदा
वन भोग॥ लक्षन धरि सन्यास के व
सत रहैं बन घोर॥ पर्वत द्रुम फलता
हिको लहैं न नृपशिर मोर॥ २४॥ पा
समबन में बसत हैं धारत हैं सन्या
स॥ गेह धर्म कछु ना धरें नहिं पा
वें फलनास॥ २३॥ विना कर्म फल
होत नहिं ताहि सिद्धि अरु योग॥

नी॰वि
२५

धर्म कर्म नृप कीजिए तातें तजि व
न भोग॥२४॥ज्यों गंगा जलमें बसें क
रत रहें असनान॥मच्छ कच्छ जलजी
व फल नहिं पावें बिन ज्ञान॥२५॥
देषहु भूप विचारि कें कर्म जगत प
रधान॥तातें अपनो कर्म करि पाव
तहें जन ज्ञान॥२६॥इतिश्री महाभा
रते शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां
कवि देव दत्तानुज नेदरामात्मज शि
वराम तनूज त्रिलोचन विरचिते नी
ति विनोदे नवमोध्यायः॥९॥वेशंपा
यनउवाच॥दोहा॥यों सुनि माधव एत
के नीतियुक्त उपदेश॥हाथ जोरि यों
कहत हे भूपति सों गुड केश॥१॥अर्जु
नउवाच॥सवैया॥भूपसुनो इतिहास
पुरातन सिद्धन सों पुरुषन कह्योहे॥
विप्र हुते इक देशहुमें तजि संपदा
को बन वास लह्योहे॥मूरष भाव
हुतें उनहूं तजि बंधुनको यह नेमग

ह्योहै॥यौंविधसोंउनके लखि भाव पु
रंदरको अति नेह भयोहै॥दोहा॥तब
वासव उनसों कह्यो कंचन खग तन
धार॥बडो कठिन यह धर्म है कियो
तुम्है अविचार॥३॥ऋषयऊचुः॥सो॥
रठा॥देखो यह खग राज सिद्धनकी अ
स्तुति करत॥हमरो धर्म अकाज जा
नतहै अज्ञानतें॥४॥यौंसुनि कै खग
राज उन सिद्धनके वचन तव॥नेकुन
मानत लाज नेह बढावत कहत है ५
शकुनिरुवाच॥लखि तुमरो व्यवहा
रु नहिं अस्तुतमें करतहों॥बूडे कीचा
मँझार अपने मूरख भावतें॥६॥यौंवि
धविप्र कुमार सुनि पंछी के वचन त
ब॥सिद्धनके व्यवहार तासों सम पू
छन लगे॥७॥ऋषय ऊचुः॥बडो
धर्म संन्यास जानि हमें धाऱ्यो तुरत॥
कहु विवेक तुम तासों पति राज हा
म सुनत है॥शकुनि रुवाच॥करि एं
का सम हरजो तुम एछो मोक्षको

नी-वि
२६

26

बडोज्ञान को पूर यथा योग तुमसों
कह्यो ॥ ९ ॥ ऋषय ऊचुः ॥ जो तुम क
ह्यो विचार मीत सकल हम सुनतहैं
संन्यासी को सार सोहम कों सिक्षक
हो ॥ १० ॥ शाकुनिरुवाच ॥ दोहा ॥ धातन
में कांचन बडो धेनु चुपायन मांहि ॥
यज्ञ दान ब्रत कहत हैं जो कछु वेदा
न मांहिं ॥ ११ ॥ गेह धर्म चाहत रहैं सक
लजीव जग मांहिं ॥ सिद्धि विन प्रतिज्ञा
निके ता समान कोउ नाहिं ॥ गेह धर्म
निंदित करै जो मानुष जगमांहि ॥ सो
निज मूरख भावतें पावत दुर्गति ठां
हि ॥ १४ ॥ देव पितर अर विप्र गन जोइ
नके अधिकार ॥ जो मूरख है तजतहैं
बूडत नरक मंझार ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ ता
तें तजि सन्यास गेह धर्म धारहु तुर
न पितृ देवन की आस करि पूरन ।
फल लीजिए ॥ १६ ॥ सवैया ॥ सांच क
हों तुमसों द्विज पुंगव जोकछु वेद

न मोहि कह्यो है॥याग अनेक कि
ए भुव मंडल देवन को सुर लोक भ
यो है॥ताते कुटुंब धरम्म धरो तजिके
समझो कछु नेम गह्यो॥जाहि ते औ
र बडो जगमें नहिं कोन तुलें यह भे
द लह्यो है॥९॥दोहा सांक सबेरे देत
जो असन बसन करिप्रीत॥अपने ही
परिवारको यही पुरातन रीत॥१०॥दे
वनको पितृगनहू को बंधुनको करि॥
मान॥पाछें ते भोजन करे सो पावे दृ
ढ ज्ञान॥११॥सोरठा॥करहु हर संन्या
स ताते गेह धर्म धरि॥सुर पुरमें तुम
वास पावहुगे अति मानसो॥१२॥यों॥
पंछी के बेन सुने धर्म अरु अर्थयुत॥
थेरन चित महिं चेन कियो हर सन्या
सतबा॥१३॥ताते तुम महराज धरिथी
रज मन आनिके॥करहु संपूरन का
ज जोकछु द्विजन को कहे॥१४॥इति
श्री महा भारते शांति पर्वणि राजधर्म
भाषायां कवि देव दत्तानुज नंदरामा

नीति॰ २० ३७

स्मज शिवराम तनूज त्रिलोचन वि
रचिते नीति विनोदे दशमोध्यायः १०
वैशंपायनउवाच॥कवित्त॥ऐसी भांत
भूपतव कह्यो कपि केतहूने राजावा
र वार समुझायो है॥बोल्यो जब राजा
धर्म नकुल सहदेवहू ने तद्यपि नभू
पति को मन ठहरायो है॥नारद मुनि
कीने उपदेश राजनीत भरे राजहूतें
भूपति को चित सकुचायो है॥देषि कै
उदास भाव ऐसो महा राजहू को ताहि
समें यों विषमों द्रौपदि सुनायो है॥
द्रौपद्युवाच॥दोहा॥सोचत हैं अति वि
दसों भूपति हारे भ्रात॥चन अभिला
षसों जल करि ज्यों चातक विलला
त॥१॥देशीरज इन सबनि को बोलहु
वचन उदार॥कहा सीष दीजे तुमें तु
मसु जानन हार॥२॥सवैया॥भूपति हे
न अरण्य इमें तुमहू यह वारहिं वार
कह्यो है॥मारहि गे हम सैन समेत सु
योधन को यह नेम गह्यो है॥सो चकि

यो रनमें अपनो व्रत कोमन में यह
खेद भयोहै॥सोतुम ऐसक कहा क
रहो नृप ए हमसों नहिं जात सह्योहै
॥५॥दोहा॥देवविप्रन कोदान नित क
रिकरि यज्ञ विशाल॥खेदसकल वन
वासको करो दूर तत काल॥६॥यों
कहि वैन अरण्य में मन में हर्ष बढा
नोविरन को रन मारिके क्यो भूपति
पछुताना॥७॥नहिं कायर पृथिवी ल
है नाथन संपद होइ॥पूतपोन नहिं
होइज्यों मीन पंक महिं जोइ॥८॥वि
ना दंड नृप तेज नहिं विना दंड सुख
नाहि॥विना दंड रैयत नहीं सत्यजा
न जीय मांहि॥९॥मीत भाव सभा
जनहूंसों पठन पठावन मान॥वि
मनके यह कामहैं नहिं भूपनकेजा
ना॥१०॥सोरठा॥संतनको निज मान
दुष्टन को निग्रह करन॥राज धर्म
यह जान तजि संगर नहिं भाजिये

॥११॥ क्षमा क्रोध अरु दान जो नृप
धारत है सदा॥ दंड दया अरु मान
धर्मवंत ताको कहै॥१२॥ सवैया॥
ताकछु भेद कियो उनसों अरु ताक
छु कायर भाव दिषायो॥ सैन हनी
चतुरंग तुम्हें रन वैरन को अभित्रा
स बढायो॥ द्रोन करन्न सुयोधन
आदनरेश हने धरणी तल छायो॥
सो तुम राज करो अपनो नृप होत ब
डो हमरो मन भायो॥१३॥ दोहा॥ भू
पति पोल सुमेर ढिग चार द्वीप यह
जान॥ अपने वस कीने तुम्हें राज दं
ड निज ठान॥१४॥ प्रथम द्वीप जंबू
कह्यो क्रौंच दूसरो जान॥ भद्र अस्वा
कहि तीसरो चौथो शाक वषान॥१५
राज दंड धारयो तुम्हें नृप इन द्वीपन
मांहि॥ जीति लई धरणी सकल सा
वि चवै नरनाह॥१६॥ ऐसे कर्म उदार
करि अपनो यश सुभ्र दान॥ क्षिमस

न नृप कीजिए विप्रन के मनमा
न॥१९॥देषहु नृपतुम भ्रात सम
ज्यों गज हैं मद मात॥करि प्रसन्न इ
न सबनि को हर्ष बढा बड़ गात १८
कैरो हू कृठन होइगो कह्यो हमारी
सास॥धर्म पूत रन जीतिकै पूरहिंगे
तुम आस॥१९॥सो तुम कों अब क
रनेहो काज सकल फल हीन॥तुम
रो कायर भाव लषि होत सकल।
यह दीन॥२०॥चौपई॥सांचो वचन।
सुनो चितलाई॥भूप सकल तुमरे।
यह भाई॥ह्वै मद मत्त तुमसों डर
हैं॥राज सकल अपनोई करहैं॥२१
दोहा॥बांधि तुरत तुमको इहां सों
नहिंगे नहि पाप॥भीम अरजुन मि
मिलि सभै राज करहिंगे आप॥२२
कोऊ नारि मोहु सम भाग्य हीनज
ग नाहि॥जाके पांच ततुज अबह

नेपरे वनमांहिं॥२३॥योंमिलियत।
न करें सभै कोंहू कूठन होइ॥कोंा
तुम आपद करत हो राज सकल
अब षोइ॥२४॥सोरठा॥यों भूपतिप
र थान मायाता अंबरीष नृप॥भय
अधिक बल बान त्योंही नृप तुम
आजहो॥२५॥सवैया॥साच कहों।
तुमसों यह भूपति राज वडो अपनो
करिये॥रैयत को सुख देत रहो म
नमें अवशोक नहीं धरियें॥याग।
अनेक करो विधिसों अरि सागर बा
ढुनसों तरियें॥मान बढा बहु बि
प्रनके नितदीन पुरातन ही चरियें
॥२६॥इतिश्री महाभारते शांति पा
र्वणि राजधर्म भाषायां कवि देवदा
तानुज नंदरामात्मज शिवराम तनूज
तुलिलोचन विरचिते नीतिविनोदे
एकादशोध्यायः॥११॥वेशंपायनउ

वाच॥ यों सुनि द्रोपदिके बचन भूपा
तिसों कपिकेत॥ कहन लग्या कर
जोरि कै हर्ष बढा बन चेत॥१॥ अर्जु
नउवाच॥ सवैया॥ दंडसों भूपति हो
न सदा सुरवे दंडसों काज सभै सरहैं
॥ दंडसों रैयत होत सुखैन सदा रि
पुसों डरहैं॥ दंड धरम्म बढावत है ध
न संपद दंड सदा करहै॥ सोतुम दंड
धरम्म धरो मनयों नृप लोक सभै थ
रहैं॥२॥ सोरठा॥ धर्म अर्थ अरु काम
इनको रखवारो सदा॥ साच कहों
नप थाम दंड नृपति धार्यो चहै॥३
राज दंड भय जान पापी पापन कर
नहैं॥ धर्मराज भयमान डरें कोउ पर
लोकतें॥४॥ दोहा॥ इक जन पापन
करतहैं आपस में भय मान॥ यों विधि
सों निज होतहैं भूपति दंड प्रधान॥५
बूडतहैं अंधयार जग जो नृप दंडनहो

30

इ॥ तातें भूपति दंडतें डरत रहें सभ
कोइ॥६॥ मानभंग धन हरन अरु दे
ह खेद जो होइ॥ पलछुन हैं दंडके
कहत पुराने लोइ॥७॥ ब्राह्मन बा
नी दंड है छत्रिनको भुज मांहि॥ दान
दंड कहि वैश्यको शूद्रनको कहुं
नांहि॥८॥ धन संपद राषन लियें मो
ह निवारन काज॥ यों मरजादा जग
तमें दंड धरत महि राज॥९॥ यथायो
ग अपराध सम कोप अरुन करि नै
न॥ धारत दंड नरेश जब रैयत होत
सुचैन॥१०॥ जो जगमें यह बसत हैं
भूपति आश्रम चार॥ चलहें अपने
पंथमें भूपति दंड निहार॥११॥ तजि
भय याचन करत हैं भय तजि दान
न देत॥ तजि भय भूपति को कहूं
सेवक करतन हेत॥१२॥ सवैया॥
भूपन संपद होत कहूं बिन बैरके

।तनके दकिंप।।नायण होत बडेज
गमें नहिं रैयत को सुव हो जिंप।।वा
सव वृत्र हन्यो रन में सुर भूप भयो।
अति मान लिंप।।मारत है सुर दैत्य
न को उनको रनमें महं देव सदा अ।
ति कोप बढाई।।मारत है शिखिवा
हन पावक मीच सभै हिय मांहिरि
साई।।नाक पुरेशाय मेश जलेश धने
श अरीनकुं को डुखदाई।।यों विधसों
इन देवनको लखि मानेहै सभ रंक
डेराई।।५।।दोहा।।सम स्वभाव लखि।
देवको कैयांहूं मानत नांहिं।।भूप वि
हिंचि दिनेश को कोऊ कोऊ जग मां
हिं।।६।।सोरठा।।देषि परत कोउ नां
हि अयसो भूपति जगत में।।धारि द
या मनमांहिं मारत मरनकुं ने टरे।।
१६ जगमें डुर्बल जानि मारत है स
भ अरिन को।।नकुल धारि अभिमा

नी॰
३१

न ज्यों मूसाको हननहै॥१७॥ज्यों नृप
हनत बिडाल नकुलहूंको अति कोप
तें॥त्योंही करत बिहाल स्वान देखि
मार्जारको॥१८॥ह्वै भूपति निर्भीत
स्वानहूंको चीता हनत॥यही काल
की रीत जानतहैं सब जगत में॥१९॥
दोहा॥भूप चराचर जगत सब थार
नहैं तनमान॥कीनो दैव विचारिकै
यों विध जगत विधान॥२०॥ज्यों प्रक
टे ह्वै जगतमें त्योंही अपनो आप॥
तुमहू को राख्यो चहैं नेकु नक रो
संताप॥२१॥क्रोध हर्ष अभिमानसों
हीन सदा जग मांहि॥वही करत ब
नवास नृप मंदकहैं सब ताहि॥२२
तजि हिंसा कोऊ हून करै योगी प्राण
पयान॥जलमें थरणी नलहूमें फ
लमें होत पयान॥२३॥विना प्राणपा
लन कोऊ उनको मारत नांहि॥विना

दोष कछु होत नहिं काज भूप जग मां
हि॥२४॥मानुष धरणी भेदिकै लेत
सदा फल मूल॥करत यत्न फुनि ता
हिसों रहत सदा अनु कूल॥२५॥प
शु पंछिन को मारि कै करत यत्न सं
सार॥पावत गति सुरलोक मैं यहीय
र्म अव हार॥२६॥दंड बनावत काज
सब दंड जगत प्रधान॥विना दंड क
छु होत नहिं सत्य भूप जिय जान॥
॥२७॥होत नाश रैयत छुको जोन दं
ड जग होइ॥ज्यों दुर्बल को जानि कै
लेत चोर धन खोइ॥२८॥साच विरंचि
छुने कह्यो करि करि वेद विचार॥वि
ना दंड कोउ ओर नहिं रैयत रावन हा
र॥२९॥कर्यो जोन दंड जग होइ भूा
पत्तव होत अंधेरो॥विना दंड जन नी
च जगत महि होत करेरो॥दंड नीतसों

नी-श्च- हीन जगत अति खिदहिं पावै॥ विनादं
३२ डु तजि धर्म अर्थ सभ हार सिधावै॥ च
तुराननं यह धर्मनेम को रावन हारो॥
धर्यो धरणि नृप दंड माहि मन में तुम
धारो॥३१॥ सवैया॥ सेवक सेवन ही क
हैं सुत मात पिता किन शासन मानै
॥ सभ डोर जतज तुरंगम दंड विना
कहु भीतन मानै॥ दानधरम्म विचार
नहीं कछु जो जगमें नृप दंडन दानै॥
दंड सुवारत काज सभे नितयाहि तें भू
पति दंड पठानै॥३२॥ भूपति साच कहैं
तुम सो निजराज करो अरु दंड सम्हा
रो॥ वैयनको सुख देतरहो यश्चाको भा
त है जगमें उजयारो॥ मीतन को अति
ही सुखदायक वैरन को नितहोत उजा
रो॥ मारि अरीनहुं कोरन में अपनो यश
भूतल मांहि पसारो॥३३॥ दोहा॥ जोन
हिं डरहैं दंडतें नीचधर्म्मान अरु पाल॥

जोपसु मनुजन को सदा मिलि सभक
रें विहाल॥३३॥ पकेहि निज वसतहै
ग्रर्थ मांहि सभकाज॥ ग्रर्थ दंड मैं वस
तहै देषहु दंड समाज॥३४॥ जोग्रर्थम
ग्ररु धर्म कोकह्यो मूल नृप राज॥ तद
पिशोक मन नाधरो नेकुन करो ग्रका
ज॥३५॥ धर्म कह्यो है जगतमें काम
निवाहन काज॥ मारन मरन भलो क
ह्यो कहूं महंराज॥३६॥ नाकउ ग्रतिगु
ण वानहै नाकउ ग्रति गुण हीन॥ भलो
बुरो सभकाजमें देषहु नृपति प्रवीन
॥३७॥ वृषण छेद नित वृषभ के करहें
नासिक छेद॥ ग्रधिक भार ताते धरें।
दौरज हें तजि खेद॥३८॥ यों विधव्याकु
ल जगत में करि पे भूप विचार॥ न्याय
धर्म हू सो करो ग्रपनो सभ व्यव हार
॥३९॥ सवैया॥ भूपति राज धरमहूंकी
मरजाद सदा ग्रपने मन धारो॥ राषहु।

मीतन को करिकै हित वैरन को रनमें
नितमारे॥ ताकछु होइगो पाप तुमैं,
यह होत प्रसन्न भले जगसारे॥ हरक
रे बन वासकि बानको पावत है मन
बिद हमारे॥ ४॰॥ दोहा॥ जो मारन को
आवई धारि सकल हथियार॥ ताहि ह
नन कछु दोस नहिं यही धर्म व्यवहार
॥ ४१॥ देह गेह जो बसत हूं जीव कहत
सभ नाहि॥ नाकोउ ताको हनत है भूप
सदा रन माहि॥ ४२॥ सवैया॥ दोष नहीं
तुमको कछु भूपति वीर घने जोहने र
नमें॥ जो हथयार लिए रन आवत मा
रत वैरन के गनमें॥ ताहिको मारत हें
मिलिकै तजिकै हथयार घने तनमें॥
भूपन को कछु दोस नहीं अब सोतुम
जात कहा बनमें॥ ४३॥ दोहा॥ वसन
पुराने छोरिकै ज्योंनर धरत नवीन॥
त्योंही तनको छोरिकै धारत और नवी

दीन॥४४॥इति श्री महा भारते शांति
पर्वणि राज धर्म भाषायां कविदेव
दत्तानुज नंदरामात्म शिवराम तनू
नु त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे
द्वादशोध्यायः॥१२॥वैशंपायन उवा
च॥यों सुनिकै अर्जुन के वचन को
प बढावत चैन॥धर्मराइ सों कहत
है भीमसेन करि हेत॥१॥भीमसेन
उवाच॥जानत हो नृप धर्म सब क
हा सुनावों तोहि॥तुमरो अपसो भा
वलषि होत खेद अति मोहि॥२॥य
द्यपि जानत हों भले भूप सकलतु
अरीन॥तद्यपि नाकछु करि सकों।
मानों तुमसों भीन॥३॥नाहि करों।
ना कहत हों जो आवत मन मांहि
तदपि दुःख सों कहत हों सुनहु ध
र्म नरनाह॥४॥सवैया॥मोह बडो तु
मेरे मन देषिकै मो मन बाढत खेद

नी॰
३५

35

सुनायो॥ कायाहू बल हीन भए आ
ति लागत नेकु कछून सुहायो॥ जान
तहो सब ग्रंथन कों नृप कों तुम चि
त बड़ो अकुलायो॥ छोरहु दीननको
मत भूपति याहितें लोक सबै सकुचा
यो॥५॥ दोहा॥ भलो बुरो सब जगतको
जानत हो तुम आप॥ तीनकाल को भे
द लहि नेकु न करो संताप॥६॥ यों भूप
ति तुम भाव लखि राजकाज के हेत॥
कारण एक तुमसों कहों ताहि सुनो
धरि चेत॥७॥ भूप व्याधि जग जगत
में कहें सकल जन दोइ॥ इक मनकी
अरु देहकी मिलत रहें नित सोइ॥८॥
देह भेद तें होत है जो नृप मनकी व्या
धि॥ वेद पुराननहू में कही ताके भेद अ
गाध॥९॥ भूपति मनकी व्याधसों दे
ह खेद सब होत॥ ता उपचार किए तु
रत मनमें होत उदोत॥१०॥ व्याधि भे

ऐसें होतहै पीत श्याम अरु बात॥ तीन
गुणन के भेद सों भूप सभै सकु चा
त॥११॥ भूप यँबे समहोत है सकल गु
णके भेद॥ स्वस्थ चित्त नर रहत तब
तातन बाढत खेद १२॥ तातुम तनको
खेदहै ताकछु मनको क्लेश॥ राजध
र्म अनुसार सभ जानहु धर्म नरेश॥
१३॥ सोरठा॥ मनमें अब पछुतानकों
सोचतहो भूप तुम॥ मारि बंधे अरिजा
न अपने कायर भावतें॥ १४॥ सवैया॥
भीमउवाच॥ भूपति राज करो अपनो
मनमें कछु और विचार करोमत॥
याद करो तुमरी त्रिय आनि सभामें
नगन्न करी अति रोवति॥ हेत अरण्य
के खेद सभै करियं तुम जाद धरम
सही पति॥ दोस नहीं कछु भूप तुम
है रनमें उनयोधन के सिर तोरत॥ १५
देखनहीं तुमरे यह भूपति योअपना।

नौ॰
३५

थ सुयोधन कीने॥ हर किए गजप
ननतें हम द्रौपदि चीर डुसासनली
ने॥ जोबन वास द्रौपदि हेत जयद्रथ
ह्रू अति खेद हिं दीने॥ देश विराटके
द्रौपदिको जब कीचक पाद प्रहारजो
कीनो॥१४॥ भीषम द्रौनहुं सें कुरुखेत
नमें योंनृप युद्ध भयो अति नीको॥
द्यूत सभा महिं खेलत जो शकुनी।
बहु खेद दिए तुमहीं को॥ तातस रा
र जरा सुर जो मिलिकै सभ हेत कि
यो उनहीं को॥ ए अपराध किए उन
हीं सभ क्यों करि भूलि गए तुमहीं
को॥१७॥ दोहा॥ जारन भीषम द्रौन
सें भयो नृप अति घोर॥ सारन म
अपने आप सें बन्यो आज इहिं ठौ
र॥१८॥ जहां काज नहिं पारन को
ना मीतन को होइ॥ केवल अपने।
आपसें युद्ध बन्यो नृप सोइ॥१९॥

जोमन कै जीते विना प्राणदेहु गेह्छोर
॥धारि देह तब होइ गो मनसों संग
रछोर॥२०॥तातें मनको जीतिकै का
रिय अपनो राज॥नृप मनकै जीते।
विना होत नहीं कछु काज॥२१॥भू
पति कहा तुमसों कहों नेकुन करो
अकाज॥तातें मन कों जीति कै होहु
कृतारथ आज॥२२॥सवैया॥सोतुम
भूप विचार करो तजि शोक सभै नि
ज राज सम्हारो॥देत रहो नित रैयत
कोस्वाव रीत पुरातन ही मन धारो॥
मारिलियो रनमें दुर्योधन जोतुअ
वैरि हुतो अतिभारो॥केश गहे उन
द्रौपदि के फल दीन्हा तुहें अबता
हीको मारो॥दोहा॥याग करो मरया
दसों बाजि मेध अभि धान॥पाप कर
हुगे हर सम देविमन को दान॥२४॥
हमहै तुअ सेवक सभै लेयउ रारस

नी.
३६
36

हाइ॥नीति विनोद ग्रंथ के भए त्रयो
दश ध्याय॥२५॥इति श्री महाभारते
शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि दे
वदत्तानुजनेहरामात्मज शिवरामतन
सूनु त्रिलोचन विरचिते नीतिविनोदे
त्रयोदशोध्यायः॥१३॥वैशंपायन उ
वाच॥दोहा॥भीमसेन के वचन सुनि
मुनियों धर्म नरेश॥कहन लग्यो फणि
नाहि को मन में धरन कलेश॥१॥युधि
ष्ठिर उवाच॥सोच भीम तुम कहत हो स
जनीत अनुसार॥तदपि सुनि हमरोक
ह्यो ताको करहु विचार॥२॥क्रोध लो
भ अरु लालसा रागद्वेष अभिमान॥
मोह पराक्रम तुम धरो सबै भीम सु
जान॥३॥इन पापन को धारिकै कर
हो राज अभिलाष॥होइ शांत न जिदो
ष सम यही भीम चित राष॥४॥पक
सूप जो करत है सकल धरणि को रा

ज॥ता भूपति को उदर जो कहा भूप-
किन काज॥५॥ जो मनकी अभिला
षहै दिवस मासमहिं सोइ॥ जब लग
जीवन जगतमें कोंहूं न पूरी होइ॥६॥
भीम सराहत होइहो कोंतुम मानुष
भोग॥ बिना भोग तप छीण जो पावा-
नहें हर लोग॥७॥ योग छेमजो राजके
जानतहो तुम आप॥ धर्मपाप तुअम
न बसें नेकुन करो संताप॥८॥ त्यागा-
धर्म धारहु सदा हर करो अतिभार॥
क्रूर राज ब्यवहार सम क्रूरो है संसा
र॥९॥ सिंह मार मारत यदि एक उदर-
के हेत॥ तासंग जरिकै मृग सभे भोज
न करैं अचेत॥१०॥ बिषय भोग सभ-
धारिकै यो संन्यासी होइ॥ तापर होत
ममत्व नहिं जगमें भूपति कोइ॥११॥
जोकोउ पषान पै कंद मूल फल षाइ
नीर पवन आधार करि सोनर सुभग

नी॰
२
37

नि पाइ॥ २॥ जोकोउ भूपति करतहै
सकल धरनिको राज॥ सम सुवर्ण
पाषाण जिन तदपि नहीं किन काज
॥ ३॥ आठ याम उपजत रहैं मन महिं
घने तरंग॥ उनसों तुम न्यारे रहो नेकु
न करिए संग॥ ४॥ कोउ ध्यान क
रतहै रागद्वेषसों हीन॥ सो तुमको क
रतहो सुनिए भीम प्रवीन॥ ५॥ पथ
है दोइ प्रकारके मुनिवर करत बखा
न॥ ६॥ अकथ उनको कहैं जानहु भी
म सुजान॥ ७॥ पितृगण को पूजत
है चार वर्ण धरि चेन॥ बिना संग जो
होतहै देवनिको करि हेत॥ ८॥ ब्रह्म
चर्य तप करत हैं पढ़त पढ़ावत जो
इ॥ मुनि वर तजि गेहको पावै सुरपु
र सोइ॥ ९॥ सोरठा॥ बंधन हैं जगती
न काम क्रोध अभिमान यह॥ जो न
र इनसों हीन सो पावत सुरलोक गति

॥१९॥ दोहा ॥ जनक भूपहूं ने कह्यो
सुनहु पुरानो गीत ॥ हेतु भाव सों ही
न है मोक्ष धर्मकी रीत ॥२०॥ जनक
उवाच ॥ सवैया ॥ वासना भाव अने
क कहैं अहंता अपनो कछु है जग
मांही ॥ जो मिथिला पुरदाह कीयै हू ह
मेरो कछु पाक जारत नांही ॥ ज्ञान
महलहू में चढि देखि कै नाकछु सो
चतहू मन मांही ॥ मूरख ज्यों चढि शै
ल सुमेर में नाकछु देखत है उहिं ठा
ही ॥२१॥ जानत है दृढ ज्ञान जो सोपा
वत बहु मान ॥ कहा होत वनवास ते
जानहु भूप प्रधान ॥२२॥ सकल जी
इक भाव सों जब जानै मन मांहि ॥
ब्रह्म पछानत सो भले ताहि बिना
कछु नाहि ॥२३॥ सोरठा ॥ ब्रह्म पछान
न हार पावत है दृढ ज्ञान निता या
ही धर्म व्यवहार बिना ज्ञान कछु होत

नी.
३८
396

नहीं॥२४॥इति श्री महाभारते शांति
पर्वणि राज धर्म भाषायां कवि देवद
त्तानुज नंदरामात्मज शिवराम तनू
जु त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे।
चतुर्दशो ध्यायः॥१४॥वैशंपायन उ
वाच॥दोहा॥यों कहि मारुत पूतसों।
चुपह्वै रह्यो नरेश॥ताहि देषि अतिशो
कतें कहन लग्यो गुडकेश॥१॥अर्जुन
उवाच॥दोहा॥लोक पुरातन कहत है
जो इतिहास बनाइ॥जनक विदेह नरे
शको सोसुन पांडव राइ॥२॥कियो।
हर निज राज सम भिक्षाटन धरिचित
यों लषि रानी जनककी कहन लगी
करि हेत॥३॥सुत कलत्र धन रत्न स
म छिनमहिं तजे नरेश॥यज्ञदान स
महर करि मनमहिं धरत क्लेश॥४॥
यों विध देषि नरेश को तब रानी अ
कुलाइ॥कै स्कंत अति कोपतें कहन
लगी इम भाइ॥५॥रानीउवाच॥सवैया

भूपति सांच कहौं तुमसों सुनिए हम
तो इक बैन अधीनो॥हर किया निज
राज सभै अब कौन धरम्म हु कोमन
कीनो॥मान कियो नहिं देवन को अ
रु विप्रनको कछु दानन दीनो॥मोयम
यो पुरुषारथ एसभ अपवाद बडो जग
में यह लीनो॥दोहा॥८॥किए हर छि
नमें तुम्हें देव पितर अधिकार॥धार
नहो संन्यास नृप नेकुन किया विचा
र॥९॥दिए दान विप्रन हुंको किए वा
ने मन मान॥केंग भिक्षाटन करतहो
कैतुम भूप प्रधान॥८॥संपद को क
रि त्याग सभ धारन हो वनवास॥तुम्र
जननी यों जानिकै भूपति भई निरास
॥ देश देशके भूप सभ तुमरे रहत अ
धीन॥करें तुम्र अभिलाष सभ किए
तुम्हें फल हीन॥१०॥उनको भूपनि
तुम्हें फल हीन॥१०॥उनको भूपति
स कति पावहुगे फलकौन॥परधीन

नी·
३९
39

तन जानिकै मनमें मोद धरैन ॥१
नाहमरो यह लोक है नापर लोक स
हात ॥ सुत कलत्र धन तजि सबै आव
स बनको जात ॥१४॥ राज भोग सब छो
रिकै भूषन वस्त्र समेत ॥ क्यों नृप बना
को जात हो भिक्षाटन धरि चेत ॥१५॥
सब जला पाय होइ हम सबहू को
खाव दैन ॥ अरु वनस्पति होइकै क्यों
मन धरत न चैन ॥१६॥ सोरठा ॥ तजि ।
संपद सन्यास धारत है जो जगतमें ॥
ताको होत विनाश राज नीत यों कहत
हैं ॥१७॥ दोहा ॥ सो तुम संपद त्याग करि
चाहत हो वन वास ॥ कौन धर्म याते ।
तुम्हें सब जन होत निरास ॥१८॥ जो सं
न्यासी होइ तुम जावहुगे वनमांहिं ॥
तो हमसों तुम भूप अब नेह भाव कछु
नांहिं ॥१९॥ रानी उवाच ॥ सवैया ॥ राजक
रो अपनो तुम भूपति लोगन पै कहुगे

नित यारे॥ संपद साथ महल वि रे नम
रे यह जानत है जग सारे॥ देत रहोति
न विप्रन को शुभदान यही अपनो प्रन
पारे॥ याग अनेक करो विधिसों यश
बाढत है जगमें उजयारे॥१८॥ दोहा॥
बार बार मांगत रहे देंम युक्त जो होइ॥ उ
न को दक्षिन देतजो हवन दवानल जो
इ॥१९॥ ज्यों पावक सम होत है दाघ
किये बिन आप॥ त्यों बहु याचक वि
मनित ह्वै सम धरत संताप॥२०॥ दान
देत भूपति सदा संतन के करि मान॥
मोक्षधर्म कों हू बने जोन करै नृपदा
न॥२१॥ अन्न दान नित करत है जोन
प होइ अधीन॥ ताते स्वव धारत रहें
जगमें आश्रम तीन॥२२॥ भूपति को
करिबो च हे अन्न दान करि प्रीत॥ ता
तें बाढत धरम यश यही पुरातन रीत
॥२३॥ दंडन तें कछु होत नहिं त्याग

नी· ८४

झूंते कछु नांहि॥साधुन के यह धर्महै स
मता सम जग मांहि॥२५॥समतें निजव्या
रे रहैंनहि वंध करि हरा॥है समान श्री
मीन सों धरत ज्ञानकों पूर॥२६॥सोरठा
द्रव्यहीन होइ जो सो संन्यासी होइहै॥जा
नत है सभकोइ आशा धरत अनेकनित
॥२७॥कठिन धर्म संन्यास भूप कह्योहै
जगतमें॥धन कलत्र सुत आस हूरकि
प यह होतहै॥२॥दोहा॥तातें तुम मन
में धरो क्षत्रधर्म महै राज॥यातें तुमरे
होइहैं भूपति सिगरे काज॥२८॥साधना
की संगत सदा करत रहो महराज॥क्ष
त्र धर्मकी रीतसों करहो सगरन काज॥
॥२९॥राज करत नृप करत जो यज्ञदा
न करि प्रीत॥तातें अधिक न होतको
यही पुरातन रीत॥३०॥सोरठा॥जो विप्रन
को दान देत भूप अति मान सों॥यारत
मनमहिं ज्ञान सो पावतहै अधिक फ
ल॥३१॥अर्जुनउवाच॥यों विध जनक
नरेश सुनि रानीके वचन नव॥हरकि

प सम कोश राज धर्म मान्यो भलो
॥३१॥ अरिल छंद॥ भूपति राज धर्म
नित धरिय मनमें सोकन आनो॥
विप्रन कै करि मान भली विध देय।
नको सखदानो॥ कामक्रोध तजि।
हर सभै नित दान धर्म चित धरिय॥
सर पुरमें गति पावहुगे तुम वेद ह्र
यह करिय॥३२॥ इति श्री महाभारते।
शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि
देवदत्तात्मज नंदरामात्मज शिवराम
तनूज त्रिलोचन विरचिते नीति वि
नोदे पंच दशोध्यायः॥१५॥ वैशंपाय
न उवाच॥ यों सुनि अर्जुन के वचन।
भूप युधिष्ठिरराइ॥ कहन लग्यो फु
नि ताहि सों सबनि सुनत इम भाइ
॥ युधिष्ठिर उवाच॥ सवैया॥ पारथ॥
साच कहो तुमसों सम वेद अनेक
भली विध जानो॥ त्यागधरम्म को।
जानत हो अरु मोक्ष धरम्मकुं कोनि

नी॰
वि॰४१

न दानो॥ जोकछु वेदनमांहि कह्यो श्रु
रु ग्रंथनके सभ भाव वषानो॥ तद्यपि
सोच कहों हमसों हनिके कपि केन वु
झे मत मानो॥ ३॥ दोहा॥ तुम इक जान
त हो भले शास्त्र अस्त्रका भेद॥ वेद पु
रान विधानमें पावत हो अति खेद॥ ३
जो जानें मरजाद सों सकल वेद व्यव
हार॥ तदपि हमसों न कहि सकें धर्म
पक्षानन हार॥ ४॥ जो तुम हू अति प्री
तसों कहे वचन कपि केत॥ राजनीति
अनुसार सभ मानत हों करि हेत॥ ५॥
सोरठा॥ गूढ धर्म व्यव हारकोंहू तो
म जानत नहीं॥ तिन कपि केत उदार
कोंहमकों समुझान हो॥ ६॥ सवैया॥
जानतहो तुम शास्त्रधर्म को गूढनके
उपदेशन माने॥ गूढ धरमके भावन
जानत जोकछु वेदन मांहि वषाने॥ तो
हि सुनावत हों अति प्रीतसों जोकोउ
और कहूं नहिं जाने॥ और सभै तुमजा

ननहो नहिं सिद्धनके कछु भाव प
छाने॥८॥सोरठा॥जपतप दान वि
धान पढन पढावन करत नित॥ग
ए यराति तजि प्रान मुनि जन चने
सुरेण पुर॥९॥दोहा॥मोन पञ्चुस
मम जानि तपकरन चने वनमांहि
॥पढन पढावन करत नित पहुंचे
सुर पुर मांहि॥१०॥विषयभोग तजि
हूर सभ करि करि वेद विचार॥गू
ढ भाव ग्रंथयार तजि पायो सुर पुर
सार॥११॥दछुन पथ जो कहत है भ्रा
ति प्रकाश जग मांहिं॥योगीजन ना
पावें भले विना योगते नाहि॥१२॥
जोगनि सूखम कहत है योगी जा
नत नाहि॥ताते योग प्रधान है सो
तुम जानत नाहिं॥१३॥कवि जन वो
जत हैं सदा पढि पढि ग्रंथ अपार॥
तदपि न पावें सार कछु करिकरिव
ने विचार॥कोऊ कोऊ मुनि जन क

नी॰ ५२

हैं बसत रहैं तनमांहिं॥जोअभिला
ष विरोध युत जीव कहैं सभतांहिं
॥२५॥नहिं आवत सोदीठ में नहिं
वानीसों होत॥केवल अपने कर्म
सों ताको होत उदोत॥२६॥मन अप
ने वस करि भलें तृस्णाको करि दूर
॥कर्म बंध सभ दूर करि धरै ज्ञाना
को पूर॥२७॥ऐसे सूक्ष्म पंथमें चल
तरहैं मुनिलोग॥अरजन ताकोछो
रि तम वैंधा मानत हो भोग॥२८॥सो
रठा॥साच कहौं कपि केत जो पाछेमु
निवर हूंते॥करि कर्म सचेत पावतहै
दृढ ज्ञान निज॥२९॥ज्ञान सुधाको पू
र छोरतहैं सभ जनहू में॥मूढ भाव
करि दूर विचरत हैं संसारमें॥३०॥चौ
पई॥पारब्रह्म जो हम जाने नाही॥ता
कोकोन धरै मन मांहीं॥बुद्धिमानजो
मुनि जन होई॥परम ब्रह्मको जाने
सोई॥३१॥तप करि मुनि जन ब्रह्म प॰

ध्यानै॥ ज्ञानभेद सिगरे नित जानै॥
त्यागहूंते सुख पावत नीको॥ क्यों
वह फुरत नहीं तुमही को॥२५॥ इ
ति श्री महाभारते शांति पर्वणि रा
जधर्म भाषायां कवि देव दत्तानुज
नंदरामात्मज शिवराम तत्सूनु त्रि
लोचन विरचिते नीति विनोदे षोड
शोध्यायः॥१६॥ वैशंपायन उवाच॥
दोहा॥ यों मुनि वचन भूपति के मन
महिं करत विचार॥ बडो चतुर तब क
हत है देवस्थान उदार॥१॥ देवस्थान
उवाच॥ जो कपि केत हूंने कह्यो क्यों
हूं कून होइ॥ तुम सों बरन करत हों
सुनिए पांडव सोइ॥२॥ जीति लई ध
रणी सकल तुम हो नृप बड भाग॥
ताको रनमें जीति कें क्यों अब कर
हो त्याग॥३॥ परम ब्रह्म में बसत है
चार धर्म जग जोइ॥ उनको अपने व
स करो तातें तुम्ह यथा होइ॥४॥ सो

नी·
७३

रठा॥तातें तुम महूँ राज यज्ञदान की
विकरि भलें॥करहु संपूरन काज रा
जनीत अनुसार सभा॥५॥वेद पाठ्य
हू याग जानतहैं मुनिलोक सभ॥
कोऊ कोऊ बड़ भाग ज्ञान यज्ञ मान
न सदा॥दोहा॥त्यागयज्ञ इक कहतहैं
कर्म यज्ञ इकहोइ॥मुनिजन उनको
करतहैं भूपनको नहिं कोइ॥६॥राज
धर्म मन आनिये तातें तुम महूँ राज॥
त्याग धर्मतें होत नहिं भूपनको कछु
काज॥८॥वैरनको धनहरन अरु यज्ञ
करन यह दोइ॥राजन के यह कामहैं
कहत पुरानि लोइ॥९॥सोरठा॥वैरन
के धन मान हरन भूपको दोषनहिं॥
येविधि करत बषान क्षत्रधर्म अनुसा
र सभा॥१०॥कवित्त॥कीनेहैं अनेकया
ग भूप पुरहूतहू नें तातें पात याग
नाम जगतमें उचारो है॥वाम देवा
हूनें कियो पाछें इकयाग भारीजा

में निज देह जिन पावकमें डारेयोहै॥
यातें महूं देव देव देव भयो याग हूंते
तीन लोकहूं में जिन नीको यश्यथा
योहै॥भूपति मरुत्त हूंने कीने अनेअ
नेक याग भाजन समाज यामें स्वर्णा
को निहारयोहै॥२१॥सोरठा॥ सुन्यो तु
म्हूं हरिचंद करि करि यज्ञ अनेक नित
पायो अमित अनंद सुर पुरमें पहुंच
को तुरत॥दोहा॥२२॥भूपति संपदहो
तहै यज्ञ दानके हेत॥ताते तुम अब
कीजिए याग चाने धरिचेत॥२३॥इति
श्री महाभारते शांतिपर्वणि राज धर्मा
भाषायां-शिवराम तनूज त्रिलोचन
विरचिते नीति विनोदे सप्त दशोध्या
यः॥१७॥देवस्थानउवाच॥दोहा॥जोअ
पने गुरु देवसों पूछ्यो भले सुरेश॥
तमहूं सों सब कहत हूं सोइति हास
नरेश॥१॥स्वर्ग होत संतोषतें देयता
होत सुवैन॥सबन वाछत संतोषतें।

है

नी॰ ५५ विन स्रव होतन चैन॥तातें भूप संतो
ष तें अधिक नहीं कछु और॥ज्यों बाढ
न संतोष मन सो सुन कुरु थिर मोर॥
३ ज्योंकूर्म निज अंग सब हरत धरत
तन मांहि॥त्योंही मनकी वासना धरै
भूप इक ठांहि॥४॥मन में होत प्रसन्न
तब भूपति अपनो आप॥बाढत है सं
तोष नित नेकुन होत संताप॥५॥मुनि
जन के यह धर्म हैं भूपनके कहुं मांहि
॥तातें तउ धरम्म सम भूप धरो मन
मांहि॥६॥इक उद्यम मानत सदा को
ऊ मानत मीत॥कोऊ सराहत डुंढ नि
को यही जगत की रीत॥७॥कोउ मान
न संन्यास को कोउ मानत याग॥लेन
देन नित दान को कोउ मानत बड भाग
॥८॥एक मोन मानत रहें करि सब संप
द त्याग॥राजधर्म मानत कोऊ दैयनसों
अनु राग॥९॥कै इकंत जो बसत है छे
द भेद करि एक॥एसब भूप पछानि

कै मन महिं करै विवेक॥१०॥सम जन

सों समता करै द्रोह भाव करि हत॥

पवडि यनके धर्म हूं धरै ज्ञानको एत॥

११ कबहूं झूंठ न बोलिए धरै दया मन

माहि॥प्रीत करै निज दार सों औरन

सों कहूं नाहिं॥१२॥देवस्यानउवाच॥

कवित्त॥साची करि जानो तुम भूपति

हमारी बात राज धर्महू को मनमन

में पक्का निए॥देतरहो विप्रको दान

मन मान केके साधुन की सेवा तु

हू नियहहूं नित ठानिए॥पालन मा

जाको निज धर्म हूं सों करत रहो धर

न रहो धीर मन चिंता मन मानिए॥

तातें यह लोक परलोक दोऊ होत

नीके राजनके धर्म राजनीत यहजा

निए॥१३॥दोहा॥काम क्रोध सभह

र करि रैयत को सुख देत॥गोबाल

न के हेत नित कीजे हू लरन मरीन॥

१४॥यौंविध अपने धर्म करि नजिम

नी॰
९९

नके सभशोक॥ कई भूप गुण ग
ण भरे गए पुरंदर लोक॥१९॥ तातें
अपने धर्म करि बडे बडे नर नाह॥
राज नीत अनुसार सभ पहुंचे सुर
पुर मांहि॥२०॥ इतिश्री महाभारते
शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां क
विदेवदत्तात्तुज नेदरामात्मज शि
वराम तत्सुत त्रिलोचन विरचिते
नीति विनोदे अष्टादशो ध्यायः १८
वैशंपायन उवाच॥ योंविध उनको
कहत ही तब अर्जुन हरषाइ॥ बडे भा
तसों कहतहै सबनि सुनत सुभा
इ॥१॥ अर्जुन उवाच॥ दोहा॥ भूपनि
वत्र धरम सों पायो है यह राज॥ वै
रनको रनमारि कै नेकुन करो अका
ज॥२॥ तविन को सुविशेष करि रन
लरि मरन पुनीत॥ यज्ञ दान करि का
रि भलें यही पुरातन रीत॥३॥ सोरठा
विप्रन को तप त्याग धर्म पुरातन क

हतहैं॥जो तजी बड भाग ताको रनमें
लरि मरन॥४॥तत्र धर्म व्यवहार को
हो कठिन मुनिजन हूं नै॥धरत रहे
हथयार तजि संगर नहिं भाजियै॥५
दोहा॥तत्र धर्म धारत रहै जो ब्राह्म
न करि प्रीत॥ताको जीवन सफल है
रहत सदा निरभीत॥६॥तत्र ब्रह्मसो
होत यह ताके रहत अधीन॥गोब्रा
ह्मन मानत सदा जो कोउ होत कुली
न॥७॥तत्रन को नहिं होत है त्याग
धर्म तप योग॥द्विज अधीन पर धनहू
सों ना कछु जीवक भोग॥८॥ताते
भूपति सोंच तजि तो समान जग मा
हिं॥९॥शोक सकल छिन दूर करि
धरि धीरज मन मांहिं॥राज सकल
पायो तुम्हें मारि यवने नर नाह॥१०॥
सवैया॥दूर करो सभ शोक नरेश॥
न और कछु मन मे अब आनो॥मा
रि यवने नर नाहन को तुम राज धरा

नी॰
४५

ममङ्गको मनमानो॥तिन्नि कोहिय
वज्र समान कठोर कहैं यह कूढन
जानो॥जीति भले अपने मनको नृ
प याग करो अरु दान बषानो॥११॥
चौपई॥ब्रह्मा को सुनज्यों पुरहून॥
करि करि कर्म भयो रज पूत॥अप
ने बंधु हने रन मांही॥को उनि धर्म
विचार्या नांही॥१२॥ताको कर्म भयो
उजियारो॥जीति लियो जिन सुर पुर
सारो॥तातैं याग करो अवनीश॥पा
वहु विप्रनकी शुभशीस॥१३॥दोहा॥
ज्यों वासव रन शत्रु हनि कीनो सुर
पुर राज॥त्योंही नृप तुम कीजिए ने
कुन करो अकाज॥१४॥भूपनको र
न मारि कै नेकुन करिये शोक॥शस्त्र
पूत है सकल नृप गए पुरंदर लोक
॥१५॥अन होनी होवे नहीं करि का
रि यतन करोर॥जो होनी सो होनहै॥
कोउ सकै नमोर॥१६॥चौपई॥तातें न्

प तुम धीरज धरियं॥राज बडो अप
नो यह ।करियं॥तुव्रिन की यह रीत
पुरातन॥हरि पर यन करिए निजपा
सन॥१९॥इति श्री महा भारते शांतिप
र्वणि राजधर्म भाषायां कवि देवदत्ता
नुज नंदरामात्मज शिवराम तत्सुत
त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे पा
कोन विंशो ध्यायः॥१९॥वैशंपायन उ
वाच॥सोरठा॥यों सुनि अर्जुन बैन भू
पति धर्म नरेश तव॥धरत नहीं चित
चैन ताकछु ताको कहत है॥१॥व्या
स देव मुनिराइ यों लखि भूपति को न
हो॥सब जनको सुखदाइ धर्मराइसों
कहत है॥२॥व्यास उवाच॥सुनि प धर्म
नरेश सोच कह्यो अर्जुन ईने॥हर क
रे सब क्लेश तत्र धर्मको जानि कै॥३
चौपई॥नृप तुम अपनो धर्म पछानो
॥और कछू मनमें नहिं आनो॥गृहध
रमको हरन करियं॥रीत पुरातन हो।

नी०
४६

मन धरिये॥४॥नृप मनमें वनवासन।
आनो॥पितृदेव न को मानहि हानो॥
गेह धर्म सभतें अधिकायो॥लागत
केयो तुमको न सुहायो॥५॥दास बने
तुमरे परवीन॥गेह धर्म लषि होत अ
धीन॥ऋषी भूप उनको तुमकरिये॥
धर्म पुरातन ही मन धरिये॥६॥दोहा
पशु पंछी जो जगतमें जीव चरा चर जो
र॥गेह धर्मके वस रहें सुनहु भूपशि
रमौर॥७॥तातें सभतें अधिक यह गे
ह धर्म नृप जान॥जो आश्रम जगचा
रहें सभतें उत्तम मान॥१॥सोरठा॥
तातें धर्म नरेश गेह धर्म अवधारिये
॥पावत है अति क्लेश दुर्बलसो नहि
होत है॥२॥व्यास उवाच॥सवैया॥भूप
ति बाप पितामह को अब राज बडो अ
पनो करिये॥जो कछु तत्र परम्म कह्यो
दिन रैन यही मनमें धरिये॥पेयतको
खाव देन रहो अरु देर कुछे नकहू टी

हरिये नित वैरन के धनको उनसों छि
न देवनको भरिये॥११॥सोरठा॥ज्ञा
न यज्ञ तपदान अरु धनसों संतोष।
नहिं॥भूपन कै यह जान धर्म कहेवे
दनहूं मे॥१२॥रैयत की नित मोर दुः
षन को निग्रह करन॥सुनहु भूपशि
र मोर दान द्विजन कों दीजिये॥१३॥
सुन हु धर्म नरनाह राजन कै यह
कामहै॥यह इहुं लोकनि माहिं का
ज सुधारन हैं चैन॥१४॥दोहा॥सुनहु
भूप सभनें अधिक दंड कहै सभकोइ
दंडहीनतें है सैन वस विन बल दंड ना
होइ॥१५॥जो यह धर्म कहे हमें तवि
नको सुखदाय॥सिद्ध करत हैं काज
सभ सुनिए पंडवराइ॥१६॥कह्यो।
बृहस्पति प्रकट यह जो एश्लोक अस
रेष॥सोसभ तुमसों कहत हो सुनि
ए धर्म नरेश॥१७॥भ्रमन पीलयो
द्विजनहीं विनबिन विरोध नृपजो

नी॰ ५८

अधरनि यसत रत उझ्रुनि को जानत
है सभ कोइ॥९॥चौपई॥सुनी हमै इक
बात पुरानी॥भूप नृपति सद्युम्न बषानी॥नाते अति संपद बहु पाई॥ज्यो
जतेण अरु गृह्य कराई॥५॥युधिष्ठिर
उवाच॥तात कहो हमसो समुझाई॥
याते अति बहु संपद पाई॥कौन न्याउ
कीनो अतिभारी॥ताते यशबाद्यो॥
उजियारो॥६॥व्यासः॥सुनो भूप इ
तिहास पुरातन ज्यो सद्युम्न करी वि
जपासन॥पांडव लिखित दोनो मुनि
राई॥आपस मांह हुते बहु भाई॥भू
प डक्रुनि कै आश्रम न्यारे॥गोदावा
रिके तीर सुधारे॥फल युत वृक्ष रि
है तरु सोहै॥गुंजत भ्रमर सदा मन
मोहै॥८॥एक समै निज आश्रम छो
रि॥लिखित पांडव ढिग आयो दौरि॥
आसन पांडव हूको नृप जहां॥मिलन
हेत आयो वह तहां॥९॥दोहा॥आ

मन अपनो छोरिके पहिलेही बन
मोहि॥ गयो हुतो तब लिखितहू
मुनि वर देख्यो नाहिं॥१०॥कछुकि रहे
फल देखिके लिखित आपने जानि।
भूष भयो से भ्रातके लग्यो तोडि तब
खान॥११॥खावतही फल ताहि को।
कहन लग्यो इम भाइ॥आयो ताको
देखिकै कहन लग्यो इमभाइ॥१२॥
शंखउवाच॥चौपई॥यह फल भ्रात
कहांते लीने॥सांच कहो तुमको कि
न दीने॥हसि हसि लिखित कही यह
बात॥मैं आने फल लीने भ्रात॥१३॥
भूपति ताछिन पांव रिसायो॥यो बि
ध ताछिन वचन सुनायो॥चोर कर्म
कीनो यह पाप॥जो तुमहू फल लीने
आप॥१४॥ताते भूपति के ढिग जावो
अपने कर्महुं को फल पावो॥बिना
दिए फल लीने आप॥ताते नेकुना
को संताप॥१५॥यो विध जाइ भूप।

नी॰
५८

सों कह्यो॥ आपने कर्मन्हुं को फल लह्यो॥
यों सुनि शाव लिखिन के वैन॥ मन मै
धरत नहीं कछु चैन॥ ९६॥ दोहा॥ चोर
कर्म कीनो हमें सत्य भूप जियजान॥
दंड ताहि को दीजिए धर्म आपनो मा
न॥ ९७॥ सवैया॥ यों सुनि ताके वैन नहीं
मुनि राइ नरेशहुं के छिग आयो॥ आ
वत ही मुनि भूप लख्यो तब ह्वरतें ता
हिको लैन सिधायो॥ आइ मिल्यो मु
नि राइहुं सों नृपयों कर जोरि के वैन सु
नायो॥ सांच कहौ तुम आवन कारण
मैं कर है तुमरे मन भायो॥ ९८॥ यों सु
नि के मुनिराइहुं नैं तब भूपति सों यह
वैन सुनायो॥ आवन कारण सांच क
हों नृप जो हमसों अपराध भयो॥ वा
हमें फल भ्रात के जानि के मोसे बि
ना उनि चोर कह्यो है॥ ताहि को दंड य
ए हमरै तन यह मसों नहिं जात सह्यो
है॥ ९९॥ दोहा॥ लिखिन हुंके यह बचन

सुनि कोप्यो अधिक नरेश॥ भूप भू
मिकै कंपतें ज्यों कोपे अच लेश॥२०
लिखितहुं के यह वचन तब सुनि।
सुद्युम्न नरेश॥२१॥ सुद्युम्न उवाच।
मानत हो तुम मोहुको दंड देनके हे
त॥ तुमरी शासन पाइकै करौं सक।
ल धरि चेत॥२२॥ बिन पूछे अपराध
यह दीनो तुम्हें सुनाइ॥ याते छिन
मैं दोष सब हर भयो मुनिराइ॥२३
हाथ जोरि भूपति कह्यो कह्यो और क
छु काम॥ करौं सकल तुअ प्रीतसों।
सत्यजान तपधाम॥२४॥ व्यास उवा।
च॥ बार बार तब लिखितको कह्यो भू
प समुझाइ॥ तदपि न मान्यो और कछु
बिना दंड मुनिराइ॥२५॥ ताते नृप या
तिकोपकै मुनिवरके उहिं दोइ॥ हाथ
दोइ काटे लिखित गयो भ्रात ढिग।
दोइ॥२६॥ कहि भ्रातहु अति धीरतें लि।
खित पांव ढिग जाइ॥ भ्रात तब माथ

नी॰ ५९

५९

वकीजिए कहन लग्यो असमाइ॥ सु
णिवउवाच॥ तोपर कोपन करत हों
कैंग विलपत हो तात॥ धर्म लोप त
व्रजानिकै भूप कटाए हाथ॥ २८॥
सो अब तुम जावहु तरन गोदाव
रि केतीर॥ देव पितर सभ भांति कै
मन महिं धरिए धीर॥ २९॥ व्यासउवा
च॥ यों विध ताके वचन सुन भूप
लिखित सुनि राइ॥ लाग्यो करन स
नान तब गोदा वरि मैं जाइ॥ ३०॥ प्रक
ट भए कर लिखित कै तामहिं कर
न समान॥ आनि दिखाए शंखकों म
नमहिं भयो हिरान॥ ३१॥ यों तबि शं
खहूं ने कह्यो हमरो पतए जान॥ या
महिं शंकन कीजिए दैव बडो बल
वान॥ ३२॥ लिखितउवाच॥ पहिले ही
कैं नहिं करी भ्रात तबले पहचान॥
हमरे हाथ कटाइकै गाढो तुम्ह त
प तान॥ ३३॥ शंखउवाच॥ चौपई॥ यों

सुनि शांतनुहूंने कह्यो लिखितहूंको

सुनि आनंद भयो॥ जो नृप हू तुम ह्या

य करोय॥ जात सकल तुम पाप ह

टाय॥ ३४॥ व्यास उवाच॥ सोरठा॥ यों।

सद्युम्न नरेश देउ धरमको धरत ही॥

हर किय सभक्लेश राज कियो चिरका

लतव॥ ३५॥ चौपई॥ ताते नृप यह धर्म

पुरातन॥ रियत कौ करिए शुभ शासन

मनमें तुम अब शोकन करिये॥ राज

धर्महू तैं नहिं टरियै॥ ३६॥ दोहा॥ राज

नेको सम कहत हैं तत्र धर्म सुविदार

जो कछु अर्जुन कहत है सो सुन पांड

व राइ॥ ३७॥ इतिश्री महा भारते शांति

पर्वणि राज धर्म भाषायां शिव राम

नंदन त्रिलोचन विरचिते नीति वि

नोद विंशो ध्यायः॥ २०॥ वैशंपायन उ।

वाच॥ दोहा॥ यों नृप धर्म नरेशको बा

र बार समुझाइ॥ तदपि और कछुक

हत है व्यासदेव मुनिराइ॥ १॥ कवित्त॥

व्यास उवाच॥ भूपति तिहारे भ्रात भी

नी: प्र:

50

म कपिकेत दोऊ नकुल सहदेव जेवे
बसत रहे बन में॥देखत तिहारे और पा
ए नहीं खिद चने सही भूष्याम सीत
घाम सह्यो तनमें॥होइके अलखित रहे
नगर विराट जेके कीने संग्राम वने वै
नके रनमें॥हूजे नाउदास ग्राम पूरो
हनहूंकी अबदीजिए निदेश जो विहार
करें धनमें॥२॥दोहा॥अतिथि देव पित
गनहूं के करहु भूप मनमान॥तातें अ
न तिनहोइके पावहुगे बहु ज्ञान॥३॥
सर्व मेध ह्य मेधकरि करहु और शुभ
काम॥तातें अपनो राजकरि पावगे श्र
मधाम॥४॥भीम अरजुन आदजो भूप
तिहारे भ्रात॥इनसों याम कुराइके धा
रहु यश अव दान॥५॥चौपई॥भूपक
हों इक बात सुहाई॥जो राजन कों औ
ति सुखदाई॥याही को सुनिए धरि धी
रा॥होत नहीं कछुकु अधरम पीरा॥६
समय देशको देखने होरो॥चोरन को
जो होत डराओ॥राज धर्म मैं जो परवी

ना॥सोनहिं होत धर्मतें हीन॥७॥दोहा
लैकर भूप षडंश जो रैयत पालत नां
हिं॥प्रजा पाप जो करत है सो पावत फ
ल ताहि॥८॥जो नृप निर्भय होइके सों
पत नको बाप॥रैयत को पालत सदा
ताको होत न पाप॥९॥अरि गनको व
स कीजिये राजनीत अनुसार॥करि प
कबहूं न भूप तुम पाप कर्म व्यवहार॥
१०॥वीरनके सनमान करि देहु द्विजन
को दान॥धनी होहि जो नगर में उनके
करिए मान॥११॥सवैया॥जो जन बाप
पिता महके नृप सो ब्यहार हू में धरिए
यद्यपि है गुन वान बडो इक मानवको
न कस्यो करिए॥डरिए अपवाद हुतें तिन
नहीं नहिं दीनन की धरना परिए॥क
रिए द्विज देवनके सनमान सदा अरि
सागरको तरिए॥१२॥दोहा॥मान करा
नके योग जो उनके करिए मान॥जो
निंदत गुनवानको ताहि पानको जान

नी॰
५१
51

रऔरैयत पालन करतहीं धरत सक
ल जनतोष॥ तहां विघ्न जोहोइ नृपन
हिं भूपति कोदोष॥ ४५॥ मंत्रिन के उ
पदेश सुनि करत सकल व्यवहार॥
धरि पुरुषारथ आपनो नहांन होत।
विकार॥ ४६॥ किए कामनहिं होतहै।
बिना किए हैजात॥ जोभूपति पुरुषा
रथी ताकोहोतन पात॥ ४७॥ इहां बा।
त इक कहतहैं भूपनको सुखदाइ।
हयग्रीव नृपकी कथा सोसुन पोउव'
ताइ॥ ४८॥ अस हायक अरिगनहू सो।
लरत मरनरन मांहि॥ भूप भूप हया।
ग्रीवकी सुनहु कथा इहि मांहि॥ सवे
या॥ जोफल रैयत पालनतें अरु वैरा।
नकोरनमारिके नीको॥ याग किए ब
हु भांत चबे मन मानकियो द्विज देव
नहीं को॥ आपने ही पुरुषारथ सेंध
ने जीति लियो सिगरी धरणीको॥
येंविध कामकिए उन भूपति पायो

है लोक पुरंदर जीको॥१३॥कबित्त॥
छेयो जिन मातरन रंगमें अनेक भां
त दीनें बहु दान नाते राज नीत ठा
नीहै॥चाय रण रंभ जेह कीनो या
ग माला उन रुधिर नूतयार अवा
नीछन कृपानीहै॥पंडित बनाय बा
र घोर उहिं याग माहिं पाकरण भूम
यान वेदि का बषानीहै॥ऐसे रण कुं
ड बीच वैरनको होमकियो पाईहा
यग्रीव हूं सुरेश राज धानीहै॥१४॥
दोहा॥वैयनकी करि पालना किए।
याग बहु भांत॥तीन लोक हयग्रीव
को बाधिा यश अवदात॥१५॥सवैै
या॥नीत करी निज राजहूं में द्विज।
देवनके सनमानहिं कीनें॥उहता।
को बहु देउ दिए निज विप्रको जिन
दानहिं दीने॥याग किया बहु भांत।
किए गन वैरनके रनमें हनि लीने॥
वेद पढे गुर देवन सों पुरुषारथ

नी॰ र सबै उनिकीनेत॥४६॥सोरठा॥ह्वै कि
५२ पसम शोक अपनोयपण भूअठानिकै
गयोपुरंदर लोक हयग्रीव नरनाह न
बा॥४७॥इतिश्री महाभारते शांतिपर्व
णिनीतिविनोदे एकविंशोध्यायः
२१ वैशंपायनउवाच॥दोहा॥द्वैपाया
नके वचन सुनि कृपित धनंजय जा
नि॥व्यास देवसों कहत है धर्मराजा
यह बानि॥१॥युधिष्ठिर उवाच॥सो
व कहौं मुनिराइ जू सुनिए हमरो बै
न॥राज भोग सुख संपदा मोकहुं
नीक लगैन॥२॥जिनके पियसुता
तिनमें हने हमें करिरोष॥सुनि उना
नोव केविलाप अब मोमन होतन चैन॥
३॥वैशंपायन उवाच॥दोहा॥यों भूप
ति के वचन सुनि व्यासदेव मुनि राइ
धर्मराइसोंकहत हैं सबनि सुनत उ
म भाइ॥४॥व्यासउवाच॥जपतपतैं
हू होत नहिं सुनहु भूप परबीन॥

समय समयमें होतहैं कारज दैव
अधीन॥५॥सोरठा॥यद्यपि नर मति
मान विना समय कछु करत नहि
॥सुनहु भूपपरधान कारणहै जग
में सम॥६॥समय समय अनुसार
सुख पावत संपदा॥यही जगत व्य
वहार विना समय कछु होतनहिं
॥७॥दोहा॥विना समय फलदेत नहिं
मंत्र औषधी और॥समय समयमें दे
तहैं सुनियं कुरु सिर मोर॥चलत
जलत गतिपाइकै पवन समय अनु
सार॥समय देखि वर्षत सदा नृप
वादिर जल धार॥८॥होत अंधेरी चा
नणी रात समय अनुसार॥समय
जानि धारत सदा विधु अपनो आ
कार॥९॥विना समय नहिं फलत
है नृप नर वर वनमांहि॥त्योंही सा
रिता वेग यह विना समय कहुंना
हिं॥१०॥समय विनामृग पति गा
ण गज पन्नग वनमांहि॥नहिं मद

साने होतहैं सुनहु धर्मनरनाह॥१२॥
विना समय कछु होत नहिं जनम मर
ण अरु व्याह॥ धारत अवला गर्भको
समय समय अनुसार॥१३॥ समय स
मय नर देह॥ में यौवन वाढत भूप॥
समय समय पर होत है शीतघाम अ
रु धूप॥१४॥ अस्त उदय यह होतहैं स
मय समय अनुसार॥ धारत वारधिठ
ठकों समय देखि निरधार॥१५॥ अग
स्त उवाच॥ कहेसेन जित भूपने पुत्र
शोक अति पाइ॥ सुनिए धर्म नरेश
तुम सोइ इतिहास बनाइ॥१६॥ सोरठा
काल बडो बलवान जगमें मनुजना
को असत॥ सम भूप जिय जान वहीरू
पनको हनत है॥१७॥ दोहा॥ मारत है
न और कोउ उनको मारन और॥ ताको
उ मारन हनतहै सुनिए कुरु सिर मौ
र॥१८॥ कोउ मानत यह कहनत है न
हिं मानत कोउ और॥ जगमें कर्म स्व
भावतें मरण जन्म यह चोर॥ यनहु

नदारा जनक को नाश मृप जब होइ
शोचन नर तब बिद्सो यतन करत न
हिं कोइ॥२०॥ताकें शोच न मूढ है
उनको वारहिं वार॥देषहु मृप विचा
रिके ते सम जानन हार॥२१॥अपनो
आपन आपनो भूमन अपनी होइ॥
ज्योमेरी त्यो सबनिकी यों लषि आवा
न मोहि॥२२॥मूढन को नित होत है।
हर्ष शोक इह दोइ॥ताकवि यनकों
होतहै जानतहै सम कोइ॥२३॥जरा
न चराचर जीवको सुख दुःख यह न
प दोइ॥समय समय मे होतहै कहा
न पुरातन लोइ॥२४॥सुख करि कै दुः
ख होत है दुःख करिकै सुख होत॥स
दा दुःख नहि होतहै नाहिं सदा सु
ख होत॥२५॥दुःख अंत सुख होतहै
सुख करि कै दुःख होइ॥ताते यह दो
नो तजे सम सुख चाहै जोइ॥२६॥
सोरठा॥जोना है अतिमूढ अथवा जोअ

नी॰
५४

ति चलतहैं सो पावै सुख गूढ औरनको
सुख होत नहिं गूढ ॥ दोहा ॥ यों कहि भू
पति सेन जित सुनिय धर्म नरेश ॥ जा
नि सार संसारको हर किय सभ क्लेश
॥ २८ ॥ औरन को दुख जानि जो नरपा
वत खेद ॥ क्यों हूं ताको सुख नहीं ना
कछु जानत भेद ॥ २९ ॥ दुख सुख सं
पद आपदा जनम मरण यह दोइ ॥ स
मय समय में होतहैं कहत पुराने लो
इ ॥ ३० ॥ हर्ष शोक जो करत है जो नर
धरैं विचार ॥ बार बार वेदनि कह्यो या
ह संसार असार ॥ ३१ ॥ सवैया ॥ राज ध
र्म्म की नीत कहें सभ भूपन को आ
तिही सुखदाई ॥ संगरतें कबहूं न टरैं
अरु बोलत रैयत सों निपुनाई ॥ वैरि
नकै धनको हरि देतजो विप्रन को नि
त मान बढाई ॥ ए उपकारक भूपना
को सभ वेदनि मांहि कहे मुनि राई ॥
॥ ३२ ॥ दोहा ॥ जो नृप रैयत पालनाक

रै धर्म अनु सार॥ तानृप को पैलो
कमें नाकछु होत विकार॥३३॥ सैवैया
व्यासउवाच॥ मारि कै वैरन को रन में
अरु रैयन को नित मान बढाई॥ वेद
पढे गुरुदेवन सों करि दान रिझाई॥
लिए द्विज राई॥ चारोवरन्न प्रसन्न कि
ए जिहि सेवत हैं सभ ऐक ओराई॥ देह
तज्यो रन में उन भूप विरंचिन केतऊ
की गति पाई॥ दोहा॥ यों विध भूपति
सैन जित पहुंच्यो सुर पुर मांहि॥ अब
लों धरणी तलहूं में गावत हैं यश ताहि
॥३५॥ वैशंपायनउवाच॥ यों मुनिवर के व
चन सुनि भूप युधिष्ठिर राइ॥ कहन ल
ग्यो कपि केत सों नीति युक्त इम भाइ
॥३६॥ योधन सभनें अधिक तुम मान
नहो गुडकेश॥ बिन संपद कछु होत
नहिं पावत है जन क्लेश॥३७॥ एसभा
कह कैसो तुलै पढन पढावन हार॥ य
ज्ञदान तप करि भलें नरन सकल सों

नी॰ ५५

सार॥३८॥सवैया॥सांचिकहों कपिके
न सुनो तुमजो मुनिलोगनके मनभा
वै॥जोकोउ दान धरम्म करै नरजो फु
नि आपनो ब्रह्म पछानै॥पाठ करै बहु
वेदनके नित ज्ञान धरम्महू कोमनआ
नै॥यौंविध सौंनित काम करै सुरलो
कमें नाहिको बाह्मन मानै॥३९॥सोर
ठा॥पठन पढावन हार मनमें ज्ञान ध
रै सदा॥सुनकपि केन उदार धर्म वेत्ता
ताको कहें॥४०॥जोज्ञानी जन होइ ता
ज काज सोनित करै॥वेदवान समुनिजो
इ उनके वचन सुने हमें॥४१॥दोहा॥सां
च कपि केन सुन और चनेऋषिनाह॥
यज्ञ दान तप करिभले पहुंचे सुर पुर
मांहि॥४२॥सोरठा॥पठन पढावन दा
न शत्रुनको निग्रह करन॥यही सत्या
जिय जान वेदकहतहैं नृपनको॥४३॥
पहुंचे औरनरेश दक्षन पथ सुरपुरवा
नै॥पहिलें हीगुर केण वार वारन मसें

करे॥४४॥दोहा॥विजय सराहत हैस
दा उत्तर पथ मुनिलोग॥पहुंचे उहिं।
पथमें चले जो धारत नित जोग॥४५
अरजुन होत संतोषतें सुख अरु सु।
र पुर वास॥विन संतोष कछु होत न
हिं सब जन होत निरास॥४६॥पांव
विषय को जीतिके बाछत मनमहिं।
ज्ञान॥विन जीतें कछु होत नहिं साव
अरजुन जान॥४७॥चौपई॥स्योंतुमसें
इक बात पुरानी॥कहीं ययाती भूप
बषानी॥यातें नरसम तृष्णा है॥जैसो
श्रम अंग एक तें॥४८॥दोहा॥भय
विरोध अरु वासना प्रबल गहे तन।
माहिं॥तब लग पतन अनेक करि।
बल पञ्चानन नाहि॥४९॥मनबा।
णी अरु कर्मसों जो नकरत कछु पा
प॥सम करि जानत जीव सब बल।
वानत आप॥५०॥सोरठा॥मानमो

हू अरु संग इनसों जो न्यारो रहै॥ताज
नको मन भंग कोंहू जगमें होत न
हिं॥५१॥दोहा॥जो तुमसों में कहत
हों सो सुनियें कपिकेत॥धन सुभाव
अरु धर्मको कोउ जन मानत चेत॥
॥५२॥कोउ जन मानत धर्मको कोउ
मानत सुभाव॥कोउ धनमानत रहैं
मानत निजनिज सुभाव॥५३॥जो ध
न चाहत है सदा तासों त्यागन होइ
धनमें दोष अनेक हैं कहत पुराने
लोइ॥५४॥जो धनके अपराध हैं डीठ
परत सभमोहि॥पारथ देष विचारि
कै सकल सुनावों तोहि॥५५॥जो चा
हत है याहिको सो नित त्यागन योग
ताको त्यागन करि सकैं जानत हैं स
भ लोग॥५६॥कोंहू धर्मन करि सा
कै जो धन जोरन हार॥बिना पाप धन
होत नहिं सुन कपि केत उदार॥५७॥
धन दुखदायक है सदा करत द्रोह अ

नि चोर॥ विना पाप धन होत नहिं सु
नहु कुरु शिर मोर॥ ५८॥ जो जन न
जन स्वभावको हर करत भय शोक
घोरे धन की प्याससो नहिं पावत सु
र लोक॥ ५९॥ जो सेवक हैं आपने उ
नको बी नहिं देत॥ दुर्लभ धनको न
जन जन खेद बढावत हेत॥ ६०॥ सु
खी होत धन हीन जन साच कहौं गु
डकेश॥ जो जगमें धनवान हैं सो नित
पावत क्लेश॥ ६१॥ नेहा धुतानी गायइ
क कहैं सिष्यानै लोग॥ यज्ञ दान धन
सो करै ना करि पतन भोग॥ ६२॥ की
ने प्रगट विरंचि धन यज्ञ दानके हे
त॥ उनकी रक्षा हेत जन प्रकट किये
कपिकेत॥ ६३॥ सवैया॥ साच कहौं
तुमसो यह पारथ यज्ञ सदा धनसो
करिये॥ जो धन आन मिलै जगमें वि
न देवनको उनसो भरिये॥ ना धनको

नी·
५०
57

करिए अभिमान सदा अपराधनसों
टरिए॥३॥२॥वहैं धनसिंचनतें जगमें क
पिकेन कहा उनसों करिये॥८४॥दोहा
तातें धननहिं काहूको साच कहैं क
पिकेन॥जोधनहै यह जगतमें यज्ञा
दानके हेत॥८५॥चौपई॥धर्महीनको
जोधन देत॥सोमूरखजानो कपिकेत
करै वर्ष सो दुर्गति पावै॥भोजन मृतपु
रीषहिं खावै॥८६॥दान धर्म नित का
हिन वषाने॥जोविप्रनके भेदहिं जाने
तातें ब्राह्मन धर्म पछान॥अरजन क
रिए सिगरे दान॥८७॥दोहा॥जोधन
है यह जगतमें ताके दोइ सुभाइ॥भ
लो बुरो द्विज जानिके देत रहैं चितला
इ॥८८॥इतिश्रीमहाभारते शांतिपर्व
णिदान धर्मभाषायां कविदेव दत्तात्
ज नंदरामात्मज शिवराम नन्दत्रि
लोचन विरचिते नीति विनोदे दानवि-

योध्यायः॥२२॥युधिष्ठिरउवाच॥स
वैया॥जोगुरुहूंत तनुजको बाल हमो
अरु द्रौपदिके सुतमारे॥तीरहुमत
विराट हने बहुभांत पंचाल नरेश सं
हारे॥जोकपिकेतनहूंने रविसुतहन्यो
तजि बानचलै अनियारे॥सोयहशो
क नछोरत मोहि कहा कहौं तुंडना
हीं दुखभारे॥१॥दोहा॥जाके छिग खे
लतरहे हम सभ वारहिं वार॥सो भीष
म मार्यो हमें तजि तजि बान अपार॥
२ राजलोभ कीनों हमें साच कहों गु
निराइ॥हन्यो पिता मह खिनमें करिक
रि चलै उपाइ॥३॥सवैया॥लागत देखि
अरजनके परयानतनेमें अतिही अनि
यारे॥सोमन बाढत खेद बडोगुनिरा
र कहा कहिहों दुखभारे॥लोककहैं
सुनिकै हमको सभ पांडव हैं कुलमें
उजियारे॥राजको लोभकियो उनहूं।
रणमें गुरुऔर पितामह मारे॥४॥क

नी॰ ५८

58

चिन्न॥वीरनमें वीर धीर देत वैरिवाहिनी
को सावहीं प्रनत्तायाको होनरहे रनमें
कांपत धराधरज्यों वासवके वज्रहूं तें
त्योंहीं वह कांपत शिखंडी से मनमें॥
कीनोहै प्रसन्न परशुराम जिनसंगरा
में पिताहूं केहेत जिनराखि कामत
नमें॥जीरण मृगेश कै समान सोनो
मारो हमै तातें मेंन रनकरें जावें
आजु वनमें॥५॥दोहा॥भीषम केतन
देषिकै लगत अरजुन वान॥साचा
कहैं मुनिराइजू मोमन होतहिरान ६
ताहिपरन लखियानतें देषि सिषंडी
भेद॥७॥परशुराम कुरु खितमें जीत्यो
समर उदार॥जिन अपनै भुजबल हूं
तें नेकुन मानीहार॥८॥सोरठा॥सा
निकै काशीमांहिं एकन भयनेरण
सभ॥दौरिगयो उहि ठांहि जीतिलि
ए छिन एकमें॥९॥सवैया॥काहा
कहों मुनिराइ सुनो कछु भीषमकी

रनमें निपुनाई॥ उग्रपास नरेश हु
न्यो अतिही करिकै जिन घोर लराई
सोहमे मारिलियो रनमें जिहि सेव
न है सम रंकउ राई॥ ताहि को मारन
पारथके मनमें अबको करुणा नहिं
आई॥ १०॥ दोहा॥ ताहि परनलखिधर
नेमें नजन रुधिरको पूर॥ ताहि समे
मम देहमें बाढ्यो ज्वर अति क्रूर॥ ११
जिन हमरी पालन करी सभराखे रण
मांहि॥ राजलोभने सोहमें मारिलि
यो नरनाह॥ १२॥ युधिष्ठिर उवाच॥ स
वैया॥ द्रोण आचारज मार्यो हमे रन
मे अपराध बडोयह कीनो॥ कुंजरा
जो अश्वथाम हन्यो तब ऊंचै उचारि
कै यों कहि दीनो॥ साच कह्यो हमरो
उनि जानिकै कूकिरह्यो रनमां अदी
नो॥ देहमें आग लगावत है कहि कू
रहमे गुरु यों हनिलीनो॥ १३॥ सोरा
ठा॥ करि हमरो विश्वास जोउनिप्र

नी॰
५९

59

छ्यो मोहको॥साच कहो यह व्यास
बाप तैहै ननवेद अति॥१४॥नर मा
रो अस्वथाम झूठ कह्यो रनमें हमें॥
कियो चोर यह काम कुंजर को मिस मा
निकै॥१५॥जो मारयो रनद्रोन साचक
वच करि हमें॥कियो धर्म यह कौन
साच कहो मुनिराइ उत्तमा॥१६॥पावौं मैं
गति कौन ऐसो निंदित कर्म करि॥ह
न्यो करणि अरु द्रोन कियो पाप अति॥
घोर यह॥१७॥मोसों पातकि और नाको
उ है अब जगत में॥हन्यो सूर सिरमौर
बड़ो स्यान अपनो करन॥१८॥मारयो॥
अभिमन वीर मेरेंही अपराधनें॥जोगा
जन धरि धीर ज्यों मृगेश कोउ बनहूं में
द्रोन अनीकनि मांहिं हमें पठायो लो
भतें॥तादिन तें मुनिनाह अर्जुन देखि
सकौ नहीं॥२०॥क्यों करि देखौं आज॥
कृस्न देवके सामुहें॥ज्यो मानत आ
तिलाज बालनको अति मारिकैं॥२१

सवैया॥क्यों सुषदेषि सकों मुनिराइ

जू द्रोपदि कृष्ण अरजुनहीं को॥द्रोण

दिके सुतपांच हने अरु एक हन्यो

कपि केतनजीको॥राजको लोभकि

यो अतिहीं अबनाश भयो सिगरीए

थिवीको॥ह्यां अब बैठि समाधि लगा

इ सुकावनहों अबमें कलेवरको॥२२

सोच कहो तुमसों मुनिराइजू में अपए

धकिए अतिभारे॥भीषम द्रोन अचा

रज और नरेश घने रनमांहिं संहारे॥

जाहु चरें तुम एकत है सभमें अबा

शोचत हों डुषभारे॥कै कै उदासथरा

मम नरेश महीपति यों विधिवैनउचा

रे॥२३॥दोहा॥नाकछु भोजन करत

हो नाकर हों जल पान॥तप करि देह

सुकाइकै ह्यां अबतजहों प्रान॥२४॥

वैशंपायनउवाच॥दोहा॥नृपवं धुन।

के शोकतें ताकोंव्याकुल देषि॥व्या

के शोकतें ताकोंव्याकुल देषि॥व्या

सदेव तब कहतहै योंविध बचनवि

पेषा॥२५॥सोरठा॥सुनिए धर्म नरेश
येंविध शोकन कीजिए॥हरकरहु स
मक्लेश देवकरत सोहोतहै॥२६॥दो
हा॥मरन जनम यह होतहै जीवनको
नित पोत॥ज्यों जलमेंहैं बुलबुले को
ऊजात कोऊहोत॥२७॥सकल समूह
विनाश लगऊंचो है पतनांत॥सिगरे
योग वियोग लगजीवनहै मरणांत
॥२८॥दुःखहै ननहिं शत्रुगण नांहि
मीत सुखहेत॥नहिंस सुखि विन अ
र्थहै सुनहु भूप धरिचेत॥२९॥ज्योंसि
रजे होजगतमें कर्मकरनके हेत॥त्यों
ही नृप अब कीजिए राज काज धरि
चेत॥३०॥सोरठा॥सत्य भूप जियजा
न कर्मसिद्ध नितही रहत॥मुनिजन
करत वषान कर्मत्यागनहिं होतहै
३१॥इतिश्री महाभारते शांतिपर्वणिरा
जधर्म भाषायां नीतिविनोदे त्रयोविं
शोध्यायः॥२२॥वैशंपायनउवाच॥

नजन प्रानलषि नृपतिको बंधुशो-
क अतिपाइ॥ समुझावतिहै नाहिको
वामदेव मुनिराइ॥१॥ व्यासउवाच॥
चौपई॥ भूपकहौं इतिहास पुरानन
जो द्विज अष्टमकह्यो अघनाशन॥
नाहीको मुनिपं विनलाई॥ मैंतुमसों
अब कहतहौं बनाई॥२॥ दोहा॥ एक
दिवस मुनि अष्टमको एकंत जनक-
नरेश॥ संपूछ्य अपने आपको मन
महिं धरतक्लेश॥३॥ जनकउवाच॥
आवनमें अरु गमनमें अतिगन कैथ
नमांहिं॥ क्योंकरिकै करिवो चहै सा
चकहौ मुनिनाह॥४॥ अष्टमकउवा
च॥ प्रकटत जादिन जगतमें यह नर
भूपप्रधान॥ तादिनतें निजकर्म ते
सुखदुःखविहोत समान॥५॥ यह न
पकर्म स्वभावतें सुखदुःख विसमक्को
जान॥ नवसे सुखिको हरतहै ज्यों
मेघनको वात॥६॥ सोरठा॥ लखिम

नी॰
६१

61

जौदाहीननव ऐसैनर भूपको॥का॥
न सकल धनछीन ज्यौंकोउ बनमें मृ॰
गहनै॥दोहा॥कोउजन तीसहि वर्षमें
कोउ वर्ससबीस॥कालग्रसतहै सब॥
निको साचकहौं अवनीश॥८॥ऐसे
डुख संसारके जानहु जनक नरेश॥
ताकी औषध करनतें हरहोत समले॰
श॥९॥योंविध डुःख अनेकहैं नरा॰
पावत जगमांहि॥अपने अपने कर्म
तें बिनाकर्म कछुनाहिं॥१०॥सोरठा
जरामरन यहदोइ जगमें जीवनको
असें॥इनबिन औरनकोइ ज्यौंभगिया
री मेषको॥११॥दोहा॥कोउ निर्बा॰
ल जगतमें कोऊहोत बलवान॥को॰
ऊ छोटे देहतें कोऊ लंबेजान॥१२॥
क्योंहू इनको जगतमें वारि सकै न
हिं कोइ॥कारण है नृप सबनि कै
जरा मरन यहदोइ॥१३॥सवैया॥य
द्यपि सागरलौं धरणी नल जीतिकै

राजकौरे नरभौरे॥यद्यपि पशुव दुः
ख जहानके पावतहैं तिनहीं अनि।
यारे॥नाकोउ वारि सकै इनको जग
में नरहूं अनिहीं बल वारे॥आपने।
आपसों आवत हैं विधि लेख लिखे
सु टरें नहिं टारे॥१४॥दोहा॥बालक
है कोउ जगतमें कोऊ होत युवान॥
सुखदुःखसमको होतहै यो विध व
लन जहांन॥१५॥कोऊ वारि सकै न
हीं जरामरन यह दोइ॥इनको चाहा
न नाकोऊ कियोहू औरन होइ॥१६॥सु
ख दुःख पावत सकल जन भूप कर्म
अनुसार॥विना कर्म कछु होत नहिं
यही जगत व्यवहार॥१७॥मीतनसोंन
हिं होतहै कबहूं नृप संयोग॥सुनि
प जनक नरेश सुम वैरनसों न वियो
ग॥महनृप जो कछु होतहै सकल
कर्म व्यवहार॥मक टतहैं सुभकर्म
तें मरत कर्म अनुसार॥१९॥सकल

नी·
६२

कर्म अनुसार है लाभ विद ग्रहयोग
भूपति ह्वत स्वभावतें पांचविषयके
भोग॥२०॥सोरठा॥आसन भोजनपा
नशयन उदयनृप पांचयह॥सकल
जीवनको जान समय समय में होत
है॥२१॥दोहा॥वैद्य रोग युत होतहैं
दुर्बलहैं बलवान॥धनी नपुंसकहो
तहैं चित्रकाल गतिजान॥२२॥ऊंचे
कुलमें जन्मयह तन अरोग बलरू
प॥भोग प्रगल्भ ना कहे बिनाका
म नहिं भूप॥२३॥जोनहिं चाहत।
सजन को उनके हैं बहु पुत॥जोचा
हतहैं प्रीतसों उनके होतन पुत २४
रोग अग्र जल शस्त्रविष विपदस्व
धाम्यवहार॥ताप पतन अकमरण
नृप होत कर्म अनुसार॥२५॥सोर॰
ठा॥देखि परत धनवान मरत युवा
नीमें घनें॥सत्यभूप जियजान बू
ढे है निरधन मरत॥२६॥कोऊमे

पदहीन जीवनहैं चिरकाल नराहि
कै काल अधीन संपद युत निगम
रतहै॥२८॥दोहा॥जिनके संपदहै
घनी भोगि सकै नहिं सोइ॥नृप जि
नकै संपद नही उनको देतनकोइ
॥२९॥यह कारजमें करतहै॥ योजा
नत मनमांहि॥फस्यो कालके पा
शमें धर्मकरत कछु नाहि॥३०॥द्यू
त पान वेश्या गमन अर्थवाद यहा
नीन॥देषि परत मतिमान जन हेंर
नमें अति लीन॥३१॥जीवनकोसु
ख दुःखयह होत समय अनुसार
कारन देषि परै नही सुनिपमूप उ
दार॥३२॥वायु अग्नि आकाशनृप
चंद सूर सुर मौन॥उदयहोत हैं न
खितसम इनको धारत कौन॥३३॥
सोरठा॥प्रीत वाम अगार समय
समयमें होतहै॥सुनिप भूपउदार
सोंही सुख दुःख जगत में॥३४॥४

नी॰
६३
63

दोहा॥ औषधि जोबनमें रहें मंत्रहोम अरु जाप॥ नरको राषि सकैनहीं कालग्रसै जब आय॥२५॥ ज्यो भूपति दरियाउ में मिलत काठ जब दोइ॥ मिलिकै न्यारे होत हैं त्यों जगमें सब कोइ॥२६॥ कवित्त॥ कोऊजन भूपति विहार करैं नारनसों गीतऊ बजंत्र नीके सुनत रहैं तितहीं॥ कोऊ है अनाथ पर अन्नबोइ मान रावैं मात तात बंधुनको शोचत हैं चितहीं॥ कोऊ झूमधारे मतवारे रहें आठो यामसु भट्टनके प्यारे बोल बोलत हैं हितहीं॥ एक सेही काल भगवानहू को देषि परें समय देषि सबहू को मारत जित कितहीं॥२७॥ दोहा॥ तात मात सुत सबनसों नेह करत सब लोक॥ सब भूपति झूठे है नेकुन करिये शोक॥२८॥ सोरठा॥ काहूको नहि कोइ सुनिये जनक नरेश तुम॥ जरा

मरत यहदोइ जगत चराचरको हना
ना॥४१॥दोहा॥दार बंधु सुत मीतहैं
ज्यों मारग संयोग॥कोउ आवत को
उ जातहैं छिनमें होत वियोग॥४०॥
योंहीं किहिं डौरतें जावें कौनहिं ठो
र॥तामें थिरहीं जगतमें करी करि य
तन करोर॥४१॥यह रथ चक्र समान
नृप भ्रमत रहत संसार॥क्योंहू पो
कनकीजिए जानहु सकल असार॥४२
तातें मन थिरकीजिए सुनिए जना
क नरेश॥तातभ्रात सुत सबनको
कहेहैं सभक्लेश॥४३॥क्योंहू नृपा
न कीजिए बंधुनको तुम शोक॥आ
गमनिगम विचारिकै साचकह्यो पर
लोक॥४४॥देव पितर अधिकारजो॥
धर्म पुरातन जोर॥यज्ञदान तिनकी॥
जिए सुनहु नृपशिरमोर॥४५॥चौ॥
पई॥नृपयह काल महोदधि भारी॥

नी॰
६४

जामेंकूढ रह्यो जगसारो॥जरामरनदो
नो ग्रनियारो॥यामहिं याहकहैं डुख
पोरा॥४६॥सोरठा॥पढि पढि ग्रंथ समा
ज औषधिडोर सवारिकै॥देषि परत म
हराज वनैचिकित्सक रोगग्रस्त॥४७॥
दोहा॥काथपान वहुकरतहै चूरनग्र
रु चूरन तेल॥वारि सकैं नहिं मीचको।
ज्योंसागरको वेल॥४८॥सदाकरत पा
प पान ज्योंत्योंही रसवहु भांत॥तदपि।
जरातृप ग्रसतज्यों गजको गजमदमा
त॥४९॥त्योंही जपतप करतजो पढ।
त पढावत हार॥तदपिवारि सकें नहिं
जन्म मरण व्यवहार॥५०॥ग्रयन वर्ष
ऋतु मासदिन क्रमसो ग्रावत जात॥
ग्रसतरहें तिननरनको निशिदिनपी
डितगात॥५१॥कोंहू भूपनहोतनजग
मनुजनको विश्वास॥दारमीत ग्रसु
तननको निशदिनहोत विनास॥५२

नहिं कछु अपनै आपको मनुजनको
विश्वास॥ कै औरनके करिसके सा
भजन होत नित राम॥५२॥ अधमकउवा
चा॥ सवैया॥ कौ नहिं डोरमें साचकेहो
उम भूप पितामह बापतिहारो॥ ता
कोउ जानत है परलोकहूंके सुख दुःख
जो वेद उचारो॥ जो कछु बीत गई सुगई
नृपदोष कहा जोनतैसे वह मारो॥५४॥
चौपई॥ तातें भूपति शोक न करिये॥ व
स्रवछे मनमें नृप धरिये॥ तत्र धर्महूं
कोमन आनो॥ पितृदेवनको मानहिं
दानो॥५५॥ कवित्त॥ आनो मन ज्ञान
ध्यान दानो भगवानहूं कामक्रोध लो
भ अहंकार वस कीजिये॥ उतर होभू
प आठोयाम परलोकहूतें कैके मन
मान दान विप्रनको दीजिये॥ येवि
ध विचारै जोनरेण तत्र धर्महूंको वै
तिनकी संपद रनजीति हरलीजिये॥
ऐसें जोनरेण धर्मधारतहै वारवार
पावत सुरलोक साची बातए सुनी॥

नी.
६५

जिं॥५८॥दोहा॥यौंविध अषमक वच
न सुनि भूपति जनक नरेश॥करि वि
चार मनमैं बडो हृर किय समझेश॥५
९॥लैशासन मुनिराइको ह्वै प्रसन्न म
न माहिं॥आयो अपने गेहनृप शोक र
ह्यो कछु नाहिं॥६०॥व्यासउवाच॥स
वैया॥सांच कह्यो नृप शोक बडोयह ह
र करो निजराज सम्हारो॥तत्रधरमा
की रीतिहूंसों तुम्हें जीतिलियो धरणी
तल सारो॥ज्योंनृप मारिकें वैरिनको
प्रहस्त कियो रनमें अवहारो॥बाप
पितामहको तुम भूपति राजकरोअ
पनो मन पारो॥६१॥इतिश्री नीतिवि
नोदे चतुर्विंशो ध्यायः २४॥वैशंपा
यनउवाच॥यौंविध विलपत भूपको
लखि अरजन परवीन॥कृस्नदेव सों
कहतहैं यौंविध वचन अधीन॥१॥
अरजन उवाच॥सुनकृ कृस्न यदु ध
मिनृप वंधुनको पछुनान॥बडो शो
क समुद्रमें मग्नकीवा बहुमान॥२॥

सवैया॥सा चकहों तुमसों यदुराइजु।
मैंहों महारन मैं अतिबीनो॥दारुन
बान लगेहैं करन्नकै तातें भयो हम।
रो तन छीनो॥मारे हमें कुरुवीर घने
अपवाद बडो जगमें यहलीनो॥सोपु।
रुषारथु साथभयो अबभूपतिको ल
खि आनँद हीनो॥३॥एक शोक पहि
ले हुतो शोअब हुजो आइ॥जो बंधुन
के शोकतें रह्यो भूप अकुलाइ॥४॥
तातें माधव भूपको समुझावो करि।
हेत॥योंकहिकै चुपह्वैरह्यो नाकिो
न नृप कपिकेत॥५॥वैशंपायनउवा
च॥योंसुनि अर्जुनके वचन वासुदेव
यदुराइ॥भूपति ओर निहारिकै कह्यो
न लग्यो समभाइ॥६॥लेकर बालक
भावतें धर्मराज हितमान॥करत रा।
ह्यो हितकुसमों अर्जुन भीम समा
न॥७॥सवैया॥भूपतिको भुजसों ग
हिमाधव योंविधि ताहिसों वैनउवा।

नी॰
९९

सो॥मोहतनहै मुख माधवको विकसो
नतु पंकज भूप निहारयो॥मारयो तुम्हे
सरदार कुरुनके तब धरमहूं कोप
न पारयो॥जाइ रहे सुरलोकहुं में न
प शोक कहा उनको मनधारयो॥८॥
कीयो नृप देह सुकावत हो करिशोक
बडो यह सोच कैजानो॥जोरन रंगमो
कारहतै सरदार बडो उनको हितमा
नो॥ताको भाग्नि गयो रनछोरिकै दो
सनही उनको तुमदानो॥जाइ रहे पु
रंदर लोकमे शोकनही उनको मना
ठ्यानो॥दोहा॥तब धरम रन भूप स
मकूकि रहे रनमांहि॥पहुंचे हैं सुर
लोकमें करहु शोक कछुनांहि॥९॥
एक पुरानो कहत हो हस्ताइनिहासव
ताइ॥नारद संजयसौ कह्यो सोसुन
पांडव राइ॥१०॥नारद उवाच॥हम तुम
भूपति और सब सोवहुगाव सौ ग्रकु
लाइ॥मोत होइबिन मरनहे करिपको

न उपाय॥ कृष्ण उवाच॥ चौपई॥ १२॥
संजय भूपति कै घरमांही॥ नारद
मुनि आयो उहिं ठांही॥ पुत्रशोकयु
त नृपको देषि॥ कहन लग्यो यह व
चन विशेष॥ १३॥ नारद उवाच॥ भूपति
पुत्र शोक नहिं करि यों॥ धरि धीरज अ
पनो मन भरियौ॥ पाछें भूप भए उजा
यारे॥ मीचहू तें स्वर्लोक सिधारे॥ १४
दोहा॥ तुम उन भूपनकी कथा सुनि
ये नृप धरि ध्यान॥ सो मैं सुनावै याहि
कौ बाढतहै मन ज्ञान॥ १५॥ कवित्त
भूपति महंत रंति देव शशिबिंदु भयो
पौरव दिलीप जाको यश गायोहै॥
भयोहै ययाती मान धाता रामचंद्रजि
न यागनमें कोर कोर ब्राह्मन जिमा
योहै॥ अंबरीष भरत भगीरथ सुहो
त्र शिवी पृथुराय परशु रामचरित्रस
हायोहै॥ ताते महराज कहा होत बि

नी॰ ६६

67

रलाप किये जोजो जग जायो सो।
सो कालबस आयो है॥दोहा॥२६॥
इन भूपनके राजमें भए सकल भय
हीन॥अपने अपने धर्मसों किए स
बनि दुखछीन॥२७॥पनए तुमसे स
ननतें भए अधिक बलवान॥तद्यपि
कालहूंने ग्रसे काल बडो बलवान
॥२८॥भूप कहा तुम करत हो मनमें
और विचार॥जो कछु मैं तुमसों का
ह्यो यही जगतको सार॥२९॥यह भू
पति हमरो कह्यो कों है, डूबत हो र
हे भ्रातरको पथ्य है जानत है सम
को३॥३०॥संजयउवाच॥नारद यह
तुमसें कह्यो हन्यो हमें चिरकाल॥अ
ति पवित्र बहु अर्थयुत ज्यों फूल
नकी माल॥३१॥मुनिवर भूपनकी
कथा सुनी हमें धरिचैन॥यत संप
द अरु यशकरी शोक निवारन हेत

॥२२॥नारकहु कूर कह्यो तुलसिं नाक
कु बोल्यो कूर॥तुमरो दर्शन पाईके
शोक भए सम दूर॥२३॥चौपई॥सु
नि सुनि मुनिवर वचन हमारे॥बा तिहारे
ढतहै मन ज्ञान हमारे॥होत तुम ह
मरो मन नांही॥ज्यों करि अमृत पा
न जग मांही॥२४॥दोहा॥सुन विया
गतें जरतहै हमरो मन आज॥जो क
रुणा तुम करतहो दीजें सुत मुनिरा
ज॥नारद उवाच॥ह्वै प्रसन्न तुमको
दियो ये पर्वत तपधाम॥सो तुम्हा
सुत पूरो भयो सुवर्णष्ठीवी नाम॥२६
भूपति तुमको देतहों पुनि निहारे सो
३॥जीवहिंगो चिरकाल वह कैतो हूं कू
टन होइ॥२७॥इति श्री महाभारते शा
न्ति पर्वणि राजधर्म भाषायां कविदे
व दत्तात्मज नंदरामात्मज शिवरामत
नूज त्रिलोचन विरचिते नीति विनो
दे पंचविंशो ध्यायः॥२५॥युधिष्ठिर उ

नी॰
६८

68

वाच॥स्वर्णष्ठीवी नाम संजयको सुत
जोभयो॥कैंपर्वत नयधाम दैके प्रस
न नाको दियो॥१॥यद्दवर हर्ष हजा
र द्वापर युगमें उमरहै॥कैंवह राज
कुमार छोटेही एरो भयो॥२॥भयो
नाम किहिंकाज स्वर्णष्ठीवी नाहि
को॥साच कहो महाराज चाहतहोंमें
सम सुन्यो॥३॥कृष्णउवाच॥दोहा॥
स्यो तुमसों मैंकहतहों एख वृत्तवना
श॥ज्योंवह संजय सुतभयो सोसुना
ऊंदवराइ॥४॥चौपई॥नारद पर्वत
आनंद छाए॥देवलोकतें भूतल आ
ए॥भागिनेय मातुल वह दोऊ॥वि
चरतहैं धरणी तलसोऊ॥५॥दोहा॥
भागिनेय पर्वतहुतो नारद मातुल
नाहि॥होतो नयपरभावतें विचरत
हैं भूमांहिं॥६॥आयसमैं श्रृंजि
मीनसों कीनो उद्धृत करार॥जोजा
हीके मनफुरै भलोबुरो अवहार॥

॥७॥सोकहि दीजैंतुरतही कोंहू कू
वन होइ॥जोनकैहै करिकुटलता
शापनाहिको होइ॥८॥बहुत भलीय
यें कहिनवे दोनो आपस मांहिं॥
संजय नृप ढिग जाइकै कहन ला
गे कुनिताहिं॥९॥हमदोनो तुमरे
हमैं थोरोही कछु काल॥बसनेहै।
तुम सीनसों सत्यजान भुअपाल॥
नीकैं सीन बडाइकै राषहु हमरोमान
संजय नृप सोंहीकियो सत्यभूपति
यजान॥११॥एकसमै उनिडहुनिको
संजय नृपकरजोर॥कहन लगेया
ति सीनसों सुनिएं कुरुशिरमोर॥१२
देषहु तुम हमरीसुता विचरतहै ता
अपास॥रूपशील सभगुण भरी पद्म
पत्रपरकाश॥१३॥योंकहि उनसों भूपत
कन्यासों यहबानि॥करो विचरइनसा
थुहै देवतान समजानि॥१४॥बहुत बा
लीयो कहि तबै कस्यो भूपकोमानि॥१५

नी॰ ६४ ऐसे सो ताको भाव लषि नृप अधिक गु
ण औरा ॥ नारद मुनि डोल्यो नहो सुन
६१ हु भूप शिरमौर ॥ १६ ॥ बाढ्यो नारद
देहमें काम बडो बलवान ॥ बाढत है
सित पक्षमें ज्यो शशिधर नृप जान ॥
१७ ॥ कुटिल भाव लषि आपनो भूप
निकै वरमोहि ॥ है सलज्ज पर्वतहु
सो कह्यो भूप कछु नाहिं ॥ १८ ॥ पर्व
त अपने नपहु सो जान्यो ताको भाव
कामयुक्त लषि ताहिको दियो सुर
न यह शाप ॥ १९ ॥ जो मानल पहिले
नहिं मोसो कियो कराय ॥ सो क्यो
रूढ भयो इहां नेकुन कियो विचार
॥ २० ॥ होवहिगी तव भामिनी नृपा
कन्या जिय जान ॥ वदन तिहारो हो
इगो बानर वदन समान ॥ २१ ॥ भागि
नेयके वचन सुनि नारद अधिक रि
साइ ॥ दियो शाप पुनि ताहिको दारु
न कोप दिषाइ ॥ २२ ॥ जानत है तुम

समकछू अपनय विप्राजाइ॥ कोहूं
स्वर पुरवास तप्र तदपित पर्वतहोइ
२२॥ कृष्ण उवाच॥ सवैया॥ यों विध नी।
घन वेननसों उहिंठौर दोऊ अति वि-
ह भये हैं॥ क्रोध बढावत आपसमें ब
न कुंजर ज्यों अतिकोप छये हैं॥ तातें
परबत भूतल छूमत आपने तेजसों
मान दये हैं॥ भूपति संजयकी तनया
मुनि नारदने कर आन गहे हैं॥२४॥ दो
हा॥ देख्योहै तब नृप सुता बानर मु
ख मुनिराइ॥ ताअपमान कियो क
छू अपनो भाव दिषाइ॥२५॥ सोरठा
एक दिवस उहिंदेश विचरत पर्वत।
मुनिगयो॥ तनिपं धर्मनरेश उतिम्हा
द देख्यो नहो॥२६॥ दोहा॥ करि प्रनाम
फुनि ताहिको मातुल अपनो जानि॥
करिपं करुणा मोहुपै कहन लग्योय
ह बानि॥२७॥ यों सुनि पर्वतसों कह्यो
तबनारद मुनिराइ॥ पहिलें श्राप तमें

नी॰
८॰
70

दियो दारुण कोप दिखाइ॥२८॥सो॰॥
बा॥सुनि नृपवचन कठोर पाछेंण
पछितयो हयमें॥कबहूं सुरपुर और सुम
रे वासन होइगो॥२९॥भागिनेय सु
अशाप हर होइगो आजुतें॥यों कहि
नारद आप क्रूरो पर्वत शापमें॥३०
नृपकन्या तब जानि नारद मुनिको
देव सम॥मनमें भई हिरान ताहिजा
नि पति और को॥३१॥तब पर्वत मुनि
राइ ताको यों भयभीत लषि॥कहन
लग्यो खबरदार ताहीको समुझातो
यों॥३२॥दोहा॥मातुलि शंकन की
जिय भयो अपनो जान॥तीन लोकप
रसिद्ध यह मुनि नारद अभिधान॥३३
यों पर्वतके वचन सुनि सुदिन भई म
नमांहिं॥अपने पतिको शाप सुनि ल
गी सराहन तांहि॥३४॥क्रमसउवाच॥
सोरठा॥तब पर्वत मुनि राइ भूपति स
दनको गयो॥बालस एन सावधान ग

ये आपने मदनको॥३४॥यह नारद मु
निराइ वे सोहै तुम्र पास नृप॥याही
को चित लाइ पूछो सम कछु कह
तहै॥३५॥इति श्री महा भारते शांति
पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि देवा
दत्ता त्मज नंदरामात्मज शिवराम त-
नुज त्रिलोचन विरचिते नीति विनो
दे षष्ठिंशो ध्यायः॥२६॥वैशंपायन उ
वाच॥दोहा॥नारद को पूछन लग्यो
धर्म राइ इम भाइ॥चाहत हों मैं सम
झ्यो साच कहो मुनिराइ॥१॥सोरठा
सुवर्णष्ठीवी नाम संजयको सुत जो।
भयो॥साचकहो तपधाम चाहत हों
मैं सम झ्यो॥२॥दोहा॥पूछ्यो या
मैं नरेश हूं यों विध सों मुनिराइ॥३॥
तपत राज कुमार की कहन लग्यो।
सुखदाइ॥४॥नारद उवाच॥जो यह
कथा हुंनें कह्यो सत्य भूप जियजा
नाषोचाह्यो सोकहत हों सुनिएं

नी॰
७९
71

नृप धरिध्यान॥४॥कवित्त॥जानिकै
तुमासा हमदोनो वास करन हेत सं
जय नेरेशजूकै गए हरषाइकै॥पायो
हमैमान देषि भूपतिको प्रीत घनी
रहे उहिठौर ग्रति ग्रानंद सौंछाइकै
बीत्यो तुमासा बासकरन नृप गेहमा
हि पर्वत कह्योहै ताये करुणादिषा
इकै॥जोजो बरदान ग्रबचहियत है
भूपतमै देहों छिन माहि सोसो दीजि
ए बनाइकै॥५॥दोहा॥यो पर्वतके
वचन सुनि संजय नृप करजोर॥कै
ग्रधीन ग्रैसे कह्यो सुनिए ऋकषिर
मोर॥६॥मोपे भए प्रसन्न तुम यही
हमारो काम॥हौरन चाहतहों कछु
साच कहों तपधाम॥७॥कह्यो भूप
के वचन सुनि यौपर्वत मुनिराइ॥जो
चाहतहो भूपतुम दीजें तुरत बनाइ
८॥संजयउवाच॥चाहत हों मुनिराउ
जू एसो सुत बलवान॥जोधीरज ह

छ्योगतें ह्वैहै इंद्र समान॥९॥पर्वत
उवाच॥भूप मनोरथ होइगो जोतुम
रे मनमांहि॥ऐसोही सुत होइगो
जीवहिंगो चिरनांहिं॥१०॥सुतप्रसिद्ध
तुम्र होइगो स्वर्णष्ठीवी नाम॥इंद्रहू
तेराख्योचहै यही तिहारो काम॥११॥
वैशंपायनउवाच॥सवैया॥यौंसुनि वे
न परबत के करजोरिकै नाहिंसो बा
त उचारी॥रिषिपजू हमरे सुतको।
अबतूंहि भयो हमरो हितकारी॥ना
हि समै मुनि होइरह्यो चुप होवनहा
र रैनहिं टारी॥मैंतब भूपति को ह
सिकै नृप यौंविध बातकही सुविचा
री॥१२॥नारद उवाच॥जबतुम्र सुतब
स मीचकै ह्वैजावै परलोक॥करिहूं
नाहिं मनमु मे नेकुन करिए शोक॥
॥१३॥यौंसुनि हमरे बैन नृपहरषिए
सभ लोग॥गयो आपसदन को सु।
निए धर्म नरेश॥१४ तबहिंजय नृप.

नी॰ ७२ को भयोएन बडो बलवान॥ वर्णिबी
वी नाहिको धरोभूप अभिधान॥ ९७॥
सोरठा॥ सोऊ नि राजकुमार दिनदिनमें
बाढन लगेया॥ जैसोपंकज कासार दो
षिसभै विस्मय भए॥ ९८॥ सवैया॥ यों
लषि बालक भूपतिको गुरुहूतनहूं
को अतिशोक भयोहै॥ होइगो एब
लवान बडो गुरुदेवहूंमें यहबैन क
ह्योहै॥ राजकुमारको अंतर देषत व
जरमें यहनेम गयोहै॥ है यह हूल
हनो नमयाहिको यहमैंसा नहिजा
न सक्योहै॥ ९९॥ सोरठा॥ जोरहू राजकु
मार बडोहोइगो वज्रसन॥ हमरे सम
अधिकार छिनमहिं अपने वसकरे॥
॥ १००॥ वज्र बडो बलवान अैसेनाको
वचन सुनि॥ सत्य भूप जियजान नृ
प सुतको मारयोचहै॥ १०१॥ भागीर
थिके तीर एकदिवस नृप सुत गयो
षिलनहे नरवीर लेकेधार महाइन

वा॥२०॥पांचवर्षको बालराज नृप सम
बलवान वहू॥कांपत नहीं ततकाल मा
रि लियो मृगराजहू॥२१॥सवैया॥यों॥
विधसों अहि हेर जबै शरहू लइं तै नृ
प बालक मार्यो॥ऊंचे पुकारत यारव
री जल लैनेन कोउनि भूतल डार्यो॥
मारिके अंतर ध्यान भयो मृग भूपन
वै किनहून निहार्यो॥संजय भूपस
न्यो वहरोदन दोरनहीं अहि हेर सिधा
र्यो॥भूप लख्यो तब बालकके तना
पे गिरान जो शरहूल निकार्यो॥शोक
भयो नृप संजय ताछिन हाहत हा
हन बैन उचार्यो॥देखि परै नभमंडल
मै जनु शारद पूरन चंद निहार्यो॥ता
हनि भूपनिकी सिगरी लोचनकोज
ल भूतल डार्यो॥२२॥नारद उवाच॥
दोहा॥संजय भूपहु ने कियो ताछि
न हमसे ध्यान॥पंडुध्यो मैं अहि हेर
तब ताको संकट जान॥२३॥जोत॥

नी॰ ७३ ऐसें पहिले कह्यो कृष्ण देव यदुराइ॥
सोसब संजय भूपसों कहे हमै सुखा
दाइ॥२५॥वासवको मनमानिकै सोफ
नि राजकुमार॥सावधान कीनो हमै
सुनिपं कुरु सदार॥२६॥अनहोनी हो
वै नहीं कीजें यतन करोर॥जोहोनीसो
होतहै कोमुख सकैन मोर॥२७॥सोस्व
र्णष्ठीवी नाम तातेंराज कुमार वह॥
भयो भूप तपधाम राजकियो चिरका
ल उनि॥२८॥कीनेयाग अपार देवपित
र मानें सबै॥भूपति वर्ष हजार राजा
कियो हनिशत्रुगन॥२९॥दोहा॥स्व
र्णष्ठीवी के भए घनेपुत्र बलवान॥आ
पगयो सुरलोकमें कियो सकल जग
दान॥३०॥नारद उवाच॥सवैया॥भूप
ति बापपिता सहको अवराज बडो अ
पनो करिपे॥जोयदुराइ कह्यो तुमसों
अरुब्यास कह्यो मनमें धरिपे॥यागक
रो करिप्रीनतवें उनसों द्विज देवनको

भरिये॥ पावहुगे सुरलोकहुंको नृम
शोक पयोनिधिको तरिये॥ ३२॥ इति
श्री महाभारते शांति पर्वणि राजध
र्मभाषायां नीति विनोदे सप्तविंशो
ध्यायः २७॥ वैशंपायन उवाच॥ दोहा॥
धर्मराइ नृप है रह्यो शोकहूंसों अकु
लाइ॥ सो लषि ताको कहत हैं व्यास
देव मुनिराइ॥ १॥ व्यास उवाच॥ सवैया
पालन रैयत को नित ही यह भूपति भू
प धरम्म कह्यो है॥ राषत है मर्जाद सा
भै श्रुतिवेदनको जिन भेद लह्यो है॥
तातें विचार करो मनमें कछु नाहि तुमसों
अपराध भयो है॥ जो तुम राजको त्याग
करो नृप पहुमसों नहिं जात सह्यो है
२ दोहा॥ विप्रनको यह धर्म है जपन
प ज्ञान विचार॥ ताको वेदन में कह्यो
राजा राषनहार॥ ३॥ जो कोउ भूप हो
स्यो वहै अपनो आप निदेश॥ बाहू
नसों बांध्यो चहै सुनिये धर्म नरेश॥

नी.
७५

74

॥४॥ मानतहैं जोमोहमें जगमें नीत।
अनीत॥ सोनित मारन योगहै है भूप
नितिरमीत॥५॥ सोरठा॥ जानि धर्मकी
हान जोनृप रछ्या नाकरै॥ ताकोपाप
कि जान सकल वेदयों कहतहैं॥६॥
दोहा॥ सोतुमरहूतै रनहूतै पापकि।
मेन समेत॥ सोक कहानृप करतहो
कियो धर्मकोहेत॥७॥ शत्रुनको रन
में हतै निर्धनकोधन देत॥ वैयनको
पालन सदा धर्म बतावत हेत॥८॥ भू
पनके यहकामहैं सुनिए धर्म नरेश
सोतुम सोकन कीजिए हरको सम
क्लेश॥९॥ वैशंपायनउवाच॥ योमुनि
वरके वचन सुनि भूप युधिष्ठिर रार
कहन लगेपाफुनि नाहिको सोकस
हित अकुलाइ॥१०॥ युधिष्ठिरउवाच॥
साचकहो मुनिवर तुम्हें कबहूं कू।
हन होइ॥ दुष्टनको मारन सदा धर्म
कहैं सबकोइ॥११॥ सवैया॥ साचक

होंतमसों मुनिराइ जूमें अपराध कि।
ये यहभारे॥भीषम जोरन मांहि हा
न्यो अरुद्रोण हूतो गुरुदेव हमारे॥
और इने सरदार हने उनको अमारि।
कियो अवहारे॥ताहिते शोचतहों
मनमें अब पावनहै ननवेद हमारे
२२॥व्यास उवाच॥दोहा॥भूपति बंधु
वियोगतें नृपको देखि उदास॥देथीरज
फुनिताहि को कहन लग्यो यहभा।
स॥२३॥नहिं मानव कछु करतहे क
रता ईश्वर जान॥पावत हैं सभकर्म
फल ताविध भूप प्रधान॥२४॥ईश्वर
प्रेरन करतहै मानवको जगमांहिं॥
तातें करत भलो बुरो बिन ईश्वर कछु
नाहिं॥२५॥सोरठा॥ज्यों कोउ जन व
नमांहिं तरवरको छेदन करत॥दोष
परसुको नांहिं नरको सभ पातकि।
कहे॥२६॥त्योंही भूपति जान कर्त्ता ई
श्वर जगतमें॥त्योंही भूपति जान क

नी॰ ७५ 75

जो ईश्वर जगतमें॥ तिनकों होत हितनैवे
रनको रनमारिकै॥१७॥ दोहा॥ जो कछु ई
श्वर करतहै होत जगमें सोइ॥ कर्त्ता भू
पति जगतमें विन ईश्वर नहिं कोइ॥१८॥
ईश्वरही प्रेरन कियो तब महूं को रनमा
हिं॥ तातें बंधु हतै तऊ सुनहू धर्मनर
नाह॥१९॥ सोरठा॥ तातें धर्म नरेश तव
मतिदोष कोऊ नहीं॥ हर करो सम क्ले
श तव धरम मनमें धरो॥२०॥ पापनि
वारन हेत करिये भूप उपाय कछु॥ स
मजान करि हैन कबहूं शोकन कीजि
ये॥२१॥ इति श्री महाभारते शांति पर्व
णि राजधर्म भाषायां शिवराम तनू
ज त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे अ
ष्टविंशोध्यायः॥२८॥ वैशंपायन उवा
मुनि दोहा॥ व्यासदेवके वचन यों सुनि धर्म
नरेश॥ कहन लग्यो फुनि तासों म
न महिं धरत कलेश॥१॥ युधिष्ठिर उवा
च सवैया॥ भूप सनेज हतै रनमें मुनि

गर हमै गुरु ब्राह्मन मारे॥पुन हेन
अरु पातहने अरु भ्रातहने सुरलोक
सिधारे॥देश विदेश नरेशहने रनको
रिके वान हने अनियारे॥शोक पयो
निधि बूडत हो फल हीनभए सभ
काज हमारे॥२॥दोहा॥राजलोभ को
नो हमै नेकुन कियो विचार॥रनमें भू
प हने हने तजितजि बान अपार॥३॥
सोरठा॥तजि तजि बान कठोर संबंधी
रनमें हने॥कियो काम अतिघोर बूड
तहो अब नरक में॥४॥सुत पति नाती
भ्रात मारे जिनतियनके॥सो वकहो
तुम तात कैसे देखो उनमुहे॥५॥
लैलै हमरो नाम रोवतहैं उनकी तिया
॥सोव कहो नयथाम मिरि गिरिभूत
लमें परे॥६॥दोहा॥मारेहैं जिन तिय
नके पति सुत भ्रात रु बाप॥कैसे अब
धीरज करसिको सुनिके विरलाप॥
सोसम उनके नेहसें तजितजि आप

नी॰
७६
76

ने प्रान॥भूतलमें गिरि गिरि परें सोम
न होत हिरान॥८॥नरक वास अब हो
इगो मुनिवर हमरो आज॥बंधुन कोर
न मारिकें कीनो बडो अकाज॥९॥ता
तें अबमें तजत हों मुनिवर अपने प्रा
न॥अथवा डोर उपार कछु ताको करो
बषान॥१०॥सुनि सुनि ऐसे वचन ना
ब जान्यो भूप उदास॥करि करि विचा
र मनमें बडो कहन लग्यो यह व्यास
११॥व्यास उवाच॥क्यों हू भूपन की
जिए बंधुनको अब सोक॥छत्रधर्म
रन है सभै पहुंचे हैं सुरलोक॥१२॥
सूर वीर चाहत रहें जो मीचहिं रनमां
हिं॥सोइन भूपन की भई सोकनकी
जै नाहिं॥१३॥सवैया॥ना कोउ भूप ह
न्यो तुमहूं नहि भीमहूंने रनमें कोउ
मार्यो॥ना सहदेव नकुलहूंने कपिके
तहूंने कहूं कोन संहार्यो॥काल बडो
बलवान कहें सबमें नहिं काहूसों॥

जात निवारयो ॥ नाकोउ काहूको मार
नैहै तुमहूं अब शोक कहा उरधारयो
॥२४॥ चौपई ॥ जाको मात पिता नहिं ।
कोई ॥ काल ग्रसत नृप जगमें सोई ॥
काल कह्यो जगमें परधान ॥ भूप मंत्री
विषमें यह जान ॥२५॥ दोहा ॥ कालग्र
सत है सबनिको सुनिये धर्मनरेश ॥
धरियो धीरज मनमें बड़ो ह्व करो सभा
क्लेश ॥२६॥ भूप सुयोधन जो किये तु
म तुमरे अपराध ॥ उनको करिये जा
ह तुम भासत शोक अगाध ॥२७॥ ता
तें शोक न कीजिये बंधुनको महराज
करिये भूप उपाइ कछु पाप निवार
नकाज ॥२८॥ सुन्यो हमें पीछे भयो
देव असुर संग्राम ॥ आपसमें लरि ल
रि सुप धन संपदके काम ॥२९॥ लर
त रहे अतिकोपते वर्ष बतीस हजा
र ॥ रुधिर कीच भुवमें कियो तजित
जियत अपार ॥३०॥ तामें असुर प

नौ० ३
77

नेहने कीनो सुरपुर राजा॥ यद्यपि म्रात बड़े हुते तदपि न गन्यो प्रकाज॥ २१
ऐंसोही सुख्य सम जीतिकै विप्र भये प्राभिमान॥ मारे प्रसुर सहायमें इंद्रहुंनेतजिबान॥ २२॥ साला हुक जोती हुते विप्र प्रशीति हजार॥ देवन हूं रनमें हने छोरि चने हथयार॥ २३॥ जो प्रधर्मको करत है धर्म विनाशन हार॥ सो नित मारन योग है सुनिए कुरु सरदार॥ २४॥ जो कुलमें इक मारिकें औरनको सुख होइ॥ राज रहै निज कुलहू नै ताको दोषन कोइ॥ २५॥ चौपई॥ ताते मन महि धीरज धरिए॥ कोऊहूं भूपति शोकन करिए॥ जो देवन हूं विग्र ते हारे॥ सोही भूप तमें यह मारे॥ २६॥ ताते तुमको नरकन होई॥ वेदन मांहि कहैं सम कोई॥ भीमादिक जो तुमरे भाई॥ उनको भूप मले सुखदाई॥ २७॥ जो जो हैं उनके प्रधिका

२॥ सो सो अबदी जें तुरत सम्हारा॥क
हो हमारो यो तुम माने॥भूपति अ
पने यश भुअ ठाने॥२८॥दोहा॥
दुर्योधन के दोषतें किए तुह्में यह पा
न॥तुमको दोषन होवई को भूपति
पछुतान॥२९॥जो सब वेदनमें कह्यो
अश्वमेध महराज॥याहीको अबकी-
जिए पाप निवारन काज॥३०॥सवैया
भूप सुने पुरहून डुने जब दानव सं-
गर मांहिं संहारे॥ताहिको पाप निवा
रन हेत किए हयमेध घने उजयारे॥
योंविध मारिकै वैरिनकै गनको अप
नै अधिकार सम्भारे॥राज कियो सुर
लोकहुं में तब सिद्धनके बहुकाज स
वारे॥३१॥दोहा॥योंही भूप वसुंधरा-
भई तिहारी आज॥वैरिनके रनजीति
कै नेकन करो अकाज॥३२॥अब तुम
कोकरिबो चहै उनके देश निजास॥सुत २
नाती उन नृपनके दीजें राजबटास॥२

नी॰ ७८

78

जोउनकी तहनीन के गर्भवास महिं बा
ला॥सो तुम हूं राते चौहैं सत्यज्ञान भु
अपाला॥२४॥सत नाती जिनके नांहीं
उनके देशनि जाइ॥शोक निवारन की
जिए कन्या राज बहाइ॥२५॥आसउवा
च॥सवैया॥यौंबिधसौं उन लोगनि को
तुम भूप बली बिधसौं समुझाई॥पा
प निवारन हेत करो हयमेध बडो अ
ति प्रीत बडाई॥शोक नहीं उनको क
रिए नृप संगर मांहि ह्वै सम गई॥बा
बिए भूपति क्षत्रधरम्म को जो परलो
कहूं मे सुख दाई॥२६॥दोहा॥क्षत्रधर
म धारेो तुम्हैं लखो अकंटक राज॥
वैयतको खुवदी जिए यही तिहारो
काज॥२७॥वैशंपायन उवाच॥सवैया
यौं बिधसौं मुनिराइहूं नै नव भूपभ
ली बिधसौं समुझायो॥नेकुन मान
ने ताको कह्यो नृपवेदहूं सौं अति
ही अकुलायो॥बूडत शोक पयोनि

यिमें नवलागत नेकु कछून सहा।
यो॥कोपत ह्वी कुरुराइ जबै करजो
रिकै ताहिमों बैन सुनायो॥२०॥इ
तिश्रीमहाभारते शांति पर्वणिराज
धर्म भाषायां॰ त्रिलोचन विरचिते नी
ति विनोदे एकोन त्रिंशत्तमो ध्यायः २९
युधिष्ठिर उवाच॥सोरठा॥कौन कौ
न करि पाप प्रायश्चित्ती होत नर॥सा
च कहो पितु बाप चाहतहौं मैं समझ
यो॥भीष्म उवाच॥बुरो करत करिभी
त भलोकाम कछु करत नहिं॥यह
वेदनकी रीत ताको सभ पातकि क
हैं॥१॥चौपई॥उदय अस्तमें सोयार
है॥ताहीको सभ पातकि कहैं॥न
ख अरु श्याम दंतजो होई॥पातकि
ताहि कहैं सभकोई॥३॥दोहा॥बडे
भ्रातको छोरिकै छोटेको संसकार
सोनर पातकि होतहै सुनिए भूपा
उदार॥४॥जोनर विप्रनको हनै हा

नी.
७५
79

नत गुरनको जोइ॥सोनर पातकि होत
है कहत पुराने लोइ॥५॥जोनर जगमें
देतेहै नीच विप्रको दान॥करत सदाब्र
त लोपजो ताको पातकिजान॥६॥जो
नर हनत समूहको जोनित बेचत मा
स॥वनमें आग लगानजो देत सबन
को त्रास॥७॥वेद पठावन दासको म
दिरा बेचन जोइ॥जोनर मारत गुरुना
रको सोजन पातकिहोइ॥८॥जोनरा
वालत जूठजो परघर आग लगान॥
वाद करत गुरुदेवसो सोपातकिहै जा
न॥९॥जोनरप काज अकाजहैं जगमें
करतन कोइ॥जोजो लोक विरुद्ध हैं
सकल सनावें सोहि॥१०॥धरम आप
नो छोरिकै करत मनुज जो ठौर॥सो
नित पातकि होतहै सुनिये कहहि
र सोरा॥११॥जो अभक्ष भक्षण करत प
रण गनको त्याग॥पोषण करत न
दासको सोनर किल्विष भाग॥१२॥

पशु पंछिनको हननजो वेचतहै रा
स जोइ॥नहिं संपदमें करत कछु सो
नर पातकि होइ॥१३॥विप्रनको धन
हरन जो देत दछना नांहि॥धेनु रा
स जो देत नहिं सोपातकि जग मांहि
१४॥सवैया॥जोनर सोवतहै गुरु स
जैसे आपसों वाद करै नित कूडो॥
जोनहिं मौन करै अन्नकालमें बोल
त जोनित बैन अनूठो॥वैधुन सों ना
हिं प्रेमकरै कबहूं नहिं बोलत वैना
जो नूठो॥एसभ पातकि हैं सुनिए।
नृप जोजगमें सभसों नित रूठो॥१५
व्यास उवाच॥सवैया॥भूपति एतम
सों किया मैं अपराध बखान॥इनको
जोनर करतहै सो अपराधी जान॥१६
जैसें नर इनको करत नहिं अपराधी
होइ॥मैं अब तुमसों कहतहों सुनि
ए पांडव सोइ॥१७॥जोबालक दुखि
यार नहिं आवतहै रनमाहिं॥सोनित

नी॰
८३

मारन योगहै दोष भूप कछु नांहिं॥१९
रोग निवारन हेत नर मदिरा पीवत जो
इ॥ लेकर आज्ञा वैद्यकी ताको दोष न
होइ॥२०॥जो सोवत गुरु सेजमें गुरु
कारजके हेत॥ताको दोष न होत है
सुनिये नृप धरि चेत॥२१॥अपनो वा
तन औरको भूपति राखन हेत॥झूठ
कहत कछु दोष नहिं त्योंही गुरु ज
न हेत॥२२॥गोद्विज कै राखन लिये आ
रु कर पीडन मांहिं॥झूठ कहत कहा
न कछु दोष नहिं सुनहु धर्मनर नाह
२३॥वनमें आग लगावत जो गोवृष पा
लन हेत॥ताको दोष न होत है सुनिये
नृप धरि चेत॥२४॥यद्यपि पाप अनेक
है भूप बडे जग मांहि॥यों विध उनके
करनतें दोष भूप कछु नांहि॥२५॥पाप
करत जो जगतमें सोजन पावत क्लेश॥
अब उनके उपचार सब सुनिये धर्म नरे
श॥२६॥इतिश्री महाभारते शांति पर्व

ति राज धर्म भाषायां कविदेव दत्तात्मज·
त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे त्रिंशो।
ध्यायः ३० व्यासउवाच॥सोरठा॥यज्ञ और
व्रत दान जो नर जगमें करत हैं॥सत्य भू
प जिय जान पाप करत सो हर सभा॥१
जो भोजन इकवार भिक्षाटन सों करत हैं
सुनिये भूप उदार धरि कपाल विचरत
सदा॥२॥करि इंद्रिय वश पांच ब्रह्म चर्य्य
धारत सदा॥सुनहु भूप यह सांच भूमि
शयन जो करत हैं॥३॥दोहा॥ब्रह्मचर्य्य
धारत सदा तुमत जो भुम्र मांहि॥ताको
तीनो मासमें पाप रहत कछु नांहि॥४॥
सोरठा॥भूपति जो ग्रहदान धन संपद
युत करत हैं॥करि विप्रन को मान सो·
पावत सुरलोक नर॥५॥सवैया॥राष
तहैं शरणागतन को अभयदान जो देत सदा
उजयारे॥जाप करै शुभ मंत्रन के धरि ध्या
न हिये नित वेद उचारै॥जो हयमेध करै
विधिसों नहिं बूडत है भवसागर भारे॥
भूपति जो व्रत और करै उनको करिकै स

नी॰
९९
81

श्लोक सिधारै॥ दोहा॥ येंविध जोनर
करनहै यज्ञऔर ब्रतदान॥ पावनहै सुर
लोक सो करि विप्रनके मान॥८॥ चांद्रा
यण ब्रतजो करै करत अगन महिं होम
पापकरत है हर सभ जोनिन पीवत सो
म॥९॥ यांविध जोनर करनहै भूपति य
ज्ञ स्नान॥ पाप सकल करि हर सभ सोपा
वनहै ज्ञान॥१०॥ जो संसार मे मरनहै सोद्वि
ज रोषन हेत॥ पाप करनहै हरसो सुनि
ए नृप धरि चेत॥११॥ सोरठा॥ जोनर धेनु
हजार विप्रनको नृप देनहै॥ पाप करनहै
सभ छार दोषहीन सोहोत है॥१२॥ दोहा
॥ है अधीन अनि मानसो नरदेत
हेत॥१३॥ यद्यपि जोनर एकको करत
मनोरथ पूर॥ दान किए जो कहत नहिं
पाप करत सोदूर॥१४॥ वारुणि मदिरा
पान जो करैहै विधि अनुसार॥ पावता
है सुरलोकसो सुनिए भूप उदार॥१५॥
देह त्याग जो करतहै वद्धन हिमालयै

देश॥ पापकरननैहै हरसो सुनिए धर्म।
नरेश ९६ ऊंचे गिरि पर चढ भले त
जत कलेवर जोइ॥ सकल पाप हरके
र छिन एक में सोइ ९ गुरुदेवन की।
तियन सें जोनर करत विहार॥ लिंग।
छेद करि ततनजे ताको एउपचार ९
सोरठा जोजो पाप अनेक भूप कहे हैं
जगत मे करि उपचार विवेक हर होत
हैं सकल वह ९९ सुनि सुनि यों बा
तेरान भूप युधिष्ठिर राइ तब मनमें
भयो हिरान पूछत है फुनिआस को
॥ इति श्री महा भारते शांति पर्वणि
राज धर्म भाषायां कवि देव दत्तानुज
नंदराम तत्सुत त्रिलोचन विरचिते
नीति विनो दे एक त्रिंशोध्यायः ३१
युधिष्ठिर उवाच भलो बुरो जोहोत
है तात त्यान अरु पान ताउप चार।

नी॰ ७३

कहो सकल जोकछु दान स्नान १
वैशं पायन उवाच॥ दोहा॥ यों भूपति
के वचन सुनि व्यासदेव बहु मांन॥
कहन लग्यो अति प्रीनसों ताही को
समुझान २ व्यासउवाच ॥सोरठा॥ह्यो
तुमसों इतिहास भूप पुरानो कहतहों
जोसिहन के साथ कह्यो प्रजापति प्री॰
तसों॥३॥दोहा॥ब्रन नत्पर मुनिलोक
सब आदि राज छिग जाइ॥पूछतहैं फु
नि ताहि सो धर्म बडो सुखदाय॥४
सोरठा॥ जप तप दान विचार स्वाना॰
मान यों होतहै॥सुनियें भूप उदार
सो समुझावों सकल तुम ५ स्वायंभु
व महा राज यों विध सों पूछ्यो जवै॥
सकल धर्मको काज सुनियें यों क
रि कहतहै॥६॥दोहा॥जोनर देसपा॰
वित्रमें जप तप दान सनान॥मरजा

दासों करतहै॥ताकोबाढत ज्ञान ७
देवसदन में गमनजो करत रहै कवि
मौन॥इनसों होत पवित्रता यह वेद
नकी रौन॥जो अभिमान करै नही
बुद्धिमान नर सोइ॥सुरा पान दिनती
न करि सो चिर जीवी होइ॥९॥सोरठा
जप तप दान विधान सत्य वचन जो
कहत है॥यही भूप जिय जान लछ्छ
न हैं सभधरम के॥१०॥देशकाल स
म होत कोऊ धर्म अधर्मसम॥सत्य
ज्ञान यह पोत समय समय सम या
में होतहै॥११॥दोहा॥इनके दोइ प्रका
र हैं भलो बुरो नृपजान॥बुद्धिमान
जानत सदा जोधारत मन ज्ञान १२
जोनर वेद विचार करि कर्म करत
मुख्य मांहि॥ताको शुभ फल होत
है विन विचार कछु नांहि॥ताको

नी· ७५
75

१३ व्यासदेव के वचन सुनि यों विध-
भूप अनेक॥ पूछत है फुनि ताहि
को मनमें धरत विवेक॥ युधिष्ठिर
उवाच॥ १४॥ युधिष्ठिर उवाच॥ दोहा॥
वाहन होमें सभ सुन्यो तुमरी पा
सनपाइ॥ चार वर्णके धर्म सभ क
होतात समुझाइ॥ १५॥ आपद मो
करिबो चहै कौन धर्म मुनिराइ॥
करि करुणा अब मोहूपै दीजे सक
ल बताइ॥ १६॥ प्रायश्चित्त कथा तु
म्हें कही नाज करिभीन॥ सो मन भ
यो प्रसन्न अति सुनि सुनिकै यह
नीत॥ १७॥ राजनीत अरु धर्मको मु
निवर होत विरोध॥ ताते हमरे चि
त्तमें कैसो करि होय समोध॥ १८॥ वै
शंपायन उवाच यों विधताके वचन
सुनि कहन लगे मुनिराइ॥ नारद

ओरनिहारिकै सवन सुनत इम भा
इ॥१९॥व्यासउवाच॥जोचाहत हो।
सभ सुन्योवर्ण धर्म महँराज॥नव
भीषम ढिग जाइकै करहु प्रस्न ता।
म आज॥२०॥सोरठा॥जोतुमरे मनम
हिं संशय धर्म रहस्यमैं॥सुनहो धा।
र्म नरनाहु काटहिं गोसुर सरि तनय
२१ सोसभ जानत हार धर्म पुराने नू
पनके॥सुनिप कुरु सरदार प्रकटभ
यो जोगंगतें॥२२॥जिन पुरहून सभे
न देषहैं सभ अमर गन॥राजनीत क
रि हेत पढी बृहस्पति सों भले॥२३॥
धनुष भेदको भेव जोसिन गुरु जान.
नवैहू॥करि देवनकी सेव सोपाएहैं
भीष्म सभ॥२४॥सवैया॥जोधनु वेद
को भेद भलीविध देव अचारजतें सि

नी. ५५
75

नपायो॥जानत है सब वेदनको जिनसे
व किए गुरु देव रिझायो॥युद्धभयो कु
रु खेतहुं में कबहूं नहि संगर छोरि पा
लायो॥एकहु जाहिको जो कपिकेत
कै बानन सों अति ही अकुलायो॥२५॥
सोरठा॥सुर सरिता को बाल वर्ण धर्म
जानत सबै॥जाहीको मुख्य पाल एक
हु मान बताइकै॥२६॥दोहा॥जिन अप
ने तपयोगतें बस करि लीनी मीच॥सो
अब है कुरुखेत में शरशय्याके बीच २
करि संगर दिन बीस नृप जीत्यो है जिन
राम॥विनाहेत जिन आपने बस करि
लीनो काम॥२८॥सिगरे धर्म सुनाइयो
सो तुमको करि प्रीत॥जानत है भली
भांत सो सब राजनकी रीत॥२९॥यों मु
निवर के वचन सुनि भूपति धर्म नरे
श॥कहन लग्यो फुनि ताहिसों मनम

हि यतन क्रेशा॥३॥युधिष्ठिरउवाच॥दोहा
बंधुनको रनमारिकै कीने चने अकाज॥
कैयाहू एछु सकैा नही भीषमको मुनि
राज॥३१॥सवैया॥सोच कहा मुनिराइ।
सनो तुम मैं अपराध किए अति भारे २
भीषम द्रोन हूने छल सों अरु भूप च
नेरन मांहि सँहारे॥यो सुनि कै करुरा
रहु सों यदुनाथ हूने यह बैन उचारे॥
भूप कहा अब सोचन हा विधि लेख लि
खि सटैं नहिं टारे॥३२॥दोहा॥तबनृप
धर्म नेरेशको चार वर्ण हित काज॥क
हन लाग्यो अति प्रीतसों सबनि सुनत
यदु राज॥३३॥कृष्णउवाच॥दोहा॥कैा
हू भूपन कीजिए शोक बडो तुम आज
जोकछु भासहू नैकहो सोकरिए मा
हराज ३४ करिए तुम्र अभिलाष सभा
भूपन करिए शोक॥ज्योंकरत भीषमा

नी॰ ७६

२८

अंतमें वारहकी सभ लोक॥३४॥सवैया॥
देषहू भूपति जोइत पोष नरेश सभै तुम
रे ढिग आए॥वार वरज्ञ परज्ञहूं में अभि
लाष किए तुम पास सिधाए॥धीरज दै
इनके सतकार करो सभ शोकहूं सों अ
कुलाए॥वैन कहे मुनिब्यास हूंने नृपकों
तुमहूं मनमें न वसाए॥३५॥दोहा॥जो
कछु भीमहूं नै कह्यो कह्यो व्यास मुनि
जोइ॥जोकपि केतहूं नेकह्यो करिएं नृ
प अब सोइ॥३६॥जोहम तुमरे सुहृद हैं
करिएं सभकी प्रीत॥त्योंही द्रुपद सुता·
हूं की हे भूपति निरभीत॥३७॥सवैया॥
यों विधसों यदुराइ हूंने कुरुराइ भलीवि
ध सों समुझायो॥द्रोपदि भीम अरज्जन
नारद जोकछु राजधरम्म सुनायो॥तानें
प्रसन्न भयो मनमें तनवेद सभै छिन
दूर भगायो॥भूप उठ्यो तव आसन तें।

लखि लोक सभै अतिही हरषायो ३९॥
दोहा॥ सुनि सुनि उनके वचन नृप ना-
छिन धर्म नरेश॥ ह्वै प्रसन्न मनमें बडो
हर्ष किए सभ क्लेश॥४०॥ चल्यो सवनि-
को साथ लै गज पत्तन की ओर॥ शीत-
किरण ज्यों तारकन युत सोहत कुरु सि-
र मौर॥४१॥ दुर्योधन के नातको लेकर
भूपति साथ॥ द्विज देवन को पूजिके
भूप निवायो माथ॥४२॥ सवैया॥ भूपच
ले गजपत्तनको तबयो विध नाहिको
यान बनायो॥ षोडश जोरि लिए वृष।
जाहिमें होन लग्यो वन घोष सुहायो॥
पूजन कियो शुभ मंत्रन सों नृपनाछिन
गाइक गीन सुनायो॥ आन चढ्यो उहि।
यानमें तुरग रश्म गहि हाथ॥ अरजन।
कै करप्रेम छुत सोहत ज्यों यह नाथ॥ ४४
भूपति छत उहिं यानमें पकरो अरजु
न हाथ॥ सोहत ज्यों ज्ञानशारद में वाद

२ ग्रह गन साथ॥४७॥पाछे रोक्र अहि यान
मैं माद्री सुत करि हेत॥तारक नृपकी कि
रण सम चामर व्यजन समेत ४८ पांचभ्रा
त अहि रथ चढि सोहत कुरु शिर मौर॥
देषि परत ज्यौं देहमें पांच भूत इक ठौर॥
४९ भूप युधिष्ठिर राइकै पीछें चढि नि
ज यान॥दासी सुत कुरु राइको चल्यो।
धरत अभिमान॥५०॥वासदेव कुरु राइ
कै पीछे चढि निज यान॥चल्यो तुरत
अति प्रीत सों साथ वली युयुधान॥५१
भूपति धरम नरेश के आगें चढि नर।
यान॥चल्यो तुरत धृतराष्ट्र नृप भूपति
सों लहि मान॥५२॥और सकल तियकु
रुनकी द्रौपदि पृथा समेत॥यानन मां
हिं चढाइ कै चल्यो विदुर करि हेत॥भू
प सैन चतुरंगिनी चली धरत अभिमा
न॥पाछे धर्म नरेश के सोहत साधन
मान॥५३॥कवित्त॥भूपति धरम भूप।

चल्यो गज पत्तन ताको देषि लोक स-
भै भये हरषाने हैं॥मागध वैताल सूत
वेदीस भणकत ह्वै देतहैं असीस ताको
लागत सुखाने हैं॥कुमि रही माला।
दौर दौर नीकें फूलने को फूलन स
ताके नारी फूल बरसाने हैं॥सोहत हैं
नीर भरे कलश अनेक भांत नगर दर।
वाजें मांहिं नीके ठहराने हैं॥५४॥दोहा
ऐसो ठाट बनाइके कीनो नगर प्रवेश
मंगल सुनत अनेक तव भूपति धर।
म नरेश॥५५॥इति श्री महा भारतेशां
ति पर्वणि राज धर्म भाषायां कवि दे
व रत्ना तुज नेत रामा त्मज शिव राम
तनय त्रिलोचन विरचिते नीति वि
नोद शान्ति पेण ध्यायः ३२ वैशंपाय-
न उवाच॥सवैया॥ भीर भई गज पत
नमें जव भूपति को सभ देखन आए
॥कांपत नारनके अति भारसों भूप-

नी· ७८

78

महल रत्न जगाए॥लोक सराहत हैं सि
गरे तब भूपति को यह बैन सुनाए॥
भीम अरजुन सातकि यों सुनिके मन
मैं अतिही हरषाए॥१॥दोहा॥भूप यु
धिष्ठिर राइ तब सुनत मधुर कलगी
त॥कीनो नगर प्रवेश यब मनमहिं
धारत प्रीत॥२॥चौपई॥नगर नार स
भई अनुरागी॥द्रोपदि कोजु सरानला
गी॥धन्य धन्य द्रौपदि आज॥भए सं
पूरण तेरे काज॥३॥दोहा॥धन्य ति
हारो तात है धन्य तिहारी मात॥तेरे
तप परभाव तें जीति लिए अरिजात
सवैया॥यों विध भूपति द्रौपदि कौ ग
ज पत्तन नार सराहन लागी॥प्रीत ब
ढावत हैं मन मांहि महलन पै चढि
कै अनुरागी॥लाज भरी मुसका वा
ति हैं सब बोलत आपस में रस पा
गी॥यों विध भूप उछाह भयो तब ज

निलियो सबही बडभागी ॥ ५ ॥ दोहा ॥
लषि भूपति को आवनो सैहर बासी
लोक ॥ हाथजोरि यों कहत हैं हर कि
य सभ शोक ॥ ६ ॥ शत्रुन को रनजीति
कै लीनो अपनो राज ॥ तुमरे तपपर
भावतें भय संपूरण काज ॥ ७ ॥ भूपहा
मारे होहु तू राजा वर्ष हजार ॥ क्षेम
सन्न सभ कहत हैं नृपको वारंवार ॥
आयो आपनि धाम नृप सुनि सुनि
मंगल चार ॥ लै विप्रन की आशिषा
करि करि मेत्र उदार ॥ ८ ॥ आयो अपा
नै गेह नृप भीम अरजुन साथ ॥ कुल
देवनको पूजिकै भूप नवायो माथ ९
॥ इन्द्र भवन सम भवन में कीनो भूपप्रवे
श ॥ नाहिन उनको यातनें हर करत
सभ क्लेश ॥ ११ ॥ चौपई ॥ तातें भूपति वा
हर आयो ॥ विप्रन को लषि आनंद पा
यो ॥ १२ ॥ सुनि सुनि कै उनकी शुभ सी

नी॰ ७५

79

सा॥ यह शासन दीनी अवनीश ११ प्रो
हित अपनो साथ लियो है॥ विप्रन को
नृप दान दियो है॥ तब ब्राह्मन मनमें
हर्ष पाए॥ भूपति को शुभ बैन सुनाए॥
१२॥ जो द्विज गन शुभ बैन उचारे॥ राज
हंस सम भूप निहारे॥ गदगद बचन
कहन तब लागे॥ भूपति सों सम है
अनुरागे॥ १३॥ सवैया॥ येंविध भूपति
को लषि नाछिन लोक सभै मनमें ह
रषाए॥ देत असीस अनेक भली वि
ध दुंदभि भेरि मृदंग बजाए॥ पोरव ब
जावत हैं सिगरे जन बोलत हैं जयका
र सुहाए॥ नाहि समें छलसों इक रा
तम भूपति को यह बैन सुनाए १४॥
दोहा॥ जब ब्राह्मन चुप ह्वै रहे भूपति
सों सुख पाइ॥ चारवाक राक्षस कहे
नृप बोल्यो इम भाइ॥ १५॥ चौपई॥ दुजो
सुयोधन को बहुमीत आयो करत ना

हि की प्रीत॥उन संन्यासी वेष बनायो
भूपति को यह वैन सुनायो॥४७॥म्यो।
रहो द्विजगन के बीच॥चार वाक वह
राक्षस नीच॥पांडु सुतन के पाप दिखा
यक॥कह्यो दुर्योधन को अतिलाय
को॥४८॥बिन समुझे द्विज गन के साथ
यों विध बोल्यो राक्षस नाथ॥दुष्ट भाव
अति ही उन कीनो॥सबनि सुतन नृ
प यों कहि दीनो॥४९॥चार्वाक उवाच
सोरठा॥सुन भूपति चित मोर समर्थ
सन यों कहत हैं॥कियो पाप अति
घोर धिग धिग धर्म नरेश को॥५०॥
अपनो बंधु समाज भूप तुम्हें रन में
हन्यो॥कीनो बडो अकाज गुरु बाल
न मारे सबै॥५१॥दोहा॥तातें भूपति
व्यर्थ है तुमरो जीवन आज॥बंधुन
को रन मारिकै जो नहिं आवत लाज
॥५२॥वैशंपायन उवाच॥यों विध ना

नी. के वचन सुनि ब्राह्मन सकल रिसाइ॥
८. भूपति ओर निहारि कै रहे परम दुखपा
८० इ २३॥ धर्मराज चुपह्वै रह्यो सुनिके ता
तम बैन॥ लाज भरे द्विजगन सभै धरत
न मनमें चैन॥२४॥ द्विज गनते भयभीत
ह्वै भूप बडो दुखपाइ॥ कांपत ही तब
कहतहै सबनि सुनत इसभाइ॥२५॥
युधिष्ठिरउवाच॥ करिये करुणा मोहूपै
मेंहों तुमरो दास॥ क्यों अब धिग धिग
कहत हो मोमन बाढत त्रास॥२६॥ वै
शंपायनउवाच॥ सब ब्राह्मण तब कह
तहैं भूपति ओरनिहारि॥ कह्यो हमें न
हिं बचन यह सुनिये कुरु सरदार॥२७
सब ब्राह्मन तब कहत हैं ज्ञान डीठ
सों देख॥ अपने तप परभावसों नृपको
वचन विसेष॥२८॥ ब्राह्मणाऊचुः॥ य
ह दुर्योधन मीतहै चारवाक निशचार
आयो हंसीरूप करि नांहीको हितका

१॥२९॥होहु निहारो कुशल नृप अ
नुजनि सेन समेत॥कह्यो हमैंनहिं
वचन यह सत्यजान करि हेत॥३०॥
वैशंपायनउवाच॥यों कहि द्विज अ
ति कोपतें कौनप को उहिं ठौर॥कि
यो दग्ध हुंकार भरि मुनिपंक्ति शि
रमोर॥॥राक्षस द्विज गनकोपतें दग्ध
भयो उहिं ठौहि॥ज्यों सुरेश के वज्र
तें नृप तरु वर वन मांहिं॥३१॥सोर
ठा॥दै भूपति को सीस गए विप्रनि
ज सदन को॥भयो प्रसन्न अवनीश
अनुज निसचिव समेत तब ३२॥इति
श्री महाभारते शांति पर्वणि राजध
र्म भाषायां कविदेव दत्तानुज नंदरा
मात्मज शिवराम तनूज त्रिलोचन
विरचिते नीति विनोदे त्रय स्त्रिंशो
ध्यायः ३३ वैशंपायनउवाच॥दोहा
अनुजनि सचिव समेत जब नृपवैसो
सुखपाय॥ताकोयों विध कहतहे।
सवनि सुनत यदुराय १ श्रीकृष्ण

नी॰ ८

उवाच॥ब्राह्मन माने चाहियें भूपमा
दा करि मान॥विप्र धरनि तल देव हैं
बिन माने विषजान॥१॥इन गते स
त युगाइ में क्षत्रियं धर्म नरेश॥बहु
त वर्ष इख पाइ तप कियो हिमाले
देश॥२॥है प्रसन्न ताको दियो चतु
रानन वर दान॥अभय भूप सम जि
यनतें तातें भयो बल वान॥४॥बिना
ब्राह्मन अपमान तें मरन निहारे तो
हिं॥दियो अभय सम जियनतें हंसा
वाहु फुनि ताहि॥तातें इन सम अ
मर गन जीते इंद्र समेत॥भागि गए
न छोरि कै गए विरंचि निकेत॥५॥
हाथ जोरियें कहत हैं कमला सना
छिगजाइ॥६॥राखहु हमको याहि की
दीजें मीच बताइ॥७॥देवनमै सों त
ब कहत हैं योंमति के लोकेश॥मी
च बताऊं याहि की हा करो तुम क्ले
श॥८॥ब्रह्मा उवाच॥दोहा॥मीनयो
हि को हायमो भूपत्रयोधन नाम य

ह यव ताकी प्रीतमों करहु द्विजा
अप मान॥१॥तहांविप्र अति को
पतें निश चरको छिन मांहि॥दय
कैरंगे शापतें करहु शोक तुमनांहि १०
सोरठा॥देवनको समुझाय कमला
मन नृप ह्वै रह्यो॥गए परम सुख। ११
पाय सकल देव निज सदन महिं
सोयहु राक्षस आज मार्यो द्विजग
न शापतें॥तातें तुम महराज कोंयहू
शोकन कीजिए॥१२॥हने तुम्हें रन
मांहि तव धर्मअनुसार नृप॥बडे।
बडे नर नाहु पहुंचे हें सुरलोकमा
मा१३॥चौपई॥तातें तुम अबधीरज
धरिए॥कोंयाहू भूपति शोकन करि
ए॥प्रीन किए द्विज गन को मानो।
देवनको तिनहीं हित दानो१४दोहा
सिंहासनपे आइके वैसो धर्म नरेश
भूपति राव सुख किए ह्वैके अति

नी॰
८२

शुभ वेश॥१५॥ताकै सन्मुख आइकै
बैसोहै करिहेत॥भूप सिंहासन स्व
र्णकै बैसोहै करि हेत॥भूप सिंहास
न स्वर्णके सानकि कृष्ण समेत॥१६
ताकै वामे दाहने भीम अर्जुन आइ॥
बैठे हैं मणि पीठपे सहित सकलस
मुदाइ॥१७॥जो आसन गज दंतको।
तामें नृप करि हेत॥दोऊ नकुल स
हदेव तब बैठे पृथा समेत॥१८॥वा
आसन मैं आइकै बैठे न्यारे होइ॥
विदुर सुयोधन तात युत धौम्य सा
धर्मा दोइ॥१९॥दासी सुत कुरुराट
को संजय सों बलि साथ॥२०॥सेहर
वासी लोक सभ जुरि आए उहिठो
र॥भेट भलीविध करतहे देषत भू
पति ओर॥२१॥मोहित धर्म नरेशके
धौम्य याहिको नाम॥भूपति कैअ
भिषकमें लागेया करन सभ काम॥

२२ सवैया॥ यों विध सों वर आसन
में नव भूप भली विध आन वढायो
वेद उचारत हैं सब ब्राह्मन मागध
गायक गीत सुनायो॥ बाजन और
हिं दौर बजंतर होन लग्यो फुनि होम
म सुहायो॥ यों बिध सों अभिषेक भ
यो नृपको लषि लोक सभै मनमें
हरषायो॥ २३॥ कवित्त॥ भूप अभि
षेक जब भूपति को होन लाग्यो
सेहर के वासी लोक दौरि दौरि आ
ए है॥ मागध अरु सूत बंदी गावत
अनेक भांत जस महाराजको हू ला
गत सुहायो है॥ मंडप बनाए ग्रहा
मंडल फुनि ताके बीच कांचन के
कलश तामे दीपक जराए हैं॥ बा
जन बजंत्र घने ऐंव जय शब्द होत
दैहैं शुभ दान नीकें ब्राह्मन रिझा
ए है॥ २४॥ दोहा॥ धर्म भूप वैसो त
हो वर आसन में आइ॥ द्रुपद सुता

नी॰
८२
९३

को साथलै तब बैसो कुरु नाथ॥
सोहत है अति छबि भरो ज्योंघन
बीजुरि साथ॥१८॥नृप नृपकै अभि
षेक में लगी घरै यदुनाथ॥दीजें दी
जें द्विजन कों अन्न बसन धन साथ
१९॥ब्राह्मन धर्म नरेशको नाम या
हिको धौम॥पढि पढि मंत्र अनेक
नृप करन लग्यो तब होम॥२०॥उ
सो भूप यदुनाथ तब पंच जन्य गा
हि हाथ॥तिलक लगायो प्रीतसों
धर्म रायके माथ॥२१॥लैजल आ
पने शंखतें पढि पढि मंत्र अनेक
॥कियो कृष्ण अति प्रीतसों धर्मरा
इ अभि षेक॥२२॥पावन पार गो
बिंदकी अनुजाति सैन समेत॥भयो
प्रसन्न कुरु राइ तब हर्ष बढावत
चेत २३ सवैया दुंदुभि भेरि मृदंग
बजें जब भूपतिको अभिषेक भ
यो हैं॥देखन हारन के मनकों ति

हिं देषतनंही इव हरगयोहै॥दान
दिए नव विप्रनको नृप लैलै असी
स प्रसन्न भयोहै॥एकत है सबबा
ह्मन नाह्मिन भूपति सोंयह बैनक
ह्योहै॥३२॥ब्राह्मणा ऊचुः॥दोहा॥
कुशल तिहारो होहु नृप अनुजनि
सैन समेत॥करि पुरुषारथ आप
नो जीति लियो यह खेत॥३३॥छु
टे जियत संग्राम नें पायो अपनो रा
ज॥जीति लिए अरिगन सभै नेकुन
कियो अकाज॥३४॥अब तुमको क
रिबो चहै भूपति अपनो काम॥
यांकहि ब्राह्मन तासमै गए आप
ने धाम॥३५॥योंजुरि के मुनि गन॥
हैने पूछ्यो धर्म नरेश॥करन लग्यो
निज राज नव किए हर सभक्लेश
३६ इतिश्री महाभारते शांति पर्वे
णि राज धर्म भाषायां कवि देव द

नी॰
८५
८५

ज्ञानज नंदरामात्मज शिवराम त
नूज त्रिलोचन विरचिते नीतिवि
नोदे चतुस्त्रिंशो ध्यायः ३४ वैशं
पायन उवाच॥ मयूर वचन यों सब
निके सुनि सुनि पांडव राइ॥ हैं अ
धीन तब कहत है सबनि सुनत इ
म भाइ॥ युधिष्ठिर उवाच॥ धन्य ध
न्यहैं पांडु सुत जिनके बाल्हनआ
ज॥ गावत हैं गुण मीत सों और स
कल रण काज॥ २॥ यों विध करत
विचार तब मनमहिं धर्म नरेश॥
हाथ जोरि सभसों कहै मनमहिं
धरत क्लेश॥ ३॥ सोरठा॥ सुनि पंछ
मेरे बैन है अधीन सभसों कह्यो॥
वृद्ध भूप विन नैन मान्यो बड़न
सबनि को॥ ४॥ धर्म पुरानो जानि
मैं मानत हों मोह कों॥ वृद्ध भूप
हित मानि सौं तुम को मान्यो बड़े

॥५॥यही जगतको नाथ हमसुत
हैं सभ याहि के॥साच कहौं सभ॥
नाथ सकल भूमहै याहिकी॥६
दोहा यह तुम को करिबो वहै ब॰
चन हमारो आज॥मानहु मीत ब
ताइके बडो हृद महराज॥७॥यौं
विधसो समुझाइके बिदा किए स
भलोक॥करन लग्यो निज राज॥
नृप हर किए सभ शोक॥८॥सार
स॥महा भीम युव राज भूप बना॥
यो मीत सो॥जो मंत्रिन के काज॥
सो दीनें सभ विदुर को॥९॥काज
अकाज विचार त्योंही आमद खर
चमें॥कोयो भूप उदार संजय सा
भगुन रान भयो॥१०॥धर्मराज क
रि हेत दुर्जनको बस करन में॥को
यो है कपिकेत पायन पाभुरा॰

नी॰
५८

छन के॥४३॥दोहा॥जो विप्रन के का
म हैं धर्म काज जो और॥तामहिं छो
ड्यो प्रीतसों धौम्य विप्र शिर मौर ४४
भूपति राख्यो प्रीतसों अपने ढिग।
सहदेव॥सो रावत है भूप को करि
करि याकी सेव॥४५॥सोरठा॥और रा
जके काज जिन जिनके पहिले हुते॥दीनें हैं महराज उनको मान ब
डाइकै॥४६॥भूप कही यह बात सों
जय विदुर युयुत्स को॥छद्र हमारो
तात तुमहू को राख्यो चहै॥४७॥लो
गनि को मन राखि दासी सेवक के का
ज॥एहि भले कुरु राइ सो तुम मंज
य कीजियो॥इति श्रीमहाभारते शां
ति पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि
देव दत्तात्मज नेद रामात्मज शिवरा
म तत्सुत त्रिलोचन विरचिते नी।

ति विनोदे पंच त्रिंशो ध्यायः ३५
वैशं पायन उवाच॥दोहा॥जोजो
अपने बंधुगन मारे समर मंझार
आद्ध भूप उन सबनिके लागेया
करन उदार॥१॥सोरठा॥करन सा
तन सोंनेह भूप बडो धृतराष्ट्र नी
पारीनो श्रोर धन देह अनगंग
ए धन द्विज द्विजन को॥२॥सवै
या॥भूपति द्रोन करन इंको अ
रु धीर दुमन्न इंको सरवदाई॥
पारथ पुत्र हिडंब तनूज विराट
नरेशकी मीन बढाई॥द्रोपद द्रौ
पदि पुत्रनकी अरु ओर घने जा
हैने रन भाई॥यौंविध ओर दयेहा
क्रिया सबकी करीहे तब पांडव ग
ई॥३॥दोहा॥भिन्न भिन्न तब सा
सबनिकी करी क्रियाकुरु राइ॥

नी॰
८९

अन्न वसन धन द्विजन को दीने।
मान बड़ाइ॥४॥ और भूप जो रन ह
ने ता जिनके सुत मीत॥ करी क्रि
या उन सबनि की धर्म राइ करि प्री
त॥५॥ भूप बनाए सबनि के बापी
कूप तड़ाग॥ बंधुनकी अति प्रीत
सों धर्मराइ बड़भाग॥६॥ बंधुन सों
अन ऋण भयो हरि कियो अपना
६॥ भयो कृतारथ भूप तब करन ल
ग्यो निज राज॥ गंधारी धृतराष्ट्र न्
प त्यों ही विदुर समेत॥ और सकल
जो वृद्ध हैं माने नृप करि हेत॥८॥
जिनके पति सुत रन हने तजि त
जि लोचन बान॥ दै दै धन उन तिय
न को किए भूप अति मान॥९॥
अंध बधिर अरु पंगु जन जो जो हैं
पुर मांहि॥ अन्न वसन धन सबनि

को दिए धर्म नर नांह ९ सकल
धरणि तल जीतिकै करि अरिग
न संहार॥कै प्रसन्न नृप धर्म सु
त लाग्यो करन विहार ११ सवैया
यैं विध सों अभिषेक भयो तब रा
ज भली विधसों नृप पायो॥अं
जलि बांधिकै भूप हूं नै यदुराइ
हूं को यह बैन सुनायो॥माधव
में तुमरे परसाद तें लोगन कोंनि
ज जोर दिषायो॥जीति लिए अ
रिजान सभै अब काज सयो हम
रो मन भायो॥१२॥दोहा॥तुमरी
करुणा डीठ तें पायो अपनो राज॥
यों कहि अस्तुति कृस्न की लग्यो
करन महराज १३ कथ्यो नमो ना
रायण जगदी ण कारण गन नायमि
नायक॥नमो धरणि धर देव सा
कल सुर सिद्ध सहायक॥नमो॥

नी॰ ८७

87

धरणि धर देव सकल सुर सिद्ध सहा
यक॥नमो कमल दल नैन नमोअ
रिगन को नाशन॥नमो भक्त जनवं
द्य नमो दुर्जन को त्रासन॥कर्ता ह
र्ता जगत को तुंही पुरातन पुरुष
हैं॥करि अस्तुति द्विज गन सदा य
दु नायक तुमको कहैं १४ तुही आ
ठ दिशा नाथ तुंही सभ जगको पा
लक॥तुंही राम अरु कृष्ण तुंही द
श रथको बालक॥तुंही विधाता
शंभु अरु तुंही तीन युग नाम हो
॥तुंही दमोदर हलिवर गरुड के
त तुमको कहैं॥तुंही अगन जल
वात हैं तुंही दिवाकर शशि तारा
न॥तुंही सेनानी गण पत अरुन
ही उग्र सभ जन शकन॥१५॥तुंही
जगत को आद तुंही जगपालन वा
रो॥तुंही काल भगवान तुंही जग

नाशन हारो॥ तुंही जगतको सार॥
तुंही सभ जग भर्त्ता॥ तुंही सकल
भुम नाथ तुंही सभ जनको हर्त्ता
॥हिरन गर्भ तुमको कहें तुंही पुरा
तन पुरुष वर॥ नमस्कार तुमको॥
करों तुंही चक्र धन शंख धर॥९९॥
दोहा॥ येंविध अस्तुति कृस्नकी॥
कीनी पांडव नाह॥ अति प्रसन्न गो
बिंद भयो लग्यो सराहन ताहि॥१०
इतिश्री महाभारते शांति पर्वणि रा
जधर्म भाषायां कवि देव दत्ता नुजा
नेदरामात्मज शिवराम तनूज बिलो
चन विरचिते नीति बिनोदे षट्त्रिं
शो ध्यायः ३६ वैशंपायनउवाच॥
दोहा तातें धर्म नरेश नृपकी रीस
भा वरवास गए आपने धाम सभ
मनमें धरत हुलास॥१॥ सवैया भ्रा
पति भीम अरज्जन को सह देव ना

नी॰ ८८

कुलको वैन उचारे॥वैरके हथ्यार न सौं तुमरे तन है अति घायल भा रे॥मेरे लिए बहु विद किए तुमहूं सो तुमोहूतें जात उचारे॥ताते करो विसराम सभै अब भोर भए सभका न निहारे॥२॥भूप महल सुयोधन को भलि भांत अनेक रतन जराये॥संपद सेवक और पदारथ नार न सौं अतिहीं अकुलाये॥सो कुरुराइ कि शासन सौं चर भीमको भ्राता हु ने बगसाये॥भीम प्रवेश कियो फुनि ताछिन ज्यों मघवा निजमंदिर आये॥३॥दोहा॥भूप दियो कवि सेन को दुःशासन को गेह॥ज्यों दुर्यो धनको सदन त्यों नृप जाको ये ह॥४॥ले शासन कुरु राइकी अर्जुन कियो प्रवेश॥दुर्मर्षण के सदन को गयो नकुल सुभवेश॥५॥दोनो

है सह देवको डुर्मुख मदन नरेश
भयो प्रसन्न लखि ताहिको ज्यों।
कैलास धनेश॥६॥दासी सुत कुरु
राइको संजय विदुर समेत॥धौम्य
सुधर्मा पांच यह अपने गए निके
त॥७॥लैसिनि सुतको साथ तब
वासुदेव यदुराय॥गयो अरजुन।
सदनको ज्यों कंदर मृग राज॥८॥रा
ये अरजुन सदन को जनमे जय
उवाच॥वैरन को रन जीति कै ज
ब पायो निज राज॥सांच कहोमु
नि राइजू किया कौन नृप काज
॥ वैशंपायन उवाच॥दोहा॥वा
सुदेवको साथ लै जोनृप कीनो।
काज॥सोसभ सुनिए प्रीत सौं क
हैं सकल महैं राज॥९॥जोब्रा।
ह्मन नृप के हुते स्नान करावन।
हार॥एक एक को नृपदियो निष्क
हजार हजार॥१०॥त्योंही जोनृप केहु

नी॰ ८५ ४१

ने सेवक द्विज गन श्रोर॥दियो द्रव्य ११
उन सबनि को भूप भूप सिर मौर
धौम्य पुरोहित को दई दश हजार
नृप धेन॥तैसें मान बढाइकै रजा
न वसन धरिचैन॥१३॥सोरठा॥श्र
पनो गुरु अधिकार कृप आचारज
को दियो॥भूपति भूपउदार ताको
मान बडाइकै॥१४॥दोहा॥कीनी
नृप तब विदुरकी पूजा पांडव रा
इ॥अन्न वसन अरु शयन धनदी
ने मान बडाइ॥१५॥जोजो आप
दमें हुते सेवक नृपके पास॥की
नी है उन सबनकी भूपति पूरन
आस॥१६॥दासी सुत कुरु राइको
जो युयुत्सु अभि धान॥है संपद फ
नि ताहिको भूप कियो सनमान॥
१७॥सोरठा॥धन संपद केसाथ रा
ज दियो धृतराष्ट्र को॥आप गयो
कुरुनाथ हाथ जोरि ढिग कस्त॥

कै॥१७॥वैठो कांचन सेजमें नील
मेघ अनुकार॥भयो प्रसन्न कुरु राइ
जब देख्यो कृस्न मुरार॥१८॥छप्पै
कनक कटक मणि जरत मुकुट
निहिं सीस विराजै॥पीत वसनयु न
त स्याम देह मणि कौस्तुभ उरछा
जै॥ज्यो दिनेश कै तेज सों उदया
चल गिरिवर लसत॥यों देख्यो कु
रुवर हूंनैं कृस्नदेव थोरो हसत॥
ताछिन नृप ढिग जाइ॥कृस्न देव
कि पुरुषोत्तम॥यों विध लषि यदुव ९९
रहुंको॥भयो प्रसन्न कुरु राइ मन
दोहा मंद मंद नृप हसतही कह्यो
कृस्न सों वैन॥साच कहो यदुवर॥
तुमैं॥कहांविसों बीती रैन॥२०॥तुम
वैठी पर मारिकें पायो अपनो राज
पाडुनको रनजीति कै नेकुन कि
यो अकाज॥२१॥यों भूपति कै वच
न सुनि ताछिन कृस्न मुरार॥नहिं
बोल्यो कछु भूपसों मन महिं करत
न विचार २२ अतिसी [illegible]

५
१०

न विचार॥२२॥इतिश्री महा भारते।
शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां क
वि देव दत्ता त्मज नंदरामात्मज शि
वराम तत्सुत त्रिलोचन विरचिते
नीति विनोदे सप्त त्रिंशो ध्यायः ३७
वैशं पायन उवाच॥दोहा भूपति
यों लखि कृष्णको ताछिन कृष्ण
नरेश॥कहन लग्यो पुनि ताहिसों
मन महिं धरत क्लेश १ युधिष्ठिरउ
वाच॥तीन अवस्था छोरिकै चौथी
में मन आज॥क्योंकरि जोसो है
तोहिं साच कहो यदु राज॥२॥वा
सु देव कीजो तुम्हें वस करि इंद्रि
य पांच॥सोमन होत हिरान अव
कहो कृष्ण तुम साच ३॥सोरठा॥
ज्यों दीपक बिन वात निश्चल ह्वै
कै जरत है॥त्योंही तुमरे गात दे
खि परत है ध्यानयुत॥४॥दोहा॥
कर्त्ता हर्त्ता जगत को तुही कृष्णम
गवंत॥तुही पुरातन पुरुषहै ना

नग्र आदन अंत॥५॥पर्यो निहा
रीशरण में करहों तोहि प्रणाम
कैयां वेरे हो ध्यान धरि साच कहो
नप धाम ६ यों भूपति के वचन सु
नि हसि बोल्यो यदुराज॥कारनह
मेरे ध्यानको सकल सुनो महरा
ज ७ कृष्णउवाच॥दोहा॥कृकिर
ह्यो सर सेजमें भीषम कुरु सरदार
ध्यान हमारो करत है ताको करोंवि
चार ८ कवित्त वीरन में वीर धीरदे
न सदा वैरनको धनुष टंकार जा
को वज्रके समानहै॥धान चढिया
यो काशिराजके स्वयंबर में जीति
आनी कन्या तीन धार्यो अभिमा
नहै॥और घने काम जिन कीने अ
भि राम सभै जीत्यो परशु राम सो
नो जगमें प्रधानहै॥सांचकहों ता
की ओर देखोहै हमारोमन भीष

नी॰ ५९ 91

म कुरुवीर अब करत मेरो ध्यानहै ९ दोहा जब सुर पुरमें जाइ गोभी षम वीर प्रधान॥ज्यों शशि विन रू प शर्वरी त्यों नृप पृथिवी जान॥ चौपई॥तातें भूपति देखन लावो॥ सुर सरिता सुतके ढिग जावो॥ जो संशय तुमरे मनमांही॥पूछ हु जाइ सकल उहिं ठांही॥राज धर्म सिगरे वह जानै॥जोजो वे दन मांहि बषानै॥तातें तुम अब देखन करियो॥२२॥काल धर्म जब पाइ गो भीषम वीर प्रधान॥ज्ञान अस्त नव होइगो सत्यभूप जीय जान ९ वैशंपायनउवाच सोरठा यांसुनि पंडु वर बैन धर्म राइ दु खिसो भयो॥धरत नचित महिं चै न ढरयोनीर नव दृगनतें॥९॥ता तें नृप यति धीर कृस्न देवसों कह

तेहे॥सत्यज्ञान यदुवीर कह्योतिहं
ते करत हौं॥२५॥सोच कहो बड़ा
भांत द्विजगन के मुखतें हमें॥भी
षम यश अवदात सुन्यो भलें यदु
राइजू॥२६॥दोहा॥कह्यो हमारे हो
न जोतुम्है कृष्ण यह वैन॥तुमरी
प्रासन पाइके सोकरि हों पवि वे-
न॥२७॥जोतुम करुणा मोहुपैक
रहो कृष्ण सुज्ञान॥चलहु हमा
रै साथ तब भीषम ढिग बढि
यान २८ उत्तर गति में होइगो ज
ब हरिज भगवान सुर सविताको
पुत नव छोरहिं गो निज प्रान १९
यों सोयो शरसेज में लहि सतगु
न नर नीर॥चाहत है तुम्र दर्श
को सोभीषम कुरु वीर॥३०॥धर्म
राइके वचन सुनि कहन लग्योय
दुराइ॥सातुकि आनद्द साजिकें।

नी॰ ९२
९२

धर्मराईके वचन सुनि कहन लग्योय
दुनाद सानकि आनहू साजिकै हमरो
यान बनाइ॥२॥चौपई॥योंसुनि सा
नकि बाहर आयो।दारुक नाहि का
हन पठराई॥आन हू हमरो यान बा
नाई॥वैशंपायन उवाच॥सवैया भू
पति शासन गोविंद को सुनिकैत
ब दारुक यान बनायो॥जोरेहैं चार
तुरंगम जाहिमें होन लग्यो घन
घोष सुहायो॥सोहत यान बन्यो अ
ति उत्तम कांचन जाल रत्न जरा
यो॥योंविधि दारुक यान सुवारि
कै यादवराइ सो आन दिषायो २२
दोहा॥सूरज किरन समान रथ खग
पति याकै हेत॥२४॥इतिश्री महाभा
रते शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां।
कवि देव दत्त तुज नंदरामा त्मज शि
वराम तनुज त्रिलोचन विरचिते नी॰

तिविनोदे अष्टत्रिंशो ध्यायः ३८॥जनमे
जयउवाच॥सोयो जब शर सेजमें भीषम
कौरव वीर॥सकल कहो मुनिराइ जू ज्यों
उनि तज्यो शरीर॥१॥वैशंपायन उवाच॥
सोरठा॥सुन भूपति धरि धीर जो तुम ए
छ्यो मोहू को ज्यों भीषम कुरु वीर तज्यो
देह शरसेजमें २ दोहा जब उत्तरा के अय
नमें आयो भूप दिनेश॥तब उनि अपनै
आपमें मनको कियो प्रवेश॥३॥अरज
नके शर निकर सों छेद्यो नाहि सरीर
ज्यों दिनेश निज किरन सों देषि पर्यो
कुरु वीर॥४॥चार ओर फुनि याहिको
बैठे द्विज करि हेत॥सोहत है उन सब
निमें ज्यों शशि तारन समेत॥५॥व्या
स देवनारद सहित देवल देवस्थान॥
अश्मक जैनि तुंबरू त्यों सुमंतु अभि
धान॥६॥असित कपिल कुरु विप्र व
र त्यों लोमश हारीत॥च्यवन बृहस्पति
शुक मुनि बैठे हैं करि प्रीत॥७॥देवरा
तत मुनि गाधि सुत त्योंही सनत कुमा

नी॰ ९३

93

कव वसिष्ट वलमीक क्रतु वैठे हैं यहा
वारा॥८॥पिप्पलाद तृणा विंदु मुनि गौ
तम गालव धौम॥कृष्ण मरीचि पुला
स्त मुनि दत्त पराशर सोम॥९॥वैठेऔ
र घने तहां भूप विप्र थिर मोर॥सुरस
रिता सुत गमन लखि देव भवनकी
कोर॥१०॥सोयो यज सर सेजमें भीषा
म वीर प्रधान॥तब उनि अंजलि बां
धिके कियो कृष्णको ध्यान॥११॥भी
ष्मउवाच॥जोम अरहते करतहों कृष्ण
देवकी आज्ञा॥तासों होहू प्रसन्न अब
सुनि सुनिके यज्ञराज॥हिरन गर्भ या
को कहैं हंस जाहिको नाम॥शुचि पा
वित्र पद जोकह्यो ताको करों प्रणा
म॥१२॥आद नहीं कछु याहिको नाक
छु याको अंत॥सोअब हमरे मनवसो
कृष्ण देव भगवंत॥१४॥सिद्ध बलविधि
मुनि कहैं धाता याको नाम॥मनवा
णी अरु कर्म सों ताको करों प्रणाम
१५॥देव दनुज गंधर्व सबै यत नाग।

सिरमेरा॥पावे अंजन याहिको करों।
प्रणाम कोर॥१९॥जाते निकसें जी।
वसम यामहिं करें प्रवेश॥सोअब।
हमरै मन बसो कृष्ण सकल भूतेश॥
शुव सहस्र याको कहें याको मुक
ट हजार॥अस्तुति करि सम थकत
हैं नहिं कछु पावें पार॥१८॥जोभ
गवंत अनंतहै योसह भुज नाम॥
पर ब्रह्म याको कहैं ताको करों प्रणा
म १९ जोअदिती के गर्भमें उपज्यो।
है नपधाम॥द्वादश भानु स्वरूपहै
ताको करों प्रणाम॥२०॥शुक्ल पक्षअ
रु कृष्णमें देव पितर हितकार॥ऐसे
वेद स्वरूपको करों प्रणाम हजार॥२१
यागनमें फुनि याहिको कहहैं विप्र
उचार॥ऐसेवेद स्वरूप कों करों प्रणा
म अपार॥२२॥याको वेद स्वरूपहै
सुत्र कुश समिध समेत॥ऐसे याग
स्वरूप को करों ध्यान अब चेत॥२३

नी॰ ५५

९५

यामें आहुति करतहैं मुनिजन पावक
मान ऐसे होम स्वरूपको मैं करहों
अब ध्यान॥२४॥ याको वेद स्वरूप क
रि मानत हैं जग मांहि॥ ऐसे अस्तुति
रूपको करों ध्यान हिय मांहि॥२५॥
जो मुनि गणके यागमें भयो प्रतछुव
ग नाम॥ कांचन पत्र बनायके ताको
करों प्रणाम॥२६॥ याहो रूप बराह जि
न तीनलोक हित काम॥२७॥ आनी भू
म पताल तें ताको करों प्रणाम॥२
पदपाही के अंग हैं भूषण वर्ण स
मान॥ ऐसे वाणी रूपको मनमें कर
हों ध्यान॥२८॥ जो सोवत अहि सेजमें
मन महिं धारत ज्ञान॥ ऐसे निद्रा रू
पको मैं करहों अब ध्यान॥२९॥ वेदा
नकी मरजाद जो धरत धर्म के काम
सम्य रूप याको कहैं ताको करों प्रणा
म॥३०॥ अपने अपने धर्म युत त्यों
त्यों हे होइ। मानत हैं सब याहिको।
सोमन बसहै सोइ धर जाते उपजत
जगत सब जो अनंत गभि धान॥ ऐ

से मदन स्वरूपको मनमें करहों ध्या
न ३२ बसत सबनि के देहमें जीव या
हिको नाम॥मुनि जन जानें याहिको
ताको करों प्रणाम॥३३॥मुनि जनक
रि करि नयबने पावें याकोंधाम॥जो
अपवर्ग स्वरूप है ताको करों प्रणा
म ३४ युगसहस्त्र के अंतमें होत अन
ल जहिं नाम॥प्रलय करत सब जि
यनको ताको करों प्रणाम॥३५॥वै
शंपायन उवाच॥येंविध अस्तुति करि
भले यदुवर को कुरुवीर॥करिप्रणाम
चुपहै रह्यो बाढत ननपर पीर॥३६
सुनि अस्तुति कुरु वीरकी यदुंश्या न
व उहिं ठौर॥दिव्य ज्ञान फुनि नाहि
को दीनो नंद किशोर॥३७॥यह चरि
त लखि विप्र सब भए मुदित मना
माहि॥भीषम की अरु कृष्ण की ला
गे करन सराह॥३८॥उत फुनि भक्ति
निहारि कै भीषमकी यदुराइ॥उसा
रत अति प्रीतमें वचोयान महिं

नी॰ ५५

१६

आइ॥४९॥चढे दोऊ रथ एक परसि।
नि सुत कृस्न समेत॥तैसैं अरजुन
धर्म सुत चढे दोऊ करि हेत॥५०॥ती
नो चढि रथ एक पर भीम नकुल स
हदेव॥त्यों धृष्टद्युम्न संजय चढे इक र
थ कृप गुरु देव ५१॥यों विध पांडव
सकल जुरि भीषमसों करि हेत॥च
ले तुरत कुरुखेत कों सात्यकि कृस्न
समेत॥५२॥लोगन सों नव सुनत हैं
अपनो यश बहु भांत॥है प्रसन्न म
गमें चले पांडव सिगरे भ्रात ५३॥इ
ति श्रीमहाभारते शांति पर्वणि राज
धर्म भाषायां कविदेव दत्ता त्मज नंदा
राम लक्ष्मण शिवरामा त्मज त्रिलोच
न विरचिते नीति विनोदे एकोन च
त्वारिं शो त्तमोध्यायः ३९ वैशंपाय
नउवाच॥यों भूप तिके वचन सुनि।
नाथन कृस्न मुरार॥कहन लगे।
कुरु रायसों परशुराम अवतार ८
कृस्न उवाच॥चौपई॥कहो भूप सु

सुनियं चितलाई॥परसु रामकी का
था सुहाई॥जोमुनि जनहूं कियो व
खान॥ताको अब सुनियं धरिध्यान
ज्यों उनि त्त्रिय बहुत संहारे॥सो भू
पनके घर अवतारे॥सोसभ भावतमें
अब ह्वैहैं॥कैसें हूं हमसों जानत गेहैं
१० जन्हुको सुत अज अभिधानावला
काष अजको सुत जान॥तासुतकु
शिक भयो उनियारो॥उनिबन जाइ
कियो तप भारो॥११॥औरोसोसुत हम
रै घर होवे॥सकल राज वासव को
खोवे॥योंमुनिवर की देषिढिठाई॥
तब उहिं ठौर गयो सुरराई॥तब नृ
प वासव तासुत भयो कौशिक गा
धि नाम उनि लयो॥तब गाधीकैं
कन्या भई॥सत्यवती सो जगमें कही
१२ सोरठा॥जो ऋचीक अभिधान।
नृप मुनिवर भृगु सुत हुतो॥ताको
करि अति मान गाधी नृप कन्याद

नी॰ ९६

६॥२४॥तब भृगु सुत मुनि राइ सत्य व
तीको प्रीतसें॥अपनै पास बुलाइ दी
नो पायस तांहि छिन॥२५॥कह्यो वच
न मुनिराइ सत्य वती सों प्रीत करि॥
तुम अरु तुमरी माइ भोजन यह च रु
कीजियो॥२६॥तत्र संहारन हार ताको
सुत फुनि होइगो॥विप्रन को सरदार
तुहरी अपनो जान तुं॥२७॥यों विधि
सों समुझाइ सत्य वती को प्रीतसें॥
भूप गयो मुनिराइ॥ह्वैमसत्र तब बि
पनको॥२८॥तब भूपति उहिं ठोर वि
चरत तीरथ गमन महिं॥गाधि भूप
पितमोर आयो रानी साथलै॥२९॥प
य सके ह्वै भाग दीने अपनी मातको॥२
करि तासों अनुराग कह्यो मानि भृगु
सुतको॥३०॥दोहा॥रानी अपनै हाथप
र लिए भाग ह्वै घाइ॥सत्यवती कोता
हि छिन दीनो भाग बटाइ॥३१॥सोर
ठा॥तत्र संहारन हार सत्यवती के उ
दरमें॥भयो गर्भ उजयार तातछि भृ

ग सुत यों कहत॥२४॥ऋचीक उवा
च॥मंद्रति तुमरी माइ कियो काम अ
ज्ञानतें॥पायस दियो बटाइ तातें तू
वे चित करी॥२४॥दोहा॥तातें तुम सु
त होइगो क्रोधी समर उदार॥भ्राता
तुमरो होइगो वेद उचारन हार॥२४॥
तुमरे पायस में हमें राख्यो हुतो बन
ाइ॥सकल भुवन को ग्रंथ इक सो उ
नि दियो बडाइ॥२५॥यों निज पतिके
वचन सुनि सत्य वती भुय पाल॥क
हन लगी फुनि ताहिसों कांपत भई
बिहाल॥२६॥नहिं तुम हूं कहिवो च
है योंविध सों मुनि राइ॥एत हमार
ो होइगो तजी क्रूर स्वभाइ॥२७॥वै
शं पायन उवाच॥सत्य वती के वच
न तव सुनि सुनि के मुनि राइ॥क
हन लग्यो फुनि ताहिसों भली भां
त समझाइ॥२८॥ऋचीक उवाच॥सु
दरी निहचें जानिए साच कहों कवि
मीत॥पायस॥अन्यय होत तें भई गा

न० ६९
97

त विपरीत २९ सत्यवत्युवाच॥ जोवा
हो भ जगत को प्रकट क इहि वेर
कैसो सुतको उत पत्रमें करहो आज
उलेर॥३०॥ताते मुनिवर मोइ को दी
जें सुत गुणवान॥ अपने तप प्रभा
वतें राषहू हमरो मान॥३१॥सत्यवा
नी के वचन यों सुनि मुनि वरउहि
काल॥ कहन लग्यो फुनि ताहिसों
सो सुनिप भुप्र पाल॥३२॥ऋचीकउ
वाच॥ अबलो उठ कयो नहीं मनु
जनसो जिय जान॥ केयो फुनि हमा
रिवर अब करिये अगन वियान ३३
कैयाहू सुंदरि हरन नहिं जो कछुहो
वन हार॥ सदा जगत महिं होत है
जो विधि लिख्यो लिलार॥३४॥वर्ण
नि होवै तातको सकल ब्रह्म मयज्ञा
न॥ ज्ञेमानी सुत होहिं गे धारहिं गो
सभ ज्ञान॥३५॥ यों भृगु सुत के वचन
सुनि सत्य वती कर जोर॥ है अधीन
तब कहत है सुनिप कृपा फिर मोर॥

३८॥सत्यवती उवाच॥क्रूर कर्म जो कहा
तहा सो सुत्र नाती होइ॥पुत सकल
गुण गण भैसा दीजें मुनिवर मोइ॥३९
ऋचीक उवाच॥कैसाहूं सुंदरि होत न
हिं॥सुत नाती को भेद॥कह्यो तिहारो
होइगो दूर करो सभ खेद॥४०॥कविउ
वाच॥सुनि प्रथम नरेश तुम जामदग्न
अभि धान॥सत्य वती को सुत भयो स
कल गुणन की खान॥४१॥उन फुनि
गाधी सुत भयो विश्वामित्र नाम॥की ५.
नै उनि मरजाद सों सभ विप्रन के काम
जो ऋचीक को सुत भयो जाम दगन अ
भिधान॥ताकै उपज्यो पुत इक परसु
राम बलवान॥४२॥कवित्त॥येंविधसों।
भूप पुत भयो जामदग्न हूंको परसुराम
नाम याको जगमें कहायो है॥कीनो त
प भारी उनि जाइ गंध मादन में कैकै शु
भ जाप तातें शंकर रिझायो है॥भयो है
प्रसन्न महादेव जीकी सेव जानी सक
ल धनु वेद ताको छिनमें सिखायो है

नो०
१८८
८९

होइकै प्रसन्न एक दीनोहै कुठार ताको
तातें उनि वैरन को नास उपजायो है॥
दोहा॥कृत वीरज सुत भयो भूप बडो
तप धाम है यहदेश नरेश सो अर्जुन।
याको नाम ४२ दत्तात्रे परसाद तें धारी
बांहि हजार॥सकल भूमिको भूप ता
ब भयो कृत वीर्ज कुमार ४२ कियोया
ग हय मेध उनि विप्रन सों करि हेत॥
दई भूम उनको सभै पर्वत द्वीप समे
त ४२ एक समै पावक ह्वैको वाढीत
षा अपार॥तब अरजन ढिग जाइ उ
नि कीनी भूप पुकार॥४४॥तब सहस्रभु
ज अनल को भिक्षा दई उदार॥ताकी
शासन पाइकै वाढ्यो अनल अपार॥४५
तब अरजन परभाव तें नासे सकल दो
ष॥किए दग्ध निजज्वार सों पायो सका
ल संतोष॥४६॥तब वन उपवन शैल स
म छिन महिं किए उजार॥आश्रम जाइव
सिष्ट के लगी ताहिकी ज्वार॥४७॥आश्र
म अपनो दग्ध लषि कोप अग्न करि

रि नैन॥अर जन ओर निहारि कै यों मु-
नि बोल्यो बैन ४८ वसिष्ठ उवाच॥हम
रो बन जाल्यो तुम्हूं कियो घोर यहका
म॥ताते तुमरी सकल भुज काटहिंगे
नृप राम॥तब अरजन अभिमान तेंग
न्यो तनाको शाप॥तद्यपि ताके सुता
न को लग्यो पाप कोपाय॥५०॥परसु
राम कै तातकी धेनु हुती भुअपाल॥
ताको वत्स चुराय कै ल्याय अर्जुन बा
ल॥५१॥सोरठा॥हैहय देशनरेश नहिं
जान्यो उनको कियो॥तातें धर्म नरेश
युद्ध भयो अति राम सों॥५२॥दोहा॥
परसु राम अति कोपतें ताकी बांहि
हजार॥काटी भूप कुठार सों आन्यो व
त्स सम्हार॥५३॥जब नृप अंतःपुर हु
ते आन्यो वत्स सम्हार॥तब अर्जुनके
सुतन को बाढ्यो कोप अपार॥५४॥
परसु राम कैतात पर धाय राज कुम
र॥काट्यो सीस फ़ुनि ताहि को तजि-
तजि मल अपार॥५५॥राम गयो जा

नी॰ ५५ व विपन में कृपा समिध कै हेत॥तब
कासो जमदग्नि सिर कोप बढ़ावत चे
९९ त॥५३॥राम विपन तें आइ कै देषि पि
ता की ओर॥तब वंश के नाश को करी प्र
तज्ञा घोर॥५४॥राम देषि यों तात को वा
ढ्यो कोप अपार॥निःक्षत्रिय पृथिवी
करौं यों कहि लियो कुठार॥५५॥परा
सुपाणि तब जाइ कै कार्त्त वीर्य को वं
श॥पुत्र पौत्र अरु बंधु सब मारि कि
य विध्वंस॥५६॥हैहय सकल संहारि
कै करी रुधिर मय भूम॥परशु राम
कै परशु तें रहे भूप सब घूम॥५७॥चौ
पई॥भूमि अराजिक करि भृगुराम॥
कियो जाइ गिरि कानन धाम॥उत उनि
वीने वर्ष हजार॥तब कौशिक को पौ
त्र उदार॥५८॥हैगत अमित करी देवा
जि कियो सकट उनि कौशिक राज॥
जाकुनि रैभ्य नाम अभिराम॥ताको
पूत परावसु नाम॥५९॥सो भृगु पति
सों बोल्यो तहां॥करी यज्ञ बिन ता

करी घरणा विन ल्तत्रिय कहा॥ मिथ्या
करी मनत्ता नात॥ल्यावों त्तत्रिय चवैठे
विमात ६३ तम फुनि त्तत्रिन को भयपा
श॥ वेरहो अब वन महिं आइ॥ वचन
परा वसके मुनिराम॥ फुनि गहि पा
त्र चल्यो बल धाम॥६४॥ जोजो त्तत्री
करहैं राज॥ उनको मारि किया निज
काज॥ बाल प्रभृति मारे समराई॥ बैठे
आय विपन फुनि जाई॥६५॥ जोजोग
र्भ रहे नृप बाल॥ सो फिरि प्रकट भए
भुअ पाल॥ फुनि आए गहि राम कु ६६
ठार॥ छिन महिं उनको किया संहार
नब फिरि राम गए बन मांहि॥ फुनि
गर्भस्थ भए नर नाह॥ योंमुनि आ
ये भार्गव बाल॥ कीनी भूम विना
त्तिति पाल॥६६॥ योंविध भूपति बा
रहकोस॥ कीनी पृथिवी उन बिनई
स॥ अश्व मेध कीनो फुनि भारी॥ क
श्यपको दीनी भुअ सारी॥६८॥ ता

नी॰ ३३
100

सों कश्यप लै मख दान॥तिन केहि
त करि अनुमान॥कह्यो रामसों सुन
मति मान॥दीनो मोहि तुम्हें मख दा
ना॥६९॥इत अब चाहत नहिं तुम्ह बा
सा॥याहू याम्य दिश सागर पास॥यों
सुनि राम उचित मुनि बैन॥गये दा
छिना दिश धरि चैन॥७०॥जब समुद्र
ढिग पहुंच्यो राम॥जाइ तहां कीनो
विस राम॥कीनो वास जानि रमणी
य॥महिमा यासु अनिर्वचनीय॥७१
इत कश्यप दै विप्रन देश॥नृप हितकी
नो विपन प्रवेश॥नृप हित कीनो ७२।
राजा विन कछु दिन महिं छुद्र॥भये
प्रमाद वैश्य अरु शूद्र॥७३॥दीनो वि
प्रन को दुखभारो॥तातें कांप्यो मख
तल सारो॥विन नृप भूम रही अकुला
लाई॥चली रसातल को दुख पाई ७४
कश्यप धरणी डूबत जान॥उरुमें या
री समहित मान॥उरुमें धारी मुनि

अभिराम॥भयोनृप तातें उरवी नाम ७४
तव उरवी निज रक्षा हेत॥मुनिसों
करी विनय धरि चेत॥नाथ भयो है
नृप कुल छाय॥तातें में कछु रावेछु
पाइ॥७५॥सोमम रक्षण करें जुआइ
॥तोमें रहों न और उपाइ॥सोसुनि।
कश्यप करिमुनी कार॥वही किए
पृथिवी भरतार॥७६॥दोहा॥जोजो
नृप पृथिवी कहो॥करि उनको अभि
षेक॥निरभय करि क्षिति पति कि
ए कश्यप नीति विवेक॥७७॥वैशं
पायन उवाच॥दोहा॥येंविध धर्म
नेरष्ण नेपूछोहे यदुराइ॥कह्योरा
म वरतंत सभ भयो सं पूरन ध्याइ
७८ इतिश्री महाभारते शांति पर्व
णि राज धर्म भाषायां कवि देवद
त्तात्मज नंदरामात्मज शिव रामत
त्सुत त्रिलोचन विर चिते नीतिवि
नोद चत्वारिंश त्तमो ध्यायः ४० वै
शंपायन उवाच॥दोहा॥आपसमें
यों कहत तव माधव नृप धरि चे।

नी॰
२२१

ना॥निकट जाइ भीषम लख्यो शरश
य्या कृत सैना॥१॥सेवत हैं मुनि गाइ
जहिं विधि सों चारो ओर॥मध्य सू
मिगन भानुज्यों सोहत कुरु शिर
मोर॥हरहिं ते रथते उतरि केशव
आदि कवीर॥करि प्रणाम कुरुबी
रको बैठे हैं धरि धीर॥चौपाई॥तब
लखि भीषम को यदुराई॥कहन
लग्यो यह बात सुनाई॥हे गांगेय
वीर जग जेता॥है सकल जग कृपय
देना॥तू देवन को पितन लायक॥
सब मतिमानन के तुम नायक॥
भावी वर्जित भूत विधाना॥तोहिं
य कर आमलक समाना॥५॥सम
दम दान सत्य मति सागर॥धनुर्बा
वेद ज्ञानन में नागर॥वेद शास्त्र वि
द तत्व विशारद॥तसैं सराहत भृ
गु गुरु नारद॥६॥आठ वसुन को
अंश सुलक्षन॥तुम वसु नवमप्र
सिद्ध विचक्षण॥परम भक्त हमरे
मनभाए॥तातो जीन हित हम आ

आप ७ पांडुपूत जो धर्म नरेश॥आ
ये तुम्र ढिग पावत क्लेश॥तव वंश
को तय लखिव भारी॥ताको शोकम
ये मनचारी॥८॥तासें कहि अब या
मेंमकार॥करिएं ताको शोक निवार॥
सांख्य योगइति हास पुराने॥आश्र
मवर्ण धर्म तुम जाने॥९॥देशजाति
कुल रीति विधाना॥जानत हो श्रुतिवे
दपुराना॥भीषम तुम सम जानत हा
रो॥१०॥होइ अशोक कहो सो वानी॥
साव दुःख मम ज्ञाता तूं ज्ञानी॥भू
पति को सम धर्म सुनावो॥तातें तु
म फुनि शुभगति पावो॥११॥दोहा॥
तुम्र समान नहिं जगतमें तत्व बुझा
वन हार धर्म भूपके शोक को तुरत
करो संहार॥१२॥कृष्ण देव के वचन।
सुनि भीषम शुभ कर मानि॥ध्योरेऊं
बो वदन कहन लग्यो यह वानि॥१३
चोपई॥नमः कृष्ण गोविंद उदार हृ

तो. ९२. 10

षी केश अज जग करतार॥ नमो विश्व
आत्मा भगवान॥ योगी श्वर जगदीश॥
महान॥ दिव तुम्र शीर्ष भूमि तुम्र पा
इ॥ रवि तुम्र नयन जगत सुव दाइ॥
दिश तुम्र भुजा कहत श्रुति वेद॥ आ
ण अश्विनी देव अछेद॥ अत सी पुष्प
रंग घनश्याम॥ पीत वसन तडिता अ
भिराम॥ तुमरो ध्यान करों मन मांही
विद होत हमको कछु नांही॥ ९६॥ यों
सुनि कृष्ण कहे अनक्त॥ भीषम तुम
मम अविरल भक्त॥ तातें तुम देखा॥
मम रूप॥ नहिं अभक्त जन लावत अ
नूप॥ ९७॥ चढि विमान सुर वसु गंध॥
र्व॥ सेव तहां गुम रहि सर्व॥ तहां गये
तें अव सुर ओक॥ ज्ञान हीन जानो॥
भुग्र लोक॥ ९८॥ तातें सभ आप तु
म पास॥ ज्ञान सुणन की धारत आ
स॥ सो तुम अव सभ ज्ञान सुनाई॥
दीजें नृपको शोक भगाई॥ ९९॥ सो

रना॥भीषम दिन पंचाश तमरै जी।
वन में रहे॥ताते सुर पुर वास पाव
हुगे निज कर्मते॥२०॥चौपई॥कृस्न
देवके यों सुनि बैन॥भीषम कहन
लग्यो धरि चैन॥तुमरै आगें मूमरना
रा॥मैं का कहों ज्ञान व्यवहारा॥२१॥
वैसो जहां जाको गुरु देव॥शिष्यन
कहन ज्ञानको भेव॥लहि गुरु शास
न कहिवे योग॥इत तुम करत निदे
श प्रयोग॥२२॥दोहा॥तुम्रप्रश्न सनतें
कृस्न नहिं कहिवे में संदेह॥हमरो
अर्जुन शरनतें घायल है सम देह॥२३
ताते हमरो जीव अब भयो आकुल।
यदु राज॥भ्रम उपजत मनमें बडो
मन थिर होवत नु आज॥२४॥कथाता
न अरु धर्मकी कहा कहों यदुराइ॥
तुम आगे बैठे जहां अरु सभ ऋ।
षि समुदाइ॥२५॥यों भीषम के वच
न सुनि बोल्यो यदु शिर मौर॥भी
षम तुम मति मानहु तोसमान ना।

2

नी॰
२३
103

हिं और ९६॥ ग्यांनसमको में देतहों भी
षम इक वर दान॥ तुमरै मन नहिं
होहिंगे त्रथा तृषा अरु ग्लान॥ ९७
वाढहिं गो तुमरै हिये सकल ज्ञा
नको पूर॥ जोतन मन की सिथल
ता सोसभ होवहु दूर॥ ९८॥ सत्वगु
ण मन होइगो तुमरो भीषम आज
राज सत मनहिं होहिंगे ज्यों घन वि
न उडु राज॥ ९९॥ सोरठा॥ धर्म अर्थ ब्य
वहार जोजो तुम चिंतन करो॥ सोस
भ कुर सरदार तुमरै मन थिर होंहिं
गे॥ १००॥ और जगत ब्यवहार ज्ञाना
दीठतें सकल तुम॥ देषहु बीर उदार
ज्यों निर्मल जलमें पाथरि॥ १०१॥ वैशं
पायन उवाच॥ तातें ब्यास समेत ना
प मुनि वर द्विज गण सकल॥ एक
न है कति हेत माधव अस्तुति करा
तहीं॥ १०२॥ दोहा॥ कीनी है तब अमर
गण पुष्प वर्ष नभ पाल॥ भीषमय
मे ने बहु पुन जहं बैठे गोपाल॥ १०३

नाद्धिन भूप अकाश में बादित बजे।
अपार॥ कूल्यो पवन सुगंधि युत गा।
वत है सुर नार॥३४॥ लखि संध्या नृप
कै रहे तब सिगरे खग जात॥ भूप दिव
स थोरो रह्यो मंद भयो यमतात॥३५
यों लखि मुनिवर सकल तब उठे तुरा
त सुत्र पाल॥ भीषम धर्म नरेषतें वि
दा भए ततकाल॥३६॥ संजय माधव पां
डुसुत सातकि कृप तप धाम॥ सुरस
रिता सुतको सवनि कीने भूप प्रणा।
म॥ सब विप्रनि धरिधीर यों विधि भीष
म सों कह्यो॥ भोर भए कुरु वीर आवा
हिंगे तुत्र निकट सभ॥३७॥ त्योंही कृ
स्न समेत पांडव सकल विदा भए॥
भीषम सों करि हेत चढि चढि अप
ने रथन महिं॥३८॥ सवैया॥ सैन चली
चतुरंग तबै सब भूपति के रथके व
हु ऐरें॥ कांचन जाल कृप रथ सो।
हत सैल समान मतंगज देरें॥ वीर

नी·
१७४
104

मरे अभिमान सभै करहिं नव भूप·
मृगाधिप सौरें॥ लैकुरु बीर किशा
सन ताछिन वेग तुरंगन के मुह
मोरें॥ ४५॥ दोहा॥ आधी आगें रथन
के आधी पीछे सेन॥ कोउ बामेको
उ दाहने चले बीर धरि चैन॥ ४६॥
भूपति सिगरी सैनको ताछिन ह
र्ष बखान॥ उयो उदय गिरि राज प
र अमल महा दधि जान॥ ४७॥ की
नो दिन कर किरन सों जोऊषधि र
स पान॥ उयो चंद गिरि राज पर ता
को करन समान॥ ४८॥ नागनगर आ
यो निशा यों विध धर्म नरेश॥ अपनै
अपने सदन महिं कीने सबनि प्रवे
श॥ ४९॥ इतिश्री महा भारते शांति
पर्वणि राज धर्म भाषायां कवि देव
दत्ता नुज नंदरामात्मज शिवराम त
नूज त्रिलोचन विर चिते नोजि वि
नोदे एक चत्वारिंश त्तमो ध्यायः ४१

ॐ वैशंपायन उवाच॥ दोहा॥ सोयो न
व सुख सेज में भूपति कृस्न मुरार॥ जा
गि उठो फुनि रात नृप रही घरी जब
चार॥ सोरठा॥ परम ब्रह्म को ध्यान म
धुसूदन ताछिन कियो॥ धारे मन स
मत्तान रह्यो समाधि लगाइकै॥ २॥
मागध सूत समेत गाइक और घने
नहीं॥ करि माधव सों हेत सब अस्तु
ति लागे करन॥ ३॥ पणव मृदंग हजा
र बाजे हैं नृप ताहि छिन॥ बीणा वे
णु अपार घोष भयो मन हर्षकर
बजे बजंत्र अपार त्यों ही धर्म नरेश
कै॥ गावन मंगल चार बंदी मागध
सूत सभाय॥ दोहा॥ तेल सुगंध ल
गायकै पह्यो धौत परिधान॥ सुवि
सुगंध जलसों तबै माधव कियो स
नान॥ ४॥ संध्या पासन करि भले।
कियो जाप चित लाइ॥ नित्य होम
विधिवत कियो यज्ञशाल महिं जा
इ॥ ७॥ चौपई॥ तातें भूपति विप्रहा

४

नी॰
१०५
105

नारा चार वेदको जानत द्वारा इक इ
क द्विजको धेनु हजारा॥ दीनी है ता
ब कृस्न मुरारा॥८॥ सोरठा॥ तब नृ
प धर्म नरेश आयो माधव सदनमें
सहित माधव सदन देखिभीम गु
डकेश श्रीकृस्नहूं ९ दोहा भूपा
ति को लखि आवनो सम अनुज
नके साथ २ चलो कृस्न निजया
न पर लैसात किको साथ १०॥
आपसमें बातें करत सुखसों बीती
रैन॥ मेघ निनद पुन रथमें चढ
चलत धरि चैन॥११॥ मेघ पुष्प सु
ग्रीव अरु सैब्य बलाहक जान॥ जो
रेहें रथ कृस्नके घोरे पवन समान
॥१२॥ चलत जलत नृप तुरग वहा
सुरग छूवत जनुपार कीनें वसदा
रुक इहें सोहत अति छवि पार॥
धर्म खिन कुरुखेत में पहुंचे पांडव
वीर॥ मनो जहां पारसेन भीषम ।
लहि तन नीर १४ उतसोहै निजज

नेतें नाछिन धर्मनरेश॥भीम नकु
ल सहदेव युत सातकि अरु गुड
केश ४५ मुनिजन को पूजन कि
यो करि करि ऊंचे हाथ॥सोहत पां
डव भूप ज्यों उडुगन में निशनाथ
वेठो धर्म नरेश तवभीषम कैंठि
ग जाइ॥परेउ जहां शर सेज में नृ
प भीषम शर खाइ ७ इति श्री म
हा भारते शांति पर्वणि राजधर्मा
भाषायां कवि देवदत्ता नुज नेत्रा
मात्मज शिव राम तत्सूनु त्रिलोच
न विर चिते नीति विनोदे द्विचत्वा
रिंशत्तमो ध्यायः ४२ जनमे जया
उवाच॥दोहा॥जवभीषम शरसेज
में परेउ बान अकुलाइ॥पांडव हु
स्त समेत नृप गए सकल उहिंधा
इ १ वेठे ताछिग जाइ कै सकल
वीर समुदाइ॥जोउन सोंभीषम क
हो कहु मुनिवर समुझाइ॥२॥वै

१९

नी॰
८९
106

शंपायन उवाच॥ सेतन सुन शार सेज
में परो जैबे अकुलाइ॥ आप नारदा
आर नृप तहां सकल मुनिराइ॥३॥
और सकल हत शेष नृप पांडव भू
प समेत॥ भीम नकुल सह देव युता
त्यो सातकि कपि केत॥४॥ कृष्ण सहि
त धृत राष्ट्र नृप शोचत हैं मन मांहि॥
भीषम कैढिग जाइकै वैठे सभ नरना
ह॥५॥ सोरठा॥ तब नारद मन मांहिं क
रि विचार नृप हेतरी॥ कहन लग्यो उ
हि ठांहि सभ भूपन सों प्रीत करि॥६
नारद उवाच॥ सुर सरिताको बाल क्यार
तहैं निज देहको॥ ताते सभ भूप्र पाल
एछहु सिगरे धर्म तुम॥७॥ जानत हैं।
वहु भांत चारवर्ण के धर्म यह॥ छोरि।
आपनो गात यह पावत है सुरलोक।
अब॥८॥ जोतुमरे मन मांहिं संशय सो
सभ पूछिय॥ यों सुनि सभ नरनाह वै
ठे ढिग कारबीर के॥९॥ देषत आपस

मांहिं॥ पूछि सकै नहिं जाहि कों॥ भूप।
धर्म नर तोहि कहन लग्यो तब कृस्न।
को॥१०॥ दोहा॥ मानव ओहै याहिको अ
तिहि पियारो सोइ॥ तातें बिनश्री कृस्न
कै कहै और किहिं कोंइ॥११॥ पहिले त
म कुरु वीरकों पूछहु कृस्न मुरार॥
चार वर्णके धर्मजो तुम सभ जानन।
हार॥ वैशंपा यन उवाच॥ दोहा॥ योंसु
नि धर्म नरेशके वचन तहां यदु राइ
कहन लग्यो कुरु वीरसों ताको मान
बढाइ॥१२॥ श्रीकृस्न उवाच॥ भीषम।
तुम पासन्नहो सावसें बीती रैन॥ क
हो तिहारी बुद्ध अब धारतहै चितचै
न॥१३॥ कहो तिहारे चित्तमें थिरहैं।
सिगरे ज्ञान॥ अरजन के शर निकर।
सों कैयामन होतन ग्ल्यान॥१४॥ वैशं
पायन उवाच॥ यदुवर के यह वचन
सुन कहन लग्यो कुरुवीर॥ हसत।
हसन लगि ताहिको सुनिपं नृपध

सं॰
नि॰
१०
(10)

रि धीर २८ भीष्म उवाच॥ भागे तुम्र पर
साद तें दाह मोह अरु खेद॥ यदुवरा
जानत हो सभै ज्ञान धर्मको भेद॥
१९॥ जोनृप तीन प्रकार हैं जगमें सि
गेर ज्ञान॥ सोमें जानत हों भलें करआ
मलक समान॥२०॥ जोजो वेद पुरान
में कीनोधर्म विचार॥ सोसम तुम्र पर
सादनें जानों कंस मुरार॥२१॥ देश
जाति कुल धर्मजो उनके तीन प्रका
र॥ जो जो वेदन में कहे यदुवर आश्रा
म चार॥ तुमरी करुणा डीठनें जानों
उनके भेद॥ राज धर्म जानों सभै मो
मन होतन खेद॥२२॥ धर्म सुनायोच
हत है जोजो मोनहिं हैर॥ सोतुमसों
कहत हो सुनिए यदुशिर मोर २२
तुमरेही परसाद तें बुद्ध हमारी आ
ज॥ आगे तें निर्मल भई साच कहों
यदु राज॥२३॥ साच कहों यदुवरसु
नो करि करि तुमरो ध्यान॥ चार व
के धर्म अब करहों सकल बखान॥

२४ सोरठा॥ क्योंकरि धर्म नरेशको

सोको अब एकुत नहीं॥ सोमन हो

न कलेश जो पूछे सोकहत हों॥२ ५

भीषमके यह बैन नेह भरे सुनिसु

निमले॥ ताछिन पंकज नैन योंवि

ध तासों कहत है॥२६॥ कृष्णउवाच

यश मंगलकी खान भीषम जान

हु मोहुको॥ अच रज कौनहिं जान

पीन किरण शशिको कहैं॥२७॥सा

च कहों यह तात जब लग धरणी

नल खरो॥ तुमरो यश अवदात तब

लग भुअमें होयगो॥२८॥ यांतुमजो

करि प्रीत धर्मराइ सों कहत हों॥स

कल नृपन की रीत जातें होत प्रस

न्न सभा॥२९॥ जोतुमरे यहबैन मान

हिं गोकरि प्रीत नृप॥ सोपावहिं गो

चैन यांअरु स्वर पुरमें बडो॥३०॥

कृष्ण उवाच॥ सवैया॥ भीषम जोइ

न कोध नरेशहें एकुत है तुमको ति

रनाई॥ रीतपुरातन जानत हो हम

स॰
९॰ई
108

सों मम आजु कह्यो समुझाई॥ताते
मुसों कोऊ देष परे अब ज्ञान धरम्मा
हूमें अधिकारी॥ताते धरम्म कह्यो सि
गरे तुम पूछत हे समरेक डोराई॥१
चौपई॥ताते धर्म पञ्चानन हारा॥भी
षम तोसों कौन उदारा॥तुम्र सुतना
तो पूछत ठाढे॥इनसों धर्म कह्यो अ
ति डाढे॥३॥दोहा॥योंविध सों यदु
वर हूनें पूछ्यो कौरव वीर॥धर्म प्रश
ने नृपनके कहन लग्यो धरिधीर॥२ २
इतिश्री महाभारते शांतिपर्वणि राज
धर्म भाषायां कविदेव दत्तानुज नंदा
रामात्मज शिवराम तन्मूनु त्रिलोच
विरचिते नीति विनोदे त्रिचत्वारिं शा
त्तमोध्यायः ४३ वैशंपायन उवाच॥
चौपई॥भूपति माधवसों कुरुवीर॥
योंविध कहन लग्यो धरिधीर॥माध
व सकल कहों श्रवनोसों॥जोकछुपू
छत होयहु मोसों॥१॥भीष्मउवा
च॥दोहा॥तुमरी करुणा डीठसें मूा

प युधिष्ठिर आज॥ अति पवित्र अब
कै देष्यो सो एक्को महूँ राज॥२॥ ताकै।
एक्के तें कह्यों सकल धर्मको भाइ॥
धर्म एतसो मोहुकों एक्कडु पांडवरा
श॥३॥ जन्म समय फनि याहिके सु
दिन भए यदुवीर॥ केशव सो अबमो
हके एक्कडु नृप धरिधीर॥४॥ मा।
धव हमरे वंशमें तासमान कोउ ना।
हिं॥ केंा अब धर्म नरेश सो मोकहुं
एक्कन नांहि॥५॥ दृढताई करुना त
मा ब्रह्म चर्य्य यहचार॥ जानत हैं सो
मीनसों एक्कडु भूप उदार॥६॥ सवैया
धमहि धीरज बुद्धि पराक्रम तेज स
मागण सभै गुण भारे॥ भेद लह्यो सा
भवेदन कों जिन संकट तें सभदीन
उभारे॥ मानतहे द्विज देवनको अरु
बोलत बेन सदा उजियारे॥ सोअबा
कैा नहिं मोहुकों एक्कत पांडव।
जानतहे गुणभारे॥७॥ दोहा॥ जपतप

स॰ १९५ 109 405

विद्या वेद विधि जानत हैं करि प्रीत ॥सो नृप एकहु मोहुसों सकल धर्म की रीत॥८॥वैशंपायन उवाच॥भीषम के यह वचन नव सुनि सुनि केशव इराइ॥कहन लग्यो फुनि ताहिसों सबनि सुनत इमभाइ॥श्रीकृष्ण उवाच॥डरत लोक अपवाद ते मनमहिं मानत लाज॥तातें है न तुम्ह सामुहे न हिं पूछत महराज॥१०॥बंधुनको रान मारिकै सोचत है मन मांहि॥डरत लोक अपवाद ते तुम्ह डिग आवत नांहि॥११॥जो नित मानन योगहै हानि उनको रन मांहि॥पछु तावत मनमें वडो तुम्ह ढिग आवत नांहि॥१२ वैशंपायन उवाच॥चौपई॥यों विद्या माधव के सुनि वैन॥भीषम कहन लग्यो धरि चैन॥ज्यों विप्रनको धर्मअपार॥पढन पढावन वेदविचार॥१३ सोई तत्रन को सम कहें॥वेरनि ए

को हनि पृथ्वी लहै॥ भूपन के यह ध
र्म पुराने॥ मुनि जन वेदन मांहिं वषा
ने॥२४॥ दोहा॥ जो कोउ अधर्म करत है
स्वन नारी अरु मीत॥ ताको भूपति
हनत है यही पुरातन रीत॥२५ करत
लोभ जो धर्म तजि मानत जो अवि
चार॥ ताको मारत दोष नहि यही ध
र्म को सार॥ वैरन को रन मारिके पूर
न धरणी जोइ॥ रुधिर कीच जो मुख
करै सो नृप धरमी होइ॥२७॥ भूपति
वेला वन युद्ध में तजत न मनको शो
क॥ ताको जोरन में हनै सो पावत सु
र लोक॥२८॥ सोरठा॥ यों सुनि धर्मन
रेश भीषम के पांयनि पर्यो॥ हरकि
यो सम क्लेश ह्वै अधीन ठाढो भयो
तब भीषम उहिं ठांहिं भ्योप्रसन्न मा
न मैं बडो॥ सूंघो शिर फुनि ताहि वै
से भूपति यों कह्यो॥२९॥ सुर सरिता
सुत आप कहन लग्यो फुनि भूपको
नेकन करो संताप एकहु नृप कछु

नी॰
वि॰
११९
~~106~~
110

मोह मैं॥२२॥दोहा॥यों सुनि धर्म नरे
श नव मनमहिं आनंद पाइ॥पूछत
है फुनि ताहिको भयो मैं पूरन ध्या
इ॥२३॥इतिश्री महा भारते शांति प
र्वणि राज धर्म भाषायां कवि देव द
त्ता नुज नंदरामात्मज शिवराम ता
त्मज त्रिलोचन विरचिते नीतिवि
नोदे चतुश्चत्वारिंश त्तमो ध्यायः ४४
वैशं पायन उवाच॥सवैया॥यों सुनि
भूप धरम्म नरेश प्रसन्न भयो अप
ने मन मांही॥केशवको अरु भीषम
को बहुमांन प्रणाम किए उहिं ठांही
॥पूजि भले द्विज देवन को नृपके म
न शोक रह्यो कछु नांही॥पूछत है
कुरु वीरहूं को नृप बैठि भले निज
आसन मांही युधिष्ठिर उवाच॥बडो
कठिन सम कहत हैं राज धर्म महिपा
ल॥ताही को समुझाइ कै कहो सक
ल तुम आज॥१॥राज धर्म के बस र
हे धर्म अरथ अरुकाम॥ताहीको अ

व मोहूसों कहो सकल नप धाम॥३॥
ज्यों चोरन को बाग है अंकुश ज्यों गज
राज॥राजधर्म त्योंही कह्यो लोकन के हि
त काज॥४॥जो नृप अपने धर्मको ना
हिं पालत करि प्रीत॥ताकी रैयत खे
द युत पावत अरि गन भीत॥५॥हृदा
हीन अंध यार ज्यों उदित दिवाकर दे
ष॥त्योंही राज धरमसों दुरजन हो
त अशेष॥६॥तातें पहिलें धर्म सम
भूपनके हित कार॥कहो सकल सा
स्त्रकार के तुम सम जानन हार॥७॥
चौपई॥धर्मसुनि धर्म भूपके बैना॥भी
षम कहन लग्यो धरि चैना॥द्विज ग
नको तब करि परनाम॥कहन लग्यो
तब नृप हित काम॥८॥भीषम उवाच
दोहा॥सुनो भूप अब कहत हों राजा
धर्म व्यावहार॥जो एको सो कहत हों
और सकल सम कार॥९॥भूपन को
करिबो चहै पहिले रैयत मान॥द्विज
देवन को पूजिए बडो धर्म यह जान

नी॰ ११२

॥२०॥ द्विजदेवन को पूजिकै भूप कर
न जो राज॥ सो क्रमण सकल उतारि
कै करत संपूरन काज॥२१॥ जो नृप उ
द्यम करत सो सदा रहत सुख पाइ॥
बिन उद्यम कछु होत नहिं सुनि पा
पांडव राइ॥२२॥ उद्यम ही करिबो व
है भूपन को जगमांहि॥ उद्यम सभ
कछु करत है बिन उद्यम कछु नांहिं॥
२३ परालब्ध उद्यम दोऊ जानहु भूप
समान॥ तद्यपि उद्यम अधिक है मुनि
जन करत बखान॥२४॥ केवल दैव ना
करि सकै काज भूप जगमांहि॥ जैसें
एकहि चक्र सों यान चलत कहुं नां
हि॥२५॥ कबहूं कारज नाशमें भूप
न होहु उदास॥ फिरि फिरि उद्यम
कीजियै नहिं तजियै मन आस॥२६॥
राजन के यह धर्म हैं एत भलें जिय
जान॥ बार बार यों कहत हैं सिगरे वे
द पुरान॥२७॥ कबहूं झूठन बोलि
ए क्षत्रिय धर्म नरेश॥ सांच कहत

है भूप जो ताको होतन क्लेश॥११॥
अभिमानी त्यागी नहुन द्विजदेवना।
सें हीन॥भव्य छबी सुंदर सदा वहि
यन भूप प्रवीन॥२॥एत सदाराखि
वेहू नृपको सरल सुभाइ॥पराहूष
न प्रकटाइ पे अपने रावै छिपाइ॥
२१ समय देखि नृपकी जिये मृडअ
रु कठिन सुभाय॥केवल मृडता।
जानिकै नृपको होतन भाइ॥तातें
भूपति राखिए समय समय अनुसा
र॥मृडताई अरु कठिनता यही धा
मेको सार॥२२॥मृडता केवल जा
निकै नृपको होतन त्रास॥त्योंहीजा
नि कठोरता सभजन होत उदास॥२
कबहूं भूपन दीजिये विप्रनको कछु
दंड॥मान भंगतें द्विजनको बाढत
कोप प्रचंड॥२४॥त्याग्यै सुव मनुनैक
हे पाछें होइ शोक॥उनको मन मा
हिं समझिकै कबहूं होतन शोक॥

नी॰
रा॰ ६

२६॥ प्रकट होत जलतें अगन द्विज
नें क्षत्रिय जान॥ आयस होत पखा
नतें सत्य भूप जिय जान॥२७॥ आप
ने ही में मिलत हैं नृप इनको परका
स॥ इनको होत विरोध जब ताहि छि
न होत विनास॥२८॥ तातें भूपति की
जिये विप्रनको परनाम॥ माने द्वि
जगन करत हैं सकल धर्म के काम
॥२९॥ भूपति द्विजगन करत हैं आप
मानतें होत जगत संहार॥ तातें मा
ने चाहिये द्विजगन बारंबार॥३०॥ क
ह्यो धर्म भृगु मुनिहूनें भूपनको सु
दार॥ सो अब तुमसों कहत हों सुनि
य पांडव राइ॥३१॥ यद्यपि द्विज नृ
प शस्त्रगहि आवहि मारन हेत॥
तद्यपि ताहि न मारिये सुनहू मृता
धरि चेत॥३२॥ सोरठा॥ जानि धर्म
की हानि जो द्विजको राखत है सदा
सत्य भूप जिय जान तातें धर्म न च

रतहै॥३३॥सुनिएं धर्म नरेश रता करि
ए द्विजनकी॥ताको होतन क्लेश जोन
प रावत द्विजनको॥३४॥द्विज अपरा
धी जानि नद्यपि भूपन मारिएं॥यहीय
मे चित मानि देश निकारा दीजिएं॥३५
भलो बुरो द्विजहोइ नद्यपि करुणा की
जिएं॥द्विज गुरु चानी जोइ नद्यपि ना
हिन मारिएं॥३६॥दीजें नांहिं निकारा
जोद्विज वैरी भूपको॥यही एत चिता
धार देह दंडनहिं दीजिएं॥३७॥दोहा॥
मानत हैजो द्विजनको बाछतहै नरसो
इ॥ताते नृप नर कोश विन और कोश
नहिं कोइ॥३८॥सोरठा॥जोनृपषट प
रकार कहैहै दुर्ग मुनि जनहुंतैं॥तामहिं
दुर्ग अपार मनुज दुर्ग उत्तर कह्यो॥
३९॥तातें धर्म नरेश रैयतपै करिएं कृ
पा॥द्विहोत सब क्लेश रैयत पालनता
ते सदा॥४०॥दोहा॥समय समय मैं
कीजिएं तमा दया अरु प्रीत॥विना
समय नहिं कीजिएं एतयही नृपनी

नी.
२२५
113

न॥४१॥सोरठा॥तमा युक्त नृप जोइ।
ताको अधम कहैं सबै॥ज्यों भूपति।
गजराज तमा सहित दुर्बल बडो॥४२
दोहा॥तमायुक्त नृप जानिकै कोऊ।
करत न मान॥चढत महावत फील
पर तमायुक्त तिहिं जान॥४३॥अति
तीक्षन अति मृदु नृपति कबहूं एतन
होइ॥ज्यों दिन कर ऋतु शिशिर में स
मताई युत होइ॥४४॥एत सदा तम प
रविडो उपकारी अपकार॥आगम अ
रु अनु मानसों करि करि चले विचार
४५॥व्यसन अठारह जो कहे स्वायंभा
व मनुराइ॥उनकों तजिए नेमसों रहो
भूप सुख पाइ॥४६॥जो नृप व्यसनी हो
त है अति दुखपावत सोइ॥विलपत रै
यत याहिकी मानत नाहिन कोइ॥४७
गर्भवती ज्यों होत है अबला नाहि स
मान॥एतसदा जो रहत नृप ताको।
बाढत मान॥४८॥गर्भवती ज्यों गर्भ
हित तजत खान अरु पान॥त्यों तजि

सिगरे नृपति सुख रावहु रैयतमा
न॥४९॥तजिपं भूपति सकल सु
ख रैयत पालन काज॥रैयत होना
मसन्न जब चाहत नृपको राज॥५०
धीरजकौं नहिं तजि सकें कबहूं पं
डवराइ॥धीरज दंड समेत नृप रहा
न सदा सुखपाइ॥५१॥कबहूं भूप
नकीजिपं शासन मैं परिहास॥जो
कछु जामें दोषहूं सोसुनिपं परका
स॥५२॥भूपति को परिहास लषि
दास करत अपमान॥मरजादा नि
ज छोरिकै होत सदा बलवान॥५३
चौपई॥भूपति कोनहिं काज सवारें
गमसेउ सम प्रकट विचारें॥उनकों
जोनहिं मांगन जोग॥सोमांगत हिं
त अपनै भोग॥५४॥भूपति सोंनित
रूठे रहें॥उपालंभ फुनि तासों कहें
सिगरे कारज करत खराब॥भूप
तिसों नित करत जबाब॥५५॥रैय
तको नित करत हिरान॥भूपतिको

नहिं राषत मान॥जोजन नृपतिय राव
नी. नह्यारे॥उनसों बचन कहत हमयारे॥५
२२४ ६॥भूषन वसन भूप सम धोरें॥जोसी
एक सभामहिं डोरें॥कबहूं लाजन।
119 मन महिं आनें॥गूढबात नित प्रग।
ट बखानें॥५७॥राज नियन की रक्षाक
रहिं॥पाप कछू नहिं मनमें धरहिं॥जो
नृपकेहूं रथ राज चोरें॥उनपै चढत।
रहें अनमोरें॥५८॥नानृप रेयत कर
हैं त्रास॥लखि नृपको मृदुता परि।
हास॥तातें नृप तुम बारहिं बार॥क
ह्यो हमारो मनमहिं धार॥५९॥दोहा
भलो बुरो करि कहतहैं बुरो भलो क
रि मान॥बैठ सभामें करतहैं भूपति।
को अपमान॥६०॥आपसमें फुनि ह
सतहैं भूपतिको लखि क्रोध॥नृपतें
लहि बहु मानसम नटपिन करत स
माधि॥६१॥आपस में फुनि हसतहैं
टेढी डीठ समेत॥भूपति ओर निहा
रिकै नाकरिहैं कछु हेत॥६२॥आव

भीष्मउवाच

समें मिलि करनहैं नृप मंत्रनको भेद
हसन हसन फुनि करतहैं नृप शास
नको छेद॥९४॥भोजन भूषण वसा
नमें नहिं मानत कछु त्रास॥क्रोधयु
क्त लषि नृपतिको मानतहैं मानना
हैं बहु हास॥९५॥जोकछु भूपति दे
तहैं तिंहत हैं फुनि नाहि॥राज भाग
वाहन सभै नृपको मानत नाहि॥
९६॥खेलत हैं जरि नृपति सों ज्योंपा
छिनसों बाल॥सभ लोगनसों कह
तहैं हमरै वस भुव्र पाल॥९७॥योंवि
धसों सुत होत हैं दोष घने फुनि और
सेवक सों जब हसन हैं सुनिपं कुरु
शिर मौर॥९८॥इति श्री महाभारते
शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि
देव दत्ता नुज नंदरामात्मज शिवराम
तनुज त्रिलोचन विरचिते नीति वि
वेके पंच चत्वारिंशत्तमो ध्यायः ४५
भीष्मउवाच॥उद्यमही करिबो चहैं
भूपतिको जगमांहिं॥बिन उद्यम भ

अपालको कोऊ सगाहन नांहि॥३॥जो
नो. २२५ मुनिवर भृगुने कह्यो भूपति एक सा
लोक॥ताको सुनिये चित्त दै भागत है
115 सभ सोक॥२॥यमन भूमि इन डहनि
को सुनहू भूप चितलाइ॥विन विरो
ध जोभूप है पठन विना द्विज गइ॥
३॥तावहू मन तुम आपने यह निता
धरम नरेश॥मीनन सों मिलवोवहै
वैरनको नित क्लेश॥४॥जोनर साता
हिं अंगमें करत रहै विपरीत॥सोनित
मारन लागहै यद्यपि है द्विजमीत॥५
बोल्यो भूप महेन्द्र नृप पाछें एक स
लोक॥ताको सुनिए मीन सों कबा
हुन वाढन शोक॥६॥यद्यपिहै गुरु
देव जो करत रहत अपकार॥तदपि
दंड करवो चहै राजनीत अनुसार॥७
भूपति वाहू नरेशको एत सगर अभि
धान॥उनि अस मंजस सुत तज्यो रैय
तको द्विजमान॥८॥सुनहू भूप नृपा
सगर सुत सगनके तरजाइ॥लोकन

के जोवाल है उनको देत इवार॥८॥
दीनो नृपत निकारि के सासन मग
र नरेश॥लोकनको हित मानि कै
हर किए समझेश॥१०॥धर्म सनात
न भूपको रैयत रक्षाजान॥द्विज दे
वनकी सेव अरु मुनिजन करत बष
ना॥११॥कबहू भूपन कीजिए परधा
नको कछु लोभ॥समय समय मैं की
जिए तमा दया अरु लोभ॥१२॥धर्म
अर्थ अरु काम नृप सोंही मोक्ष बि
चार॥भूपति को करिबो बहै वेदनके
अनुसार॥१३॥रैयत की रक्षा बिना नृप
को बिदन जोर॥तातें रैयत यतनसो
रावहु कुरु शिरमोर॥१४॥भूपतिको
राखिवे बहै वर्ण धर्म यह वार॥धर्म वि
रोधी मारिए यही धर्मको सार॥१५॥
भूपति यतन करो सदा धन संचनके
काज॥जैसे करत रहे सदा राजराज
सम राज॥१६॥करत रहो नृप सबनि
के गुण अरु दोष विचार॥सेवकसों
कनिन राखिए जोरे राषत हार॥१७॥क

नी· ११६

116

वहूं भूपन कीजिए दुर्जन को विश्वास
सदा दोष तम अरिनके करत रहो पर
काम॥१८॥भूपनको करिबो चहै दीन
न पै उपकार॥ऐसा उनको कीजिए जो
हूं राखन हार॥१९॥चौपई॥वृद्धन की
नित सेवा करिए॥द्विज देवनकी पारा
ना परिए॥आलस निद्रा करिए दूर॥
भूपनके यह काम जरूर॥२०॥बडिय
न की मर्यादा करिए॥कवहूं न सेवा
नको धन हरिए॥हसत हसत बातें।
करै॥अपनो भेद नृपहिं धरै॥२१॥
दुष्टन की संपद हरिली जे॥सो नित।
सज्जन को नृप दीजे॥दुर्जन संपद आ
प नृप हरै॥आपुहिं नृप फुनि वगस
म करै॥२२॥अपनो मन अपने वस
आनै॥कारज सिगरे हित कर जानै॥
भोजन दान समय में करै॥अपनो थ
मे सदा मन धरै॥२३॥दोहा॥सूर भा
क असहाय फुनि धर्मी अरु सकल
लीन॥संबंधी जो आपने राखै भूप
प्रवीन॥२४॥पंडित अरु संसारको जो

जानत व्यवहार॥ जो जानत परलोक
को मानत धर्मविचार॥२५॥ नृप बल
अबल विचारिकै करिय इनके मान॥
नित इनको छिग राखिय तातैं बाढ
त मान॥२६॥ असन बसन अरु भोग
सम उनको आपसमान॥ धर्म भूपति
न दीजिये बिन छत्र सासन जान॥२७
पीछेतें अरु सामुहै राखत उनसोंप्री
त॥ जो नरेश यों करत सो रहत सदा नि
र भीत॥२८॥ जो नृप कोऊ नरहु को
करत नहीं विश्वास॥ लोभ किये पर
धन हरत सो नित पावत त्रास॥ जो
पवित्र नित रहतहै रैयत को हित का
र॥ कबहू सो पावत नहीं वैरनतें हा
र॥२९॥ बिना व्यसन अरु क्रोध बिन
सोमहतो गुन होइ॥ ऐसे नृपको ता
न सम मानत है सबकोइ॥३०॥ सबै
स॥ जो नृप भूप बडो मति मानहै
जानत है गुण वेद बखाने॥ दोष प
ख्यानन वैरिन के नित न्याउ धरम्म।

नी·
११२ 117

कि नीतजोहानै॥गावत जो वस इंद्रिन
को अरु क्रोध कि बात नहीं मन धारै
दीननको धन देतजो मीतसों सोनृप
सिगरे काज सवारै॥३३॥मानत जोद्वि
ज देवनको अरु बोलत बैन सदा अति
प्यारे॥जोनृप झूठन बोलत है अरु
काज सवारन बेर उवारे॥रैयत पाल
न एतन के सम बैरनतें कबहू नहिं
हारे॥जाहिके देशमें लोक सभै धन
संपद सों विचरें इमप्यारे॥३४॥दोहा॥
अपने अपने धरम रत जाके देशन
मांहि॥चार वर्ण तिन बसत सो भूपब
डो नरनांहि॥३५॥क्रोध लोभ छलक
पट नहिं जाके देशन मांहि॥दान ध
रत सकल बाछत यश फुनि नाहि
३६॥पोरनको जो करत हित धारत
जो मन ज्ञान॥बडपन के मग चलत
जो सोनृप होत महान॥३७॥गुप्तचार
जाके फिरें देखि परें कहूं नांहि॥रिपुग
न जानें डरनहूं सोराजा जग मांहि॥४

३७॥ एत कह्यो भार्गवहू नै पाछे एकस
लोक॥ सुने सुनावै याहिकै कवहूं ना
वाढत षोक॥ ३८॥ नृप कों पहिलें मा
निए धन नारी फुनि जान॥ जहां भूपवि
ते वसै नहांन धन निय प्रान॥ ३९॥ क्ष
त्रिक धर्म सभनें कह्यो भूपनको सुख
कार॥ रैयत रक्षा कीजिए यही धर्मः
को सार॥ ४०॥ पावैत समनु नै कह्यो
भूपनि दोइ सलोक॥ सुनिए उनको वि
लंटे हरहोन सभ शोक॥ ४१॥ यह षट
त्यागन योग हैं ज्यों दधि फूटी नाव॥
आचारज वानी विना जो पंडित विना
काव॥ ४२॥ जो नृप रक्षा करत नहीं ना
री कर्कश जोइ॥ ग्रामवसत गोपाल
जो वनमहिं नापित सोइ॥ ४३॥ इनकें
त्याग किए सदा रहत मनुज सुखपा
इ॥ नीति विनोद गरंथको भयो संपू
रन अध्याय॥ ४४॥ इति श्री महाभारते
शान्ति पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि
देव दत्ता नुज नंदरामात्मज शिवराम

नी॰ ११८

118

तत्सत् त्रिलोचन विर चिते नीति विनो
दे षट् चत्वारिंश त्तमो ध्यायः॥४६॥
भीष्म उवाच॥सवैया॥भूपति ए तुमा
कों अति प्रीतसों राज धरम्मको चार
सुनायो॥जो ब्रह्मन सों अति प्रीतसों
देव अचारज नैसकु कायो॥त्योंहिं वि
शालहूं नें अति शुक्र अचारज नें प्र
कटायो॥और सभै मुनिराइ कहें ति
न भूपन को अतिही सुखदायो॥१॥
दोहा॥भूप सराहत है सभै सकल
धर्मको मूल॥रैयत रछ्या कीजिए
यही धर्मको मूल॥२॥सुन सुनो ता
महिं कहों साधन एक बनाइ॥चार
नेनें सभ समझि कै लीजें कर सुखदा
इ॥३॥समय देखि नृप लीजिए रैयतसों
कर दान॥साधुन की नृप सेव करि रा
खहु उनको मान॥४॥सोरठा॥मृदु अ
रु कोमल होइ वैरिनको भेदन करै॥
जो गरहू जीरण होइ उनकी सुध राखै
सदा॥करै नीत अनुसार देह दंड धन

देइ अरु॥ सकल धर्मको सार मायू। कल जन ताविषें॥८॥ताबडु भूप स माज अन्न वसन अरु द्रव्यको॥ आ वनहैं यह काज बुद्धिमानको सेव अ रु॥ बेयन सेनके ओर भूप सदा देषत र हैं॥ त्योंही कुरु थिर मोर धन संपद को देषियें॥८॥दोहा॥ उद्यम ही निता को जियें भूपनको यह जान॥ विन उ द्यम नृप जानिकै सभजग होत हिरा ना॥९॥ बुद्धिमान यद्यपि बडो विन उद्य म नृप हीन॥ अरिगन ताको ग्रसत हैं ज्यों भुजंग विष हीन॥९॥ अरिको दु र्वल जानिकै नहिं करियें अपमान॥ समय जानि थोरी अनल सभजग करत हिरान॥११॥ राज तंत्र अति क ठिनहै नहिं निबहत अल्यज्ञ॥ तातें आलस त्यागि नृप होत सदा सर्वज्ञ॥१२॥ वैशंपायन उवाच॥ भीष्मयों नृप सौंनकहि बोल्यो सुन कुरुभूप॥ होइ कहू संदेह तो पूछहु बच

नी॰
११५

119

न अनूप॥२३॥यों सुनि नारद आद मु
नि कुह्ना युधिष्ठिर राइ॥साधु साधु क
हि भीषमकों रहे सकल हरषाइ॥२४
लखि संध्या यह वर किए द्विजगन ।
को परनाम॥दक्षन कर कुरु वीरको ।
गए सकल निज धाम॥२५॥सवैया ।
बीती निशा जब भोर भयो तब वीर स
भै कुरु तिनकों आए॥दौरत हैं रथवे
ग भेर नृप देषि पैं उहिं ठौर सुहाए॥
भीषम के ढिग जाइ खरे भए बोल ।
न आपस में हर्षाए॥यानहूं तें उत ।
र्यो तब भूपति भीषम कोयह बैन ।
सुनाए॥२६॥युधिष्ठिर उवाच॥राजाकों
राजा कहे सोकैसें मनि माना॥तिल्या ।
पाणि पद पीठ कटि उरग्रीवा समा ।
जाना॥२७॥जन्म मरण अवहार समा ।
पकहिं सेवत सवै॥पालत सभकोए
क यह कारण कौन आवबै॥२८॥क
होपिता मह सकल तुम यह संसा ।
र सनुकार॥योंसुनि कें भीषम क

यो सुनो सकल कुरु राइ॥१९॥भी
ष्म उवाच॥कवित्त॥पहिलें कृत यु
ग मांहिं राजा नांहिं राज रह्यो दंडनां
हिं रह्यो दंडदायक जो कहियें॥आप
समें प्रजा बूझि धर्म परम पर रक्षण
करत रहे जहां जैसो चहियें॥तातें क
छु दिन वीतें बाढ्यो सब हूको लोभ
निज निज काज कीनो सिद्ध कीनो
सहियें॥विना दंड दाता निरभीत भ
ए लोक सब राजा होइ तातें सबसे
रन मो दलहियें॥२०॥वाक्य उभवा
च्य भक्ष्या भक्ष उं अगम्या गम्य आप
नो अरु परको विचार छोरें सिगरे॥
दंड दाता रह्यो नांहिं लोक लाज छो
रि दीनी स्वारथके लोभ लागि देखि दे
खि विगरे॥राजको विगाढ जानि दे
वगण पीडित है जाइ पास ब्रह्मा जू
के सकल दशा उचारे हैं॥सुनिके पु
कार सुर गण हूकी ब्रह्मा तब कीनो
अनुमान दंडदाता कोन निकारे हैं २१

नी॰
१२०
120

दोहा॥तब वेधा अनुमान करि पदस
हसन अध्याय॥विरचे जोके पढना
तै सभ फल साध न्याय॥२२॥पृथग
थे सभगुण कहे अरु त्रिवर्ग विधा
न॥स्थान हृदि लपकार कहे देशका
ल अवदान॥२३॥राज पुत्र लक्षणक
हे अरु राजन की नीत॥मंत्र कहे फ
ल मंत्रके देनकह्यो करिप्रीत॥यात्रा
काल त्रिवर्ग अरु पांच वर्ग सविधान।
विरची रचना सवनि की विजय धर्म
अनु मान॥२४॥शत्रु मित्रके गुण क
हे कहे मार्ग गुण तीन॥सभ उन पान
नि पान कहि कह्यो युद्ध जयजीन २५
अरु शस्त्र संभमंत्र युत कहे व्यूह व्य
वहार॥कह्यो अलभ कोलाभ अरु।
लाभ विवरधन चार॥२६॥रक्षाविधा
सभ प्रजनकी पुरगृह रक्षण ठोर॥व
रणे विधि भगवान प्रभु जग प्रपंचस
भठोर॥२७॥नीति शास्त्र अरु विमल
सो महा अनूपम चाहि॥प्रथम पंच

कीने ग्रहण जगत समान नाहि २९ सो
लखि होइ प्रसन्न अति कार्तिकेय ब
खाण॥ द्वैहज्जार अध्याय को कीनोत
व अभ्यास॥३०॥ताते इंद्र किए ग्रहण।
पांच सहस्र अध्याय॥ तीन सहस्र अध्या
य फुनि सुरगुरु चहे सचाय॥३१॥बाह
स्पत्य कहा तजो जानत सम आचार्य॥
शुक्र सहस्र अध्याय सो वरणे सोमाचा
र्य॥३२॥इहिं प्रकार सम शास्त्र की भई
उतपत सुन भूपा॥ अब सुनिए यौं विध
भई नरपति उतपति रूप॥३३॥सुनि आ
नपत सम शास्त्र की सुरगण आनंद।
पाइ॥ जाइ विष्णु के पास तब कन लगे
समुझाइ॥३४॥ सो सुनि हरि फुनि एक
चरि जग शिक्षण के हेत॥ प्रगट किए ति
ज तेज सों विरज नाम अति चेत॥३५॥मा ✓कीर्तिमान सुत नाम कर्दम ता
से मणी ना नाहि सुत भयो तप प्रभाव को सुत ✓ ५
अति नाम॥३६॥ताको सुत तितिपाल
फुनि नाम अनंग विशाल॥ नीति मान
फुनि नाहि सुत मृत्यु नाम तितिपाल
॥३७॥ भई सुता नृप मृत्यु की नाम सुनी

या प्रका॥ वेण नाम सुत ताहिको सो ।
नौ॰ नृप भयो अविवेक॥३८॥ मुनि गण ता
१११ कोप करिकै मथ्यो दाहनो जानु॥ तह्ना
पुरुष ताको कह्यो जो निषाद वनमा
121 ना॥३९॥ तब दक्षिण करमथन तें मुनि
गण भरे उमाह॥ तहांते प्रगट्यो गहि पाको
सम प्रकसो पृथुनर नाह॥४०॥ सर्ववे
द वेदांग अरु धनु वेद ज्ञाना॥ पृथुपू
छे मुनिगण सकल निज कर्तव्य अवा
र॥४१॥ तब मुनिगण पृथुसों कह्यो ।
पालै प्रजा सुनीत॥ बिन नृपके अध
मकरें सिगरी प्रजा अभीत॥४२॥ यों ।
कहि संमति करि भए शुक्र पुरोहित ।
पास॥ बाल खिल्य मंत्री भए गर्ग गण
क ज्योतिषास॥४३॥ अस्तुति हित प्रका
टित भए मागद सूत अमंद॥ वंदी ज
न अति निपुन फुनि करत सुयश ।
सकंद॥४४॥ शिलाठोर सम धर परे
भूमि विषम अति देखि॥ पृथु महीप ।
बलवान प्रभु समकरि वो अवरेखि ।
॥४५॥ शिला टारि धनुवाणसों धरा

र कीनें गैल॥ तादिनतें धरणी भई स
म सरूप अज गैल॥४६॥ विप्र शा
क मुनि गण सहित ताहि ताहि
कियो अभिषेक॥ एक धन दताको
दियो धन असंख्य सविवेक॥४७॥
हय गज रथको दान नर भए मनस
कनाम॥ पृथुनरपतिहूनें किए सिग
गेर धर्म प्रकास॥४९॥ नव भूपति पृ
थु नृपहूंनें दुहिलीनी सब भूम॥ दे
व असुर आदिक सबै दोहिलए उ
निहूमा॥५०॥ भूमिता सपुत्री भई ता
नें पृथ्वीनाम॥ तातें यथा पृथु भूपके
जग ज्ञाहिर अभिराम॥५१॥ जन रंजा
न गुण गणभयो भूपति पृथु अनू
पालनसें त्राण किए भयो क्षत्री गु
ण अनुरूप॥५२॥ राजामें नृप वसता
हे विप्र तेजको अंश॥ तातें पालना
गुण धरत राजा परम प्रसंश॥५३॥
रवे पाप तेजो विधहूनें सो राजन केहे
ना॥ तातें राजन को उचित सदा शास्त्र
रनवेता॥५४॥ इति श्रीमहा भारते शां

ति पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि दे
नी. २२ व दत्त सुत नंदराम आत्मज शिवराम
तनय सु त्रिलोचन विरचिते नीति वि
122 नोदे सप्त चत्वारिंश तमो ध्यायः ४७
वैशंपायन उवाच ॥ सोरठा ॥ यों सुनि
धर्म मनीष भीष्म सों पुनि कहत हे
अब कहिये कुलदीप धरम आसरम
वर्ण के ॥ १ ॥ राज धर्म मन जोर नृप व
रधन जाके किये ॥ राज्य प्रजा धन सों
र वछत कहा कहा कीनें कहे ॥ २ ॥
कोट मांहि सरदार कौन कौन राखे
चहें ॥ राखें कौन प्रकार ऋत्विज प्रो
हित मंत्रि अस ॥ ३ ॥ करियें कौन हिं
रहै कौन कौन राखे चहें ॥ करियें क
हो नत्रुर अपनी रछा कौन विध ॥ ४ ॥
आपद मे विस्वास करियें कौन हिं स
त्रुज को ॥ एहु हमरी आस कहो पि
तामह सकल सुमा ॥ ५ ॥ भीष्म उवाच
दोहा ॥ करियें प्रणाम अब कृस्न को
धर्महूं को धरि चैन ॥ करि प्रणाम स
म द्विजन को धर्म सुनाऊं पैन ॥ ६ ॥

नृप साधारण है सदा तीनवर्ण केथ
मे॥अब ब्राह्मन वर वर्णके सुनो धर्म
अरु कर्म॥७॥प्रथम कह्यो अध्यनक
नि अध्यापन सुन भूप॥७॥दान प्रति
ग्रह यजन अरु याजन करै अनूप॥८॥
ब्राह्मन के षट्कर्म ए इनमें क्षत्रिय ही
न॥अध्यन दान अरु यजन इकु कहत
लोक परवीन॥९॥युद्ध प्रजापालन
करन तस्करबधकी चाह॥पालन वर
णाश्रम धरम राजनीत उत साह॥१०॥दा
न यज्ञ अध्ययन अरु धन संचन अब
हार॥पालन सिगरे पसुन को वैश्यध
र्म अधिकार॥११॥एवं प्रजा पति पसु
न रचि भय वैश्य हित देत॥ब्राह्मन क्ष
त्रिय सम प्रजा दीनें पालन हेत॥१२
सेवा करन त्रिवर्णकी धर्म शूद्रको प
मे॥करि सेवा त्रैवर्णकी गहै जीवका
कर्म॥१३॥सेवाहित त्रैवर्णकी रच्यो
प्रजा पति नाहि॥धन संचयन हि शू
द्रको कह्यो धर्म यह नांहि॥१४॥कौ
न रक्षा यत्नकी शूद्रपठै जो गाथ॥

फल पावै ताके किए सिद्ध विप्रके हा

नी॰ थ॥१५॥भूपति प्रभ वर्णको यज्ञदान

२३ अधिकार॥यज्ञ दान विन और नहिं इन उ

1123 न साधन द्वार१६॥वैशंपायन उवाच॥

वर्ण धर्म यहि भांत कहि भीषम ज्ञान

निधान॥कहन लग्यो आश्रम धरम सु

नो भूप मति मान॥१७॥लहि संस्कार ।

द्विजन लहि कैरै शास्त्र अभ्यास॥यों वि

धेंमो रहि कै गृही कैरै स्वधर्म प्रकाश॥

१८ देव पितर अर्चन कैरै दीनन को पो

षो॥पालन कैरै कुटुंब को यह गृहध

र्म अशेष॥१९॥केश उतारि पवित्र ह्वै

कैरै विपन मधिवास॥तहां आरण्यक

शास्त्रको सविधि कैरै अभ्यास॥२०॥र

हि सु जितै द्री तत्व विद वान प्रस्थवि

धान॥ऊरध रेता त्यागि तन पावतप

द निर्वाण॥२१॥ब्रह्मचर्य ब्राह्मण गहै

रहै निरासन जोइ॥रांधै भोजन त्रिवि

से प्राप्त होइ जो कोइ॥२२॥मनन शील

अवि कार नित इंद्रिय जित निःकाम॥

ब्रह्म वर्ष्म व्रत सिद्ध करि पावत परम

भिराम॥२३॥परम धरम संन्यासको म
मल गहन करिन्याग॥यहि विध आ
श्रम धरम सब साधन पूरण भाग॥२४
गृही विप्रको उचित है नितषट्कर्म
विधान॥करि वनवास सनियम द्विज
है ज्ञान कृत्य महान॥२५॥याम्य जीविका
कुटिल द्विज शूद्र पुरोहित जोइ॥असि
जीवी वृषली पति विप्र शूद्रसम सोइ॥२६
कृषीकार हिंसक चुगल लंपट विगत
विचार॥विप्र यज्ञके गेह में नहिं ताको
अधिकार॥२७॥इहिं प्रकार त्रयवर्णको
और आसरम चार॥सो सुनिये भूपाल
सकल भिन्न भिन्न ब्यवहार॥२८॥कलिमे
वा त्रैवर्णकी करि पौराणिक कर्म॥सुत
उतपति करि भूप नृप वन महिं करै सुध
र्म॥२९॥शूद्र और आश्रम धरै विन गृहि
थ संन्यास॥वैदिक करि संन्यास विन वै
ष्णवहि आश्रम वास॥३०॥ऐसोही तत्रिन
को कह्यो करिके पुत्र प्रधान॥गहै औ
र आश्रम सबै विन संन्यास महान॥
३१ वैध कर्म करि नीति पुन प्रजा पा

सुतकोदै भुअभार ज्योंहीकरि २

लि सविधान॥के अधिकी कै स्वल्प करि
नी. गुरु भूमि दै दान॥३१॥पुनि अश्वमेधादि
२५ करि पितृ यज्ञ सब देवयजन अधिकार
124 ॥३२॥विप्रनको दै दक्षिना प्रजा तोषि।
मति मान॥सुतो भूप भूपति उचित आ
श्रम वासहिं जान॥३३॥यहु स्वधर्म सा
म वर्णके नृप स्वधर्म अधीन॥नाति ति
पुन नरनाह नव होत धर्म प्रति पीन।
३४॥इति श्रीमहाभारते शांति पर्वणि॥
राजधर्म भाषायां कवि देव दत्ता नुजने
दशमात्मज शिव[illegible]राम नन्दन त्रिलो
चन विरचिते नीति विनोदे अष्टचत्वारिं
शत्तमो ध्यायः॥४८॥भीष्म उवाच॥दोहा॥
अब तुमसों कहत हों सकल धर्मको भे
द॥निर मर्जादा भयो जबै असुरन तें बा
ढ खेद॥१॥चौपई॥पाछें एकु मांधाता भू
प॥भयो सबनितें अधिक अनूप॥उनि।
नृपयाग कियो धरि चैन॥नारायण को
देखन हेत॥तातें प्रभुधरि वासव रूप॥
बोल्यो सुन मांधाता भूप॥नारायण के
देखन काज॥कीनो याग तुम्हें महाराज

३॥ दुर्लभ ताको दर्शन कहैं॥ हमैं न हो
न और वैग वहैं॥ ताते नृप कछु और॥
विचार॥ करियें सो करहों उपकार॥ यों
विध वासव के सुनि बैन॥ मांधाता बो
ल्यो धरि चैन॥ कर हों मैं बनवास पयानें
वासव पत्तम कूटन मानो॥ ५॥ दोहा॥
तउ धर्म धार्यो हमैं राख्यो रैयत मान
अपनो यश भुअ ठानिकै बन महिं क
रैं पयान॥ ६॥ छंद॥ वर्ण आश्रम धर्म
रक्षण दुर्ग सेवन सर्व॥ यज्ञ कर्म पुरा
ण चिंतन दान ब्रत सब पर्व॥ विना र
क्षण किए नृपके नशत सिगरे धर्म॥
धर्म बिनसें प्रजा बिनसत धारि कुता
सिन कर्म॥ ७॥ भूपकै यह वचन सुनि
कै कहै शक्र सुजान॥ सत्य नृपके कि
ए रक्षण रहत धरम समान॥ योग्य तु
म सब धर्म रक्षण करो नृपव्रत राखि
उचित नृपको प्रजा पालन जगत हि
त अभिलाखि॥ ८॥ दोहा॥ यों मांधाता
सुनि नहीं करयो शक्रसों बैन॥ जो तु
मसों अब कहत हों सो सुनियें धरि चै
न॥ ९॥

मांधाता उवाच॥यवन शक कंबोज व
नी० र्वर अरु पुलिंद तुषार॥पौंड्र चीन कि
२५ रात मद्रक केक अरु गांधार॥करता
125 तस्कर कर्म पसुभ वृत्ति जानत सो
३॥महूँ हम किहिं भांतय सभलहैंगे
गति जोइ॥४॥इंद्र उवाच॥पितामाता
गुरु अचारज स्वामिभूप असमान॥ता
हि सेवा करत जो नितजान भूप मा
हान॥५॥करत पोषण गोतको अ
रु अतिथि को सतकार॥दान विधि
सों देत द्विजकों समय के अनुसार॥
६॥देत ज्ञातिन अन्नभोजन पाकय
त विधान॥यही उनको धर्म तातें
लहत गति अवदान॥मांधाता उवा
च॥और तस्कर बहुत जगमें करता
कुत सित कर्म॥ताहि व्याख्या सुनो
सुर पति कौन जानत धर्म॥७॥
वा॥और तस्कर बहुत जगमें करता
कुतसित कर्म॥ताहि व्याख्या सुनो सुर
पति कौन जानत धर्म॥७॥इंद्र उवाच॥
होत भूपति सिथिलि मति नहिं देत जा
नत देन॥वरण आश्रम धरम [illegible] सिग

रे छूरि जात सबेन॥धर्म शास्त्र पुराणा
कै बिन सुनै सभ जग मूढ॥करत नस्कर
कर्म श्रादिक कर्म कुत सित वूढ॥२४॥
भूमि पति चैतन्य धारत दंड नीति महा
न॥चलत नहिं तब धर्म तातें भूपधर्म प्र
धान॥श्रेष्ठ गुरु है हिं लोकमें नृपजोइ सु
धर्म पाल॥नाहि शासन जोन मानै मू
ढ सो चंडाल॥२६॥नीति युत नहिं प्रजा
पालन भूप जानत जोन॥पीछ्र विना
मन मोर जैसें अंध कविपथ गोन॥२७
भीष्मउवाच॥भाविपं सें शक्र नृपी वि
स्मयो निजधाम॥राज्यरत मंधात भूप
भयो नाहि सुनि अभिराम॥२८॥युधिष्ठि
रउवाच॥सुनै हम सभ वरण करना स
वे आश्रम वास॥कोन विधि यह पिता
मह सो करो विविध प्रकाश॥भीष्मउ
वाच॥धर्म नृप सर्वज्ञ तुम हो नहीं जा
नत कोन॥शुभ विधि सो धर्म सिगरे क
हत हो सुन तोन॥जो अकाम अद्वेष
सनेही सुत नीत गति तानर॥बुद्धि मान
समनी ज्ञान गति ज्ञानारे॥वुद्धि मान
सम दर्शि दाता करत सकल विचार
र॥क्षमा शम दम धीरता गुण दयामा

धनहार॥ जोइ निग्रह अनुग्रह कुशल॥
नी॰ कर्म उदार॥ स्वछंद सम दर्शी अहिंसक
२९ अभय वर दातार॥ जोइ पालन अतिथि
128 करहित करन पर उपकार॥ मान माना
हिं देत जो सत कार करि सुखवास॥ सु
नो भूपति करत सो सभ आश्रम को
वास॥२२॥ दोहा॥ करत आह्निक यत
जो देवपितर सनमान॥ देवार्चन रत पु
रुष सभ आश्रम वासक जान॥२३॥
देश धर्म कुल धर्म को पालन करता
जोइ॥ परधन परतिय विमुख सभ आ
श्रम विलसत सोइ॥२४॥ वरण आश्र
म धर्म अरु सर्व धर्म चरितार॥ धर्मी पु
रुष सदैव सभ आश्रम विहरन हार
॥ वेदाध्ययन स्वभाव जो शास्त्र निरी
क्षण वान॥ तत्व मनन करता सकल
आश्रम में परधान॥२५॥ गुरु सेवी क
रता सजप सदाचार रत जोइ॥ सत सं
गति रत पुरुष जो आश्रम वासी सोइ
२६॥ गृह आश्रम में होत है सभ आश्र
म को वास॥ तातें गृह आश्रम सरस
जो मति रहै सकाम॥ रतिश्री सहाम

भारते शांति पर्वणि राज धर्म भाषायां
कवि देवदत्तानुज नंदरामात्मज शिव
राम तनूज त्रिलोचन विरचिते नीति
विनोदे एकोन पंचाशत्तमो ध्यायः ४९
वैशंपायन उवाच॥ सोरठा॥ वरण आश्र
म रीत यों कहि भीषम कहत है॥ कौ
धरम करि प्रीत राज प्रजा सभ धनव
ढ़त॥१॥ राज अराजक होइ कै अज्ञा
न राजा जहां॥ तजें देश नृप सोइ ता
हि दोष चितदै सुनो॥ तहां न नीती ले
श सवल निवलको देत दुःख॥ ज्यों
जल जंतु विसेष बडे लघुन को खात
गहि॥२॥ तहां धर्म भगिजात बढत
पाप दायक निरय॥ विनशत गुण अव
दात ह्रास न आवत धन कवहूं॥३॥ ग
ना जहां अज्ञान तहां अर्थ गुण गुण
निकै॥ ज्यों कामनि की मान अर्थ नपुं
सक पुरुष छिग॥४॥ सगुणी आरस
ज्ञान सभजन होत अर्थ नहीं॥ जहं भू
पति अज्ञान वंध्या तियमैथुन यथा
द॥ दोहा॥ ज्यों वासव सदगुरु वसे सों

नी. ८७
127

ही नृप मृत्यु लोक॥सुरपति पालत लो
क सब ज्यों भूपति नरलोक॥७॥तातें स
म विधि प्रजनको रक्षणीय क्षितिपाल
धन तन मनतें कपट बिन रावहु प्रजा
सम्हाल॥८॥सब भैं रैयत मनुसों कह्यो य
ह निबंध गहि राग॥हम सबसेवें नृप
तिको देतन मन धनभाग॥९॥युधिष्ठि
र उवाच॥परम देवता नृपतिको क्यों भा
षत मतिमान॥कहो पितामह सकल।
अब तुम सर्वज्ञ सुजान॥१०॥भीष्म उवा
च॥स्यो सर्व इतिहासमें कहों सुनो नृप।
सोइ॥कह्यो जीवसों शक्र यह बसुमन
उरवी जोइ॥११॥जीव शक्र उनि सुनिक
ह्यो सो सुन भूप प्रभाव॥सकल नृपन
के जानिये रैयत पालन भाव॥१२॥नृप
ति मूल सब धर्मको लहुवर गतिदा।
तार॥पतलब्ध बस प्रजनको नृप महि
स्य करतार॥१३॥बिना उदय शशि भा
नुके ज्यों बाछन अंधयार॥त्योंही नृप। ९४
बिन देशमहिं आपद विविध प्रकार॥
ज्यों जल सूके होतहैं विकल मीन सा।

मुदाय॥ त्योंही नृपविन होतहै लोग प्रजा
समुदाय॥ ४४॥ गोप विना गोयूथ ज्योंज
ल विन शाली भाव॥ भूप विना त्योंहीप्र
जा करण धार विन नाव॥ ४५॥ पंच समति
छुप्प मध्येन कंतेक्य छुप्पै॥ हरै निवल
को वित्त सबल जोभूपन रखै॥ चोर विध
न कर देत प्रजनको जोभूपन रखै॥ गुरु
नहिं मानै मूढ धर्मजो भूपन रखै॥ प्र
जा अपाय नहिं होत धर्मजो भूपन रखै
लरि मरैं सकल जिय परस पर जोन भू
परखण करै॥ नहिं चलत बणिज व्यवा
हार नृपजोन भूप करुणा धरै॥ ४६॥ अ
न्याव॥ वरण आसरम धरम मिटे जवभू
पन रखै॥ होहिं वरण मरजाद हीन जो
भूपन रखै॥ ~~होहिं वरण मरजाद हीन जो~~
~~जो भूपन रखै॥~~ वेद कहे जो कर्म नशना
जो भूपन रखै॥ णम लोभ कुल रीतमि
टै जो भूपन रखै॥ वणिज करै दुर्भिता
भाउ जो भूपन रखै॥ यज्ञ दान व्रत का
ज्ञ न होइ जो भूपन रखै॥ मतिमान नृ
पति पावन रहै तान नेक सुधर्म टरै॥

समभाव धर्म सभ जन रहैं चर चर मा-
नी· महिं आनंद भैरे॥१८॥अपरंच॥भूप आ-
१८ गन रविधनद मृत्यु यम विस्व सदृश
128 नित॥करत प्रजनको शुद्ध दंड दै नृप
पावक मित॥चार चक्षु करि लखत स-
हत रैयतको दिन मणि॥हनत शत्रु सा-
मुदाय जौन सो मृत्यु सदृश बनि॥जो दे-
त दुष्ट जन दंड अरु धर्मी पालत होइ-
यम॥धन देत रहत नित धनदसम रैयत
पालत विस्वसम॥१९॥दोहा॥मित्र पुत्र
दौहित्र जो तात भ्रात अरु मात॥जो नृ-
प इनको देत धन ताको यश अवदात
पसो ॥२०॥जो समदर्शि नृप सुमन सदृश न-
हिं भेद॥जासु कृपातें दुःख मिटत को पै
उपजत खेद॥२१॥युधिष्ठिर उवाच॥जीत दोहा
लहत नृप अरिनसों कौं विधिसों क्षिति
पाल॥कहो पितामह नीतसों तुम मति
मान विशाल॥भीष्म उवाच॥दोहा॥जय
शत्रुन सों लहत नृप इंद्रिय जित जो होइ॥
इंद्रिय जीति सकैन जो कौं रिपु जीतै सो
इ॥२३॥वन उपवन सभ नगर अरु वंधु

आदि जो औरा॥राखै हित करि सबनि इ
न गुप्त चार सम हैरा॥२४॥समाचार जो
सो सुनै तैसो रचै उपाइ॥गुप्त चार परदे
शके बसनन पावै आइ॥२५॥आदि दि
वान सुमंत्र विद उनसों मंत्र दिषाइ॥आ
प समझि मंत्र सम सिद्धांत करै सकल
सुखपाइ॥२६॥प्रबल शत्रुसों नृप लरै
करि करि भेद उपाइ॥लखिनन पावैआ
पनो भेद शत्रुको पाइ॥२७॥दानमान दे
भटन को राखै सदा प्रसन्न॥रहै संगावा
न शिविर में तृण रस इंधन अन्न॥पर प
के भटनको राखै अपने पास॥भूप सेन
चतुरंग युत मनमहिं करैन त्रास॥२८॥
निबल शत्रुको निबल लखि लरैन वि
ना उपाइ॥प्रब ल शत्रुसम जानिकै ना
ऊपर नृप जाइ॥नर अपकारी होइ ति
हिं मानै अवसर पाइ॥उपकारीको जा
निकै मानै प्रीति बढाइ॥३१॥निबलश
त्रुको जानिकै लरैन हठसों जाइ॥कम
सों धनलै निधन करि॥तब महि लेइ
दबाइ॥३२॥महा प्रबल रिपु होइजो न

हौ लरनके योग॥सामदान करि तांहि
नी. सों करै प्रबल उतजोग॥३३॥जोनहिंसा
२५ नै निबल लखि लरैं चहै मरि मारि॥
१२९ तो धन दैकै पैारजन देवै प्रथम निका
रि॥३४॥धनी प्रजा अरु कारागी रिपु बे
धुनको मान॥टोरै सबसों मेल करि संग
दै भट अनु मान॥तामो अपने अंगजो
चाकर सखा दिवान॥भेजे उनके दाथ
न जहं निज दार समान॥३५॥आपु वि
पन गिरि दुर्ग गढ पकरि रहै थिरभूप
गास्य हरै निज देशकी यह नृप नीति
अनूप॥३६॥रहै लगाए शत्रुके दलमहिं
चार अनेक॥लेत रहै सब समय कीव
बर विचार विवेक॥३८॥साम दान अ
रु भेदसो देनरहै सुभयाम॥देधन ता
कै सुवनको करै पत्त अभिराम॥३९॥
चोर लाइ षेंचत रहै हय हाथी हथयार
ताही कैथव को निहें देन रहै अधिका
र॥४०॥लेरै पानन्न लगाइकै कबहुंन
त्यागैधीर॥समय देखिकै वधिलेरै सो
नै लेहै गंभीर॥४१॥यो विधसो नृप रा

छनमें करि करि सकल समाज॥ दौरि·
पै परदेस में करत संहरन काज॥ ४२
युधिष्ठिर उवाच॥ सोरठा॥ क्यों कीजत
महिं भूप इत पावत यश स्वर्ग उत॥·
सो आचार अनूप कहो पितामह सक
लतम॥ ४३॥ इतिश्री महाभारते शांति
पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि देव दा
त्तानुज नंद रामात्मज शिव राम तनू
ज त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे पं
चाशत्तमोध्यायः ५० वैशंपायन उवा
च॥ यों भूपति के वचन सुनि कहन
लग्यो कुरु वीर॥ जो विचार नृप नीत के
सो सुनिए धरि धीर॥ १॥ भीष्म उवाच॥
छप्पै॥ राग द्वेष बिन करै धर्म अरु क
से स्वभावन॥ बिना क्रूरता करै अर्थ संच
न मन भावन॥ शुभ भाखै बिन भीता
दान पात्रन दै मोदत॥ दयान त्यागै कब
हूँन निज गुण भाखि विनोदत॥ गुणि
वेयु विरोध जो भरै लोभ यश हीन नहिं
न्याय धर्म उनपै धरै॥ २॥ अहित मीत
नहिं त्याग करै नहिं तिय संगम अति॥

२
नहिं यपरै नहिं सुताथ्यको हित करै १॥

नी॰
३॰
130

दया त्यागि नहिं गहै उयक्ता कहै वचन सति॥ विन परावै नहिं लेइ देइन नहिं मंत्र प्रकाशे॥ धनन साधुको लेइ असाधुको देइन आशे॥ नहिं देवन अर्चवै दंभ करि लेइन धन कुन सिन कबहूं॥ निज देशकाल परखन रहै रहि प्रसन्न दरसै सबहूं॥३॥ दोहा॥ गुह्य मान्य गुणि जनहू में करैन माया भाव॥ सकल शत्रुगण मारिके करै नही पछुताव॥४॥ करि ऐसो आचरण निजभूपति भोगै भूम॥ नाहि चंद्रका पाटका लसै यश जगतमें चूमि॥५॥ भूप प्रात उठि निज करै गुरू इष्टका ध्यान प्रात कृत्य करिकै करै देवार्चन सविधान॥ दान देइ फुनि द्विजनको सुनि आशिष सजतेन॥ राज काज फुनि नीति युत करै भूप मणि चैन॥७॥ आदि प्रोहित द्विजनको पूजन और दान॥ विप्र कृपातें नृपनकी वर्धनं भूमि अपार॥८॥ विप्र वदन तें वाहूनें तत्री भए अनूप॥ वैश्य उरूतें प्रक

विप

द करि पदनें शूद्र स्वरूप॥९॥विप्र बडे
सम जगत गुरु बहु विधि पूजन योग
प्रगट विस्नुमुख नें भए दायक सकल
प्रयोग॥१०॥भोजन नें तोषें द्विजहिं मोद
ने प्रभु जगदीश॥विप्र मानि सम जग
नको गुरुलघु विस्वे वीस॥११॥जैसें
प्रोहित नृपतिकों पाप पुण्य को पा ^समहोत॥लहत पुरोहितनृपति। सोंपापपुण्य ^
त॥१२॥बाहुज क्षत्रिय विधि दए दंड
दान प्रति पाल॥द्विज क्षत्री निजधा
मरन तो आनंद सम काल॥१३॥या
ही पुरूरवसों कह्यो प्रथम वायु सम
झाइ॥सो सुतमें तुमसोंकह्यो विप्र
कथा सुखदाइ॥१४॥क्रियावान धर
मी कुशल बहुश्रुत शास्त्रीदक्ष॥च
ह्रियत प्रोहित भूपको मंत्राभ्यासी
स्वक्ष॥१५॥योंविधि महिमा विप्रकी
पुरूरवाके पास॥कश्यप भाखे प्रस
त्रनि सुनो भूप मतिराश॥१६॥होत
कुशल नृपतिको सबनि कुशल व
हू भांत॥सुनो भूपरति हास रकुा

कह्यो सकल अवदात॥१७॥चौपई॥प्रथ
नी० म भूप मचुकुंद प्रधाना॥जीति सक
३१ ल पृथिवी बलवाना॥भयो गर्ब अति
13 धन पति ऊपर॥सेन सहित चढि गयो
गिरि ऊपर॥१८॥धनपति असुरन प्रा
दल४ सन दीनो॥नवलरि नृप मर्दित की
नो॥नव मच कुंद द्विजन सों भावै॥
विरे लरत हो क्या अभिलावै॥१९॥
सो वसिष्ठ प्रोहित वर सुनिकै॥निज
प्रभाव प्रकटित करि गुणिकै॥असु
रनको बल लोपित करिकै॥पश्चनि
मल कीने पण धरिकै॥२०॥धनपति
तपपर भावज कैकै॥कह्यो भूपसों प्रा
कटित ह्वैकै॥अपनो भुज बल प्रक
टहु राजा॥हर गव सम विप्र समाजा
२१॥भुजबलसों लरियें यश होई॥
परबल बिजय न महिमा सोई॥सो
सुनि नृप मुच कुंद रिसाई॥कह्यो धन
द न मम सुमतिन पाई॥२२॥रच्यो स्व
यंभू भूमि गुरयारा॥ब्रह्म तन्त्रिय॥

जग पालन कारण॥ विप्रमंत्र नयब
ल मभलायक॥ क्षत्री अस्त्र बाहु बा
ल चायक॥२३॥ ब्रह्म तत्र मिलि का
रज साधन॥ सो हम किए दोषक्या
बाधन॥ सुनि अलकेश मोद मनमा
न्यो॥ नृप मुचुकुंदहिं अति मन मान्यो
२४॥ छै मुचुकुंद बिदा धन पति सों॥
निज पुर आए आनंद गति सों॥ ब्रा
ह्मन पूजि बोलि मृदु बानी॥ भयो क्ष
त्री को भूमिपत ज्ञानी॥२५॥ इति श्री
महा भारते शांति पर्वणि राज धर्मभा
षायां कविदेव दत्तानुज नंदरामात्मज
शिवराम तत्सूनु त्रिलोचन विरचिते ५८
नीति विनोदे एक पंचाश त्तमोऽध्यायः
युधिष्ठिर उवाच॥ दोहा॥ भूपति जोन
हिं धर्मसों बाछत प्रजा समेत॥ पिता
मह्रा सम धर्मसों कहु मोसें करिहे
त॥१॥ वैशंपायन उवाच॥ यों भूपति
के बचन सुनि कहन लग्यो कुरुवी
र॥ यों भूपन के धर्म हैं सो सुनियं धी
र॥ भीष्म उवाच॥ दानशील मत्र

शील नृप तप ब्रतशील सुजान॥ध
नी॰ र्म शील वर्धत सदा रैयत सहित वि
११ धान॥३॥भूप करत आचार जो प्रजा
132 करत है सो॥३॥होत यथा राजा तथाप्र
जा धर्म नृप होइ॥४॥नृप रैयत राख
त सदा जो निज धर्म समेत॥ताहि भ
ग चौथो लहत सो भूपति करि हेत
प॥चोर हरै धन प्रजनको ताहि नप
कैरै भूप॥तो धन अपने कोशतें दे
रू य नीति अनूँप॥६॥तातें तस्कर ग
हन में मन रावै नृप आप॥पकरि
न छोडै बध करै तब कछु होत न
पाप॥७॥हरै जीवका विप्रकी करै
विप्रसों वैर॥ताहि निकारै देशतें क
बहूं न करै उ लेर॥विद्या लक्षण स
हित जो सम दर्शी मति मान॥कर्म
कुशल अरु वेद विद सो द्विज ब्रह्म
समान॥९॥जन्म कर्मतें हीन जो
विद्या हीन अजान॥सो द्विज शूद्र
हू तें अधम अरु तर्जन गुणवान
॥१०॥याहि शाम जाचक कह्यो द्व

प्रजारत जोइ॥दानताध्यन सुहोइ हि
न हीनसूद्रनें सोइ॥११॥मंत्री क्षत्रिज
हनसुक चार पुरोहित जोन॥विप्रसोइ
तत्री सदृश सुनो भूप मतिभौन॥१२
जो हय रथ ह्वोड़े चढ़त सो वयस्य स
महोइ॥इनसों भूपति करगहै ताकें
यस नहिं सोइ॥१३॥ब्राह्मन तस्करा
ताकेरे लहि दरिद्रता को बाध॥गए
न सकल मति मान जन सो भूपति
अपराध॥१४॥विप्रअकर्मी होत नृ
प तीन वर्णजो और॥भूपति उनकें
दिन को स्वामी है वहु ठौर॥१५॥हि
जहिं अकर्मी मति वहै कह्रूंभूपसु
न भूप॥पाले तिन सम वर्ण कह्रूं
वरण आसरम नृप॥१६॥ह्यां पूरब
इतिहास में कहों सुनो तुम भूप
जो भ्यो राक्षस राइसों कैकै राज अ
नूप॥१७॥व्रतधारी केकय नृपति
पकस्यो राक्षसराइ॥तब उतितिए
वरमों भयो सोसुनिपै सुखदाइ॥

१८॥नहिं मद्यप मम देशमें चोर जुआ
रीनांहि॥नहिं विश्वास घाती छली ह
मरै देशन मांहि॥१९॥अपने अपने ध
र्म रत द्विज सब वर्णहिं चार॥त्योंही
आश्रम वर्ण सब करहि निज अधि
कार॥२०॥यज्ञदान तप व्रत नियमा
लोक शास्त्र कुलरीत॥यथा योग स
भकरत हैं देषि सकल मम नीत॥२१
करें शिष्य गुरु सेव नित पुत्ररहत पि
तृभक्त॥स्वामि सेवक करें तियारहत
पति भक्त॥२२॥विप्ररहत षट कर्म र
त तजी शास्त्र प्रवीन॥युद्ध दानसोंक्षी
न करिधर्म न करत मलीन॥२३॥वै
श्य कृषी वाणिज्य रत॥गोरक्षा में ली
न॥नहिं असत्य भाषन कबहुं होत
न विषय अधीन॥२४॥सेवा रत त्रैव
र्णके गहत नमत्र सुभाइ॥तजि स
कर्म रतशूद्र मम पावन धर्म बनाइ
॥२५॥देवपितर पूजन सदा अर्चना
द्विजपद कंज॥दान मानदे गुणनि

नी॰ ३३

सेवं

133

को करत सदा मनरंज॥२६॥आरथी।
तापस अतिथि अरु समथर लहत
सुपाश॥निबल सबल मध्यम कब
हूं करतन वैर प्रकाश॥२७॥नहिं परनि
य रत पुरुषको उर मेरे देशन मांहिं॥
हिन हेषी अरु कपट युत साधु विरो
धी नांहिं॥२८॥आत्म ज्ञानी वेद विदत
प कृत शास्त्री दत्त॥प्रोहित हमरे लो
भविन हैं निज दाना छत्त॥२९॥रात्तम
कों मुहि यमतहो चलतन मोपर जो
र॥जासु सहाई विप्रवर ज्ञाता द्विजशि
रमोर॥३०॥इतिश्री महाभारते शांति प
र्वणि राजधर्म भाषायां कवि देव दत्ता
नुज नंदरामात्मज शिवराम तत्सूनु त्रि
लोचन विचिते।नीति विनोदे द्विपंचा
शत्तमो ध्यायः॥५२॥वैशंपायन उवा
च॥कैकै नृपके वचन सुनि बोल्यो।
रात्तम राइ॥सोतुमसों अब कहतहों
सुनहु भूप चित लाइ॥१॥रात्तस उवा
च॥येविधकी नृपनीत है जाके देश

नमांहि॥सोनृप राक्षस राइसों कबहूं।
हारत नांहिं॥२॥भीष्मउवाच॥योंक
हि राक्षस उडि गयो नृपआयो निजधा
नी·
५५
म॥सुनो भूमिपति नीतयहू दायक वि
134
जय महान॥३॥सोरठा॥वरण आसरम
धरम निश दिन नृप राखत रहत॥विप्र
नहोइ अकर्म यह नृप नित रत रहे॥४॥
वैशं पायनउवाच॥पिता महाके वचनसु
नि बोल्यो पांडव राइ॥सोनमसों में कह
नहों सुनोभूप चितलाइ॥५॥युधिष्टिरउ
वाच॥विपद परै जब विप्रको नहिं कवि
सकै उपाइ॥कैसोवह करेहै जीवका सोक
हिं समुझाइ॥६॥भीष्म उवाच॥कृषी
करै तब विप्रवर गोसंयह अनुमानि॥औार
वणिज ब्यवहार सो करैजीवका जानि·
॥७॥सुरालवण तिल अस्वपसु सिद्धा
अन्न मधुमास॥यह बेचे नहिं विप्रवर
धातुन में फुनिकांस॥८॥इनके बेचेवि
प्रको बिगरत है परलोक॥तातें इन ब्या
पारतें विप्रनको नृपरोक॥९॥वेदंदेवता

यज्ञतप नहिं देवै द्विजराज॥ ताको भूप-
ति अचितहै पोषै विप्रसमाज॥ ८॥ युधि
ष्ठिर उवाच॥ कृश बल राजा होइजो प्र
जाहोइ बलवान॥ तब नृपकों रक्षाक
रै कौंपालै मति मान॥ भीष्म उवाच॥
दान यज्ञ तप नियम करि अरु लहि वि
प्रसहाइ॥ भूपति बल वर्धन सदा पालै
प्रजा बनाइ॥ १०॥ युधिष्ठिर उवाच॥ अब
लक्षण ऋत्विज हूंके कहौ तात परवीन॥
पोसुनि भीषम कहतहै ऋत्विज कथाअ
सीन॥ ११॥ सकल वेद वेदांग विद शास्त्रकु
शल मतिमान॥ सम सुकरम आचार यु
त सत्यवाक सुख दान॥ १४॥ बिन अभि
मान मनीष युत सम दम सादन हार॥
क्षमावान ह्रीवान अरु व्रती अकाम उदा
र॥ १५॥ स्वच्छ अहिंसक ज्ञान युत सुहृस्व
भाव अनूप॥ ऐसे ऋत्विज सहित नित
कर्म विवर्धत भूप॥ १६॥ युधिष्ठिर उवाच
प्रति यज्ञनमें दक्षिणा भेद कहत हैं वे
द॥ श्रद्धा युत विनद्रव्य कों यज्ञकरत
नजि खेद॥ १७॥ भीष्मउवाच॥ वेद कहत
हित नरन को नहिं माया अधिकाय॥

नी० ३५

135

यज्ञ अंगहै दछिणा फल दायक सुख
दाय॥१८॥दंभहीन जन मख करै यथा
शक्ति देदान॥दंभहीन जन मख कौ
थोरो अधिक समान॥१९॥अति कृपण
न सरधा सहित लछुमति करहै दान॥
पुर्ण पावहै लहत है पुरण फल अवदा
न॥२०॥तप विप्रन को यज्ञहै करत वो
द स्रुति पर्म॥सत्य अहिंसा दम दया
यह तप साधन धर्म॥२१॥वेद वचन
मानै नहीं शास्त्र उलंघे जोइ॥अपनो
मन मानै सदा आपुही नासै सोइ॥२२
ज्ञानी जन नृप करतहै यज्ञसदा सुख
दाय॥चित्र स्रुवा चुन समिद मन हवि
ष ब्रह्म शिष पाइ॥२३॥युधिष्ठिर उवा
च॥सोरठा॥कैसो देषि सभाव सचिव
करै मति मान नृप॥सकल कहो यह भा
व जानत हो सब कछु भलैं २४॥भीष्म उ
वाच॥दोहा॥मित्र चार विध होतहैं सुनो
भूप मति मान॥नैसर्गिक अरु सहज अ
रु कृत्रिम अरु भजमा॥२५॥निज स
हाय अरु मित्रता जानत जोर सहाय॥
पिता बंधु सुत भ्रात सहज सुमि

सभ मानत एज किंप १२ मारतवैरनकोप

।तनछेदकियं॥नायश होत बडोज
गमें नहिं दैयत को सव हो जियं॥वा
सव हृत्र हन्यो रन में सुर भूप भयो।
अति मान लियं॥मारत है सुर दैत्य
न को उनकों रनमें महं देव सदा अ।
ति कोप बढाई॥मारत हैं शिशिवा
हन पावक मीच सभै हिय मांहिशि
साई॥नाक पुरेशय मेश जलेश धने
श अरीनहुं को दुखदाई॥यौंविधसों
इन देवनको लखि मानेंहै सभ रंक
उराई॥६॥दोहा॥सम स्वभाव लखि।
देवको कोंहू मानत नांहि॥भूप वि
रिंचि दिनेश को काऊ काऊ जग मां
हि॥१७॥सोरठा॥देषि परत कोउ नां
हि अयसो भूपति जगत में॥धारि द
या मनमांहिं मारत मरनहुं ने टरै॥
१८ जगमें दुर्बल जानि मारत है स
भ अरिन को॥नकुल धारि अभिमा

नी· ९६ 136

दार॥धर्माध्यक्ष विज्ञानवी धनूप प्रकृति
उदार॥३५॥इनमें गहै विसास पर परखिन
रहै स्वभाव॥सबसों रहै प्रसन्न सुख धरि
चतुराई भाव॥३६॥शील वान कुलवान
अरु बुद्धिमान अति धीर॥धरमी शरमीप
रखि नृपसों पै काम गंभीर॥३७॥जोहैं ज्ञा
ति पराक्रमी अरजो दावेदार॥उनमें राखै
दक्षता धीरेन मित्र विचार॥३८॥सहित सक
त ज्ञाती कबहू ज्ञाति विभूति महान॥ज्ञा
तिवर्ग पालै सदा रहै चैतन्य सुजान॥३९
भीष्मउवाच॥स्यापूर्व इतिहास इक सुनो
भूप चित लाइ॥वासुदेव हू सों कह्यो जो
नारद मुनिराइ॥४०॥इति श्रीमद्भारतेशां
तिपर्वणि राजधर्म भाषायां कवि देव दत्ता
नुज नेदरामात्मज शिवराम नन्दनु त्रिलो
चन विरचिते नीतिविनोदे द्विपंचाशत्त
मो ध्यायः ५२॥भीष्मउवाच॥आहुकि अ
रु अक्रूरसों प्रथम भयो जब बैर॥तब ह
रि नारद सों कह्यो ज्ञाति विवस्था हेर॥१
नारदउवाच॥ज्ञाति विनाशन होइ ज्यों
लोकविषे नृपनीन॥यथाभाग देमालिपं

उविन प्रकट करिप्रीत॥२॥तब नारद हू
रिसें कह्यो आपद दोइ प्रकार॥आभ्यंत
र अरुवाह्य इक तिनको सुनो विचार॥३
बंधुवर्गसें होत दुःख सोअभ्यंतर नाम
शत्रुनसें पें होत दुःख वाह्य कहत मति
धाम॥४॥तातेंबंधु समाज को पालहु य
ह नृपनीत॥तातिहिं मोरै निज मैं दोऊ
विध विप रीत॥५॥ज्ञातिवर्ग को मानजो॥
परम शत्रु है भूप॥तिनके शस्त्र समानस
म जानहु निष्फल रूप॥६॥बुद्धिमान अरु
धर्म युत राखै नृप दरबान॥तिहिं सदाप
रखत रहै करत रहै सन मान॥७॥जोजो॥
अपने मीत है राखै उनको साथ॥देदै धन
सनमान अरु कीने रहै सनाथ॥८॥आ
दि दिवान खजानची जो अमात्य परधा॥
न॥जोनर उनकै कपटको परखन हारा॥
सुजान॥९॥नृप ताको रक्षा करै नेकुन
करै खराब॥भाव सबनिकै समझि कै क्र
मसें देयजवाब॥१०॥ह्यां एक इतिहास
इक कहैं सुनो नृपसोइ॥क्षेम दर्शिको॥
शाल नृपतिकै गृहमें भयो जोइ॥११॥अ

तु स्वभाव लखि नृपति को सब अमात्य ल
नी. खि ताहि॥गुप्त कपट आचरण गहि नृप
३० को मारन तोहिं॥१२॥काल ह्वत अभिधा
न मुनि सुनिकै यह हृतांत॥पंजरमें ग
137 हि काकको गयो भूपति ढिग तांत॥१३॥
तहां जाइकै बैठि मुनि कुशल प्रश्न आ
वहार॥कह्यो भूप मम काक यह है स
र्वज्ञ विचार॥१४॥सुनो काक यह कह
त नृप तुमरे मंत्री जोइ॥सब मिलि कै
धन हरतहैं जानत है नहिं कोइ॥१५॥
यो सुनि नृपकोउ जनहूं नें बूझ्यो तबा
यह भेद॥सो जन भाषें साचहै भूपन कू
शे खेद॥१६॥भूपति सोऊ भई जबै सा
नि कीनो विश्राम॥तब अमात्य जु खिका
कको बधकीनो अभिराम॥१७॥प्रात
होत लखि काकको मुनिवर कह्यो बु
झाइ॥नृप मार्‍यो मम काक यह तुम
अमात्य अन खाइ॥१८॥महाग्राह सं
कुल नदी समहै तुमढिग वास॥ता
तें मैं अब जातहौं लहि निज बधको
त्रास॥१९॥तब नृप निज मंत्रिन हुसैं

नित रह्यियो चैतन्य॥ कपट चहत अमा
त्य सम करन चहत कछु अन्य॥२०॥
भूप उवाच॥ भय एक मत सचिव स-
भ कहो करों विधि सोइ॥ योंसुनि कै-
द्विज वर कह्यो सुनो उचित अब जोइ
२१॥ गोपि कछु दिन दोष यह क्रमसों
करि बल हीन॥ एक एक को एकरिकै
देउ दीजिए पीन॥ २२॥ योंसुनि नृपकें
सीख दै गयो निज आश्रम जोर॥ क्रमा
सों नृपत्योंही कियो भयोआनंद उहि-
ठौर॥ २३॥ भीष्म उवाच॥ शुचिमंत्री सर्व
ने अरु हितकर सचिव बनाइ॥ करैका
र्य सम मंत्रकरि देशकाल मनलाइ॥
२४ सुरपति सो सुर गुरु कहे इहि प्रका
रकै बैन॥ जैसो मंत्री होत नृप तैसोपा
वत चैन॥ २५॥ युधिष्ठिर उवाच॥ सोरठा
सुयश लहत क्षिति पाल प्रजापालि-
कै कौन विध॥ सोशुभ नीति विशाल
कहो पितामह करि कृपा॥ २६॥ वैशंपा
यनउवाच॥ सोरठा॥ सुनि भीषम यह

वैन भूपति सों नवकहत है॥ सुनो भूप
नी धरि वैन जो तुम पूछ्यो सो कह्यो॥१६॥
३८ भीष्मउवाच॥ विनरि शुद्ध व्यवहार जो
1306 भूपति पालत प्रजा॥ सोइन सुयश उ
दार लहत लहत परलोक उत॥१७॥
दोहा॥ राखै मंत्री आठ नृप कारज करै
विचार॥ अवसाई धरमी सुबुधि संग्रह
करै अपार॥१८॥ और करै अपराध जहां
औरहिं दंड न देय॥ देय सदा अपराध स
म दंड न्याय लखि लेय॥१९॥ करैन मं
त्र प्रकाश नृप करै चतुर अति जानि॥
जानत हैं जो मंत्र उन पोषै निज सम
मानि॥२०॥ कछु पछ पवन अंगज्यों॥
त्यों छुपाइ निजदोष॥ शत्रु दोष देषत
रहै करै गुणनिको पोष॥२१॥ मंत्रीजा
के चतुर हैं मंत्र जाहिको गूढ॥ मंत्र वि
ना नहिं करत कछु ताको यश अति
रूढ॥२२॥ मंत्र सुनत शंका करै सुमा
धान सुनि नाहिं॥ कतिशंका उत्तर सु
नें यहिं प्रकार नरनाह॥२३॥ कतिनि

ोिय मंत्रिन सहित अविचल मनदृढ़ताइ
॥भूमिपाल कारज करै सदातेज अधिका
इ॥३४॥कबहूंन मारै हतको यद्यपि क
है करोर॥जोनृप मारत हतको सोपाव
त गतिघोर॥३५॥अति वक्ता अति दत्ता
अरु सत वक्ता स्मृति मान॥सुचि कुली
न मत संगाती हत सदासुख दान ३५
धर्म शास्त्र तत्वज्ञ अरु ज्ञाता संधि विधा
न॥धीर साहसी सूर अति कला कुशा
ल मति मान॥३६॥व्यूह भेद ज्ञाता चा
तुर हसमुख सौम्य सुभाइ॥जोकुलीन
सेनाधि पत सोनृपको सुख दाइ॥३७॥
५४ सभप्रकार धरमी निरखि करै अमात्या
नरेश॥अधर भरै अमात्य को नहिं नृ
प देवै देश॥३८॥करै विचारि अमात्यनृ
प चलै नीति पथ देखि॥कर्म करै ला
हि शास्त्र मत गहि सतसंग विशेष॥३९
ऐसो नृप आनंद लहि कीरति अतिअ
धिकाइ॥स्वर्ग लहै संदेह बिन वरधेवं
श सहाइ॥४०॥इतिश्री महाभारते शां
ति पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि दे

नी॰ ३९ व दत्तात्मज नंदरामात्मज शिवराम त
त्मज त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे
वतः पंचाश त्तमो ध्यायः ५५॥युधिष्ठि
र उवाच॥सोरठा॥भूपति सह परिवार
139 वसे कौन विधि नगरमें॥रचना कौना
प्रकार करि परिखा प्राकारकी॥१॥वैशं
पायन उवाच॥यों विध भूपति वैन सु
नि भीषम तब कहतहै॥सो सुनिये ध
रिचैन जनमे जय क्षितिपाल मणि॥भी
षम उवाच॥दोहा॥गिरिगढ वननद नि
कट लखि रचैन गरभूम्य पाल॥बरप
रिखा प्राकार दृढ राखे सदा विशाल॥
१॥चहुंदिश गृप्यप रक्षिये हेरहिं होर
बनाइ॥चार द्वार राखे तरुं राखे भटस
मुदाइ॥२॥बिना हुकम बाहिर कोऊ
नहिं आवे नहिं जाइ॥धन युत चारोव
र्ण जहं विलसें आनंद पाइ॥३॥बापी
कूप तलाउ नृप विरचे होरहिं होर॥
भाउ घटे नहिं अन्नको सुनिये कुरुशि
र मोर॥४॥संग्रह राखे अन्नको लेकर
फलहिं शाल॥सरवरन तिन राखि

ए यही धर्म भुअपाल॥७॥आपारिन
राखै सदा करि करि उनकी गोरा॥क
रलेवै मरजाद सों चोर हनें सबटोर
॥७॥शिल्पी सबपर कारके पुरमेंरा
खै वसाइ॥वैद्य जोतसी शास्त्रविदा
राखै मौन बढाइ॥८॥गुणी देश परदे
शके आवें याचन हेत॥मान सहित
धन दै तिन्हैं विदा करै धरिचेत॥९॥
आवैं जो असि जीवि तह ब्यादे अरु।
असवार॥नहिं राखै तो धन दिए मोरै
करि मनकार॥१०॥इयहाथी हथया
र गढ पुरपरिखावन सैन॥मासमा
समहिं भूमिपति आपु लखै धरिचे
न॥११॥पमल शाल नृप आप चहि
लखै आपनो देश॥जो नृप सीमामा
हिं बसें दरसावै दलवेश॥१२॥यत्नदा
नके नगर महिं राखै अति अधिकार
॥कबहूं चैन नगरमें देवा रायनचा
र॥१३॥निबल सबल मध्यम पुरुषर
हैं यथा अवहार॥कोऊ काहू कोक
बहूं करिन सके अपकार॥१४॥विध

नी॰
४॰
140

वा तपसी आदजो जिन्हें न ग्राम द श्रोर॥ देवै
नित निजकोष तें तिन्हें भूप थिर मोर॥ ११
रावे समथर नगरमें हलकारे मति मान॥
बन गिरि गढ समठौरकी खबर सुनै स
विधान॥ यौंविध ऐसे नगर में जोविलसै ।
छितिपाल॥ निकट न आवै आपदा आनं
दरूौर विशाल॥ १२॥ वैशंपायन उवाच॥
सोरठा॥ सुनि भूपति यहवैन भीषम को
मरजाद युत॥ फुनि एछ्यो धरिचैन सोज
नमेजय सकल सुन॥ १३॥ युधिष्ठिर उवा
च॥ सोरठा॥ यौंविध भूपसुवेश इहिं प्र
कार कै नगर बसि॥ कोकरि पालै देश
कैसें करलेवै कहो॥ १४॥ भीष्म उवाच॥
अरिल छंद॥ धीर सूर सुजान धरमीशा
स्त्र विद मतिमान॥ नगर जनक समास
दकै नाम गोन प्रधान॥ तिन्हें शतभटस
हसभट हैसहस भटदै साथ॥ भेजिवा
हू दिशचौर चौरहिं राखि सहित समा
थ॥ १५॥ करै पालैन प्रजन को अरुस
धनकरावै भूप॥ वस्तु गोपहिं लाइ प
प ज्यो लेन स्वामि अनूप॥ खबर सोउ

न चरनकी निन लिखै भूपति पास॥ज
माकरिकै द्रव्य भेजै जतन ते प्रति मास॥
॥२२॥ लिखै आमद खरच सभ प्रति ग्राम
को तिहिं साथ॥ प्रजापीडित होइ नहिं ज्यों
लेइ सभसों गाथ॥ मित्र तिनसों चार राखै
लिखै तिहिं सभ तौर॥ तिनै जोकछु पर
खिकै फुनि करै कर्तव्य और॥२३॥ जमा
आमद खरच निज प्रतिमास लखि सो
निलेइ॥ द्रव्य कारज होय जिनके तिन्हें अ
भय नहिं देइ॥ सदा रक्षण कोशको यह
परम है नृपनीत॥ अन्न धन भट शस्त्र सो
गृह करै नृप करि प्रीत॥२४॥ हद्दमें असवा
र पैदल राखै सैन बनाइ॥ देशमें पर चक्र
भय ज्यों नहीं आवै आइ॥ रहै रक्षत प्रजन
को ज्यों निकट होइन खेद॥ अभय विला
से देशमें आपार के सभ भेद॥२५॥ वत्सजै
सें पिवत अरु पय मधुप ज्यों मधुलेत॥
ज्यों जलौका पिवत शोणित नेकु दुःख
न देत॥ मुनी ज्यों निज वाल मुखसें पक
रिलैके जात॥ होत उनके देहमें नहिं द
शनको कछु घात॥२६॥ प्रजन सों धन ले

प्रजनसों धन लेइ तिहिं विध भूप सहित विवेक अटक जा
इ नो देन नहिं को उलहें पीडा नेक ग्राम ग्राम महिं मुखिजन जो मे
लि उनसों हि करै उनको अग्रभागी लेइ सभसों वित्त २६ देश
में धनवान तिनसों लेइ पुनगहि लीन मधुर तिनसों वचन कहि
[illegible]

रनहिं अन्याय डवेरै नाहि॥दंड नृपति
विधिसों दंडे प्रजन को हित चाहि॥चोर व
नी. ५१ लतें रहे रखत प्रजन को गहि रीत॥दान
मव नित करै ज्यों नहि होइ अधिन रीत
दोहा ८॥अनावृष्टि अति वृष्टि अरु आखु पाल
१५। भ मुक जोइ॥ईति कहावत शत्रु दल रन
अपनो दलसोइ॥९॥इहि प्रकार धन ले
र नृप यों विध पाले देश॥लखन रहै नि
जराज सभ चार चत्तु करि वेश॥१०॥निज
बल परबल शत्रु हित देशकाल व्ययद
ड॥रहे विचारत नृपति नित बांटे सदा
समृद्ध॥११॥धर्मिन को संग्रह करै धैर्य
मे अव हार॥वरण आसरम धरम नि-
न पालै भूप उदार॥१२॥मो धाता नवना
ख सन रख्यो भूमि भरतार॥मुनि उतथ्य
तासों कह्यो राजनीत अव हार॥१३॥ध
र्मात्मा छिति पालजो अविचल लक्ष्मी
ताहि॥धर्म हीन छितिपाल की धन अ
रु संपद नांहि॥१४॥भूप लखन सभज
गत को भलो बुरो अवहार॥पाप पुण्य
वर्धन न पात देखि नृपति आचार॥१५॥

सभ वरधन सुधरम बढै अधरम नै
सभ जान॥तातैं जगपालक नृपति ध
मे करै अवदान॥३८॥विप्र धर्म कोमू
लहैं पूजै ताहि नरेश॥विप्र अगन दोउ
विप्र सुख हरत सकल क्लेश॥३९॥अ
नमृपा करि विप्रसें भयो विरोचन ही
न॥विप्र कृपातैं लीए सभ विप्र कृपा
तैं पीन३८॥पाखंडी उन्मत अरुअधा
म अधर्मी जोइ॥पर द्रोहीको संगजो न
जो भूमि पतिसोइ॥३९॥अन्ता ना अरु
स्वेरणी विनब्याही जो नार॥वेश्यारु
पर दारसें रति नहिं करै विचार॥४०॥
नृप प्रमाद जब गहत तब विन शतम
जासमाज॥तातैं भूपति धर्मसें पालेसु
धर्म समाज॥४१॥भूपति करत अधर्म।
नहें बढत उपद्रव भूरि॥होत प्रजास
भ पापरत अति प्रमाद सें पूरि॥४२॥
होत समय वरखी जलदधरम बरतज
व भूप॥बाढत संपद देशमें राजधर्म
अनूप॥४३॥दंड नीत करि प्रजनको।
पाप देन नहिं कोइ॥सोभूपतिन्यायरजक

जगप

नी·
५२

कोउ वस्तुन जानै योइ॥ ५४॥ इतिश्रीम
हाभारते शांतिपर्वणि राज धर्मभाषा
यां कवि देवदत्ता नुज नंदरामात्मजा
शिवराम नन्दन त्रिलोचन विरचिते
नीते विनोदे पंच पंचाशत्तमो ध्यायः
५५॥ भीष्मउवाच॥ छप्पै॥ पालै प्रजा
सनीत हनै चोरन कोगहि गहि॥ युद्ध
करै अरि देषि द्विजन पूजै हित कहि
कहि॥ नहिं मेटै मरजाद करै सदादान
सरुचि अति॥ अतिथिन कोसत्कारक
रै नित कहै वचन सुमति॥ जोवेद लो
क कुल शास्त्र मत वरण आश्रम ध
रम गणि॥ नित नेम सहित रक्षण क
रै सोइ विचक्षण भूपमणि॥ १॥ दोहा॥
नृप अविचक्षण ... प्रजन को कवि
न सकत प्रतिपाल॥ तातें लक्षण नृ
पनके कहै सुमत विशाल॥ २॥ मुनिउ
नस्या के वचन यह सुनि मांधाता भू
पा॥ गहि सुधर्म नृप जगत में विलसे
शाक्र स्वरूप ३॥ युधिष्ठिर उवाच॥ सोर
ठा॥ स्थिती धर्म महि चाहि कौन अन

रहिं नृपकरै॥ किहिं बाधै किहिं पाहि
लेहि सुयश इत स्वर्ग उत॥४॥ भीष्म उ
वाच॥ सोरठा॥ स्यो पूरव इतिहास भूपा
ति तुमसों कहत हों॥ वामदेव कै पा
स नृप वसुमन बूझ्यो भलें॥५॥ वसुम
न उवाच॥ मुनि वर कहो अनूप धर्म बा
न कछु नृपन की॥ सो सुनि कै अनुरू
प प्रजा पालि हम मुद लहैं॥६॥ वाम
मदेव उवाच॥ करहु प्रीत नृप धर्म में
धर्म देत फल चार॥ धर्म देत जय जग
तमें बिलसत प्रजा अपार॥७॥ जो अ
धर्म नृप करत है मिथ्या जल्पन हार
सो नृप थोरे दिवस में लहत आपदा
भार॥८॥ सत्य कहत धरमी सुबुधिदा
नी मख करनार॥ नीति सहित पालत
प्रजा अरु इंद्रिय जेतार॥९॥ मित्र गुरो हि
न वंधु भट संबंधी परिवार॥ अर्थी मानी
गुणनि को करत उचित सतकार॥१०॥
सो भूपति वर्धत सदा पावत यश अवदा
न॥ सहसा कारी अपटु नृप शीघ्र लह
न नत घात॥ सहसा कारी पापरत कू

दोहे नृपजोइ॥नहिं गौरव इत लहत उ
नी· ४२ न गौरव पावत सोइ॥२॥प्रकट जाहि प्र
प्रिय करै गुप्त करै प्रियनास॥निज सुय
143 शता नृपतिको प्रतिमें करत प्रकाश॥
३॥मद्यप मृगया द्यूत खेल माद करत
क्षितिपाल॥नहिं जीतत इंद्रियन को ल
हत आपदा जाल॥४॥गहत लोभ आ
लस नरक न्याय लखत जो भूप॥अति
पातक सो लहत नृप नरवध के अनुरू
प॥५॥निज रक्षा करयुगति सों रक्ष
ण रक्षत जोइ॥तास प्रजा वर्धित स
दा भरत संपदा सोइ॥६॥हरकरत नि
ज वर्गजो परवर्गन संगलाइ॥सोनृप
पावत आपदहिं दोउ भुजा उठाइ॥७॥
आपुहिं जानि अशक्तकै शत्रुहि हरनि
हारि॥क्षीण करत बल नृपतिसों लह
त आपदा भार॥शत्रु सैन हनि युद्धमें
धरणि जीति क्षितिपाल॥रैयत पाल
न धर्मसों सोधरमी क्षितिपाल॥९
मेउ विचारत युद्ध विधि अनुशासन अ
रु न्याय॥धर्म प्रजा रक्षा कुशल प्र

प सदा अधिकाय॥२१॥ज्ञानसुज्ञान अय
हूहु जो तिनके धारत बैन॥उनको सो
पै कामनृप सोनित पावत चैन॥२२॥
जो सब वचन सुनि सुनत नहिं निजल
घुमत गुरु मानि॥तिन्हें काम देवै नहीं
राज नीत मत जानि॥२३॥तातें नृपको
उचित है पुरुष परीक्षा भूप॥परखि बु
द्धि व्यवसाय तब [illegible] कामदेइ अनु
नृप॥२३॥जो अमात्य नृपसम धरै भू
षन शस्त्र सवास॥नहिं माने नृपको क
हि४ हो नाहि कौरन विसास॥२४॥सम असुभ
गुण दूरिन पति दुष्टतिया डर देत॥
तातें नृपको उचित है पुरुष परीक्षा चेत
२५॥लै रे विना पावत विजै जो भूपति।
हठ मूल॥लरत लरत पावत अजय।
अहठ मूल लहि मूल॥२६॥जाके मं
त्री बुद्धि युत भट जाके संतुष्ट॥सो भूप
ति हठ मूल है प्रजा जाहि धन पुष्ट॥२
सचिव मूढ भूखे सुभट प्रजा दरिद्र स
नृप॥आय झूठ बोलत सदा अहठ मू
लसो भूप॥२७॥झूठ कहत निज जना

नहं में देत भूपति हिं मूल॥ज्योंका
नी-
श्रध
१२५
दार महिं दारु लगि छेदत है निजमू
ल॥१५॥भीष्मउवाच॥वामदेव के व
चन यों सुनि वसुमन सिति पाल॥
पालि प्रजा निज धर्म सों पायो यशसु
विशाल॥१६॥इतिश्री महाभारतेशां
ति पर्वणि राज धर्म भाषा यां कविदे
वदत्ता नुज नंद रामात्मज शिवरामत
नूज त्रिलोचन विरचिते नीति विनो
दे षट् पंचाशत्तमो ध्यायः ५६॥युधि
ष्ठिर उवाच॥दोहा॥करि संगर लहि वि
जय जो अमल करे परदेश॥कौन भां
न उहिं देशमें पाले प्रजा नरेश॥१॥भी
ष्म उवाच॥जाइ तहां नृप प्रजनको दे
अभै वरदान॥त्यों तुम मम पालक स
मे तुमसम पुत्र समान॥२॥त्यों तुमप
हिले वसतहो त्योंहिं वसो तजि खेद॥
त्योंही कर अब दीजिए नेकुन मानो
भेद॥३॥समकि सकल व्यवहार तहां
लै संग अपनी सैन॥आवत अपने द
एको सो नृप पावत चैन॥४॥युधिष्ठि

र उवाच॥सोरठा॥युद्ध कर्म ब्यवहार जो
तउन कोधर्म व॥सोकरुवीर उदारक
हौसकल समुझाइके॥५॥भीष्म उवा
च॥दोहा॥युद्ध धर्म अति कठिनहै लरै
एकसों एक॥समवाहन फिरि फिरि
लरै गहै जीतकी टेक॥६॥हनवाहन
जो होतहै सुभट निरायुध जोइ॥तिजे
न तापर शास्त्र भट युद्ध धर्म नृपसोइ॥
॥७॥मानिहार कायर भयो जोभागे त
जि खेत॥ताको भूपन मारिए युद्ध धर्म
धरि चेत॥८॥धर्म युद्ध करि जय लहै॥
सोनृप विजय प्रमान॥जो अधर्म क
रि जय लहै सोनित अजय समान॥९
॥धर्मराखि कै मरन जो होत श्रेष्ठ अ
ति भूप॥धर्म त्यागि जय होतसो हैय
नक कोनृप॥१०॥युधिष्ठिर उवाच॥सो
रठा॥लरत समर में वीर देह तजततजो
सामुहै॥तिनको लोक गंभीर कहो
जाइ जहं वसत हैं॥११॥भीष्म उवाच॥
अरिल्लो॥प्रथम को इतिहास सो इकु क
हत हौं सुन भूप॥अंबरीष महेंद्रकोसं

नी॰
२५
145
संवाद जौन अनूप॥ अंबरीषन भागको
सुन इंद्रपुर मंजार॥ देषि बासव सहित
सुर गण ऋषिन के समुदार॥ लखित
है निज सैनपति सभ चढे चारु विमा
न॥ धर्म सभके बरन सुखसों भरे तेज
हृ४ महान॥ देषि नहं सेनेश अपने अंबरी
ष महीप॥ शक्रसों यों कैन लाग्योसु
नोनृप कुल दीप॥ सुनो वासव हमेंकी
ने भूमिके सभ भोग॥ वरण आश्रम ध
रम पालन कियो सहित प्रयोग॥ किये
सब ब्रत अतिथि पूजन दक्षिणा देभूरि
वेद शास्त्र अभ्यास कीनें परम सरधापू
रि॥ १३॥ प्रजापालन कियो विधिसों राज
नीत विचार॥ देव द्विज ऋषि पितर पूजे
भक्ति पूरण धारि॥ सुनो मम सेनेश की
ने नहीं अैसे कर्म॥ लसत हमसों उच्चप
दलहि कौन ऐसो धर्म॥ १४॥ वैशंपायनउ
वाच॥ दोहा॥ अंबरीषके वचन यों सुनि
सुनिकै सुर राज॥ कहन लग्यो फुनिता
हिसों मो सुनिए महं राज॥ १५॥ इंद्रउवा
च॥ छंदः॥ युद्ध सत्वमहिं देहु आहुति द

दे रन सभवीर॥लसत ताते उच्च पदमहिं धारि दिव्य शरीर॥द्विरद ऋत्विज जहां हय अध्वर्यु अति बल वान॥गृध्र का क सृगाल श्रोणि सदस्य जहं मतिमान॥१७॥प्रास तोमर शक्ति इंधन भूमि कुं डमहान॥बाण स्रुव जहं रुधिर आज्य क्रपाण ज्वलित कृशान॥मांस हविष अनूप जहं रण खंभयूप विभात॥मार मार मच्यो धुनिसो मंत्र धुनि अवदात॥१८॥भैरि रव उद्गान जहं तन दक्षिणा सिहिं होय॥रुधिर धारा जहां मज्जन स रित जहं भय भीर॥करत ऐसो यज्ञ जो नृप लोक ताको ठोक॥चहै सो जहं त हां विलसे सकै कोउ न रोक॥१९॥भो गकरत वरांगनासो लहत प्रभुता पा सो॥सुनो भूपति लसत योंकरि युद्ध भाव कोकर्म॥अंबरीष महीप सुनिके शक्रके यह बैन॥परम गति उनमदन की लखि लह्यो अति शर्यचैन॥२०॥भी ष्म उवाच॥दोहा॥भूप प्रतर्दन काशिप ति जनक भूप मिथलेश॥युद्ध कियो नामसमयकी वार्ता सुनो नरेश॥२१॥ल

नी॰ ४९ षि सभीत निज भटनको जनक योगस्र
वराथि॥सकल नरक उनको नहां दरसा
य विधिसाधि॥२२॥सूर वीर लरि मरत।
जो सोपावत यह स्वर्ग॥भागत भागतम
726 रत जो सोपावत यह वर्ग॥२३॥सो लखि।
योधा नृपतिके लरे भरे अभिमान॥लर
न लगे ह्वै सामुहें रनमहिं तजे परान॥
॥२४॥सुनो भूप नृपको उचित भटनभां
ति दै तोषि॥सूर विरचिकै अरिनसों
लरै ओज गहि रोषि॥२५॥रथगजी मा
हिं गजनके रथमहिं तुरग सवार॥बीच
हिं बीच सवारि कै प्यादे सुभट उदार॥२६
दशपति शतपति सहस्र पति यूथपभ
रै उमाह॥आदर सों तिन पै धरै युद्धभा
र नर नाह॥२७॥समझि आपने भटन
सों सौपै युद्ध विभाग॥गहै तासिको र
खा रहै सदा अनुराग॥२८॥रथी गजी
भट तुरग अरु यूथप सकल गंभीर॥
अरु पैदल समुदाय लै सेना नायक
धीर॥२९॥दलके आगें रहि लरै रहै स
थ महि भूप॥बहु वाहन बहु पत्तय
र गौवे तहां अनूप॥३०॥बंधु मित्र औ

मारू भट जिनको अति बिस्वास॥३१॥
य गज प्यादे तहं रहें चहुं दिश अपने
पास॥३२॥जोजो बूढे सुभटहैं अथप
राज कुमार॥सबै पुष्ट रखक रहे प्या
रे सुभट उदार॥यों चहुं दिश चतुरंगि
नी व्यूह भेदसों राखि॥सब दिशमें सर
दार भट राखे सुवचन भाखि॥३३॥
अपने नें सब दिशन को दलजैबे को
राह॥जतन सहित राखे रहें गहै जो
नकी चाह॥३४॥हलकारे सब दिशनमें
राखे रहें बनाइ॥छिन छिन में सबठौ
रकी सुनै खबर सावदाइ॥३५॥आप
सदा चैतन्य ह्वै लखत रहै सबठौर॥
लखै पराक्रम भटनके मध्यम गुना
अरु घोर॥३६॥जहां लखै अति भीर
तहं देवै कछुक सहाइ॥३७॥बिन लखै
निज भटन तहं आप सैन लेजाइ॥३८
सबदिशमें वीरनहुंको भेजत रहै सदा
णालै भरे अभिमान सब नेकुन मा
ने कैण॥३९॥शस्त्र धारि रनमें मैसे
पावत सुरलोक॥जोजनस्यो सोमरन

है नेकुन करिय शोक॥३९॥विजय ला
नी॰ हैं धन सुयश उत मेरें स्वर्ग महिं वास॥४०॥
मु॰ यादिन नें लगिमें नम्है मोंप्यो प्रीत लग
१४७ या॥हाथ तिहारे लाज सम जीवन मरण
वनाय॥४१॥लखन रहैं सम भटन को भा
ग्यो जाइन एक॥कै जीवन कै लरि मर
न गहन रहे यह टेक॥४२॥होइ निराधा
ध सुभटजो वाहन मार्यो जाइ॥वाहना
आयुध नाहि नृप देवै तुरत पठाइ॥४३
रहै जहां सरदार तहां गहै नीत उहिंटौर
नृपसम जानै सकल भट मानै शासन
गौर॥४४॥वाजत रहैं बजेत्र सम आनक
डुंडभि आद॥जानें योधा लरत है मनम
हिं धरत प्रमाद॥४५॥चलै लरनको मु
पजब लेवै सुदिन विचार॥काल योगि
नी चंद्रमा दिशाभेद मनधारि॥४६॥इष्ट
देव कुलदेव अरु ग्राम देव को मान॥
वीरन के सन मानकरि देवित्रनको दा
न॥४७॥सनन सुभट स्वस्त्ययन करि।
ध्यावत गुरुपद कंज॥वजवावत वाजे।
वनें करत सुभट मनरंज॥४८॥वंदीजा

नेके बदनसों सुनत विजय के बैन॥ल
रन चलै नृप यों चलै पावै रनमहिं चैन
॥४८॥रैन परे निज शिविर में रहै भूप हुल
सार॥मदिरा खावैं हूलग तहांन होत
विकार॥५०॥सुनै वीर हथियार गहि फि
रन रहैं चहूं ओर॥बहु विधि हलकारे फिरैं
परदल में सम बेर॥रात समैं फुनि शि
बरमें सभा लगावै भूप॥सेनापति सर
दार तहं आवैं सम अनुरूप॥५१॥युद्ध
अवस्था तहां सुनै भटन प्रशंसै भूप
मंत्र करै परदिवस के लरिवेको जयरूप
॥५२॥मृतक भए जिन भटन के पिता बं
धु सुतजेरे॥उनको भूषन वसन धन दे
वै नृप थिर मेरे॥५४॥जोजो भट घाय
ल भए उनके करै उपार॥घाइल जोस
रदार तिहिं लेवै आप उहिं जाइ॥५५॥
नृप तब चारो तरफकी लेवै खबरसैं
गाइ॥शयन करै छितिपाल फुनि है
सुचेत सुख पाइ॥५६॥भोर भए करि
मान कृत चलै लरन हित भूप॥देवा
द्विजन परनाम करि पावै विजै अनूप

नी॰ ४८ ५०॥इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि राज
धर्म भाषायां कविदेव दत्ता नुज नेदराम
त्मज शिवराम तत्सूनु त्रिलोचन विरचि
ते नीति विनोदे समपंचाश त्तमोध्यायः
५१॥वैशंपायन उवाच॥सोरठा॥यों सुनि
कै रणनीत भूप युधिष्टिर कहतहैं॥ग्र
ब कहिय करि प्रीत लत्तण वीरनकैम
लें॥१॥यों सुनिकै कुरुवीर लत्तण सूर
नके कहै॥सो सुनिये धरिधीर जनमेज
य करि प्रीत तुम॥२॥दोहा॥मृगपति
गामी पुरुष जो मृगपति लोचन जो
शावादिर सम गंभीर स्वर सूरहोत न
रसो॥३॥मतवारो जो रहतहै मदाधरत
अभिमान॥अर्थवचन कबहून कहैसू
रवीर तिहिं जान॥पिंगनयन भृकुटी॰
विकट नकुल नयन नरजो॥४॥ऊंचेलो
चन अरुन अरु सूरवीर नर सो॥५॥
क्रूर प्रकृति अरु क्रूर तन उग्रतेज नर
जो॥६॥क्रोध युक्त अरु उग्रस्वर सूरहो
न नरसो॥७॥८॥वैशंपायन उवाच॥सु
निलक्षन वीरनहू के भूप युधिष्टिर

२॥भीषमको पूछन लग्यो सोसुनियें।
चितलाइ॥२॥युधिष्ठिरउवाच॥सोरठा॥
अब कहिएं मति मान शकुन विजय अ
रु अजयके॥सुनिभीषम धरिध्यान क
हन लग्यो कुरु राइसों॥८॥दोहा॥आवे
जाके सामुहें काम किएं द्विजराइ॥सोन
हिं जावे शत्रुपर ताकीहोत पराज॥९
वाहन जाके त्रासनें अटकि अटकि।
रण जात॥जाके सन्मुख रजसहित कू
लनहे नृपबात॥१०॥जाके सन्मुख च
लनहे वासव धनुष विशाल॥दोरत हें
फनि जाहिके वामें भूप भृगाल॥११॥उर
न रहें फनि जाहिके सन्मुख गीधकरा
ल॥कबहूं न ताकी होत जय सुनिएं।
कुरु भूआपाल॥१२॥ह्वे प्रसन्न भट जाहि
के बोलत बचन उदार॥चलत पवन फु
नि पृष्टतें ताकी होतन हार॥१३॥वामे।
हैं मृगजात हें जाके धरी अभिमान॥
सोजे पावत हे सदा एत यही जिय जा
न॥१४॥सवैया॥दुंदुभि भेरि मृदंग बजें
अरु शंख बजें शुभ सूचक नीके॥कू

नी॰ ९९ लत मारुत गंधभरयो अरु दक्षन दैस
ग दैरनजीके॥पावक आहुति दक्षन
नै जहं योधन केमुख होतन फीके॥सो
हत केत कवच्च सेमनहिं वीरनके हथि
दोहा॥ यार जोनीके॥९७॥तेनसमें नपजाहिके
होहि सगुन सुखकार॥सोमारतहै अरि
नको कबहूं नपावत हार॥९९॥कवहूं
न सेवक जाहिके धरेंन मन अभिमान॥
आपसमें सभ मिलिरहैं ताकीहोतनहा
न॥अपने अपने धरम रतनाके योध उ
दार॥अतिपवित्र नित रहत हैं ताकी हो
तन हार॥९८॥चौपई॥शह्व्स्पर्श गंधयह
तीन॥योधनके ततनैं है लीन॥वीरसा
मे जहं धीरज धारें॥जही विजयके सगु
न विचारैं॥९९॥दक्षन काक जहां नृप
बोलै॥ताके वैरनको गनडोलै॥देषिप
रै जहं मद हुसियार॥कबहूं ताकी हो
तन हार॥१०॥दोहा॥जहां सेन बलवंत्ति
नी खरी लरनको आइ॥मंदमंद पहिलें
लरै पाछें जोरदिखाइ॥११॥युद्ध विजय
धोरो करो होत दैव अनुसार॥अपने

आप स्वभावतें होत सदा सुखकार॥२२
जैसें जलकी पूरहै ज्यों भय युत मृगजा
ल॥त्योंही भागत सैन नृप नहिं कबहूं
ठहरात॥२३॥भागत लखि निज सैनको
बड़े बड़े सरदार॥भागत हैं रनछोरि कै।
नहिं कछु करत विचार॥२४॥ज्यों नृपहू
रन समाजहू त्योंही सूर सैयान॥लरत ल
रत रन मरतहैं भागत लखि भगिजात॥२
५॥आपस में भट मिलि जहां लरें भरे अ
भिमान॥मारत पांच पचासको नामहिं दै
वप्रधान॥२६॥यद्यपि पांच अरु सात षट प
कतहै रनवीर॥मारत वैरि समाजको ल
रत रहत पतिधीर॥२७॥कबहूं युद्धन मानि
पै अपनो बल बहु जान॥साम दान अरु
भेद करि तातें युद्ध प्रमान॥२८॥आवत ल
षि रिपु सैन को बाढत मनमहिं त्रास॥ज्यों
बीजुरिको पतन लषि सभजन होत निरा
स॥२९॥देखि समय संग्राम को जोभटजा
वै धाइ॥भूपति उनके देह में चलत स्वेद
समुदाइ॥३०॥युद्ध समें करि वो बहै नृपको
सेयन मान॥मानकिएं बिन होतहै सिगरी

नी॰ प्रजाहितान॥३१॥जोनृप योंविध नाकरै त
१५॰ ब रैयत दुखपाइ॥वैरिन सोंमिलि जात
है भूप तबै यकलाइ॥३२॥चौपई॥सिग
150 रे भेद पछानन हेत॥हलकारे नृप रखै ।
सुचेत॥निशदिन योधन को हित ठानै॥
तानृप की सभ जीत बषानै॥३३॥दोहा॥
जो वैरनके देशतें आगेंभूपति होइ॥मेल
ताहि सों राखिए कहत नीतिविद लोइ॥
॥३४॥भूपति ओर अपार सों रिपुको होत
न खेद॥तातें भूपति कीजिए वैरन सोंस
भभेद॥३५॥वैरिन को रनजीति कै करैछ
मा निज भूप॥ताके जोगुण होतहैं सा
निए सकल अनूप॥३६॥जोभूपति रनजी
तिकै करै छमा बलवान॥ताके रिपुगण
सकल मिलि राखतहैं बहु मान॥३७॥वै
रिनको वश आनि कै छमा करै मनमा
हिं॥जेवर अमरहू नें कह्यो राखहु नृप
मन ताहि॥३८॥आगलेग बिन काढज्यों
आवत हैं सभकाम॥योंही छमा नरेशकी
लखि रिपु आवत काम॥३९॥जोनृप त
मान करत है नारीको जगमाहिं॥सभज

न निंदित करतहैं कोऊ सराहत नाहिं
५०॥शत्रुनको रन जीतिकै करै कृपानु।
प आय॥रैयत पालै प्रीतसों ज्यों एतन
को बाप॥५१॥क्रूर रहत है भूपजो सोयत
दुःखकार॥अति मृदुता लखि भूपकी र
होत सकल अविचार॥५२॥यह कारण
नृप जानिकै समय समय अनुसार॥मृ
दुताई अरु कठिनता धरैकरै अव हार
५३॥जब मारन मनमें धरै तदपि दि
खावै प्रीत॥करी प्रहार करुणा करै रो
दन शोक समेत॥५४॥जो हमरे भट अ
रिनको मारतहैं धरिखेत॥हमरो कह्यो
न करतहैं॥सोऊ नीक लगैं न॥५५॥
जीवन चाहे जाहिको नहिं यह मारन
योग॥जो सन्मुख रन लरतहैं सोऊ ले
महैं लोक॥जिन यह मारयो युद्धमें कि
यो बड़ो नुकसान॥यों कहि मारन हा
रको प्यारे करिए मान॥५६॥जो वीरन
को हनत नर ताहि सभा महिं देखि॥प
करि भूप भुजसों कहै ताको वचन वि
शेष॥५७॥क्यों यह मारयो है तुम्हें बड़ो

नी०
५२
151

सूर मरदार॥५७॥अपराध कियो बडो नेकु॥
न करो विचार॥४८॥यों नृप दौरहिं दौ
र में करि करि चरित अनेक॥सभकोप्या
रो होत है ताको दोषन एक॥५०॥ऐसो
नृपको जानिके सभ करहैं विस्वास॥सो
पावत जय युद्ध में कबहू होतन त्रास॥५१॥
भूपति यगुण जानिके करि करि सकल
उपाइ॥रैयत रक्षा कीजिये भयो संपूरनध्या
इ॥५२॥इतिश्री महाभारते शांतिपर्वणि रा
जधर्म भाषायां कविदेव दत्ता नुज नंदरा
मात्मज शिवराम तनूज त्रिलोचन विर
चिते नीति विनोदे अष्टपंचा शत्तमो ध्या
यः॥५८॥युधिष्ठिर उवाच॥सोरठा॥करि
ये कौन प्रकार मृदुताई अरु कठिनता॥
कहो सकल व्यवहार युद्ध समयमें अरि
नसों॥१॥यों भूपति को बैन सुनि कुरुवी
रहूनें कह्यो॥सुनहु एक धरिचैन स्यामता
ससों सम कहत हों॥२॥भीष्मउवाच॥सो
रठा॥ह्यांतमसों इतिहास भूप पुरानो कह
त हों॥जो वासव के पास कह्यो बृहस्पति
मीतसों॥३॥वासव गुरु ढिग जाइ कहिय

ाम फुनिनाहिको॥कह्यो सकल सक
ल समुझाइ हाथ जोरि पूछन लग्यो॥५
इंद्र उवाच॥कवित्त॥कीजै कौन प्रकार वैरन सों
अवहार निन॥सो कहियै निरधार चाहु
न ह्वैमें सभ सुन्यों॥५॥रनजय होनसु
वाल सेनाकी अतिभीरतें॥सुर पुर राज
विशाल रहै कहो किहिं योगतें॥६॥जो
नित जानन हार धर्म अर्थ अरु कामको
राज नीत अनुसार सुरपति सुर गुरुसों
कहै॥७॥जीवउवाच॥कवित्त॥भूप पुरहू
न हूंसों सुर गुरु कहन लाग्यो नानसुन
मेरी बाननीकें चित लाइकें॥कबहूंनकी
जें युद्ध वैरिनके गनहू सों सामदान भे
द नित कीजें नीत पाइकें॥ताको विश्वा
स नांहिं करै कोऊ योगहू में क्रोध अभि
मान भय राखियें छुपाइकें॥मीठी मीठी
बातें कहि ताकोमन मोहि लीजें कीजें
सन मान मीत भावको दिखाइकें॥दोहा
ज्यों पंछी सम पार करि मारत बदकी
नाहि॥त्यों ही रिपुको वस करि पाछेंते
वध चाहि॥९॥सोरठा॥सदाभूप अपमा

न वैरनको नहिंकीजियं॥कहूं कहूं करि
नी॰ मान पाछेंनें वध चाहियं॥१०॥कबहूं नी
५२ द पैन वैरनको अपमान करि॥वाछतअ
नल डुवैन समय देषि अवसर हूमें॥११॥
दोहा॥भूपति थोरे युद्धमें करैन अधिकवि
रोध॥तामहिं रिपुसंग मेल करि करियं
बडोममोध॥१२॥पाछें नें फुनि ममकिके
अपने मंत्रिन साथ॥कछु नगमीर लगाइ
के रिपुमारै मुख नाथ॥१३॥ताहीको अप
राधनृप प्रगकट करै ममहेत॥यौंविधवै
रन को हनै भूपति कुरु षिरमेत॥१४॥मो
रठा॥यदपि अधिक रिपुहोइ नदपि नाहि
निंदाकरै॥बुद्धिमान नृपसोइ यौंविधजो
अरिगन हनै॥१५॥ममय ममय अनुसार
अपनें संगरिपु मेलिकै॥भूपति भूपउदा
र मारै मकल उपाइ सें॥१६॥कबहूं वैरि
ममाज एकठौर मारै नहीं॥साजि मकल
रन साजि एकतहू रिपु मरत नहिं॥१७॥दो
हा॥नेमन ही जय अजयको तातें करिम
रजाद॥युद्ध करै नृप नीनसें नेकुन होत
विषाद॥१८॥ममय देषि रिपुको हनै नहिं

कछु करै उलेर॥समय परें नहिं छोरियें
समयन आवत फेर॥१९॥सवैया॥सोच
कहौं तुमसों सुरराइजू जो नृप वैरिनको
बध मानै॥कैक उपाइ अनेक भली विध
नाहि कै॥मारनको मन ठानै॥जानिकै ।
नाहिको जोर बडो कछु तासंग राजकिनी
ते बषानै॥नाहिसो प्रीत दिषाइकै भूपति
जानि समय अपने वसआनै॥२०॥सोरठा
काम क्रोध हंकार यह तीनो नृपहर करै॥
सुरवर वारं वार रिपुको अंतर देखिए॥२१॥दो
हा॥मृदुताई अरु आलसंयो अभिमान स
देष॥जो नृप इनको तजत है सो नहिं पावत
क्लेश॥२२॥समय देषि नृप भेदसो समयदे
षि कर जोरि॥मोरे वैरिन को सदा करिका
रि यतन करोर॥२३॥कोऊ मंत्र ऐसो करैए
क सचिव कै साथ॥औरनसो नहिं कीजिए
सुनिए सुर पुर नाथ॥२४॥कोऊ मंत्र ऐसो
करै मंत्रन सोवो गूढ॥जव मिलि आपा
समें कहैं होतमंत्र तव मूढ॥२५॥मंत्रगु
म नहिं होत जो कहै ताहि प्रकटाइ॥ता
को भय कछु होतनहिं भूपनको सुररा
इ॥२६॥देषि परै नहिं शत्रु जो ताको करि

सो

अनी· ५३ अभिचार॥प्रोहित केउपदेशको करिये ना-
हि संहार॥२७॥जो आयोहै लरन को मनभा-
व सैन समेत॥ताको अपनी सैन सों भूप-
ति मारै विन॥२८॥सोरठा॥प्रथम करै बहु-
भेद कहै भूप चुपकै रहो॥ताको होतन-
खेद समय देषि जो लरत नृप॥२९॥देषि
शत्रुको जोर मेल करै नृप ताहि सों॥सुनि-
ये सब सिरमोर॥समय देषि ताको हनै॥३०
समय देषिकै दानसों बोलि मधुर पद बैन
सेवा करिये अरिन की मनमहिं शोक धरैन
३१॥चौपई॥भयमाने जिनतें मनमांही॥उ-
नतिन भूपति जावै नांही॥नहि विस्वास
करै उनहू को॥जोहित चाहै निज अरीको
॥३२॥दोहा॥रिपु अरु मीत विचारिकैक-
रियै यतन सुरेश॥केवल रिपुको मानक-
रि पावत है जन क्लेश॥३३॥लखि मृदु-
ता युत भूपको करहै सभ अपमान॥४
सोंही देषि कठोरता सभजग होतहिरा-
न॥३४॥मृदुताई अरु कठिनता कबहूं
न करो सुरेश॥समय देषि मृदु कठिनता
कारतन होत क्लेश॥३५॥ज्यों तट नीकैनी
रको हरत रहत जल वेग॥त्योंही नृपकैरा

नकों हरन सदा अरि वेग॥३६॥तुरनन मे
जै बहुनको वैरन के गन मांहिं॥साम दान
अरु भेद भेदसों जीते रिपु नर नाह॥३७॥
एक एक को प्रथम हनि पाछें तें करिजो
र॥शेष रहें उनको हने सुनिपं सुरशिर
मोर॥३८॥सुर नृप वैरि समाज को कोऊ।
मारि सकेन॥तातें इक इक मारि कै रना
जै होत सुचैन॥३९॥अधिक सैन जबही
र नृप हयरथ नाग समेत॥तही भूप अ
ति जोरतें रिपु हनिडारे खेत॥कवित्त॥सु
निपं सुरेश जहां वैरी बल वान होवे न
हीं सामदान भेद देउ नाहिं की जिपं॥की
जें तासों संग्राम भागि भागि वाहर है
लूटि जाको देश निज योधन को दीजि
पं॥भेजि हलकारे ठौर ठौर जाके देश।
मांहिं उनहू सों खबर सभ देशनकीली
जिपं॥ऐसी राज नीत करी मारे बलवा
न हूको कबहूं न सुर राज तासों भया
भीजिपं॥४१॥सवैया॥योंविध नाहिको
देश उजारिके भूपति जोर करै रनही॥
को॥४२॥मेलिके नाहिके मंत्रिनको स
नमान करै नित उनहीको॥जोसर दा

नी॰
५५
रहैं आपनि मनमें देधन मान करै सबहीको॥ऐसे उपाइ किये रनमें नृप मारतहैं बलवान अरीको॥भूपबुलाइकैं विप्रनकौ करजोरिकैं यौंविध बैन उचारै॥वेद षडंग प्रयोग विधान सबै करि जानत होगुणभारै॥तातें उपाइ करो अबहीकछु ज्यौंहमरे भट जायेन मारे॥यौंविधसौं द्विज राइ सहारले वैरनको रनमाहिं संहारै॥५३॥दोहा॥भीष्म उवाच॥सुनी वचन गुरुदेव के नव वासव कर जोर॥कहन लगेण फनिनाहिसौं सुनिये कुरु शिरमोर॥५४॥चौपई॥ दुर्जन लछन कौन उचारो॥तुमहो सबके जाननहारो॥कैसें दुर्जन जान्यो जाई॥दीजें मोकहुं सकल सुनाई॥५५॥बृहस्पति रुवाच॥चौपई॥सबाँवेदिकैं दोष उचारै॥मूढता कबहुंन मनमें धारें॥ठौरठौर जो निंदा करहै॥कबहूं ईड्हु नैनहिं डरहै॥५६॥है सन्तुव बोलै मृडवानी॥प्यारे होकर कहै उरानी॥यह दुर्जन केलछन जाने॥मुनि जन वेदन मांहिं बषाने॥५७॥दोहा॥दुर्जन लछन सकल यह तुमसौं कहे सुरेश॥इनको मनमें धारिये कबहूं न होत क्लेश॥दोहा॥५८॥यौंवि

54

।तनछेदकिये॥नायश होत बडोज
गमें नहिं दैयत को सुख हो जिये॥वा
सव वृत्र हन्यो रन में सुर भूप भयो।
अति मान लिये॥मारत है सुर दैत्य
न को उनकों रनमें महं देव सदा अ
ति कोप बढाई॥मारत है शिखिवा
हन पावक मीच सभै हिय मांहिसि
राई॥नाक पुरेशय मेश जलेश धने
श अरीनहुं को दुखदाई॥योंविधसों
इन देवनको लखि मानत है सभ रंक
उराई॥१४॥दोहा॥सम सुभाव लखि।
देवको क्योंहूं मानत नांहिं॥भूप वि
रंचि दिनेश को काऊ काऊ जग मां
हि॥१५॥सोरठा॥देखि परत कोउ नां
हि अयसो भूपति जगत में॥धारि द
या मनमांहिं मारन मरनहुं ने टरै॥
१६ जगमें दुर्बल जानि मारत है स
भ अरिन को॥नकुल धारि अभिमा

नी·
५५
155

राजोवाच॥जो अधिकारी भागको करैयतन
न बहुमांन॥तदपि नपावै राज निज कहा
करै तव तान॥७॥सोरठा॥जो नर मनकी पी
र पावत है अरु देहकी॥सो कहि पं धरिधी
र जानें क्है है हर समा॥८॥दोहा॥विषय भो
गजो तजत है सुखपावै नरसोइ॥जो मानत
है त्रान धन ताको विटन होइ॥९॥जो मा
नत सुख द्रव्यतें शोच करत हों नाहि॥१०॥ संपदहूमरीस समवृहिमुनिव कछुनाहि
जो नर धनको तजत है दुष्कर है यह काम
कौं हूं हम नहिं तजि सकें सोच कहों न
प थाम॥११॥चौपई॥मैं अब मुनि वरम्यो अ
ति दीन॥अति आतुर धन संपद में हीन॥
जातें अति सुख होवै मोहि॥सो अब मुनि
वर पूछौं तोहि॥१२॥दोहा॥यों विध राजकु
मारनै यव पूछो अकुलाइ॥मुनि काल
क हृतीय तव कहन लग्यो समुझाइ॥१३
मुनिरुवाच॥यह विचार पहिलें हुतो भूप
ति करिवे योग॥आज कहा पछुतात हो
तजि सब संपद भोग॥१४॥जगसकल अ
नित्य है मैं यह मेरो देह॥जो मानत हों आ
पनो धनसंपद अरु गेह॥१५॥यह सब ज
गत अनित्य है यों जानै नर जोइ॥ताको वि

दन होतहै यद्यपि आपद होइ॥१६॥ वर्त्त
मान पीछे भयो आगे होवन हार॥ यह
जग तीन प्रकारहै जानहु भूप असार॥
१७॥ जो यह जानो भूप तुम जगमें थिर
नहिं कोइ॥ पाप सकल तब हरकरि पा
वहुगे गति सोइ॥१८॥ जो कछु नृप पा
छे भयो जो कछु आगें होइ॥ वर्त्तमान
यह तीन जो जगमें थिर नहिं कोई॥१९
चौपई॥ जो जन जानत है यह भेद॥ कब
हू सो नहिं पावत खेद॥ तातें नृप यह
शोक अशोक॥ झूठे मानत तीनो लो
क॥२०॥ तातें पिता मह कहा तिहारे॥
सो तुमको नहिं देखन हारे॥ तुम अब
उनको देखत नांही॥ झूठ प्रपंच बसे
जगमांही॥२१॥ जगमें थिर नहिं अपनो
आप॥ कहा भूप करहो संताप॥ तातें नृ
प मन धारो ज्ञान॥ सकल जगत है स्वप्न
समान॥२२॥ दोहा॥ हम तुम हमरे मीत
रिपु सुहृद बंधु गन जोइ॥ नृप सुतनि
ह वे जानिये इनमें थिर नहिं कोइ॥२३
बीस वर्ष जिनकी उमर जिनकी वर्ष पं
चास॥ सो सब वर्ष उरे उरे जावहिंगे पा
स॥ सो सब

नी- म पास॥२५॥छोरि सकै नहिं सकल धनय
५८ द्यपि नर जगमांहि॥करि विचार मनमें बडो
अपनो जानै नाहि॥२५॥भूपति ज्यों धनज
गत में पायो अपनै आप॥त्योंही सो चलि
जातहै ताको करु संताप॥२६॥जगमें जी
वतहैं घनें धनसंपद सोंहीन॥कोऊ करत
हैं राज नृप कोऊ रहत अति दीन॥२७॥
तुम्ह समान जनहैं घनें पौरुष बुद्धि समे
त॥कबहूं शोकन करत हैं तूं क्यों भयो
अचेत॥२८॥तुम्ह समान उनमें कोउ नहिं
मति पौरुष वान॥तातें शोकन कीजि
ए सुख दुख होत समान॥२९॥विनायत
न सोकहूं मिल्यो सुनिवर राज अपार॥
त्योंही अब छूट्यो सकल देषि समयव्य
वहार॥३०॥राज हरन कोफल भयो वा
छो शोक मुनिराइ॥परालब्ध वश होत
हैं सुख दुःखको समुदाय॥३१॥भीषम
दोहा उवाच॥भूपति कोशल भूपके सुनी वा
वन मुनिराइ॥परालब्ध वश होत है शोकक
न लग्यो फ़ुनिताहि सों सकल भावसौं दोहा
सुऊ॥३३॥मुनिरुवाच॥जोनहिं जगमें
मिलत अरु वीति गई जो बात॥बुद्धिमा
न नर होतजो नहिं ताको पछुतात॥३४

जोजगमें नहिं मिलि सकै कौन ताको
आस॥ जोकछु मिलने योगसो आवत
अपने पास॥१४॥ जाको कछुन मिलतहै प
रालब्ध अनुसार॥ सोनर शोकन करत॥
है सुनिय भूप उदार॥१५॥ पहिलें जाको
मिलत धन पाछे तें हरिजात॥ सोअभा
ग जन जगतमें निंदित करत विधात॥
१६॥ सोरठा॥ जोनर हैं धनवान उनकी
अति निंदा करत॥ बाढत खेदमहान।
मूढनको नृपजगत में॥१७॥ जोकरहै अ
भिमान सहित सकै धन औरको॥ सुनि
ये भूप सुजान कबहूं तुम ऐसें नहीं॥१८
औरन के धनमां हिं कबहूं शोकन की
जिये॥ सुन कौशल नर नाह यद्यपि ता
मैरे धन नहीं॥ दोहा॥१९॥ सुत नाती अ
रु संपदा और सकल व्यवहार॥ ज्ञाना
वान नर तजत है जानत सकल असार
॥२०॥ सभकछु अस्थिर जानिकै मन
महिं करत विचार॥ यद्यपि दुर्लभ जग
न धन तजहैं जानि असार॥२१॥ तेऊ
नि नृप अति चतुर है कोंहूं नृप पछु
ताता॥ संपद सदा अनित्य है पराधीन ब

नी. ५७
157

लिजात॥४२॥ताको अस्थिर जानिकै नहिं
करिए कछु रोष॥तजहु संपदा सकल नृ
प मनमहि करो संतोष॥४३॥नृप अनर्थ
समअर्थ है अर्थ अनर्थ समान॥कोउ जन
केवल अर्थ हित करत सदाधन हान॥४४
औरनको धन हरत नर लाख अनेत नृप।
जानि॥ताको अस्थिर जानिकै नहिं कछु
मानत हान॥४५॥करत रहत अभिलाष
नर मन महिं भूप अनेक॥देषतही चलि
जात धन तदपिन करत विवेक॥४६॥य
तन किए जोमिलत धन ताको जानि विना
श॥भम मनोरथ होत नर छिनमहिं भूप।
निरास॥४७॥कोउजन मानत धर्मको जा
नत हितपर लोक॥तजत सकल सुअलो
क लाख मनमहिं करतन शोक॥४८॥को
उजन जीवन तजतहै जानि भूप धन लोभ
॥जनममनोरथ हरकर नहिं कछु मानत
लोभ॥४९॥देषहु उनकी कृपण ता अरु।
देषहु अविवेक॥अस्थिर जीवन मोहतेंध
न लाख मानि अनेक॥५०॥संचय होतवि·
नाश लग जीवनहै मरणांत॥भूपति योग।
वियोग लग जाननहैं मतिमंत॥द्रव्य तज

तैहै मनुजको अर्थवानर तजि दुःखा॥ता।
महिं शोकन करत हैं जोजन हैं नृप भ
आ॥५२॥औरन के वीनसत हैं धन संपद
अरु मीन॥देखहु संपद सकल तुम्र भ·
ई भूप विपरीन॥५३॥नृप इंद्रिय वसकी
जिए मन वाणीके साथ॥तुअसम शोक
न करत नर ज्ञानी कोशल नाथ॥५४॥
पांच विषयको जीति कै करिसुभ कर्म
अनेक॥ब्रह्म चर्य नृप धारिकै कैांकर।
हो अविवेक॥५५॥चौपई॥ताते नृप तजि
ए धन शोक॥अति सुख पावहुगे परा
लोक॥कंद मूल भोजन अब करिए॥
मुनि लोगनकी शरना परिए॥५६॥सक
ल जीवनपे करुणा धारो॥भूपति अपनो
आप सहारो॥यह तुमको अबहै सुख
दाई॥कहा होत धनको पछुताई॥५७॥
दोहा॥तुमको धन अब मिलत नहीं मं
चिन लियो बिनाश॥नृप सुन शोकना
की जिए कहा होत पछु ताश॥५८॥इति
श्री महा भारते शांति पर्वणि राज धर्म
भाषायां कवि देव दत्तानुज नंदरामात्म
ज शिवराम तत्सू नु त्रिलोचन विरचिते

नी. ५८
158
दोहा नीति विनोदे॥षष्टितमो ध्यायः॥६०॥मुनि
रुवाच॥अथवा तुमरे चित्तमें होइ राजकी चा
ह सोसब तुमसों कहत हों सुन कौशल
नरनाह॥२॥जो तुम उद्यम करिसको सु
हकरनको आज॥सो सम जावत हों सबै
करिहौ सिगरे काज॥३॥चौपई॥ताते भूपति
उद्यम धारो॥सिगरो अपनो काज सवारो
जो तुम संपद छुटिगई है॥तुमरे मंत्रिन छी
न लई है॥१॥ताको सकल उपाइ बताऊं॥
जो तुम पूछो सोसब गाऊं॥यौं सुनि कै मु
निवर के बैन॥भूपति कहन लग्यो धरि
चैन॥४॥राजोवाच॥दोहा॥जो मुनिवर तु
म कहत हो करिहों सिगरे काज॥ताते अ
र्थन होइगो तुम्रतिग आवन आज॥५॥
भीष्मउवा च॥यों भूपति के वचन सुनि क
हन लग्यो मुनिराइ॥जो भूपति में कहत
हों सो सुनि पै चित लाइ॥६॥मुनि रुवाच
करिये भूपति दूर तुम काम लोभ अहंको
ध॥मीतन सों कर जोरिकै रावहु बडो स
मोध॥७॥आवहिं गे हमरे निकट भूप
वि देह नरेश॥तासंग अपनो मेल करि
दूर करो सब क्लेश॥८॥मन वाणी अहंक

र्म सों तासों करियो नेह॥ सो तुमको धन।
देइगो भूप नरेश विदेह॥९॥ योंविध ता।
सों मेल करि पावहुगे बहु मान॥ ताल। ९
वि और करेंहगे तुम्ह सहाइ बलवान॥
अपने मन अनुसार नृप पाव विषयको
जीन॥ ऐयनको सब दीजिए सदा रहोगे नि
भीन॥११॥ योंविध जनक नरेश ते पावहुगे
जव मान॥ तब नृप देश विदेशके मान।
हिंगे तुम्ह आन॥१२॥ सो तिनको बल पाइ
कैं करि करि मंत्र विचार॥ भूपति कीजें अ
रिनसों अरिजन को संहार॥ बिल्व बिल्व
सों फेरि ए सोंरिपु सों रिपु भेद॥ मारहु
बैरि बरान तुम पावहुगे नहिं खेद॥१४॥
औरनसों नृप समझि कें अथवा जाकी
सैन॥ मारहु भेद प्रकार सों पावहुगे त
ब चैन॥१५॥ चौपई॥ अथवा सुनिए उ
र उपाइ॥ करिए तासों रिपुजन घाइ॥ स
पद भूपति अरिको दीजें॥ तातें अपनो
कारज कीजें॥१६॥ कवित्त॥ ऐसी भांतवै
रिनसों भेद करि भूपतुम भूखन अरुव
सन अनेक ताको दीजिए॥ सय्या अरु
आसन रथ घोरे गजराज नीके दासीदा

स देकै मन ताको नित लीजिये॥पंछीमृ
नी. ग जातुरस गंधफल भांत भांत भेजिभेजि
५५ वोतें करि तासों नृप रीजिये॥यौंविध सौंको
पाल नरेश जू उपायन सों पाछें निज जो।
149 र जानि ताको वध कीजिये॥१७॥दोहा॥अ
थवा यौंवस होइ नहिं सुनिये और उपाइ॥
राज नीत अनुसार नृप कहौं सकल समु
झाइ॥१८॥शत्रुनको विस्वास तुम कबहूं।
न करो नरेश॥चारनतरफ फिरते रहौ जहां।
अरि गनको देश॥१९॥स्वान हरण अरुका
कको राखहौ भूप सुभाउ॥इनसों अरिवश
कीजिये करि करि सिगरे दाउ॥२०॥भूपति
रिपुकै देशको भेजि भेजि निज चार॥सिग
री खबर मंगाइये॥यही मंत्रको सार॥२१॥
ज्यों दिन दिन खोटत रहै नदी आपनो तीर
त्यों नृप अरियन नाशकी राखहु मनधरि
धीर॥२२॥चौपई॥प्रीत सदा वैरनसों करिये
ताहीसों ताको धन हरिये॥करि करि नृपफु
ति ताहि सराह॥ताकै चितमहिं धरै उछा
ह॥२३॥दोहा॥मंदिर बाग बनाइ पै पायन
पान अरु भोग॥यौंविध वैरनको सदा या
नसों करो वियोग॥२४॥विप्रन को धन दी

जिए करि करि उनके मान॥दान धर्म नित
कीजिए करत दुरितकी हान॥२५॥यौंविध
रिपुको कीजिए प्रेरत भूप अनेक॥तातेंध-
नक्षय होतहै नहिं कछु करो विवेक॥२६
भूपति ताकै करन तें रिपु पावत सरधाम
मित्र द्रोह नहिं होत कछु सरत आपनो
काम॥२७॥जब रिपु धनक्षय होतहै होत
सकल धन छीन॥यौंविध रिपुको जीति
ए करिकरिकै धन हीन॥२८॥कारणधना
सब जगतको धनही सदा प्रदान॥जाको
धन क्षय होतहै सोजन होत हिरान॥२९
सवैया॥भूपति काज सवारन कोनित वै
नकै धनको हरिए॥दाउदनें करिकै फुनि
तासंग नेह बडो उनसो करिए॥भागतहीक
रिए कबहू रन होइ खरै कबहू लरिए॥मंत्रि
नको अपने संग मेलि कै दानहु सों उनको
भरिए॥३०॥चौपई॥अथवा औषधि दान प्र-
करि योग करि करि ^पै वैरि वियोग॥और अनेका-
कैं सगुनात॥तातें होत सदा रिपु घात॥३१
विष दैकै गज घोरे मारें॥मानव जलकरि वं
द संहारें॥तातें रिपुधन बलसो हीन॥ह्वैकै
जात विपत महिं दीन॥३२॥दोहा॥यौंविधा
जतन अनेकहैं राजनीत अनुसार॥समया

नी॰
६१

समय मेंकीजियै सकल राजव्यवहार॥३३॥
इतिश्री महाभारते शांति पर्वणि॥ राज धर्म
भाषायां कविदेव दत्त सुत नंदरामात्मज
शिवराम तत्सुत त्रिलोचन विरचिते नीति
विनोदे एकषष्टित्तमोध्यायः॥६१॥भी
ष्म उवाच॥दोहा॥योंकालक वृतीयके सुनि
सुनि वचन उदार॥कहन लग्यो करजोरि नृ
प मनमहिं करत विचार॥१॥राजोवाच॥कु
लकरि चाहतहों नहीं मुनिवर अपनोराज
नहिं अधर्म कछु करतहों धनसंपदके का
ज॥२॥भीष्मउवाच॥योंनृपतिके वचन सु
नि कहन लग्यो मुनिराइ॥राजनीत अनु
सार तव नृपकोप्रीत दिषाइ॥३॥मुनिरुवा
च॥दोहा॥भूपति तुम मतिमानहो करहो
चने विचार॥तातें तुमसों कहत हों सुनियै
गोर प्रकार॥४॥भूपति भूप विदेहसों मैत्री
करियै आज॥ताकी पारि सहाइ तुम पाव
हु अपनो राज॥५॥तुम समानजो मनुज
है उन चाहत समकोइ॥कबहू तुमरै वि
तमें भूपति कपटन होइ॥६॥चौपई॥तुम
हो सचिव बनावन हार॥जानतहो नृपस
म अवहार॥छूटि गयो तुमरो सब देश॥
तातें पावतहो अति क्लेश॥७॥कपटवि

ता तुम जीवन चाहो॥भूपति अपनोध।
में निबाहो॥सुनहु भूप अब हमरे गेह॥
आवहिंगे नृप जनक विदेह॥८॥ताकोमें
इक वचन सुनावें॥कारज तुमरो सकल।
बनावें॥यों कहि मुनिवर जनक बुलायो॥
ताको यों विध वचन सुनायो॥९॥मुनिसुवा
च॥सुनहु भूप यह राजकुमार॥आयो हम
रे छिग निरधार॥छूटि गयो ताको सभदेश
तुम अब हरको सभ क्लेश॥दोहा॥तुम अ
बराजकुमारतें कबहूं न मानो हान॥जान।
हु नृपमन जाहिको शारद चंदसमान॥१०॥भू
पति जाके चित्तमें कबहूं कपट न जान॥प
रखि परखि जान्यो हमें सकल गुणनकी
खान॥११॥तासंग अपनो कीजिये भूपमेल
तुम आज॥यह तुमरे अतिप्रीतसों सकल।
करेगो काज॥१२॥सोरठा॥विना सचिव नृप
राज तीनदिवस नहिं चलतहै॥साच कहों
तुम्ह काज बलमति युत चहियत सचिव॥
दोहा॥१३॥भूपराजके मूलहै बुद्धि पराक्र।
म दोइ॥इन विन राजन होतहै जानत हैसभ।
सकोइ॥चौपई॥१४॥तातें नृपयह राजकुमार
जानत सकल बुद्धि ब्यवहार॥तुम अब ता
संग प्रीत बढावो॥तातें सभ अभिलाषहिं।

दोहा
नी॰
६१

पावै ॥१९॥ सम नृप जिय जानिये सेवहु रा
ज कुमार ॥ तातैं रिपुगण सकल नग्र मा
नहिं गे रनहार ॥ जो पाछे तुमसों कियो र
न भूपति संग्राम ॥ बापपिता मह देशमें सो
तिनके काम ॥१८॥ त्योंही तुमकरते रहै
नृप इनसों रन घोर ॥ तत्रधर्म को जानिकै
करि करिकै बहु जोर ॥१९॥ अब अपने बा
स कीजिये रन विन राज कुमार ॥ हमरी शा
सन पाइकै नहिं कछु करो विचार ॥२०॥ ता
त्र धर्मको जानिकै तजहु लोभ मद राज
॥ द्रोह काममें धर्म तजि नेकुन करो अका
ज ॥२१॥ निस्पत जय होत नहिं नहिं जय
होत हमेश ॥ तातें रिपुधन लाइकै देवै ना
हि नरेश ॥२२॥ अपनोवी दोमो चहै भूपजी
त अरु हार ॥ जो अशेष रिपुको चहत ताको
होत विकार ॥२३॥ भीष्म उवाच ॥ यों मुनि व
रके वचन सुनि भूपति भूपविदेह ॥ करि प्र
णाम मुनिराइको कहन लग्यो तब यह ॥
२४॥ राजो वाच ॥ बुद्धिमान जो कहत नर यों
बहु सुननै हार ॥ सो सब सुणने योग है स
नतन होत विकार ॥२५॥ जो मुनि वचन मा
कहत हो हमरो अति हितकार ॥ सो सब मैं
अब करत हों नेकुन करों विचार ॥२६॥ तब नृप

161

कोशल राइको अपने पास बुलाइ॥ भूप
ति देश विदेहको कहन लग्यो इमभाइ॥
२७॥ विदेह उवाच॥ धर्मनीति अनुसार नृप
में जीत्यो सबदेश॥ अब तुमहू निजगुणन
सों जीत्योहों कुश लेश॥ २८॥ दोषन दीजे।
आपको विचरो निज जय जानि॥ तुमपौ·
रुष मति मानहो आप इत हित मानि॥ २९
चलहु हमारे गेह तुम मोसों लहि बहुमा
न॥ यों कहि कौशल भूपको कीनो उनि।
सन मान॥ ३०॥ भीष्म उवाच॥ सोरठा॥ तबा
कौशल मिथिलेश करि प्रणाम मुनि राइ घर
को॥ तनिये धर्म नरेश गये दोऊ जनकके
तब ३१॥ दोहा॥ कौशल अति मानसों ताछिन
जनक विदेह॥ पाद्य अर्घ मधुपर्क करि ल्या
यो अपने गेह॥ ३२॥ आहि दई निज कन्या
का ताको फुनि मिथिलेश॥ असन बसा
न धन रत्न दै विदा कियो कुशलेश॥ ३३॥
जीत हारि है दैव वश नहिं कछु ताको ने।
म॥ भूपनके यह धर्म है कहूं विरोध कहूं
प्रेम॥ ३४॥ यों मति मान सपुरुषसों करि।
कै मंत्र विचार॥ मोद सुधन भूपति लहा।
न सुनो भूमि भर्तार॥ ३५॥ इति श्रीमहाभा
रते शांति पर्वणि राज धर्म भाषायां कवि

देव दत्तानुज नंदरामात्मज शिवराम तत्सू
नी· नु त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे द्विष
६२ ष्टि तमो ध्यायः ६२॥युधिष्ठिर उवाच॥१॥
सोरठा अब कहियें मतिमान चारवर्ण के धर्म स
म॥चार अचार विधान फल उनके अरु
जीवका॥१॥राजनको व्यवहार कोश को
श संचयन अरु॥राजधर्म अनुसार कहो स
कल समुझाइकै॥२॥मंत्री गुण व्यवहार।
ज्यों रैयत बाढन सदा॥सकल सैन आचा
र षट् गुण कहो विचारिकै॥३॥कहो दुर्ज
न ज्ञान अरु सज्जन लच्छन कहो॥लच्छन
सभ मति मान उत्तम मध्यम अधम के॥४॥
निर्धनको व्यवहार त्योंही ताकी जीवका।
करियोरो विस्तार कहो सकल उपदेश स
मा॥५॥दोहा॥ध्वजिनी सैन वरूथिनी पृत
ना चमू यह चार॥वाहन होमें सभ सुन्यो
इनको रन व्यवहार॥६॥जैसें फूटि सकै।
नहीं सैना कोसमुदाइ॥मंत्र भेद गणभेद
यह कहो सकल समुझाइ॥७॥भीष्मउवा।
च॥कुल अरु सैन समाजको द्वेष वधावा
न हार॥क्रोध लोभ दोनो कहे सुनियें भू
प उदार॥८॥भूप लोभ जब करन तबक्रो
ध बढावन सैन॥आपस में फुनि बिग।

रिकै नहिं कछु पावत चैन॥८॥सामदा
न अरु भेदसों करिकरि यतन करो॥
बिगरि सैननहिं होतहै कबहूं भूपतिऔर
॥९॥जबभूपति अति लोभतें नहिं गण
को कछु देत॥१०॥ निरास फनि जाहितें
वाहन अरिगन हेत॥११॥भीष्मउवाच॥सो
रठा॥तातें सैन समाज आदर सों नृपरा
खियें॥करत सदा सबकाज बिन आदर
कछु करत नहिं॥१२॥सवैया॥सैन सवार
न काज सबै नृपसैनको मान सदा करि
ये॥सैनसों मारत वैरनको निज सैनसमा
ज सदा भरियें॥सैनसों बाढत है जशभू
पको सैनसों वैरनको डरियें॥जाहितेंभू
पति सैन बनाइकै संकट दैयनको हरि
यें॥१३॥दोहा॥सूर वीरजो भूपहै बुद्धिमा
न नृप जोइ॥तदपि भूप बिन सैनके ना
हिन मानत कोइ॥१४॥यद्यपि नृप धना
वानहै करत रहत सबकाज॥१५॥सोरठा
क्रोध दंड भयभेद सैनहूं में नहिं कीजि
ये॥करिकै बाढत खेद सैन मिलित स
ब अरिन सों॥१६॥दोहा॥तातें मानत यो
गहै भूपति सैन समाज॥बिन मानै नृप

नद पिताद्रि संव
वैरावनसेन
४

सैनके मरत नहीं कछु काज॥१७॥होइ
सकै नहिं भटनसों बार बार भेद वि
चार॥तातें भूपति कीजिये जोउनके स
दार॥१८॥सुनिये धर्म नरेश जहां फूट
न सैन समाज॥धन प्रताप लयहोत।
तहां विगारत हैं सबकाज॥१९॥जब अप
नेवश होइकै फूटत सैन समाज॥ता
हिदान सनमानसों वस करिये महराज
२०॥भयेजाहिं कै वंशमें जहं कुलनाशन
हार॥कैसेन शासन स्वजनकी तेहं नृ
प होत विकार॥गोत नाश बहु करत है
ऐसौ नृपगण भेद॥तातें नृप विनशा
सना बाढन कुलमें खेद॥सोरठा॥जो
भूपति भयगूढ़ तासों रक्षा कीजिये॥
जोभय होत अगूढ़ ताको शमन होत
कछु॥क्रोध लोभ अनुसार गूढ़ मंत्र
जो करत हैं॥तहं नृपहोत विकार आ
पसमें लरि मरत हैं॥२१॥जहं नृप अप
नें बंधुगन हैं कुलजाति समान॥भेद
करतहैं सैनको विन उद्यम धन दान॥
॥२२॥तातें भूपति कीजिये बंधुन कोस
न मान॥विनबंधुन के मानतें सभजग

होत हिरान॥२६॥चौपई॥ताते भूपति बं
धुसमाज॥आदरसों तजिहू निजकाज॥
बंधुन सों सभ कारज सरहैं॥भीरपरें स
भ संकट हरहैं॥२७॥चौपई॥भीष्मउवाच दोहा
॥कहो तात यहकर्मकाको सेवन श्रेष्ठ
अति॥देह धरेको धर्म देनहार अति परा
म गति॥२८॥भीष्म उवाच॥चौपई॥भीष्म
तात गुरु जनकी पूजा॥तासमान कोऊ औ
रन दूजा॥२९॥यह परतत्त देव सभहीके
सेवन योग्य पूज्य अतिनीके॥यह त्रयअ
गनि कहत श्रुति माने॥गार्हस्पति अग
न पितु जानो॥३०॥माता दक्षिन अगना
अनूप॥आहवनीय गुरु सुनि भूप॥३१॥पि
ता अगन इहिं लोक उधारन॥मात अगन
परलोक सुधारन॥ब्रह्म लोक महिं गुरु ब
सावन॥योंविधि त्रय त्रय लोक बनावन॥
३२॥संतति संपद सुधरम वरधन॥तेजस्व
यश बढिक बढन अरधन॥तिनमें अधि
क गुरू हम जानें॥जाकी कृपा मोक्ष प
द मानें॥३३॥सिरजत देह जन्म देह जन
म दे पालत॥अंक लगाइ प्राण समलाल

गुरित

लन॥वहुत सहत यह तन निठुराई॥
नी· गुरु सम जनक जननि सुखदाई॥३३॥
६४ जोपचै कुयुग अनुरूपा॥तबहूं सेवना
164 योग अनूपा॥दैधन पाले करि सनमान
सोप्रभु जननी जनक समान॥३४॥त्योंही
नृप विद्या गुणदायक॥जननी जनकस
म पूजन लायक॥जोसुकर्म करि सुधर्म
रक्षत॥तिनको वेद नीत यह शिक्षत॥३५
गुणि गुरुजनको पूजन जोई॥सकल प
दारथ पावत सोई॥करि अनुशासन सु
वचन कृजन॥जनक जननि गुरुजनको
पूजन॥३६॥दोहा॥ध्यावत पूजन गुरु
नको ब्रह्महिं पूजनध्याइ॥वहत परम
पद गुरनको जोसेवत मनलाइ॥३७॥मा
न तान अरु गुरनको करत निरादर जोइ
भूप भ्रूणहा नाहि सम औरन पातकि
कोइ॥३८॥द्रोह करत जो मीनसों ब्रह्मा
घ कृतघ्नी जोइ॥तिय वध कृत गुरुद्या
न कृत मद्यपानकी सोइ॥३९॥यौंविध
भूपति जानिकै तान मान गुरु देव॥ज
गमें मानन योगरौं करि करि उनको सेव

॥४०॥भूपनातनकी सेवतें चौमुख होत
प्रसन्न॥त्योंही जननी सेवतें होत प्रस
न्न धरन्न॥४१॥सोनहिं पूजत ब्रह्मको
जिनमान्यो गुरुदेव॥जननि जनकतें अ
धिक मति करिये गुरु जनसेव॥४२॥दे
देव पितर मुनि गण सकल यम कुबेर र
विचंद॥लखि पूजत नित गुरुनको पा
वत अमित अनंद॥४३॥कबहूं भूपना
कीजिये गुरु जनको अपमान॥तातमा
त अरु भ्रात सम नहिं गुरुदेव समान
॥४४॥यह नृप विस्तर सों कह्यो सकलध
र्मको सार॥जातें अधिक नऔर कछु
सुनिये भूप उदार॥४५॥इतिश्री महा
भारते शांति पर्वणि राजधर्मे भाषायां
कवि देव दत्तानुज नंदरामात्मज शिव
राम तनूजेन त्रिलोचन विरचिते नीति
विनोदे त्रिषष्टि तमोध्यायः॥६३॥युधि
ष्ठिर उवाच॥सोरठा॥अब स्वधर्म व्या
ख्यान सम्य असम्य वियान सम॥का
रुकुरुवीर सुजान सत्य समानन और
कहु॥१॥वैशंपायन उवाच॥दोहा॥

यों विध धर्म नेरणाके सुनि सुनि वचन उ
नी॰ दार॥ कहन लगो अति प्रीतसों तासों कु
९५ रु सरदार॥ ४॥ चौपई॥ भीष्म उवाच॥ सुनि
ग्र सुनि तात धर्म अवहार॥ सत्य सत्य विधा
१६५ न अवहार॥ सत्य समान न सत्व अरु साधन
नहिं असत्य सम पातक बाधन॥ ३॥ सत्य
समान पुण्य नहिं कोई॥ जप तप तीरथ पू
जा जोई॥ नृप असत्य सम पातक नांही
रौरव नरक पाप करि जांही॥ कहूं असत्य
पुण्य बरसावत॥ कबहूं सत्य पाप उपजा
वत॥ ५॥ सोइ असत्य पुण्य प्रद राजा॥ भा
षत हैं मति मान समाजा॥ जोन सत्य हिंसा
धिक साधे॥ सो पातक है सगति बाधे॥ ६
हिंसा परम अधर्म कहावत॥ हिंसा अगा
नित जन्म नसावत॥ हिंसा युद्ध यज्ञ मधि
कीनें॥ धर्म बढत नहिं अधरम लीनें॥ ७॥
पर उपकार धरम अति पावन॥ परपीडा अ
धर्म अति छावन॥ परम धर्म है दान सुहा
यो॥ पुण्य पयोनिधि दानतें जायो॥ ८॥ पा
पहिं दान देत जो कोई॥ धर्म नसत नहिं
अधर्म होई॥ जानि धर्म सुधर्म अति जग

मैं॥आश्रम धर्म बुझाय पद मगमैं॥८॥
परम स्वधरम प्रतिज्ञा पालन॥स्वधरम।
सत पथ मति लालन॥सत संगति वरध
मे कहाई॥पारस संग लोहकी न्यांई॥९
युधिष्ठिर उवाच॥दोहा॥गहि गहि भाव।
अनेक नर बहुविध सहत कलेश॥का
है पिता महमीन सें सो अब धर्म विशे
षा॥११॥यथा उक्त आश्रम चरत सो।
निरंभ फल जोइ॥सुनो भूप भव सिंधु
तरि पार लहत है सोइ॥जो नर हिंसा कर
न नहिं जीवन पीडा देत॥दान देत नहि
लेत जो सो नर पर पद लेत॥१३॥जो नर क
रत न पाप कछु अति थिन देत सवास
१४॥जो अलोभ अरु सत्य वद नाहि स्वर्ग
महिं वास॥१४॥पर तिय जानत मात सम
राजस तामस हीन॥देव पितर भाव करत।
न जो सो पावत गति पीन॥१५॥युद्ध मांहि
अति सूर जो जिन्हें मरण भय नांहि॥वि
जय वहत करि धर्म जो सो नर सुर पुर जो
हि॥१६॥जो तप करता विप्र वर वेद पढै है
सोइ॥आध्यापक जापक निपुन तरत उ

नी॰ ६६

166

गेयह सोइ॥१७॥निज समज्ञानन जगन स
म सउ रंक सम भाव॥तरत दुर्ग संसार
सो जो नहिं कुटिल स्वभाव॥१८॥पर बि
भूति लखि मुदित जो मानित कोसनका
र॥तरत दुर्ग संसार सो जो नर धर्म विचा
र॥१९॥सत संगति रत पुरुष जो गहै स
त्य गुण नेम॥तरत सिंधु संसार सो ग
हत कृष्ण पद प्रेम॥२०॥सब देवनको।
करत है जो नर भूप प्रणाम॥धर्म पुराने
सुनत जो सो पावत सुरधाम॥२१॥भूपति
जो नर करत है मात तातको श्राद्ध॥अ
भ्यागत मानत सदा सो गत लहत अगा
ध॥२२॥करत हत जो क्रोध को बोलत
जो प्रिय बैन॥सो पावत सुरलोक गति
सुनिए नृप धरि चैन॥२३॥मद्यमासजो
तजत है कबहुं न बोलत झूठ॥सो नर
तरत दुर्गको रहत सबनि पर तूठ॥२४
यह नृप तरण दुर्गको सुनत सुनाव
त जोइ॥विघ्न कै छिन बैरि के नश
त दुर्ग नर सोइ॥२५॥भीष्म उवाच॥

यह भूपति तुमसों कह्यो सकल धर्म
को सार॥ सुनै सुनावै याहिकै बाढत
ज्ञान अपार॥ ६२॥ इति श्री महा भारते
शांति पर्वणि राज धर्म भाषायां कवि-
देव दत्तानुज नंद रामात्मज शिवराम-
तनूज तु त्रिलोचन विरचिते नीति वि-
नोदे चतुः षष्ठि तमो ध्यायः ६४॥ राम

167

युधिष्ठिर उवाच सोरठा॥सौम्य असौम्य।
स्वरूप अब मोसों समुझाइकै॥कहि।
ये सुमति अनूप कोंवह जाने जानेहैं
॥१॥भीषमउवाच॥चौपई॥ह्यां अकहि।
हौं इतिहास अनूपा॥आछ्यपयाल सं।
वाद जो भूप॥पौरव नाम नृपति इकु
मारी॥भयो भूप पाछें अहंकारी॥२॥
अवध गए तन तजि छिति पाल॥छिती
ये जन्ममें भयो शृगाल॥तहं पूरव पर
को गति चेन॥भयो अनामिष वर व्रत लो
न॥३॥मिल्यो पस्यो फल खावै सोइ॥
बीते दिवस पाइकै जोइ॥चिता बासनि
सि बासर करै॥और बास कहूं चित्तना
धरै॥४॥ताकी वृत्ति अनूपम देखि॥औ
र शृगाल दुष्ट मति पेषि॥ताको क
हन लगे खल बेन॥यह मृग हत्तहंमा
री हैन॥५॥हिंसा करन मासको खाव
न॥सब सजातिको बडो सुहावन॥
आमिष खावन को व्रत लेहु॥आपा
खाहु ज्ञातिन को देहु॥६॥यों सुनिकै

नृप स्याला प्रवीन कहन लग्यो तब
नी· वचन अदीन॥तुमसम गहि यह वृत्ति
कुराग॥लायो जंबुक कुल महिदाग
168 ६॥मैचाहत हौं वृत अचार॥जातैं प्रस
रै सुयश उदार॥कुलको करन पवित्र
हि होइ॥अव उत्तम गति पावहिं सोइ॥
७॥आत्महि विमल करै अनु मान॥
मैं यह वृत्ति गही हित जान॥जानैपा
सो जन्म मलान॥फेरन लैन परै दुख
दान॥८॥जैसो कर्म करै तन पाइ॥तो
सो जन्म लहै मुख आइ॥स्वर्ग नरक सु
ख दुःख लहु परम॥है सभ गतिकोका
रण कर्म॥९॥यह शृगालके सुनि सु
नि वैन॥जंबुक चुपह्वै रहै अचैन॥व्या
घ्र एक सुनि जाके वैन॥जान्यो नाहि
महा मतिऐन॥१०॥ताको कहन ला
ग्यो मन लाइ॥तुम मोसंग चलो सु
ख पाइ॥मांगहु जोकछु चहियत तो·
हि॥देहौं सकल बनावहु मोहि॥११
अति मति मान जानिकर प्रीत॥सचि

व कर्म राजन की नीत॥तातें तोकों जा
नि मति मान॥सचिव कर्म हमरो तो
सान॥२२॥यों सुनि कै गोमायु सुजान॥
मृगपति सों बोल्यो अनुमान॥तुम यहउ
चित कह्यो मृगराज॥नृपको चहियत
सुबुद्धि समाज॥२३॥जैसो होत अमात्य
सुवेश॥तैसो बाढत विभव विशेष॥
तुम्ह मंत्री होनेको चाउ॥नहिं हमथार
त जानि सुभाउ॥२४॥तुम वन चरा
बलवान अपार॥नहिं प्रणत सेवक
ताताार॥प्रथम अमात्य निहारे जोइ॥
छली चुगल कृतसिन मति सोइ॥२५
डुष्ट होत सह वासी जहां॥साधुप्रवीन
ननिवहन तहां॥प्रभु अविवेकी साथ
अविचार॥तहां साधुन को का अवहा
र॥२६॥सुनि तुम उनके वचन अनेक
मोहित देहु दंड अविवेक॥यह हठ प
ण कीजें स्वीकार॥तब में मंत्री हो इ
निहार॥१॥दोहा॥यों विध ताके वच
न सुनि बोल्यो मृग भुअपाल॥ज्यों त
म हमसों कहत हो त्योंही करों शृगा

ला॥१८॥यह निबंध करिकै भयो मंत्री

नी॰ ताहि शृगाल॥तहां छिद्र देखन रहै।

औरनि दर भुस्म पाल॥१९॥पाइ माना

169 मृगराज सों मंत्री बन्यो शृगाल॥२०॥

भयो प्रसन्न मनमें बडो सुनि पंचकुल भु

अपाल॥२१॥तामृगपति के खान को

धरो मास गृह मांहि॥सोंप्यो ताहि

शृगालको जंबुक ल्याए ताहि॥२१॥

तातें नृप अति क्षुधित ह्वै जागि उठो

खो॰ मृगराज॥नहिं देखनव मासको को

प्यो मृग शिरताज॥२१॥सोसुनि दुष्ट

शृगाल सभ कहन लगे मतिमान

॥खायो मास शृगाल इन जोतुम्र

मंत्रि सुजान॥२२॥कियो कोप शार्दू

ल पुनि सुनि उनकी यह बात॥दी

नीशासन सबनि को करिये ताको घा

त॥२३॥योंविध ताको छिद्र लखि प

थम सचिव सभ ताहि॥कहन लगे।

योंमिलि सभै जबको प्यो मृग नाह

२४॥शृगाला ऊचुः॥मृगपति हमको

छोरिकै कियो सचिव यह नीच॥

वानीसों यह शरल है विदोहै मनबीच २५॥इनके बल भोजन लिए कीनो न प बनमांहि॥जो तुम को परतीत नहिं तो आनेउ हि ठांहि॥२६॥यों कहि ता कै गेह तें दौरे सकल सृगाल॥आनि दिखायो मास लखि कोप्यो मृग भुआ पाल॥२७॥भीषम उवाच॥सुनि जननी मृग राज की निज सुत केयह वैन समुझावति है ताहि को कहन लगी यहि वैन॥२८॥मृग जननी उवाच॥रा खहु इन सृगाल को करिए मत तन घात॥कबहूं न इनकी मानिए कपट भरी सुत बात॥२९॥जंबुक सो विस मानि कै करहें सकल विरोध॥इनो को कह्यो न मानिए करहें तुम्र मति रोध॥३०॥यद्यपि है कोउ जगत में मा नुष सरल सुभाइ॥तद्यपि दुर्जन दो षनें दोषधरत हैं ताहि॥३१॥चौपई॥ कबहूं एन सगाहन नाहिं॥दुर्जन स जनको जग मांहि॥दुर्जन करि करि भेव विशेष॥सज्जन सो कर हैं नित द्वेष॥३२॥जो हैं पहिले सचिव तिहारे॥

नी. 120 16

सो मृगाल संग हैं दुखयो॥ उनहूं ग
ह्यो मास छिपाइ॥ छल करि तुमको
दियो दिवाइ॥ ३३॥ तातें सुन तुम करा
ऊ विचार॥ कीनो नांहि मृगाल बिगा
र॥ यह तुम्ह मेंत्रिण को सब दोष॥ ता
तें हरकरो सुतरोष॥ ३४॥ भीष्म उवाच॥
सोरठा॥ यों सुनि जननी बैन जानि दो
ष उन सबनि को॥ तब मृग पति धरि
चैन कीनो मान मृगालको॥ गदगद
होइ मृगाल पाइ मान मृग राजतें॥ स
निपं कुरुभुव पाल कहन लग्यो मृग
राजसों॥ ३६॥ मृगाल उवाच॥ कीनो ह
मेरो मान पहिलें तुमहूं करि कृपा॥
अब कीनो अपमान तातें तुम्ह ढिग ना
रहों॥ ३७॥ किया तुम्हें अपमान नृप में।
छूटेसा निज द्रोहिं॥ अव विश्वास हम
रो नहीं रहहों तुम्ह ढिग नांहि॥ ३८॥
पराव मूपरानो तुम्हें मोकों अपने।
पास॥ करि परतत्ता हरसम कोअव।
किया निरास॥ ३९॥ बेदि सभामें जाइ
के पहिलें गुण परकास॥ कीने हैं मृ
गराजजू कौं अब औगुन नास॥ ४०॥

चौपई॥साचकहौं सुनिपं मृगराज॥त
जि तुमहू परतज्ञा आज॥अब तुमको
करहौ विस्वास॥तातें हौं अब भयो नि
रास॥४१॥मैं मृगपति अब भयो भयभी
त॥देखि सकल तुमरी यहरीत॥इना
दुष्टन जो वचन उचारे॥सत्यजानि तुम
हू मन धारे॥४२॥भीष्म उवाच॥सोरठा
यों विधसों समुझाइ तब श्रृगाल मृ
गराज कों॥गयो परम सुख पाइ ताको
तजि फुनि विपन महिं॥४३॥लखि उ
नको व्यवहार कह्यो नमान्यो ताहि
को॥जंबुक बुद्धि उदार गयो स्वर्ग म
हिं देह तजि॥४४॥इति श्री महाभार
ते शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां क
वि देव दत्ता नुज नंदरामात्मज शिवरा
म तनूज त्रिलोचन विरचिते नीतिवि
नोदे पंच षष्ठितमोध्यायः॥६५॥युधि
ष्ठिर उवाच॥दोहा॥नृपको क्याकरि
वो चहै कहा किएं सुखहोत॥कहौ
सकल समुझाइकै तुम धर्म उदधि
कैपोत॥होत कहा आलस किएं

सोकहिंप मनि भौन॥विन विचार कछु
नी कर्म करि दोषहि षा वनकौन॥२॥वैश
पायन उवाच॥यौं विधधर्म नरेश को
171 सुनि सुनि वचन उदार॥कहन लग्यो
अति प्रीतसों तातें कुरु सरदार॥३॥भी
ष्म उवाच॥सुनो आलसी ऊटको ह्यां
पूरव इतिहास॥नाश भयो ज्यों विपन
महिं करि अविचार प्रकाश॥४॥जो
तुम पूछ्यो मोहुकों सुनिए धर्म नरे-
श॥जो नृप को कर्तव्य है जातें होत न
क्लेश॥५॥नहिं नृपको करिबो चहै।
आलस भूप हमेश॥एक ऊट हुतो।
ने तुम सुनिए धर्म नरेश॥भूप प्रजा
पति युगाहु में भयो जातिस्मर ऊट॥
उनि कीनो वनजाइ तप दीनो विधि
वर तूट॥७॥दोह्यो फुनि तब ताहि
पर भयो प्रसन्न लोकेश॥मांगो वर।
कछु यौं कह्यो ताको धर्म नरेश॥८
चौपई॥कहि विरंचि मांगहु वरदान
यौं सुनि बोल्यो ऊट निदान॥देहु कृ
पा करिकै विसतार॥ग्रीव हमारी को

गगन चारा॥ह्यो बैठ्यो सागरके वार
यिवें चरें सब विपन में झार॥एव म
रालु वह्मा कहि गयो॥ऊठ हूं केमना
आनंद भयो॥२०॥योंकहि वेधा गयो।
निजधाम॥करि अभि लखित जाहिके
काम॥दीर्घ ग्रीव लहि ऊठ प्रमोद॥
ल्यायो सब दिश चरन विनोद॥२१
बैठि रह्यो उहिंथल धरि धीर॥चरना।
वदन करि सागरनीर॥एक दिवस च
रि ग्रीव पसारि॥मेलयो वदन दरि म
ही में डारि॥२२॥तिहिं थल दंपति जं
वुक आयो॥ग्रीवदेषि उनि आनंदपा
यो॥कारिमास लागे दोउखान॥जा
गयो ऊठ लहि क्लेश महान॥२३॥क
रैहै इन उन ग्रीव विशाल॥नवला
ग ग्रीवाकाटि शृगाल॥योंनृप गा
हि आलस अविचार॥भयोमी
चवश ऊठ उदार॥२४॥जगमें कारण
वुद्धि अनूप॥अविचार आपदा रूप॥
॥आलस नें सबहोत अकाज॥या
वसाई कोवाढत राज॥२५॥नृप कर

२४

जे।

नै जैसे काम॥प्रकट होत नहिं ताकोम
नी· मे॥यों नृप जानिन आलस कीजै॥क
रिउद्यम जगमें यशली जै॥६॥दोहा॥
करै सुकर्म विचारिके गहैन आलस
लेश॥बंधुनको तोषत रहै वाधतसे
रै नरेश॥७॥यों विध भीषम वचनत
व सुनि सुनि धर्म नरेश॥एकुन हैफु
नि ताहिको हर करन सम क्लेश॥८
युधिष्ठिर उवाच॥सोरठा॥जाको प्रबा
श्रमीत गहै कौन आचरण सो॥तात
तर्प विच घर नीत चाहै होमें सभ सुख्या
॥९॥भीषम उवाच॥यों प्राब इतिहास
रेकु कहों सुनो मतिमान॥सागर अ
रु सरितान को जो संवाद महान॥१०
नर्प सभ सरिता जलदेखिके सागर कह्यो
तन्त्र्प विवेक॥टूटि फूटि...सलिल में
आवत हत अनेक॥११॥कांहू बेत
आवत नहीं ताको कह्यो विवेक॥यों
सुनिके गंगा कह्यो सुनो भूप मति
एक॥गंगाउवाच॥सुनिए हमरो वेग
लखि नहगए तासो झुटि॥

खेरे रहत ना अगुणसें उघरि जात।
सम दूरि॥२३॥जव प्रवाह को वेग ल
खि भूप वेंत समुदाइ॥छिन महिं ना
मन होत है जानें वचन सचाइ॥२४॥
जव प्रवाह घटिजात है तव फुनि हो
त उतंग॥निश्च करि नम्रता सवलसें
सगुण नम्रता संग॥२५॥भीष्म उवा
च॥योंकहि रत्ना नम्रता गुण डोगुण
हरसाइ॥गंगा सागर को किये सा
मादान सुखदाइ॥२६॥सवल शत्रु
सें नम्रता गहि नृप रहै सचेत॥स
मय पाइके उच्चता गहै सो आनंद
लेत॥२७॥इति श्री महा भारते शांति
पर्वणि राज धर्म भाषायां कविदेव
दत्ता त्मज नंदराम आत्मज शिवराम
नन्दन त्रिलोचन विरचिते नीतिवि
नोदे षट् षष्टितमो ध्यायः॥६६॥
युधिष्ठिर उवाच॥सोरठा॥हे भगव
न हठ हानि मूरख पंडित सें लेव
नहि पंडित अन मानि किहिं विधि
कैसे प्रवीण ता॥वैशंपायन उवाच

दोहा॥सुनि भूपतिके वचन नव सुरमा
नी· रिनाको बाल॥कहन लग्यो अति प्रीत
सों सोसनिपें भुग्र पाल॥२॥तहं पंडि
173 त ताके सहै सिगरे कुनमित वैन॥ताकी
वातनसों सरस वातें आप कहैन॥३॥नि
देवा अस्तुति करै श्रोता जहां निदान॥
काक संग जलपत नहीं सुगुणी हंसस
जान॥४॥निजसम वातें करन सों तिहि
लग अति दुख देत॥माण चात नहिं
करतहै यह विचार करि लेन॥५॥जाने
मूढ मयूरसम नरतत ऐंठ उठाइ॥नि
लज लाज आनत नहीं गुदादोष दर
तV साइ॥६॥कोऊजन आगें गुणकहत
पाछें जलपें दोष॥पंडित उनके बचा
न सुनि कबहूं न मानत रोष॥७॥दुर्ज
न सम गुण अधिक नहिं दोष दिखा
वत मूरि॥तासों सन्मुख होन नहिं प
ह नित निवसत दूर॥८॥जैसें दोषी
जाV स्वान तें दूर रहत नरनि॥त्योंही ऐसें
नरनको परत्यागत अनुमानि॥९॥यु
धिष्ठिर उवाच॥सोरठा॥कहोपिता मह

रत सब नीत नरपतिनकी॥ जाकोमा
व प्रनकु आनंद आनँद लहत समस्त
नृप॥१॥ दोहा॥ यों सुनि ताके वचन फु
नि भीषम नीति उदार॥ कहन लग्यो
समुझाइ कै सिगरे नीति विचार॥१॥
भीष्मउवाच॥ छंद॥ परम उत्तम राज
विधि सब कहौं तुम सों तात॥ वहुता
नृपकै अनुग जैसें नीत नृपति बखा
न॥ वर्त्तमान भविष्य भूत त्रिकालज्ञा
हि विचार॥ देश अरु कालज्ञ जिनकी
प्रकृति साधु उदार॥२॥ शास्त्रविद ध
र्मज्ञ धर्मी शुद्ध शरमी. सबु॥ साव
धान सुशील ज्ञानी रहैं नृपति सम
ज्ञ॥ शूर अरु पुरुषारथी सर्वज्ञ स
मगुण वान॥ सखा सचिव सुमित्रबं
धु अमात्य जासु महान॥ प्रजाना
कौ लहत सब अरु लहत सुधरम
को मूल॥ होत ताकै सुधन वर्धन ते
ज वरधन मूल॥३॥ बढत दल बल
रंग नृप भट रहत मोदत सर्व॥ शत्रु

होतन कबहूं सन्ताव सुनन न्यागन गा
नी. वे॥होनताकै देशमें नहिं पापको संचार ^
॥१५॥लहत अनंद दुहूं लोकनि भूमि
174 पति मति मान॥होहि जाहि अमात्य
सिगरे कह्यो ताहि विधान॥सुनो नृप
तुम नृपन की अबपरम नीत अनूप
ने लखि सुवंश परखि सम गुणदेखि
सह सरूप॥करै ताहि अमात्यतासों
सरन सिगरे काज॥लहत परम अनंद
नृप वर बढत ताको राज॥१८॥दोहा
जोअमात्य कुलवान हैं कपट करत
नहिं सोइ॥करत काम सभ प्रीतसों
वहियत नृपको जोइ॥१९॥जोकुलही
न अमात्य है कपट करत नित सोइ॥
भूपति को चाहत नहीं तासों धर्मन
होइ॥२०॥तातें नृप राखो चहै जोमं
त्री कुलवान॥तासों वर्धत राजनित
कबहू होतन हान॥२१॥जोमंत्री कुल
हीनहै तासों होत विकार॥तामहिं इ
क इतिहास तुम सुनियै भूप उदार॥

२२॥भूप कह्यो मुनिजननहूं नें परसुरामसों
जोइ॥ताको मुनिपं प्रीतसों लोहि सुता
कै सोइ॥२३॥भूप इक मुनिवर हुतो नि
जैन विपन मंझार॥कीनो अति चिरका
ल तप कंदमूल फलहार॥२४॥ब्रता
कीनें अति सकल नृप कहत बचन उ
दार॥पवन पवावन करतसो वसकर
इंद्रिय सार॥२५॥आवतहैं ढिग जा
हिकै भूप घने मृग जान॥सिंह व्याघ्र
भल्लूक अरु दीपी गज मद मान॥२६
वैठि रहैं ताढिग सभै मृगह्न शिष्यस
मान॥ताकैं नप[ग]र भावतें सत्व भूपजि
य जान॥२७॥ह्वै प्रसन्न निजगेहको
और सकल चलि जात॥स्वान एक
मुनि राइ ढिग रह्यो प्रीत इरसात॥ २८
इक दिन ताको देखिकै ताके मारन
हेत॥भूपति एक उजाइकै चाहतजो
र सचेत॥२९॥आयो दीपी ताहि
ढिग ताके मारन काज॥स्वान भयो
भय भीत अति गयो जहां मुनिरा
ज॥३०॥कहन लग्यो मुनिराइ सों

नी· द्वीपी हमसे काल॥ तावहू तुम अब मोहू
को यों कहि भयो विडाल॥३१॥ ताको यों
125 भय भीत लखि कहन लग्यो मुनिराइ
तें अब द्वीपी होहु तुम विचरहु आनंद
पाइ॥३२॥ नृप ताके वरदान तें श्वान भ
यो शार्दूल॥ गाजत है अभिमान सों है
ताके अनुकूल॥३३॥ सोरठा॥ श्वान भा
यो शार्दूल यों लखि ताको विपन मा
हिं॥ भ्यो ताके अनु कूल जो आयो ति
हिं हननको॥३४॥ ताने वदन विदारि
व्याघ्र एक आयो तहां॥ ताको मारनहा
र चाटत रदन कोपतें॥३५॥ यों लखि आ
तिं वत ताहिको द्वीपी अभय भीत है तब
हू अब मुनि नाह यों कहि शरन पैठ्यो आतु
रन॥३६॥ दोहा॥ यों सुनि के मुनि वर का लो
खे रहो धरि धीर॥ व्याघ्र होहु अब तुर
त तूं नेकुन मानो पीर॥३७॥ व्याघ्र भा
ये दोनो मिले नृप तब आपस मांहिं॥
लखि समान तब आपनै सोउनि मारो
नाहिं॥३८॥ व्याघ्र भयो वह श्वान तब ता
नें श्यो मदमान॥ आमिष भोजन करत

है कंदमूल नहिं खात॥३९॥वनजीव
नको हनतहै ज्योंनृप भले मृग राज॥
त्योंही मुनि परसाद तें भयो व्याघ्र सि
र ताज॥४०॥इति श्री महाभारते शांति
पर्वणि राजधर्म भाषायां कविदेव दत्ता
नुज नेदरामात्मज शिवराम नन्दन त्रि
लोचन विरचिते नीति विनोदे सम ष
ष्टि तमो ध्यायः॥६०॥भीष्म उवाच॥स
वैया॥भूप सुनो उहिं ठौर तबै इक मत्त
मतंगज दौरत आयो॥गाजत मेघ सम
न बडो तब देखिपरै जनु शैल सुहा
यो॥यों विध ताहिको आवत देखि कै।
व्याघ्र बडो मनमें अकुलायो॥कांपत है
अति खिद भयो भय भीत भयो मुनि
ही सकु चायो॥१॥दोहा॥कुंजरतें डर
मानिकै आयो मृग जब भाज॥ताते
नृप मुनिवर हूंनें कियो व्याघ्र गजरा
ज शार्दूल गज भागि गयो तुरत नागरा
को उरजानि॥जो विरच्यो मुनि रारसो
रह्यो परम सुख मानि॥२॥यों विचरा
त गजराज को बीति गयो कछु काल

सिंह गयो उहिं ठौर इक नाललखि ह्रो

नी॰ न बिहाल॥४॥पर्यो शरण मुनिराइ

की मन्त्र मतंगज जाइ॥नाललखि गज

मुनि वरहूंनें लीनो सिंह बनाइ॥५॥

मुनिवर विरच्यो सिंह लखि भयोसिं

ह बन जान॥ताहीसों भयभीत ह्वै च

लत चलन सकुचान॥६॥जोनिज न

प परभाव नें हरि विरच्यो मुनिराइ॥

वसत रह्यो मुनिराइ ढिग ताको गव

न भाइ॥७॥ताहीसों भयभीत ह्वै जो

बनके मृगठौर॥भागि गए तजिविप

नको मुनिपै कुरु शिरमोर॥८॥ता

नें कछुदिन पाइकै भूपभयो अभि

मान॥आयो ताके हनकोशरभएक

बलवान॥९॥योंलखि आवत ताहि

को रह्यो सिंह अकुलाइ॥वेगेकियो

मुनिवर इहूंनें ताछिन शरभ बनाय॥

१०॥ताकोलखि बनशरभ नृप भागि

गयो अकुलाइ॥जोविरच्यो मुनिराइ

सो रह्यो परम सुख पाइ॥११॥तातेंअ

तिउर पाइकै जोबनके मृगठौर॥भागि

गिए वनछोरिकें भूपति होरहिं दोर
२२॥ वोर वोर वन मृगन को शरभ भ
ये अभिमान॥कंदमूल फलखान न
हिं सत्यभूप जीय ज्ञान॥२३॥नृपरके
दिनता शरभको मिल्योन भोजन मा
स॥धायो तब मुनिराइको मारनकी क
रिआस॥२४॥यों विध ताकी कुटिलता
ज्ञानदीठ सों देखि॥मुनिवर ताको कह
तहैं भूपति वचन विशेष॥२५॥यों विध
ताकी कुटिलता लखि द्विजवर उहिंका
ल॥स्वान योनि अब होहु तूं यों कहि
दियो निकाल॥२६॥नृप मुनिवरके शा
पतें भयोशरभ तब स्वान॥भागि गयो
तजि विपनको मुनिवरतें भय मान ९
सोरठा॥तातें सभ अधिकार दीजें भूप
कुलीन को॥निकुल करत विकार।
ताको कवहूं न दीजि ये॥२८॥स
वैया॥भूप सुनो तुम यों विधसों मु
निराइ हूंनें वह स्वान बधायो॥स्वा
नको दीपि कियो पहिलें फुनि दी

नी॰ पिको मांस महामद छायो॥व्याघ्रको
फील किया अति प्रीतसों फीलको।
ता छिन सिंह बनायो॥ताते पराक्रमकि
यो अरु पारतवे मुनि ताहको मारना।
थायो॥१९॥जो नर धीरज बुद्धि पराक्र
म तेज सुग्यान सभै गुन जानै॥होइ।
बडो कुलवान जो मानव मेत्रनके स
म भाव पछानैं॥जानत देश विदेशकी
बातको जो नित भूपकी शासन मानै
ता नरको नृप मान वढारके काजपैव
ह भांतहिं ठानै॥२०॥दोहा॥कुलहीनहिं
वर्धत जहां नहिं भूपति पह नीत॥पुरु
ष पराधि वरधत जहां सोविलसत जा।
ग जीत॥२१॥उपकारी सत संगती छमा
वान मतिमान॥भूपति करै अमात्य जो
धरमी होइ सुजान॥२२॥पराधि बुद्धिम
वसाय बल गुण ताके अनुरूप॥का
रज सोंपै जाहि को सोबाछत नित भू
प॥२३॥जहां सिंहको काम है तहं को
रत जो श्वान॥श्वान दौर गोमाय कोसा

177

आपद नृप जान॥१६॥द्विरद मार हय प
र धैरै हयको अज पर देत॥मृग कहा
वत मृप सों आप आपदा लेत॥१७॥
जैसो होत अमात्य अरु सेवा संगती
जोइ॥तैसीगति भूपति लहै कबहूं औ
रनहोइ॥१८॥युधिष्ठिर उवाच॥कही तुम्है
बहु भांत यह राजनीत समुझाइ॥ताही
को एक तत्व करि कहो नाम स्वाव दाइ॥
भीष्मउवाच॥उग्र प्रकृति ऋजु प्रकृति
अरु निर्दय सदय सुभाइ॥समय समय
में धरतजो रहत सदा सुखपाइ॥२०॥
मोर अहिनको खातहै ज्योंगहि बहुर
गपत्त॥त्योंबहुरगगहि खलनन को
दंडै भूपति दत्त॥२१॥शास्त्रशास्त्र विधि
निपुण जो हय गज रोह प्रवीन॥जला
तरिवे में दक्षजो विप्र भक्तिमोह लीन
२०सफल हृत सम स्वजन पर करत र
है उपकार॥२२॥निज रक्षण को भूमिया
ति देतरहै निनचित॥देशकाल परख
त रहै कोवैरी कोमित्र॥२३॥मंत्रिन सो
मंत्रिन विना कारज करैन एक॥निज

दुर्जनमृगपक्षसमरहैसदामयकार ९

मतिकै अनुसार तिन समझि लेइ सा
नी॰ विवेक॥३३॥धर्म राखि भूपति करै सब
ह्रीके प्रिय कर्म॥रहत सदा वरधन कर
न धन दल विक्रम धर्म॥३४॥निर्लोभी
शिक्षित सबुधि धर्मशील पहिचान॥
सबकाजन थापित करै सत वक्ता अ
नुमानि॥३५॥दान धर्म अरु न्यायवि
धि सौंपे जाहि नरेश॥भलैं परखि लो
प्रथम फिरि परखत रहै हमेश॥३६॥
खव बातन मैं निज मनसों हूकिलेइ हङ्गा
न॥अधिकारी जोकाज के तिनके शो
न अशंत॥३७॥निजपीडा नृपमीनसों
कहतन भैसमु झाइ॥छुपत नहीं नृ
पमीनसों काहूको अन्याइ॥३८॥नि
शदिन जोसंग रहत है मोदत यथावि
धान॥नृप मन लाला चतुर गति सोई
सावधान आन॥३९॥याको अनुग्रह छु
पत नहीं मंत्र प्रकट नहिं होत॥सोभू
पति यश जय लहत प्रतिदिन वरधन
होत॥४०॥धन दल गढ गज तुरगब
न प्रजादेश सवहार॥आयुध अरु आ

178

मद खरच दान धरम उपचार॥४०॥ग्राम
द वरधन ग्रामजो सुधममय अनुरूप॥
मनलाये निरखन रहै विजय लहन सो
भूप॥४१॥पालि प्रजन को धेनु सम दो
है धन पयपूर॥ताँहि कोश सुपात्रमें।
नहीन निवसन क्रूर॥४२॥नाहि नहा पा
विवै सरुचि शासन शोच लगाइ॥धर्म
खिवै ववहार में प्रथम देर उपजाइ॥४३
जोनर मूरख लालची पाप करन अरु
धाम॥जोशत्रुन सोंमिलि रहै ताहिन सों
पै काम॥४४॥बाल वृद्ध बलहीन लखि
नजैन रिपुको त्रास॥नृप शत्रुन कै नाश
की करन रहै नित आस॥४५॥सदा बुद्धि
वर्धन करै बुद्धितें बाढत राज॥बुद्धितें
अरिगन त्रसत हैं बुद्धितें सुधरम साज
॥४६॥बुद्धि मान अवसार करि हरत विप
त जोर॥मति विद्या।अवसार करि ब
ली भूमि पनिहोर॥४७॥मति सुतजाके
सचिव हैं सोनृप बढत हमेश॥ताते।
परखि सुभाव मति मंत्री करै नरेश॥४८
तप बल विद्या धन बढत किये बुद्धि।

नी॰ 179

अवसाय। सभन्न धरत अव सायतें लै
कर बुद्धि सहाय॥५९॥जाहि कहत उद्यो
ग सभसौं नृप उद्यम जान॥पाप किये
सो होत नहिं कहत सभै मति मान॥५॰
लोक पास्त्र कुल रीतको करत उलंघ्या
न जोइ॥धर्म छूटत नित ताहिको महा
पातकी सोइ॥५१॥तातें भूपति दंड धरि
सभकछु करै नरेश॥दंड धेरें वर्धन न
हीं लोभादिक को लेश॥५२॥इतिश्रीम
हा भारते शांति पर्वणि राज धर्म भाषा
यां कविदेव दत्तानुज नंदराम त्मज शि
वराम तत्सुत त्रिलोचन विरचिते नीति
विनोदे अष्ट पष्ठितमो ध्यायः॥६८॥यु
धिष्ठिर उवाच॥सोरठा॥राज धर्म कुरु।
वीर कह्यो तुम्हें यह मौनसों॥अव का
हिये धरिधीर कौन दंड यह होतहै॥१
दोहा॥देव पितर मुनि गणहु में सोय
शु मनुजन मांहिं॥दंड सदा जो रहत।
है तात कहो अवताहि॥२॥राक्षस पच
पिशाच जो जगत चराचर ओर॥दंड स
बनिमें बसत सो कहिए कुरु शिरमौर

३॥राज धर्महू में कह्यो दंड तहों अ
धिकार॥सोसभ वाहन हों सुन्यो कहो
तात समुझाइ॥४॥कौन दंडयह होतहै
कौन दंडको रूप॥भयो कहांते दंडजोस
भेते कह्यो अनूप॥५॥कह्यो दंडगतिहे
तहै कौन दंडको सार॥कहो तात हमा
सों बडो सकल दंड ब्यवहार॥६॥वैश
पायन उवाच॥यों विध धर्म नरेशके ।
सुनि सुनि वचन उदार॥भीषम कह्यो
न लग्यो तहां सकल दंडब्यव हार॥जा
कै सकल अधीन है सोयह दंड अपा
र॥सुनिए धर्म नरेश तुम सकल दंड
ब्यवहार॥८॥दंड धर्मको मूलहै दंडमू
ल तिनिपाल॥९॥यहीदंड ब्यवहारको
जानहु सिगरोचार॥१०॥मन विगरै याहि
तें सोकरिए भुअ पाल॥यहपाछें मनु
राइने कह्यो दंड ब्यवहार॥दंड देत अप
राध सम जोभूपति भुअमांहि॥भलोर
चों सम समझिकै ताहि पाप कछु ।
नांहि॥११॥देवयाहि को कहतहैं वही ।
दंड नृप जान॥रूप तमोगुण याहिको ।

नी. वाढत अनल समान॥२१॥छप्पै॥धार
न जटा कलाप वदन है जिह्वा ज्वाला॥
लाल नयन अरु वदन लाल नित
मृग पति सम गाजत॥धारत सदा नि
त्य वर्म कांचन मय धौरै॥देत सबनि
को त्रास वचन नित क्रूर उचौरै॥यह दंड
रूप नृप कहत है मुनिजन वेदनमें स
भै॥देव दनुज अरु मनुज गण होत स
कल यातें अभै॥२२॥दोहा॥दंडरूप ना
मसों कह्यो यह भूपति मति मान॥क
हों सकल समुझाइ के अब ताके अ
भिधान॥२३॥खड्ग शक्ति मुद्गर गदा बा
न त्रिशूल शरास॥दंड परशु अरु भुशल
रूप तोमर चक्र सुपाश॥२४॥यह सिगरे
हथियार नृप धारत दंड उदार॥विचरत
धरणी तलहु में नेकुन मानत हार॥२५
छेदन मारन कटन नित वेदन फुनि भ
भरौर॥विचरत है भुअमें सदा दंड भूप
शिर मौर॥२६॥छप्पै॥भूमि गर्भ श्री गर्भ
विजै व्यवहार सनातन॥शास्ता अस्त्रा
ण मेव तेज अरु है पुरु मातन॥धर्मपा-

ल अरु देवसेव अछ्चर सतवक्ता॥निस्चच
लन अग्रज अमंग हद्र एत अनु रक्ता॥
शिव कर्मन अरु ज्येष्ट यष्ट दंड नामवा
ईशाहै॥सनकु युधिष्टिर भूप तम मुनि
जन वेदनमें कहे॥९॥छंद॥साधुजना
को करन रक्षण खलन मरदन जोइ॥भू
प दंडन देत जोनव डुष्टनि मर्दन सोइ॥
॥लोकपाल दिगीश शिव प्रभु विस्नुता
को नाम॥जगन्माता शिवलक्ष्मी दंडनी
ति महान॥१०॥देवमोत्त अमोत्त भयदा
म अभय संयम दादि॥नाम अगनित दं
डके हैं तीक्ष्ण मृदुता आदि॥दंडविधि
सों प्रजारक्षत भूमि पति धरिचेत॥दंड
प्रभुता करत वर्धन परम स्वधरम हेत
२०॥वर्ण आश्रम धरम वर्धत दंडतें सा
न भूप॥होततप व्रत दान मख समदां
ड जानि अनूप॥सहित स्वगण शक्रा
मृद लहि अन्न अतिशय देत॥प्राण र
क्षण जगतको है अन्न सत धरिचेत॥२१
दंडव्रत गहि प्रजापालन उचित प्रभुको
रोज॥दंड है ऐस्वर्य ईस्वर तेज दल वल

उेज॥तरग रथ हय पति जन अरु भारवा।
हक जोइ॥देश जन परदेश केजन और न
प सभकोइ॥२२॥गणक नेत्री कोशमेत्रीमि
त्रयास्य जोहोइ॥अंगपंद्रह भूपके यह म
ततहें मुनि लोइ॥दिय ईश्वर भूमिपतिको
दंड उत्तम धर्म॥पाप प्रकटत होतजातें क
रत वर्धन धर्म॥२३॥दंड प्रत्यय करत हैं।
व्यवहार आत्मक तात॥वेद अर्थ समाज।
सिगरे औरजो स्मृतिव्यात॥व्यवहार स्मृति
सोवेदहैं अरुवेद धर्महिं जान॥धर्म सोई
त४ सुभट स॰पथ्य नहीं अंतर मान॥२४॥वि
ना नृपके दंड भयनहिं धर्म निवहत
एक॥उचित तातें भूमिपतिको दंड धार।
ण टेक॥पिता माता बंधु भार्या सखास्व
न अरुजोइ॥धर्म त्यागै इनहिं दंडै होइभू।
पतिसोइ॥२५॥इतिश्री महाभारते शांति
पर्वणि राजधर्म भाषायां कविदेव दत्ता त्म
ज नेद रामात्मज शिवराम नत्सुत विलोच
न विरचिते नीति विनोदे एकोन सप्तति त
मो ध्यायः॥६९॥भीष्मउवाच॥दोहा॥स्या
र्थ इतिहास इक सतो पुरातन भूप॥अं

गरेशमें भूप इक भयो वसु होम अनू
प॥२॥सोनृप रानी साथलै गयो मेरु गि
रि मांहि॥वशकर इंद्रिय पांच तप ला
ग्यो करन उहि ठांहि॥३॥जपतप विद्या
वेद विधि पठन सुनन धरिज्ञान॥मुनि
जनकी सतसंगसों भयोदेवर्षि समान॥
॥३॥एक दिवस वसु होम ढिग ग्योमँ
धाता भूप॥है अधीन ठाढोभयो लखि
तप अद्भुत रूप॥४॥मांधाताको आवतो
लखि वसु होम उदार॥अर्घ पाद्य दे ता
हिको कियो बडो सतकार॥५॥कुशल
प्रश्न सभ पूछिकै ताको मान बढाइ॥भू
प भूप वसु होम तब कहन लग्यो इम
भाइ॥६॥आए हो किहिं हेत तुम साच
कहो महं राज॥दीजें मोहि बताइ कै
करों कौन तुम्रकाज॥७॥सुने वचन व मांधातानृपजो
सुहोम के मनमहिं आनंद पाइ॥८॥ कह्योसोसुनपां
डवराइ ॥८
धा॰ मांधाउवाच॥देव अचारज शुक्रतें राज
नीत सवहार॥मध्यो तुम्हें अति प्रीत
मो॰ सों ताकहो विचार॥९॥राजनीत कोम
लमभ इंउकहत है भूप॥कहो सकल र

समुझाइकै ताउत पति अरु नृप १· प्री
नी· न किए बसु होम सम सकल सुना
182 वो मोहि॥ देउ नीति मरजाद सम देहो
दक्षना तोहि॥२१॥ वैशंपायन उवाच
मंधाता के वचनयों सुनि बसुहोम
नरेश॥ कहन लग्यो अति प्रीतसों ह
रन ताहिको क्लेश॥२२॥ बसु होम उवा
च॥ सुनो भूप सम कहत हों जो तुम पू
छ्यो मोहि॥ देउ नृप उतपति अरु सक
ल सुनावों तोहि॥२३॥ प्रजा धर्म राख
न लिए चतुरानन इकु याग॥ करन ल
ग्यो अति प्रीतसों सुनहु भूप बडभाग
२४॥ तब ऋत्विज उहि यागमें लख्यो न
आप समान॥ यों कमला सन जानिकै
भयो नृप अंतर ध्यान॥२५॥ तब ब्रह्मा
कै सीसतें प्रकस्यो नरवर एक॥ सो ऋत्वि
विज उहि यागमें कियो विरंचि विवेक
२६॥ तब ब्रह्मा को याग नृप होन लग्यो
सविधान॥ जो प्रकटायो सीसते सो भयो
अंतर ध्यान॥२७॥ ताको अंतरध्यान लखि
चैयन भई हिरान॥ विन मर्याद भये सबै स

स्वरूप निज जान॥१८॥काज अकाज वि
चार तब रह्यो नांहिं जगमांहिं॥त्यौंहीगा
य्या गम्यजो देषि परत कहूं नांहिं॥१९॥
कियो लोप तब धर्मको मिलि सभश्रा
पस मांहिं॥जैसें बहु विध स्वान कहुं
मिलिकै आमिष खाहिं॥२०॥दुर्बलके
अभिमान नें मारत हैं बल वान॥निमि
जीर्द भयो तहां सभगा भयो हिरान॥२
१॥तब ब्रह्मा भयभीत ह्वै महादेव ढि
ग जाय॥करिपूजा फुनि नाहि की क
हन लग्यो समुझाइ॥२२॥वैशंपा यन
उवाच॥सवैया॥पीडित यें लखि लो
कन को चतुरानन शंभुसें जाइ पुका
र्यो॥देखहु क्षोभ भयो जगमें महदेव
न काहूं सें जात निवार्यो॥मारत हैं
जुरि दीनन को बलवान बडे सभदेश
उजार्यो॥तातें उपाइ करो अबहीं कछु
ज्यौं यह लोकन जाइ संहार्यो॥२३॥
दोहा॥यौंब्रह्माके वचन सुन त्र्योपि
व मेनरध्यान॥प्रकटायो निजदेह तें

नी·

१८३

दंड बड़ो बलवान॥२४॥दंडनीति फुनिदं
डतें करी प्रगट्ट महेश॥सोप्रति भई प्रसि
द्ध जग जानहु सत्य नरेश॥२५॥भूपति
श्रेत ध्यान नब भ्योशिव हूजी बेर॥मित्र
मित्र नब सबनिकै स्वामी कीनें हेर॥२६
देवनको स्वामी कियो दश शत नयनब
नाइ॥त्योंही पितरनको कियो धर्मराइ।
सुख दाइ॥२७॥राक्षस पिशाच यक्षधन
स्वामी कियो कुबेर॥जोहें परबत भूमिप
र तिनको पैल सुमेर॥२८॥कियो अधि
प जलराशिको नब उनि वरुण बनाइ
॥त्योंही सिगरे तेजको कियो अनल सुख
दाइ॥२९॥जोप्रकार शब्द हैं तिनको।
अधिप महेश॥महादेव हू नेकियो जा।
नहु सत्य नरेश॥३०॥विप्रनको स्वामी।
कियो नब वसिष्ठ मुनिराइ॥त्योंही आद
बसूनको रच्यो अगन सुखदाइ॥३१॥
सकल तेजस्वामी कियो भूपनहो दि
ननाथ॥सात बीस नक्षत्रको कियो अ
धिप निशिनाथ॥३२॥वसुहोमउवाच॥

न्३८

यौं मर्जादा बांधिकै महादेव उहिं ठौर
कीनो याग विरिंचिको सुनो भूप शि
रमौर॥३३॥जो ब्रह्माके सीसते प्रक
ट्यो दंड महान॥सोदीनो भगवान को
महादेव करि मान॥३४॥उनि दीनो श्रो
गिरसको श्रोगिरनें उहिं ठौहि॥लोका
पालहू नें लियो विचस्यो नव जगमा
हिं॥३३॥शिव स्वरूप यह दंडहै सुना
मांधाता भूप॥श्रोप्रजह्न ब्रह्मा हूंतें
ताको अदभुत रूप॥सत्व रजसतमस
न कहै ताके तीन प्रकार॥विचरतहै
यह जगत में बहु विध दंड अपार॥
३५॥यौंविध भूपति दंडहै आदमध्य
फुनि अंत॥यथायोग अपराध सम ग
धैरेभूप मति मंत॥३६॥भीष्म उवाच॥
यौंवस होमहू ने कह्यो सकल दंडको
भेद॥सुनि सुनावै याहिकैं हर होतस
मवेद॥३७॥वसुहोमउवाच॥यह भू
पति तुमसौं कह्यौ सकल दंड व्यव
हार॥धैरे भूप अपराध सम वाछत
धर्म अपार॥३८॥इतिश्री महाभार

ते षांतिपर्वणि राजधर्म भाषायां कवि
नी· देवदत्तानुज नंदरामात्मज शिवराम त
104 त्सुत त्रिलोचन विरचिते नीतिविनोदे
सप्तति तमो ध्यायः ॥ ७० ॥ युधिष्ठिर उ
वाच ॥ दोहा ॥ धर्म अर्थ अरु कामको ॥
निश्चय कहो बनाइ ॥ तान लोक अवरा
रसम कहां रहत सुख दाइ ॥ १ ॥ धर्म अ
र्थ अरु कामको मूल कहो तुम तात
॥ आपसमें यह मिलत हैं कहूं न्यारे है
जात ॥ २ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ यों भूप
ति के वचन सुनि कहन लग्यो कुरुवी
र ॥ जो तुम पूछ्यो सो कहौं सुनियें नृ
प धरि धीर ॥ ३ ॥ भीष्म उवाच ॥ दोहा ॥
स्वस्थ चित्त जब होत नर इनकै जानन
हेत ॥ तब अपने ही आपनें वमन रहें य
ह चेत ॥ ४ ॥ धर्म मूल है अर्थको अर्थ ।
मूल नृपकाम ॥ मूल सबनि को जानि ।
यें चित्त वृत्ति नपधाम ॥ ५ ॥ चित्त वृत्ति यह
होत है भूपति विषय अधीन ॥ सो तस्मा
इन सबनि को जानत लोक प्रवीन ६ ॥
कहौं एक इतिहास मे तुमसों इहां प्राची

ना॥अंगरिष्ट सों जो कह्यो मुनिकामं
द प्रवीन॥७॥एक समें कामंद मुनि वे
ठे आनंद पाइ॥करि प्रणाम नृप ताहि
को अंगरिष्ट शिर नाइ॥८॥अंगरिष्ट उ॥
वाच॥केवल काम प्रभावतें पाप करा
त नृप जोन॥कहु मुनिवर समुझाइके
सोपावत फल कोन॥९॥जोमानवा
अज्ञान तें पाप धर्म सम जानि॥करें
जहां जहां मुनिराइ जु ताको कहोनि
दान॥१०॥मुनिवर ऐसें पापको राजा
कोन उपाइ॥करें निवारन नीतिसों॥
कहो तात समुझाइ॥११॥कामंद उवा-
च॥धर्म अर्थको तजतजो मानत केव
ल काम॥बुद्धि हीननर होत सो यही॥
जात नयधाम॥१२॥धर्म अर्थ अरु बु॥
द्धिको मोह करत है नाश॥तातें नाश्नि
क होत जन कबहुं नमानत त्रास॥१३
जहं दुर्जन को जानिके भूपति दंडन दे
त॥प्रजाहोत भय भीत तहं ज्यों अहिय
त निकेत॥१४॥ऐसे नृपको जानिके
विप्र साधुजन जोइ॥मानतनहं नहिं प्री

तसों ग्रोर प्रजा सभको॥१६॥लखिम
नी. जौपै हीन तव होत जगत भयभीत॥
तव मुनि जन सभ कहत हैं भूपतिको
यह नीत॥१७॥करै करावै प्रीतसों वेद
नको अभ्यास॥विप्रन के सतकार तें।
होत पापको नास॥दान धर्म करि क
रि यवनें अरु विप्रनकी सेव॥पापहोत
है हर नित करि गुरुजन की सेव॥१८
जोजो जन धर्मज्ञ हैं उनको अपने दे
श॥आनि बसावै प्रीतसों हर होत स
भक्लेश॥१९॥जोजो दुर्जन बसतहैं।
दीजै तुरत निकार॥~~द्विज देवनकोमा~~
~~निपं करि उनके सतकार~~॥द्विज देवन
को मानियं करि उनके सतकार॥२०
नृप ऐसें उपचार तें पाप होत सभ हर
नाशहोत अज्ञान को बढत ज्ञानकोप्र
श॥२१॥जो नृप गुरुजन कहतहैं सक
लधर्मको सार॥करियं ताको प्रीतसों
ताकछु होत विकार॥२२॥इतिश्रीम २८
हाभारते शांति पर्वणि राजधर्मभा
षायां कविदेव दत्तात्मज नेदरामात्मज

1865

शिवराम तनय तु त्रिलोचन विरचिते
नीति विनोदे एक समति नमो ध्यायः
२१॥युधिष्ठिर उवाच॥दोहा॥लोक स
ग हत हैं सभ नृप को धर्म स्वभाइ॥क
हा किए सो होत है कहो तात समुझा
इ॥१॥भीष्म उवाच॥चौपई॥नृप तत्र
राज सूय मख मांहि॥गयो सुयोधन
देखन चाहि॥तत्र प्रताप लखि क्रो
ध बढावत॥निज पुर ग्राइ बडो पछु
तावत॥२॥शकुनि दुशासन कर्ण स
मेत॥बैठि जनक ढिग बिलखत चे
त॥निज अमर्ष कारण उहि जाइ॥क
ह्यो तात सो सभ समुझाइ॥३॥दोहा
कहन लग्यो धृतराष्ट्र जो सुनि निज
सुत के बैन॥कर्ण दुशासन सुनत
ही सोसुनिए धरि चैन॥४॥धृतराष्ट्र
उवाच॥कोंहू शोकन की जिए सुा
न मनमें पछुताइ॥जो तमसों में क
हतहों सो सुनिए चितलाइ॥५॥चौ
पई॥संपद यह है एन तिहारी॥सक
ल भ्रात हैं आज्ञा कारी॥संबंधी अरु

नी· मीत सुजान॥मानत हैं सभतेरी आन॥
भूषन वसन लेवै नम धरहो॥भातभात
तिन भोजन करहो॥जोहैं पश्चिम दिशा
के होरा॥सो वन तमरे रथ महिं जोरो॥७॥
186 तुम्र अधीन सभराज हमारो॥कों अव
पावन हो दुख भारो॥कारण सकल क
हो समुझाई॥जातें तुम्र मनईराव आई
८॥दोहा॥यौंविध ताके वचन सुनि क
हन सुयोधन राइ॥कारण अपने शोक
को भूपतिसों समुझाइ॥९॥दुर्योधनउ
वाच॥भूप युधिष्ठिर गेहमें दश हजार
द्विजराइ॥दिन दिन भोजन करतहैं स्वर्ण
पात्र महिंपाइ॥१०॥सभा युधिष्ठिर राय
की लविफल मूल समेत॥औरै नाना
रंगके भूषन वसन निकेत॥११॥पांडु सु
तनकी संपदा नृप कुवेर समजान॥शो
चन हों दुख पाइकै मोमन होत हिरा
न॥१२॥वैशंपायन उवाच॥यों सुनिको
धृतराष्ट्र नृप दुर्योधन के बैन॥ताहीको
समुझावन फुनि कहन लग्यो धरि चैन॥
धृतराष्ट्र उवाच॥जोचाहो सुत संपदा॥

पांडव नृप समान॥नवतम शरल स्वा
भाव निज गावहु सुत मतिमान॥५४॥सु
न सुत शरल सुभाव तें तीन लोक वश
होइ॥जो नृप शरल सुभाव है ताके वश
सम कोइ॥५५॥मांधाता एक दिवस में ज
नमेजय दिन तीन॥सात दिवस मे भा
ग नृप भए भूमि पति पीन॥५६॥ तीन
हिं निज यश गुणाइतें भए भूमि पति
भूप॥इन तिग गुण वश होइ कै आई
धरणि अनूप॥५७॥चौपई॥सेन सहित
इन्ह सम दिश भूमा॥वश करि लीनी सि
गरी भूमा॥५८॥सो आचरण गहो सुत
आजा॥ताते बाढहिं गो तव राजा॥दु
र्योधन उवाच॥कौन करी वचन शील
सुघदाई॥कहो तात हमसों समझाई
जाहि किए तें सिगरी मही॥पाव मिल
निजो तुमही कही॥५९॥धृतराष्ट्र उवाच॥
सो एरव इतिहास एक सुनिए सुत मा
चीन॥शील सराहत जो कह्यो मुनि ना
रद परवीन॥६०॥नव वासव करजोरि

कै गयो बृहस्पति पास॥ह्वै अधीन नव
नी. कहत है एरो हमरी आस॥२१॥नवगुरु
देवाहूंने कियो वासवको उप देश॥गुरु
१८७ ज्ञान समुझाइकै मानी नाहि निदेश॥२२
सुनि वचन गुरु देवके वासव हमरि वेर
कहु विशेष यों कहतहै ज्ञान भेद कछु
फेर॥२३॥यों सुनि कैके प्रश्नके वच
चन नहांगुरु देव॥कहन लग्यो फुनि ता
हिसों सकल ज्ञानको भेव॥२४॥बृहस्प
तिरुवाच॥पूछुन होतुम मोहूसों जोक
छु ज्ञान विसेख॥सो भार्गव ढिगजाइकै
पूछहु सकल सुरेश॥२५॥नव भार्गव ढि
ग जाइकै ज्ञान भेदसब पून॥ह्वै अधीन
कर जोरिकै पूछतहै प्रश्न॥२६॥सुने
वचन प्रश्नके नव भार्गव करिप्रीत॥
॥कहन लग्यो नृप ताहिसों सकलज्ञान
की रीत॥२७॥जानतहै प्रहलाद सब जो
कछु ज्ञान विशेष॥सुना सीर तुम याहिते
पूछहु जाइ अशेष॥२८॥यों सुनि वास
व नृप धरि दैत्यराज ढिग जाइ॥ह्वै अधी

न तब कर्तहै दीजें ज्ञान बताइ॥२९॥
चाहतहैं तुमसों सुन्यो सकल ज्ञानको
सार॥दीजें दिति तब ताइकै तुंसभ ज्ञान
न हार॥३०॥दैत्य राज तब कहत है सुनि
द्विज वरके बैन॥अब हमरो अवकाश न
हिं तोहि सुनावों मैंन॥३१॥तीन लोक।
कै राजको है हमको अवकाश॥तातैंज्ञा
तन कहि सकों मैं तुमसों तप धाम॥३२
दिति सुतसों यों कहत है ताहि समें द्वि
जराज॥जब तब अवसर होइगो तबका
हिये सह राज॥३३॥द्वै प्रसन्न प्रह्लादत
ब द्विजको मान बढाइ॥सकल ज्ञाना
को सार तब दीनो ताहि बताइ॥३४॥चौ
पई॥दैत्य राजको गुरु सम जानि॥तबहि
ज कहन लग्यो इह वानि॥कहा कियं त
मद्दू महराज॥पायो तीन भुवनको राज
॥३५॥दोहा॥दैत्य राज तब कहत है सुनि
द्विज वरकी बात॥जो मंगल मय कहत।
है ताको ज्ञान बखान॥३६॥प्रह्लादउवा
च॥कबहूं मैंनहिं करतहों विप्रन को।
अपमान॥सुनि सुनि उनके वचन नि।

न धारत हौं मन त्रान॥३॥ अरिल्लछंद॥४
नी॰ द्विजहिं क्रोधत [illegible] करत नहिं हम रह
न मोहत नित॥ काम्यकर्त्ता विप्र केऽति
ग बसत हमरे चित्त॥ विप्र वचन सभा
वतैं ऐश्वर्य वर्धत परम॥ विप्र पूजन प्र
जा पालन नृपति श्रेयद धर्म॥४९॥ दो
१८८ हा॥ विप्रनको मत मानिकै करहो सि
गरे काज॥ तातें सबतें अधिक हो ज्यों
उडुगन उडु राज॥५०॥ परम धर्म नृपके
कह्यो विप्रन को मत कार॥ जो भूपति नि
त करत है ताहि न होत विकार॥५१॥ यों
विधसों समझाइकै द्विजवर को उहिं दौ
र॥ दैत्यराज तब कहत है सुनिये कुरु
सिर मौर॥५२॥ प्रह्लाद उवाच॥ सोरठा
जो द्विजवर वरदान चाहत हो सो देत
हौं॥ कियो तुम्हें अतिमान गुरु समान
मुहि जानिकै॥५३॥ ब्राह्मण उवाच॥ दो
हा॥ देहु आपनो शील जो देत हौ तौ व
हो वर दान॥ यौं पंकिन सुनिकै भये
दैत्यराज मति मान॥५४॥ हरी एक रु
प है रह्यो कह्यो नयासु विचारि॥

॥गयो शक्र निज सदनको अपनोका
ज सवार॥४५॥चौपई॥दैत्यराज करिनि
ह वल लोचन॥लग्यो विप्रको कारज
शोचन॥नाछिन दिति जगतको त्या
ग॥चल्यो शील द्विजवर ढिग भाग॥
४६॥दोहा॥मूर्त्तिमान निज शील लखि
कहन लग्यो दैत्येश॥प्रकट भयो तूं कौन
इत जान चहत कोदेश॥४७॥कह्यो शील
तुम शीलहों सुनिए दानव राज॥दियोत
म्हें द्विजवर हूंको जावों ताढिग आज॥४८
सोरठा॥यों कहि अंतर्ध्यान भयो शील
महात्मको॥सम्भूप जियजान गयो तुरत
सुर नार ढिग॥४९॥तवनिकस्यो इक औ
र दैत्य राजके देहतें॥ताहि दनुज शिरमो
र पूछत है तुम कौन हो॥५०॥धर्म सत्य
वल हत छोरि चले दैतेशको॥तव सत।
ताको चित्त डोल्यो उनको गमन लखि।
५१॥कहन लग्यो दैतेश कँहा चले तजि
मोहुको॥पावन हों अतिक्लेश ह्यांतेंतु
मरो गमन लखि॥५२॥तव चारो करजो
रि कहन लगे दैतेशको॥जावो तुमको

छोरि जहांगयो तुम्रपील तृपा॥५३॥सुत
नी· कमला उहिं वेर छोरि चली दैत्येश को॥
दितिज नाहिको हेर कहां चली यों कहत
189 तहै॥५४॥तव कमला करजोरि कहन ला
गी प्रह्लाद को॥जावों तुमको छोरि गयशी
ल वल हूत जहै॥५५॥भयो वडो भयभीत
यों सुनिकै प्रह्लाद तव॥फुनि पूछत करि
प्रीत कहां चली तजि मोहुको॥५६॥लक्ष्मी
रुवाच॥साच कहों दैतेश तुम्र छिग मैं चि
रकाल रहि॥भयो आजु अति क्लेश कियो
त्याग हमरो तुमैं॥५७॥यों सुनिकै प्रह्लाद
कमलाको पूछत लग्यो॥सोमन भयो वि
षाद कौनहुतो यह विप्रवर॥५८॥वामवरि
पुके वैन सुनिसागर तनया कह्यो॥सुनहु
दनुज हरिचैन इंद्रहुतो यह विप्रवर॥५९॥
तुमरो सभ परताप छलकरिकै उन हरिलि
यो॥जानत हो तुम आप कारण सभको णी
लहै॥६०॥तुमरो मधुर सुभाव मांगिलियो उ
नि छल किंप॥तासंग दानव राइ धर्म सर
वल हूजगए॥धर्म सम वलहून यह समहे।
वश पीलके॥सुनहु धनुज धरि चित्तमें उ।

नकै संगरहौं सदा॥६२॥भीष्म उवाच॥दोहा
यौं कहि सागर कन्यका गई दनुजकी ओ
रि॥धर्म सत्य बल हन संगकबहूं सुरेनमो
रि॥६३॥यौंसुनि कौरव भूपके वचन सुयो
धन राइ॥पूछत है फुनिताहि को सभनि
सुनत इम भाइ॥६४॥दुर्योधन उवाच॥सोर
ठा॥कहु हमसौं तुमतात जोकछु तव सु
भावको॥सूतौहै तुअगात नहिं विश्वास
कछु देहको॥६५॥यातें मधुर स्वभाव होइ
न जगतमें मनुज कौं॥ताको कहो उपाइ
चाहत हौं मैं सभ सुन्यौ॥६६॥दोहा॥जोस
ह्लादहुंनें कह्यो याके शील उपाइ॥सोतु
मसौं संक्षेप नें कहौं सुत समुझाइ॥६७॥
धृतराष्ट्र उवाच॥मनवाणी अरुकर्म सों स
न सभ जीवन मांहि॥जोनृप करुणा करत
सभ शील सराहत ताहि॥६८॥रैयत पाल
न करतहै ज्यों सुतनको वाप॥अभय देत
सभ जियन को ताको वढत प्रताप॥६९॥
सकलशील कोमूल तुंसुत यही जियजा
न॥रैयतकी नित पालना द्विजगुरु सना
को मान॥७०॥धृतराष्ट्र उवाच॥यौंविध सों
सुने जानिके राष्ट्र मधुर स्वभाव॥जोतु

नी॰

190

म धर्म नरेश तें वाहो अधिक प्रभाव॥७१॥भी
ष्म उवाच॥इहिं प्रकार धृतराष्ट्र नृप कियो-
यो शील आख्यान॥ताको पावहु पुन मना-
पावहुगे बहु मान॥७२॥इतिश्री महाभारते
शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां कवि देवदत्ता
त्मज नंदरामात्मज शिवराम तत्सुत त्रिलोच
न विरचिते नीति विनोदे द्विसप्तति तमोध्या
यः॥७२॥युधिष्ठिर उवाच॥दोहा॥करि करु-
णा मोपै तुम्हें कियो शील आख्यान॥अब
आशा उतपति तुम कहो ज्ञानमति मान॥
॥१॥संशय मोमन होतहै लखि आशाव्या-
वहार॥तासमान कोउ औरनहिं ताको जा
नन हार॥२॥यह आशा हमको रही भूप-
सुयोधन मांहि॥कबहूं युद्ध करत यह-
सोउनि पूरी नांहिं॥आशा सबको होतहै
है सबतें बलवान॥जो निराश जगमें भयो-
ताको विद महान॥४॥दुर्योधन अभिमा
न करि हमसब किए निरास॥ताहीके अ
पराधसें इनमहिं भयो विनाश॥५॥आसा
सबतें अधिकहै तासें अधिकन और॥आ-
शाकी उतपत सब कहिंपं [illegible] कुरु सि
रमोर॥६॥योंसुनि वचन नरेशके नहंध

में कुरुवीर॥आशाकी उतपन्न सब कह
नलग्यो धरिधीर॥७॥भीष्मउवाच॥हंगौत
मसों नृप कहतहों इतिहास प्राचीन॥४
जोसुमित्र नृपसों भयो मुनिवर ऋषभ-
म प्रवीन॥८॥हैहै वंश नरेश इक भ्यो-
सुमित्र अभिधान॥सोइक दिन वनमा-
हिं गयो लैकर धनुष कृपान॥९॥जाइ
तहां उनिघार तज्यो मृग मारनकै हेत॥
ताहि लगनही मृग भज्यो ताके बान-
समेत॥१०॥भागत मृगको देषिकै नृप-
सुमित्र अभिधान॥पाछें दौर्‍यो ताहि-
कै जोरि धनुष महिं बान॥११॥कहूं के
हूं छपिजात मृग कबहूं होत प्रकाश
तापाछें भूपति गयो करि मारनकी आ
स॥१२॥फुनिभाग्यो अति वेगसों मृग-
उहिं विपन मंझार॥तब नृप दौर्‍यो वे-
गतें छोरत बान अपार॥१३॥घायल ह्वै
अति पीरतें स्थिरभयो मृगराज॥तज्यो-
बान इक और नृप ताके मारन काज॥
गिर्‍यो बान वह भूमिपर लग्योन मृगके
गात॥दौर्‍यो पीछें ताहिके नृप सुमित्र

पहुंचान॥१५॥गिरो बान जब भूमिपर॥
नी- तबराजा अकुलाइ॥गयो जहां मृग भाजि
कै चल्यो तहां दुःखपाइ॥१६॥छोरिगयो
मृग भूपको नृप पाछे है कोश॥लखिसु
191 मित्र दौर्यो तबै मनमहिं धारत रोस॥१७
जाइ विपन महिं दूर अति मृगनहिं देख्यो
भूप॥देख्यो आश्रम ऋषिनको अतिरम
णीय अनूप॥१८॥उतरि तुरगतें ऋषिना
कों करिप्रणाम छिति पाल॥यथायोगा
सनकार लहि बैठो सुमति विशाल॥१९
सुनि नृपको पूछन लगे देशवंश अरुना
म॥सो सुनिके उनि सबनिको कह्यो भूप
मति मान॥२०॥हैहैय वंश नरेश मैं हों
सुमित्र अभिधान॥विचरत हों मृगबधक
रत धारि धनुष अरु बान॥२१॥वेध्यो मृगा
इक बानसों गयो दूर तब भाज॥मैं फुनि
पाछे ताहिकै दौर्यो मारनकाज॥२२॥
मृग बधकी आशा करत मैं दौर्यो तासं
ग॥भागि गयो मृग वेगतें भई आश अब
भंग॥२३॥मृग पीछें आशा किए भ्रमत
भयो अति खेद॥तातें पाछें पूछनेहों त्व

हैं आशाको सब भेद॥४४॥चौपाई॥मुनि
वर याते बिदन डेर॥भ्रमत रह्यो मैं ठौर
हिं ठौर॥मृग मारनकी करिके आश॥
आयो नग्र छिधा होइ निराश॥४३॥दोहा
राज नगर के त्यागते जैसो बिदन होइ
भाग्त मृगको जानि के खेदभयो हैजो
३॥४५॥मेरु महोदधि गगनको जैसेंमि
लत न अंत॥सोंही आशा प्रबल है जा
नी परत डरंत॥४६॥जानत हो सब कछु
भले तुम सर्वज्ञ सुजान॥क्योंकरि आ
शा होत है ताको करो बखान॥आशा
अरु आकाश को जानो इहुंनि समान
इनमें कोन बडो कह्यो सोकहिए मति
मान॥४७॥ताते आशा भेदको कहो स
कल बिरतांत॥यों सुनि नृप सों कहत
है ऋषभ नाम मुनि दांत॥४८॥ऋषभ
उवाच॥तीरथ यात्राकरन में गयो बद
रि बन माहिं॥नानारायण तपकरन।
बैठे हैं जिहिं ठांहि॥४९॥हयग्रीव मुनि
वर तहां पढत रहत निज वेद॥जानरु
बिचरत प्रीतसों ताको होतन खेद॥५०॥
नहे सुरसरिता सलिलमें कीनो हमेंस

नान॥ संध्यो पासन करि भलें पितरन को ।
नी· जल दान॥२१॥ करि पूजन महदेव को मैं बै-
सो धरि ध्यान॥ आवत देख्यो हरतें त
192 व मुनि तनु अभिधान॥२२॥ अतिकृश ता
को देह लखि मैं भ्यो अति भयभीन॥ करि ।
प्रणाम पुनि ताहिको खरो भयो करिभी
न॥२३॥ जब अपने आसन हूमें बैसो मु ।
नि धिरमोर॥ नाम गोतमें आपनो कह्यो
सकल उहिं ठौर॥२४॥ तातें तनु मुनिवरन
हों कहन लग्यो बहुगाथ॥ भूप पुरानेन नृ
पनकी धर्म अर्थके साथ॥२५॥ कथा क
हतहीं ताहिके निज सुत खोजन हेत॥ वी
र द्युम्न भूपति तहां आयो सैन समेत॥२६
॥ यो हमरो सुत होइगो यों विध करत वि ।
चार॥ बांध्यो आशा बंधसों भूपति भूप उदा
र॥२७॥ यों विधताके वचन सुनि मुनिवर
तनु अभिधान॥ छिक घरी बोल्यो नहीं भ्यो
राजै धरि ध्यान॥२८॥ ध्यान युक्त लखि ता
हिको भ्यो बिलषत मन भूप॥ मंद मंद मु
निवरहूं सों बोलत वचन अनूप॥२९॥ १
वीर द्युम्न उवाच॥ मुनिवर दुर्लभ जगतमें
जो आशातें और॥ ताहि कहो समुझाइकें

तम हमसों रहिहं दोर॥५०॥यों विध नृपके
वचन तहं सुनि मुनि तन अभिमान॥का
हन लग्यो तब नाहिसों रावन ताकोमा
न॥५१॥मुनिरुवाच॥याहि नृप तुम सुत
इनें मुनिवर को अपमान॥कीनो बाल
कभावतें मन्म भूप जिय जान॥५२॥मांग्यो
कलश सुवर्णको मुनिवरनें तुम्र बाल।
नहिं दीनों उनिकोपतें ताते भयोबिहा
ल॥५३॥वीर युम्न सुनिके तहां तनुमु
निवरके वैन॥ह्वै निराम अतिही तहांथ
रतन चित महिं चैन॥करि प्रणाम मुनि
वर इंको वैसो नृप धरिध्यान॥अर्घ पा
द्य दे भूपको मुनिवर कीनो मान॥५४॥
शिष्य सकल मुनिवर इंके वैटे नृपति
ग जाइ॥मान ऋषी ज्यों ध्रुव निकट वैठि
रहें सुखपाइ॥५५॥भूपति कोपूछन
लगे एकन ह्वै तपधाम॥किहि कारण
आए रहा कहो भूप निजकाम॥५६॥इ
ति श्री महा भारते शांति पर्वणि राजध
र्मे भाषायां कविदेव दत्तानुज नंदरामा
त्मज शिवराम तनूज त्रिलोचन विर
चिते नीति विनोदे त्रिशततमो ध्याय।

नी॰ 193

राजोवाच॥ मुनिवर मोकहं जान वीरद्युम्न परसिद्ध नृप॥ भूरि द्युम्न अभिधान लसम यो हमरो तनय॥१॥ताके खोजन हेत आयो हौंमें विपन महिं॥ फिरि फिरि भयो अचेत सो मुहि दीखत परत है॥२॥सुनि भूपति के बैन मुनिवर नीचो बदन करि॥ दीपक धरि चैन नहिं बोल्यो कछु भूप सों॥३॥दोहा॥ जब मुनिवर चुपहै रह्यो पूछन लग्यो नरेश॥ है अधीन कर जोरिकै धारत मनमहिं कलेश॥४॥ जो नर आशावंत है तातें कृश नहिं कोइ॥ कहु मुनिवर समुझाइकै ज्यों आशा नहिं होइ॥५॥ यों भूपतिके वचन सुनि मुनिवर करत विचार॥ कहन लग्यो सभ नाहि सों जो आशा को सार॥६॥ मुनिरुवाच॥ भूपति कृश नाहिं जगतमें आशातें कछु और॥ आशावश नर होइकै भ्रमत रहत सभ ठौर॥७॥ सकल भाव समुझ्यो हमें सुनि मुनिवर तव बैन॥ कृश अरु केशांग पछानिकै। पायो मन महिं चैन॥८॥ तदपि रकुसे। शय रह्यो मुनिवर मो मन माहिं॥ तातें कहु समुझाइकै सकल भेद अब नाहिं॥९

धीर धरत नहिं मोहको तुमसों कृशको

ऊ और॥ अथवा कोऊ है जगतमें सो कहु

मुनि धिर मोर॥२०॥ मुनिरुवाच॥ जो जन

अरथी होइके धारत मनमहिं धीर॥ ता

तें और दुर्लभ नहीं साच कहों नरवीर॥

जो अर्थीको जानिके करत नहीं अपमा

न॥ तातें नहिं दुर्लभकोउ सत्य भूप जि

य जान॥२२॥ मैं तुमको यह देत हों योंक

हि देत न जोइ॥ जो आशा तामहिं बसे सो

मोसों कृश होइ॥२३॥ जो कृतघ्न में बस

तहै चुगल खोर महिं जोइ॥ जो आशा अ

पकार में मोसों कृश है सोइ॥२४॥ जाकें

जगमें एक सुत भागि जाइ कहुं आन

आशा ताके तातकी सोहम सों कृश जा

न॥२५॥ यों मुनिवर के बचन सुनि नृप

नव सेन समेत॥ करि प्रणाम मुनि राइ

को कहन लग्यो करि हेत॥२६॥ राजो

वाच॥ शासन दीजें मोहुको जाकें अप

ने गेह॥ शासन दीजें मोहुकों जाकें अ

पने गेह॥ चाहत हों सुतसों मिल्यो अब

दीजें वर एह॥२७॥ करि प्रणाम मुनिव

र हुके कहन लग्यो करजोरि॥ हर भई

नी-

१९४

तस्य वचन सुनि जो निदिन मति मोरि॥१९
तब मुनि तपप्रभावतें भूरिद्युम्न सुत नाम
॥करि आकर्षण मंत्रतें आन्यो भूपति पा
स॥१९॥लहि सुत भूपति मुदित है गयो
आपने धाम॥मुनिवरके परसादतें भए स
पूरन काम॥२०॥भीष्म उवाच॥नृप सुमित्र
सुनि ऋषभके सुनि सुनि वचन प्रकाश
आशा कृश करि निज भवन आयो धरतहु
लास॥२१॥त्योंही धर्म नरेश तुं सुनि हमरेय
हबैन॥है प्रसन्न निश्चल रहो धरि अपने
मन चैन॥२२॥कह्यो हमारो सुनत हो इक्षु
तहो सम भेद॥सुनि हमरे यह वचन नृप
ने कान मानो खेद॥२३॥इतिश्री महाभार
ते शांति पर्वणि राजधर्म भाषायां कविदा
व दत्तात्मज नंदरामात्मज शिवराम तनया
तु त्रिलोचन विरचिते नीति विनोदे चतुः
समति तमो ध्यायः॥७४॥सोरठा॥धर्म
सिंधुको दोन सुनि सुवचन तप्रयम
तसम॥सो मन तमन होत तातें कहि
ये और कछु॥१॥यों भूपतिके वैन सरस
रिनाको एत सुनि॥कहन लग्यो धरि वै
न धर्मनृपतिसों और कछु॥२॥भीष्मउ

वाच॥दोहा॥ह्यांभूपति त्नमसों कहैं इती॥
हास प्राचीन॥योगौत्नम मुनिवरहु ने ध॥
र्मराइ सौं कीन॥३॥पारिजात गिरिवरहू में गौ
त्नम विप्र उदार॥कीनो तप अति प्रीत सौं॥
वत्सर साठ हजार॥४॥यौंमुनि वरकों जा
निनृप लोकपाल यमराज॥आयो है अति॥
प्रीतसौं ताके देखन काज॥५॥लखि आ॥
वत यमराज को गौत्नम बुद्धि प्रवीन॥एवरो
भयो कर जोरिकै ह्वै तवताहि अधीन॥६॥
धर्मराज तब ताहिकों जानिवड़ो तपधाम
पूछत है अति प्रीतसौं कहौ कौन तुम्रकाम॥७॥सुने वचन यम राजके तब गौत
म मुनिराइ॥कहन लग्यो अति प्रीतसौंभू
प बड़ो सुख पाइ॥८॥गौत्नम उवाच॥कैंा
करि जननी तातसौं अनृण होत मनिम॥
मानु॥कौन कर्म करि लहतहै उत्नम लो
कमहान॥९॥यमउवाच॥जपतप विद्या॥
वेद पढि सत्यधर्म रतहोइ॥दिन दिनमा
ता तातको पूजतहै नरजोइ॥१०॥यतदा
न तप प्रीतसौं देत दक्षना जोइ॥पितरा॥
ण को ऋण हरि करि शुभगति पावत॥
सोइ॥११॥सोरठा॥योंगौत्नम मुनिराइ ध
र्मरायके वचन सुनि॥रह्यो परम सुख

पाइ हैक वरी तुप है रह्यो॥१॥युधिष्ठिर उवा
च॥जो नृप आपद पाइ होत तीण धनसोइ॥
नी. नृप॥सो करि कौन उपाइ लहै राज्यधन धर्म
अरु॥२॥बंधुहीन नृपजोइ अथवा बंधुबने
195 नहीं॥तीण कोणजो होइ सोसेना विन होत
नृप॥३॥करिहैं कुटिल विचार कुटिल सचि
वहैं जाहिके॥सोनृप कौन प्रकार राजकरै।
सो कहु सकल॥४॥छूटै जाको राज प्रबल
शत्रुहैं जाहि के॥करै कौनसो काज कहोतात
समुझाइकै॥५॥भीष्मउवाच॥गुह्यधर्म यह।
जान जोतुम पूछ्यो मोहुसों॥सोचकहो मति
मान विनपूछे नहिं कहतहो॥६॥आपदमें
नृप प्रजनसों करावै धन समुदाइ॥ताकोदो
षन होत कछु रहतपरम सुखपाइ॥७॥रेय
तैपै करुणा किएं बसै विपन महिं जाइ॥सो
नृप मृतक समानहै रहत परम दुख पाइ॥
॥८॥राज प्रबल अरि करत जब धनहरि दु
दै खि भूरि॥तातें आपुहिं करावि धन रहै अचा
ल बल पूरि॥९॥सधन प्रजानहिं नृपनको
रावत कुरु सिरमौर॥भूपसधन रहि प्रजन
को रावतहै बहुठौर॥१०॥सारंग छंदः॥ज्यों।
यत्तमें छाग आदीक जंतून॥कोघात कीनें।
नहीं होतभी ऊन॥कीनें विनाहोतहै यत्त।

सो मूल॥कीनें लसै यज्ञको अर्थहि हून॥
२१॥दोहा॥त्योंही धनलै प्रजनसों बाढत स
दा नरेश॥ह्वै आपद बश राज तजि सोनृप
पावत क्लेश॥२२॥करि अधर्म आपद हुंमें।
रैयतसों धन लेइ॥हूर होइ यब आपदा तव
उनको फुनि देइ॥२३॥थोरो करलैवे तहां दे
इ दलामा भूप॥मानकरै नित प्रजन को क
हि कहि वचन अनूप॥२५॥यज्ञ दान करि।
समय लहि हूर करै सभपाप॥थोरो करलै
प्रजनके मनको मेटै ताप॥२६॥जोजो ग्राम
प्रधान जन उनको पास बुलाइ॥असन वा
सनदै सबनिको चरमहिं देइ पटाइ॥२७॥
सैन सकल निज साथलै फिरि फिरि दौर
हिं दौर॥भूपति अपनै राजमें करै सबनि।
की गौर॥२८॥धन लैवे नृप प्रजन तें विप्र
तपस्वी छोरि॥हूरहोइ जब आपदा देइ
सबनिको मोरि॥२९॥सोरठा॥रैयत राख
न हेत जो अधर्म सों लेत धन॥सुनहु भू
प धरि चित तानृपको कछु दोष नहिं॥३-
दोहा॥रैयत रछा कीजिए यही धर्मको।
सार॥करैन भूपति विपदमें धर्म अधर्म।
विचार॥३१॥राजरहै तें सभ रहैं विनाराज
कछु नांहि॥तातें धर्म अधर्म भय नहिंमा

नै मनमाहिं॥३२॥एक मनुजमें होत नहिंध
नी. न सिंचन धनत्याग॥त्योंही होतन विपना
मैं द्रव्य वान बड्भाग॥३३॥देखि परतजो य
196 हांमैं मनुजनको धन गूढ॥मेरोमेरो कर
न निज अपनो जानकै मूढ॥३४॥और धर्म
जगमें बड़ो नहिं कछु राज समान॥सोया
परमें होत नहिं सत्य भूप जिय जान॥३५
कोऊ करत नप दाननें धन सिंचन जगमा
हिं॥कोऊ कर्म अरु बुद्धिनें करत रहत धन
चाहि॥३६॥सोरठा॥जोनर है धनहीन ताको
सब दुर्बल कहैं॥सुनिए भूप प्रवीन पुष्ट
कहैं धनवान को॥३७॥जोनर हैं धनवान
ताको सब कछु मिलत है॥सुनत भूपम
ति मान काज सरत सब जाहिके॥३८॥दो
हा॥कोपहूं नें यह होत है धर्मकाम परा
लोक॥ताको सिंचन कीजिए धर्महूं नें म
तिओक ३९॥यहनर सरसुति सों रच्यो रा
ज धर्म कविदास॥सुनै सुनावै याहिकै म
न महिं होत हुलास॥४०॥रच्योग्रंथ यहा
मीतसों राजधर्म अनुसार॥शब्द अर्थकी
भूल कछु कविजन लेहु सम्हार॥४१॥जो
अपनी जड़ताहूंनें मैंभूल्यो कछुं ठौर॥ता
को दोषन दीजिए मोकहूं बुध सिरमौर ४२

संवत विक्रम नंद पाशि नवशशिमा धव
मास॥नीति विनोद गंरथ यह एकोहे
कवि दास४३॥सवैया॥संवत नंदशा
शी नव भूमित॥१९१९॥विक्रम भूपति
के शुभ लाई॥सोहित ग्रंथ रचो श्रुति
मीनसो श्रीरणवीर कि शासन पाई॥
जाके पढे तें बढै श्रुति पुन्य सुने तें
घटै पुनि पाप महाई॥चारो वरन्न ल
हैं मन वांछित होत प्रसन्न भले यदु
राई॥४४॥इतिश्री मरुभारते शांति प
र्वणि राजधर्म भाषायां कवि देवदत्ता
नुज नंदरामात्मज शिवराम तन्नूनुत्रि
लोचन विरचिते नीति विनोदे पंचसमा
प्ति नमो ध्यायः॥७४॥ शुभमस्तु सर्वा
जगताम् लेखकस्य पाठकयोः॥शुभ
मं भूयात् श्रीरस्तु मंगलं भगवान्वि
ष्णुः मंगलं गरुडध्वज मंगलं पुंडरी
काक्ष मंगलाय तनो हरेः॥ रामायन
मः ॐनमः कमल दल विपुल नया
नाभि रामायनमः श्रीयदुवंश मणि
श्रीकृष्ण पुरुषोत्तमाय नमः॥ रामो

यह नीतिविनोदका पुस्तक श्रीमन्म
हाराजा साहिब रणबीरसिंह बहादुर
जी सी एस आइ इंद्र महेंद्र सिपर स
लतनत जंबू काश्मीर व तिब्बतादि
पतिके पढनेकाहै ॥